हमने हबीब को देखा है

सहमत–मुक्तनाद

अंक 40

सहमत

अंक 40–41, जनवरी–दिसम्बर 2009

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

मूल्य 60 रुपये

संपादनः
राजेन्द्र शर्मा

सहमत
29 फिरोज़ शाह रोड
नई दिल्ली – 110 001
फोनः 23070787, 23381276
e-mail: sahmat@vsnl.com

कवर एंव सज्जाः
इश्तिहार (011) 23733100

अनुक्रम

परिचय

1. बकलम खुद ६
2. थिएटर और मेरे अनुभव।
3. चौथी दीवार से आगे–शमा ज़ैदी

स्मरण

1. शांता गोखले
2. एम के रैना
3. प्रयाग शुक्ल
4. रामगोपाल बजाज
5. कमला प्रसाद।

चर्चा–हबीब तनवीर के रंगकर्म–संस्कृति कर्म के कुछ पहलुओं पर

1. जावेद मलिक
2. भारतरत्न भार्गव
3. अशोक वाजपेयी
4. सुधन्वा देशपांडे
5. जवरीमल्ल पारख
6. रवींद्र त्रिपाठी।

स्वयं हबीब

1. वह कौन था जो मारा गया।
2. संस्कृति और सांप्रदायिकता।
3. लोककथाओं और लोक गीतों में प्रतिरोध के स्वर

पोंगा पंडित प्रसंग

1. राजेंद्र शर्मा
2. यह था पोंगा पंडित
3. पोंगा पंडित/जमादारिन का पाठ।

हबीब देखा

कुछ तस्वीरें

संपादकीय

हमने हबीब को देखा था--बेशक यह उन लोगों के लिए खुशकिस्मती की और गर्व करने की बात है, जिन्हें हबीब तनवीर को देखने का मौका मिला है, भले ही उनके काम के जरिए ही देखने का मौका मिला हो। वैसे निजी परिचय या कम से कम चलताऊ मुलाकात का मौका पाने वालों का और इज्जत-मोहब्बत करने वालों का हबीब तनवीर का दायरा जितना व्यापक, विविधतापूर्ण और देश-विदेश में फैला हुआ हुआ था, दूसरे किसी कलाकार का क्या होगा! फिर भी, देखने से जानने की शुरूआत जरूरत होती है, देखना ही जानना नहीं हो सकता है। अब जब हबीब तनवीर हमारे बीच नहीं हैं और उस अर्थ में उनका देखना संभव नहीं है, दिल में यह ख्याल आना स्वाभाविक है कि खुशी की बात है कि देखा, मगर जाना कितना। वास्तव में यह संकलन हबीब तनवीर को जानने की कोशिश का ही उद्यम है। हबीब तनवीर के काम और उनके बहुविध योगदान के वस्तुगत आकलन-मूल्यांकन की अपेक्षा, इस प्रयत्न से नहीं की जानी चाहिए। हबीब को जितना हम जानते आए हैं, उसमें अगर थोड़ा भी इज़ाफा होता हो, तो हम अपने प्रयत्न को सकारथ मानेंगे।

जिक्रे हबीब की एक बड़ी मुश्किल, जो आखिर में जाकर एक आसानी निकलती है, यह है कि उन्हें किसी एक तरह के काम से या एक कलारूप के खाने में बांधकर नहीं रखा जा सकता है। बेशक, नाटककार की और उस में भी छत्तीसगढ़ी कलाकारों को लेकर आधुनिक नाटक करने वाले नाटककार की उनकी पहचान सबसे प्रमुख है। शायद, किसी एक रूप में पहचाने जाने का सवाल आता, तो खुद हबीब भी इसी पहचान को अपने लिए सबसे उपयुक्त पाते। मगर उनके लिए होता यह मजबूरी का चुनाव ही। वर्ना हबीब ने अपने अंतिम समय तक अपनी सक्रियता का एक थिएटर के ही दायरे में बंधना भी मंजूर नहीं किया था, फिर दूसरे किसी दायरे का तो सवाल ही कहां उठता है। यह संयोग ही नहीं है कि अपनी अंतिम अस्पताल यात्रा के समय, वह अपनी प्रस्तावित जीवनी के दूसरे खंड को पूरा कर रहे थे। किसी एक साधन या माध्यम से ही नहीं बल्कि सभी उपलब्ध साधनों या माध्यमों से अपने से बाहर की दुनिया के साथ संवाद करने की और उसे बदलने के लिए हस्तक्षेप की ललक, हबीब तनवीर की असली पहचान बनाती थी।

यह पहचान, (यदि इस संज्ञा का उपयोग करने दिया जाए तो) एक 'नवजागरण पुरुष' की पहचान है। बेशक, इस पहचान में नवजागरण कलाकार की पहचान समाई हुई है। फिर भी नवजागरण कलाकार की संज्ञा इसलिए खुद ही कुछ अटपटी लगती है कि

नवजागरण की परंपरा में कलाकार और नागरिक, कालाकार और सामाजिक और कालाकर्म तथा सामाजिक जीवन के बीच, विभाजन की रेखाएं बहुत धूमिल और अधबनी सी रहती हैं। चूंकि नवजागरण की संकल्पना एक ऐसी समग्र सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पना है, जिसके केंद्र में रेनेसां के स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे के बुनियादी मूल्यों से परिभाषित मनुष्य है, इसलिए नवजागरण पुरुष के पास हमेशा करने और कहने को इतना ज्यादा होता है कि लंबे से लंबा, सर्जनात्मक से सर्जनात्मक और सक्रियता के ज्यादा से ज्यादा रूपों गुंथा जीवन भी, उसके लिए हमेशा नाकाफी होता है। हबीब ने जितना किया, उनकी अधूरी रह गयी योजनाओं की सूची उससे लंबी ही होगी। हां! इतना जरूर है कि मुक्तिबोध की कविता पंक्तियों में कहें तो ऐसे जीवन में इस पछतावे के लिए कोई फुर्सत, कोई जगह नहीं होती है--अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया!

हबीब तनवीर, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की पृष्ठभूमि में हिंदुस्तानी (हिंदी-उर्दू तथा उनके इर्द-गिर्द की बोलियों) क्षेत्र में निकली नवजागरण की धारा की बेहतरीन लहर का प्रतिनिधित्व करते थे। इसीलिए, उनके यहां सर्जनात्मक ऊर्जा का असाधारण विस्फोट ही नहीं है, उसमें दूसरों को साथ लिए-दिए चलनेवाला, एक सर्जनात्मक आंदोलन और लहर का भाव भी है। उन्होंने शायरी से शुरूआत की। जल्द ही उसमें नाटक जुड़ गया। गरीब-गुरबा से मोहब्बत का जज्बा उन्हें कम्युनिस्ट आंदोलन और पार्टी तक ले गया। इनका साथ उन्होंने जिंदगीभर नहीं छोड़ा और इनकी सोहबत से खुली रचनात्मकता की एक समूची दुनिया को भी। इस दुनिया के केंद्र में बेशक थिएटर रहा, किंतु जरूरत होने पर सड़कों पर उतरने से लेकर, व्याख्यानों तथा कार्यशालाओं के जरिए अपने अनुभवों तथा विचारों का दूसरों के साथ साझा करने में भी, हबीब ने कभी संकोच नहीं किया। इसीलिए, सफदर, जन नाट्य मंच और सफदर की स्मृति से जुड़े सहमत के साथ हबीब का रिश्ता, एक साथ कामरेड और संरक्षक, दोनों का था।

हबीब ने नाटक लिखे ही नहीं, नाटक करने के लिए ग्रुप भी बनाए। उनका 'नया थिएटर' सिर्फ इस माने में ही अनोखा नहीं है कि वह मुख्यत: छत्तीसगढ़ के कलाकारों से बना है, वह इस माने में भी अनोखा है कि वह एक साथ पेशेवर और एमेच्योर दोनों है; कलाकारों के लिहाज से पेशेवर और अपनी संरचना व व्यवस्था में एमेच्योर। इस ग्रुप का आधी सदी से निरंतर सक्रिय रहना, हबीब के कमिटमेंट और जनतांत्रिक मिजाज़ का ही नतीजा था। उन्होंने नाटकों में और फिल्मों में भी अभिनय भी किया। गीत लिखे भी और गए भी। नाटक में पीर, बावर्ची, भिश्ती, सब बने जरूरत के हिसाब से, यहां तक कि नाट्यालोचक भी। हां! नाट्य निर्देशक के रूप में उनकी भूमिका युगांतकारी रही। उन्होंने छत्तीसगढ़ी को उसकी पहचान दी। उन्होंने छत्तीसगढ़ को ही उसका आधुनिक थिएटर नहीं दिया, समूचे हिंदुस्तानी इलाके को ऐसा थिएटर दिया, जो आधुनिक होने के साथ-साथ उसका अपना भी था।

हमारे जैसे देश में और खासतौर पर हिंदुस्तानी इलाके में, जो जनतांत्रिक संस्कृति और मिजाज़ के लिहाज से बहुत पिछड़ा बना रहा है, 'आधुनिक और पारंपरिक' की चालू समझ में अक्सर, इस इलाके के समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक विभाजन भी प्रतिबिंबित हो रहे होते हैं। इसी विभाजन के चलते, आधुनिक और आधुनिकता की ऐसी कल्पना रूढ़ हो गयी है, जो पश्चिम के भावबोध से लेकर चिंताओं तक से जितनी निकट है, शहरों के एक छोटे से तबके को छोड़कर व्यापक हिंदुस्तानी समाज के भावबोध, उसकी चिंताओं से उतनी ही दूर। नवजागरण की धारा ने अपनी बेहतरीन अभिव्यक्तियों में इस आधुनिक को स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे की जनतांत्रिक बुनियाद पर स्थापित करने की कोशिश की है। हबीब तनवीर का थिएटर, इसके सबसे सफल उदाहरणों में से है, जो न पश्चिमविरोधी है और न परंपरावादी। इसके बावजूद जो, आधुनिक को परंपरा में लोकेट करता है, उस आधुनिक की अपनी ही परंपरा खोजता है और इस तरह, एक नया हिंदुस्तानी आधुनिक रचता है। खासतौर पर हिंदुस्तानी क्षेत्र में 'आधुनिक और परंपरागत' की सरलीकृत बहस के सामने, हबीब तनवीर का थिएटर जो समाधान पेश करता है, उसके पूरे अर्थ को समझने में शायद अभी समय लगेगा। हबीब के स्मरण के बहाने अगर यह प्रश्न कुछ खुल सके तो एक बहुत ही जरूरी काम हो रहा होगा।

हबीब की लोक से संबद्ध ही नहीं, लोक से परिभाषित भी होने वाली आधुनिकता, परंपरागत आधुनिकों की आलोचना से तो जूझती आयी ही है, नये-पुराने पुराणपंथियों के हमलों का भी निशाना बनी रही है। बादवाला यह हमला प्रकटत: विडंबनापूर्ण जरूर है, लेकिन सारत: उतना ही स्वाभाविक है। यह बात छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार द्वारा हबीब के निधन के कुछ ही बाद, पिछले ही दिनों चरणदास चोर के वाचन पर प्रतिबंध लगाए जाने के संबंध में जितनी सच है, उससे भी ज्यादा सच है 'पोंगा पंडित/ जमादारिन' के खिलाफ केसरिया पलटन की हबीब के जीवनकाल में ही चलायी गयी हमलावर मुहिम के संबंध में। बेशक, छत्तीसगढ़ सरकार सतनामी गुरु की शिकायत की आड़ लेकर तथा इस तरह के हमले के जरिए, एक सामाजिक रूप से दबाए गए तबके की चिंता का राजनीतिक स्वांग भर रही थी, जबकि पोंगा पंडित के खिलाफ मुहिम में केसरिया पलटन सीधे-सीधे 'पोंगा पंडित' के साथ और 'जमादारिन' के खिलाफ खड़ी नजर आ रही थी। लेकिन, दोनों ही मामलों में दो एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई चीजों पर निशाना था। पहला, मुसलमान हबीब का 'हम' हिंदुओं की परंपराओं का मजाक बनाना। दूसरा, उसका एक ऐसी आधुनिकता की खोज करना, जिसकी सचमुच अवाम तक पहुंच है और जो इस तरह, परंपरागत को एकदम आधुनिक देशी-विदेशी निहितस्वार्थों का रास्ता निरापद करने में लगाने के केसरिया पलटन तथा उसके सहधर्मियों के 'सुकार्य' में, सचमुच बाधाएं खड़ी करती है।

हबीब हों या हुसैन, आधुनिक को परंपरा से जोड़ने की हरेक सच्ची कोशिश में इन

सच्चे पश्चिमवादियों को (जो वस्तुतः परजीवी आधुनिकतावादी ही हैं) हमेशा अपने साथ दुश्मनी दिखाई देती है। और यही स्वाभाविक भी है। दूसरी ओर, हबीब का नवजागरण का प्रोजैक्ट उस गहराई तक पहुंचता है, जहां वह नाटक में ही सही पंडित के जाति-अहंकार का जमादारिन के अपने खरंजे से खुरचा जाना दिखाने से भी नहीं चूकता है और यह याद दिलाने से भी कि हिंदुस्तानी संस्कृति एक ही है, जिसमें हिंदू-मुसलमान कुछ नहीं होता है। उम्मीद है कि इस संकलन में इन हबीब की कुछ झलक दिखाई देगी।

राजेंद्र शर्मा

जुलाई, 2009

बकलम खुद

सफर में क्या खोया, क्या पाया

मेरी रंगयात्रा लंबी है। बस मैं इतना जानता हूं कि सबसे पहले मुझे शायरी में दिलचस्पी पैदा हुई और पहले मैं शायर की ही हैसियत से सामने आया। फिर जब मैं मैदान में उतरा तो शायरी का असर मेरे लेखों पर छाया हुआ था। 'शतरंज के मोहरे' मेरा पहला कामयाब नाटक है, जिसके न सिर्फ संवाद में शायरी का असर साफ झलकता है बल्कि नाटक के आखिर में इन्शा की वो मशहूर गजल भी गायी जाती है, जिसका मतला है—

कमर बांधे हुए चलने को यां, सब यार बैठे हैं।
बहुत आगे गए, बाकी जो हैं, तैयार बैठे हैं॥

चूंकि मुझे गाने का भी शौक था, मैं अपनी गजलें मुशायरों में तरन्नुम में सुनाया करता था। इसलिए, शतरंज के मोहरे में इन्शा की यह गजल मैं खुद गाया करता था। यह जमाना मेरी मुंबई की जिंदगी से संबंधित है। फिर जब मैं 1954 में देहली आया तो ''आगरा बाजार'' के बहाने नजीर अकबराबादी का कलाम मेरे हाथ आया। इस नाटक से मैंने अपने दोनों शौक पूरे किए, नजीर की गजलों और नज्मों का भी और इन्हें हल्की-फुल्की धुन में ढ़ालकर संगीत तैयार करने का भी।

उस वक्त तक मैं न तो संस्कृत नाटकों से परिचित था और न हिंदुस्तान के लोक थिएटर की शैलियों से। महज इप्टा से जुड़े हुए होने के नाते मराठी और गुजराती लोक नाट्य शैलियों की मुझे कुछ सुध-बुध थी और छत्तीसगढ़ी लोकगीत मैं बचपन से गाया करता था।

इस जमाने में मैंने संस्कृत के प्रमुख नाटक पढ़ने शुरू किए और उनका गहरा असर कबूल किया। एक चीज जो शास्त्रीय नाटकों में मैंने अपने मतलब की देखी वह थी एक ऐसे संपूर्ण रंगकर्म की कल्पना जिसमें नाट्य, नृत्य और संगीत, तीनों शामिल हैं। 1955 से

1958 तक मैं तीन साल तक देश से बाहर रहा। इस दौरान ब्रेख्त के नाटकों का अध्ययन किया और बर्लिन में उनकी प्रस्तुतियां भी देखीं। इनमें भी मैंने कविता और संगीत का पक्ष देखा और उससे प्रभावित हुआ।

1958 में हिंदुस्तान वापस आने के बाद मैं छत्तीसगढ़ में 'नाचा' शैली से पहली बार परिचित हुआ यानी स्थानीय लोक नाट्य की वह शैली जिसमें नाच, गाना, नाटक सब शामिल होता है और जिसे 'गम्मत' या नकल भी कहते हैं। बस मैं छः छत्तीसगढ़ी कलाकारों को लेकर देहली आ गया और उन्हें अपनी प्रस्तुति, 'मिट्टी की गाड़ी' में शामिल कर लिया। गाने नियाज हैदर से लिखवाए, धुनें ज्यादातर छत्तीसगढ़ की इस्तेमाल कीं और गानों को आवाज अक्सर लोक कलाकारों ने दी। उनकी बुलंद आवाज और मधुर कंठ ने इन गानों में चार चांद लगा दिए। लेकिन, हिंदी के संवाद अनपढ़ ग्रामीणों की जुबान से कुछ अच्छे नहीं लगे। मातृभाषा में जो अपनी एक शक्ति और हमारी बोलियों की जो अपनी एक अपनी मिठास होती है, उसे पहचानने में मुझे जरा देर लगी। इसके लिए मुझे 1970 तक इंतजार करना पड़ा, जब मैंने छत्तीसगढ़ी लोक नाटक, छत्तीसगढ़ी कलाकारों से, उन्हीं की बोली में पेश करवाने शुरू किए। लेकिन, दर्शक नदारद।

तीन साल गुजर गए। इस समस्या का समाधान 1973 में मिला। 'गांव नाव ससुराल मोर नाव दामाद', 1973 की नाचा वर्कशाप का नतीजा है। इसने देहली पहुंच कर पहली बार वह सफलता हासिल की, जिसके कारण यह अभी तक जीवित है। लेकिन, इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इस नाटक को तैयार करने में इम्प्रोवाइजेशन का वो नुस्खा मेरे हाथ आ गया, जिसके जरिए मैं बड़े-बड़े नाटक अनपढ़ ग्रामीणों से तैयार करवाने के काबिल बन सका। यही कारण है कि जब 1978 में मैंने 'मिट्टी की गाड़ी' को फिर से पेश किया, तो उसकी भाषा छत्तीसगढ़ी बना दी, चुनांचे उसकी लोकप्रियता और बढ़ गयी। हालांकि अब तक मैं संस्कृत नाटकों से भी अच्छी तरह परिचित हो गया था और नाट्य शास्त्र पढ़ चुका था, फिर भी हमारे यहां की रस की एकता की पद्धति को ठीक से पहचान नहीं सका था। 'मिट्टी की गाड़ी' में इस पद्धति का सफल प्रयोग भी मैं कर चुका था। लेकिन, संस्कृत के नाटकों के सिलसिले में एक एहसास जो मेरे दिल में पैदा हुआ था, बस उसी की बिना पर और बिल्कुल अनजाने में यह प्रयोग किया गया था

1973 का वह जमाना था जब मैं पहली बार अरस्तु और भरत मुनि के दृष्टिकोण के फर्क को साफ देख पाया। 1973 की ही एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी जब मैंने पहली बार लोक नाटकों और शास्त्रीय नाटकों के अंदर रस की एकता की बिना पर, एक तालमेल महसूस किया। 'चरणदास चोर' जो 'ससुराल' के फौरन बाद मंच पर आया, इसी चेतना का नतीजा है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 'चरणदास चोर' और 'बहादुर कलारिन' के बाद मैं अपनी ही बनायी परंपराओं में घिर कर रह गया और आगे न बढ़ सका। इस सिलसिले में मैं बस इतना कहूंगा कि मुझे अपने रंगकर्म में अपने खास हस्ताक्षर

की तलाश थी, जब मैंने महसूस किया कि वो मुझे बड़ी हद तक हासिल हो गया है, तो उसके बाद मैं अपने दस्तखत बदल देने के हक में नहीं था। नाटक के इतिहास में मैंने यही देखा है कि हस्ताक्षर की यह तलाश रंगकर्म के हरेक महत्वपूर्ण काम के लिए लाजमी है, चाहे वो स्तानिस्लाव्स्की का काम हो चाहे ब्रेख्त का, उन्होंने आखिरी वर्षों में जितने भी नाटक लिखे और प्रस्तुत किए, उनमें शैली का कोई बुनियादी परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। हालांकि नाटकों की प्रस्तुतियों में और बहुत से तौर-तरीके विषय के अनुरूप भिन्न थे। नाटक में अपनी पहचान स्थापित करने की एक लाजिमी शर्त यह भी है कि निर्देशक एक ही ग्रुप के साथ लगातार एक मुद्दत तक काम करता रहे। चुनांचे इस सिलसिले में गालिबन मेरे रंगकर्म की मिसाल असाधारण है। पीटर ब्रुक कम से कम पांच साल की मुद्दत बताते हैं, मेरी लगभग सारी उम्र एक ग्रुप के साथ गुजर गई। मेरे साथ कुछ कलाकार 1958 से, दूसरे 70-73 से और आगे की नस्ल के बहुत से कलाकार सन 82-83 से जुड़े हुए हैं।

(हबीब तनवीर के रंग अवदान पर एकाग्र 'प्रणति' के मौके पर अपनी रंगयात्रा पर लिखे हबीब तनवीर के आलेख के मुख्य अंश।)

आत्मकथ्य

मेरा जन्म एक धार्मिक परिवार में हुआ था। मेरे पिता पिशावर के और माता रायपुर की थीं। हम सब यहीं पैदा हुए। जब मैं छोटा था, मेरे अग्रज नाटकों में भाग लेते थे। ये नाटक सामन्यतया उर्दू में होते थे, जिसे हम पारसी थिएटर परंपरा कहते हैं। ऐसे ही एक नाटककार, हाफिज अब्दुल्ला द्वारा लिखे गए नाटकों में एक नाटक था, **मोहब्बत का फूल**। इसमें मेरे भाई ने अभिनय किया था। मुझे याद है कि कारुणिक दृश्यों को देखकर मैं रोया था।

नाटक में अभिनय का पहला अनुभव मुझे उस समय हुआ जब मैं 11-12 वर्ष का था। मैंने राजकुमार आर्थर की भूमिका की थी। मैं अपनी कक्षा में उत्कृष्ट था। मैट्रिकुलेशन में मैं प्रथम श्रेणी में आया और उस समय मेरा झुकाव इंडियन सिविल सर्विस की तरफ था। मेरे शिक्षक चाहते थे कि मैं विज्ञान की तालीम लूं, लेकिन मेरी अभिरुचि कला में थी। मैं नागपुर के मोरिस कॉलेज में गया। वहां मैंने कला में दाखिला लिया। स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए मैं अलीगढ़ गया।

मैं बचपन से ही फिल्में खूब देखता था। अलीगढ़ में मैंने किसी प्रकार विभिन्न भाव-भंगिमाओं वाले अपने फोटो तैयार कराए। मैं मुंबई गया। जैड ए बुखारी ने हमें रेडियो के लिए चुन लिया। यहां से मैं फिल्म इंडिया चला गया। वहां मैं करीब छः महीने रहा और

उसके बाद मैं फिल्मों में चला गया। कई फिल्मों में अभिनय किया। फिल्मों के लिए गीत लिखे। अब तक मैं इप्टा और पी डब्ल्यू ए में शामिल हो चुका था। हम लोगों का जमावड़ा सज्जाद जहीर के निवास पर लगता। ऑपेरा हाउस के पास अंगरेजी शासन के समय एक शानदार थिएटर बना था। वहां राजकपूर नाटक खेला करते थे। सड़क के उस पार एक छोटा सा हाल था जहां मैं बलराज साहनी और दीना पाठक के निर्देशन में अभिनय करता था। हम लोक रूपों जैसे तमाशा और लखनी, भवई, गुजरात के लोक रूपों से परिचित हो चुके थे।

1948 में इलाहाबाद में आयोजित इप्टा के सम्मेलन में मैं भी एक दुःखांत नाटक में अभिनय कर रहा था। विषय था आंध्र प्रदेश में तेलंगाना आंदोलन। मैं वृद्ध बना था और मेरे बेटे की गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। तब मैंने एक लंबे भाषण में विलाप किया था। यहां कई हफ्तों तक रिहर्सल चला। बलराज साहनी इसका निर्देशन कर रहे थे। अगले दिन नाटक का प्रदर्शन होना था। बलराज साहनी संतुष्ट नहीं थे। वह मंच पर आ गए और उन्होंने मेरे गाल पर जोर का एक तमाचा जड़ दिया। उनकी पांचों उंगलियों के निशान मेरे गाल पर बन गए और मेरी आंखों से आंसू निकल आए। इसके बाद वह चीखे, फिर से संवाद बोलो। रोते हुए संवाद दोहराया। तब उन्होंने मुझे गले से लगा लिया और बोले, तुम यह कभी नहीं भूलोगे। इसे ऐसा ही होना चाहिए था। मैं बीस साल का था और अस्सी साल के वृद्ध का चरित्र कर रहा था। मैंने बलराज से पूछा कि क्या यह आपके निर्देशन के तरीकों में से एक है। उन्होंने कहा—हां, इसे मसल मैमोरी कहते हैं।

इप्टा के मृतप्रायः हो जाने के बाद मैंने मुंबई छोड़ दिया और दिल्ली चला गया। वर्ष 1954 में मैंने अपना पहला सफल नाटक, **आगरा बाजार** लिखा। **आगरा बाजार** में नजीर अकबराबादी के बारे में लिखने के लिए मैंने दिल्ली की जुबान में लिखने वाले फरहतुल्ला बेग और अहमद शाह बुखारी के बारे में अध्ययन किया। दिल्ली की आवाजें, पुरानी दिल्ली की ध्वनियां, विक्रेता, दूकानदार, कटोरा बजाने वाला, जीरा-पानी बेचने वाला, इन सभी में संगीत की लय है। आप पुरानी दिल्ली में यह भाषा सुन सकते हैं। उस समय मैंने लोगों की जो भाषा सुनी, उसका समावेश **आगरा बाजार** में है।

मेरा झुकाव दुःखांत नाटकों की ओर रहा है। हम पाते हैं कि अत्यंत खुशी के क्षणों में भी दुःख का तत्व विद्यमान रहता है। मोलियर की कॉमेडियों में कुछ बिल्कुल हृदयस्पर्शी दृश्य होते हैं। विदूषक लोगों को हंसाने के लिए उपकरण की तरह होता है। लेकिन, इसके साथ ही विदूषक का साथ दुःखद भी होता है। मेरा आशय शेक्शपियर के विदूषकों से नहीं है। चार्ली चैपलिन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

वर्ष 1958 में योरप से लौटने के बाद, **मृच्छकटिकम** पर काम शुरू करने से पहले मैं परिवार से मिलने अपने घर रायपुर गया था। मैंने सुना कि जिस हाई स्कूल में मैं पढ़ता था, उसी के परिसर में **नाचा** का आयोजन हो रहा है। **नाचा** छत्तीसगढ़ी ड्रामा का

धर्मनिरपेक्ष रूप है। मैंने इसे रात भर देखा। 1960-61 में मैं और मोनिका परिणय सूत्र में बंध गए। मुझे सोवियत प्रकाशन विभाग में वरिष्ठ संपादक के रूप में नौकरी मिल गयी। इस दौरान शौकिया थिएटर और पत्रकारिता का काम भी चलता रहा। इस बीच सोवियत प्रकाशन विभाग में मेरी नौकरी खत्म हो गयी। वहां से 18 हजार रुपए ग्रेच्युटी मिली। मोनिका को लगा कि जीवन का गुजारा काम के बिना कैसे होगा? नगीन के जन्म से मुझे नौकरी मिली थी। मार्च 1972 में नौकरी छूट जाने का मुझे आघात लगा था। अप्रैल में मुझे टेलीफोन से संदेश मिला। एक पुलिसवाला मेरे घर आया और उसने बताया कि आपके लिए संदेश है और एक खास टेलीफोन नंबर पर जवाब देना है। मैं रेस्टोरेंट गया,फोन पर आर के धवन से बात हुई। वह उस समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पी ए थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं राज्यसभा के लिए मनोनयन स्वीकार करूंगा। इस प्रकार हम राज्यसभा में पहुंचे।

*('**कला समय**' से)*

दो साल पहले हुई एक बातचीत के अंश

मासूमियत या मजबूरी

कीमतें आसमान छू रही हैं। एक तरफ गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी है और दूसरी तरफ कुछ लोग लाखों रुपये महीना कमा रहे हैं। यह खाई पाटना जरूरी है। कैसे पटेगी मोंटेक अहलूवालिया या चिदंबरम से, नहीं जानता। या तो मासूमियत है या मजबूरी कि वो किसी और तरीके से सोच नहीं सकते। ...मां के पेट से झूठ बोलते हुए कोई नहीं आता सोसायटी से ही सीखते हैं...

अंधेरे में उम्मीद भी

जो थिएटर छोड़कर फिल्मों, सीरियलों की तरफ जा रहे हैं, वहां काम की तलाश में जूतियां चटकाते हैं। कुछ चापलूसी, कुछ जान-पहचान काम करती है। मुझे उनसे कुछ शिकायत नहीं है। क्या करें पेट पर पत्थर रखकर काम मुश्किल है। हमारे जमाने में दुश्मन बहुत साफ नजर आता था। साम्राज्यवाद से लड़ाई थी। एक मकसद (सबका) - अंग्रेजों को हटाओ, रास्ते कितने अलग हों (भले ही)। अब घर के भीतर दुश्मन है, उसे पहचान नहीं सकते। विचारधारा बंटी है। पार्टियों की गिनती नहीं, हरेक की मंजिल अलग-अलग। इस अफरातफरी में क्या किसी से कोई आदर्श की तवक्को करे। हां, लिबरलाइजेशन, ग्लोबलाइजेशन, नए कालोनेलिज्म के खिलाफ आवाजें उठ रही हैं सब तरफ से। खुद उनके गढ़ अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन में भी। तो ये उम्मीद बनती है।

जवाब से कतराता हूं

मैं अपने डेमोक्रेटिक मिजाज का शिकार रहा हूं। मेरी अप्रोच डेमोक्रेसी की रही है। मैं प्रचारक या उपदेशक थिएटर में यकीन नहीं रखता। ये कोई जम्हूरी बात नहीं (शायद यही शब्द बोला था) कि आपने सब कुछ पका-पकाया दे दिया, कि मुंह में डालकर पी जाना है। अगर आप समझते हैं कि दिल-दिमाग वाला दर्शक आता है, तो उकसाने वाला सवाल देना काफी होता है। ये नहीं कि मैं सवाल भी और जवाब भी पेश कर दूं। जवाब से कतराता हूं। हां, इसका हक नुक्कड़ नाटक को है, वहां जरूरी है जवाब भी देना। उनकी प्रोब्लम्स हैं। हड़ताल वगैरह होती हैं, सड़कों पर भी निकलना पड़ता है (नुक्कड़ नाटक वालों को)।

हुसैन के मिजाज की कद्र करता हूं

मैं दोनों काम करता हूं, सड़कों पर भी निकलता हूं, न निकलने वालों पर एतराज नहीं। हुसैन नहीं निकलते। उनका मिजाज अलग है। उसकी मैं कद्र करता हूं। उन्होंने (हुसैन ने) कहा, जो मेरे खिलाफ बातें हो रही हैं, सैकड़ों मुकदमे बना दिए गए हैं, इसलिए नहीं आ रहा हूं। ये भी एक तरीका है रेजिस्टेंस का। हर आर्टिस्ट अपने-अपने मिजाज के तहत काम करता है।

मैं यहां कोई फारमूला पेश नहीं करता। मैंने अपने नाटकों में कई तरह के प्रयोग किए। ये आप लोग रियलाइज करें, चाहें तो उड़ाएं, चाहें तो सराहें। इस बारे में पूछकर आप मुझे थका रहे हैं। मैं अपने काम की व्याख्या से इंकार करता हूं।

दिल को तनहा भी छोड़िए

(मख्दूम के एक शेर का हवाला देते हुए रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए कुछ कहते हैं। शायद अंतरात्मा जैसा कुछ)...वो इकबाल का शेर है- अच्छा है दिल के पास रहे पासबाने अक्ल, कभी-कभी इसे तनहा भी छोड़िए। सिर्फ अक्ल से क्रिएट करना संभव नहीं है। दिल से भी बातें होती हैं। (मख्दूम का - शहर में धूम है एक शोलानवां की, मख्दूम को पूरा पढ़ते हैं।) बाल्जाक से पूछा गया था कि एक प्रास्टीच्यूट की ऐसी तस्वीर क्यों बनाई, उन्होंने कहा, 'एमा इज मी'। एलन्सबर्ग ने भी कहा कि आप करैक्टर क्रिएट जरूर करते हैं लेकिन वो अपनी कहानी खुद कहता है। आपका उसमें कोई कंट्रोल नहीं रहता।

देखिए आप उसमें शऊर घुसाएंगे तो वो कुछ हो जाएगी- उपदेश, अखबारनवीसी या कुछ न कुछ, मगर कला नहीं रहेगी।

सरकारें नहीं बल्कि मौत के सौदागर कर रहे हैं रूल

ग्लोबलाइजेशन सब कुछ सपाट कर रहा है। हम सिस्टैमेटिक ढंग से सोचने के आदी हो गए हैं। आराम इसी में है कि सिस्टम बनाएं, उसके पीछे छिप जाएं। इन लोगों के लिए ये मुमकिन नहीं है कि आदिवासी सभ्यता को समझ कर लोकेट किया जाए या हर तबके के लिए अलग ढंग से सोचें। एक सिस्टम बना है शोषण-दमन का, बंटवारे का, कि लोगों को डिवाइड करो। यही क्लासिकल तरीका था, अब इसमें नए-नए तरीके जुड़ गए हैं। पॉलिटीशियन, गवर्मेंट्स रूल नहीं कर रहे हैं, मर्चेंट्स आफ वार, मर्चेंट आफ डेथ, ड्रग मर्चेंट (कुछ और भी जुमले कहे), यही सब डिक्टेट कर रहे हैं। होम, फॉरेन, इकानमी, सब पालिसी वही तय कर रहे हैं। हमारे यहां इसकी शुरुआत है। हम ग्लोबलाइजेशन के चौराहे पर हैं।

खतरे के रास्ते से मिलता है खजाना

पुराने जमाने में किस्से यूं थे कि एक हीरो निकला, दो रास्ते आए। एक मुश्किलों भरा, जिस पर न जाने के लिए उसे सलाह दी जाती है लेकिन वो उसी मुश्किलों भरे रास्ते पर निकलता है। और खजाना उसी रास्ते पर जाकर मिलता है। हीरोइन भी खतरे भरे रास्ते के आखिर में ही मिलती है।

बर्तोल्त ब्रेख्त के नाटकों का प्रभाव और प्रयोग

बर्तोल्त ब्रेख्त के नाटकों से प्रभावित होना लाज़मी है, वह महान थे। ब्रेख्त के नाटकों मे मुकामी मुहावरे होते थे जो ट्रांस-कल्चर टेल्स और विचारधारा को स्पष्ट करते हैं। वह अपने नाटकों के जरिये काफी कुछ सिखा जाते हैं। ब्रेख्त के नाटकों की विशेषता है कि वो कमेन्ट करते हैं, स्टेटमेंट को कोन्ट्राडिक्ट करते हैं और सबसे बड़ी बात चिंतन की तीसरी चिंगारी को पैदा करते हैं।

पोंगा पंडित विवाद

दरअसल पोंगा पंडित एक सच्ची **नाचा** शैली में पेश किया गया एक तमाशा था जो छुआछूत पर है। यह मेरा लिखा भी नहीं था ,पर मै इसे काफी पसंद करता हूं और कोशिश करता हूं कि इसे बार बार दिखा सकूं। समाज की विषमताओं और पाखण्ड को सामने रखता यह नाटक उन तस्वीरों को भी साफ करता है। इसे कुछ लोगो ने अपनी संस्कृति पर प्रहार मानते हुए एंटी हिंदू प्ले तक कह दिया।

होर्निमम सर्किल गार्डन एक्सिबिशन के पीछे का विचार

(गुस्से में) ऐसा बिल्कुल भी नहीं था अरे! ये सब तो लगा ही रहता है उस

एक्सिबिशन के पीछे कोई बात नहीं थी, वह एक कहानी कहती थी, नया थिएटर के पाँच दशकों की यात्रा की,बस !

पांडवानी के साथ प्रयोग

पांडवानी, छत्तीसगढ़ क्षेत्र और मंदिरों के धार्मिक कृत्यों की गायन की एक शैली है। मैंने पांडवानी की खूबसूरती और इसमें इसकी क्षेत्रीयता की खुशबू के जरिये अपने कुछ नाटकों जैसे **वेणी संहार, दुर्योधन** आदि में प्रयोग किए। तकरीबन एक महीने लगातार पांडवानी की बारीकियों को मैंने केवल देखा। प्राचीन तीन नाटकों को इसकी मदद से मॉडर्न कास्ट्यूम के जरिये मैंने पेश किया

आगरा बाज़ार की लोकप्रियता

आगरा बाज़ार 18वीं शताब्दी के उर्दू कवि नजीर अकबराबादी के वक्त और उनके काम पर आधारित था। इस नाटक में दिल्ली के ओखला गाँव के बाशिंदों और लोक कलाकारों के साथ-साथ जामिया मिलिया इस्लामिया के विद्यार्थी भी शामिल थे, जो अपने में अनूठा था।

थिएटर ऑफ़ रूट्स

थिएटर ऑफ़ रूट्स पोस्ट-कोलोनिअल स्कॉलरशिप का एक तर्क है जिसे साधारण तौर पर मिली-जुली नाटकीय बोली जो विकसित की गई थी आजादी के बाद के प्ले-राइटर्स और डायरेक्टर्स द्वारा, जिसने पारंपरिक भारतीय शैली को आधुनिक प्रोसिनिम स्टेज में बदला, उससे समझा जा सकता है।

देखिये ,नाटकों का मकसद शोभा बढ़ाना बिल्कुल भी नहीं है। यह एक प्रगाढ़ सम्बन्ध है स्टेज पर काम करने वाले लोगों और उनके बीच जो समकालीन भारतीय समाज में रहते हैं। आर्ट के अन्दर कोई टैक्टिक्स नहीं होता, यह पूर्ण शुद्धतावादी होता है।

fFk;Vj vkj ej vuHko

gchc ruohj

tukc lnj 'kkfgn egnh] vrhdmYyk lkgc] [kokrhu vk gtjkr(e ; viuh cgr gh cMh bTtr vQtkbZ le>rk g d e> bl ikxke e 'kkfey gku dk ekdk fn;k x;k ftle d ej cgr gh dkfcy dnj mLrkn 'kkfey jg gA elyu j'khn vgen flÌhdh lkgc] vky vgen l#j lkgc] tk gekj ikQlj Fk vyhx< e] mn d egDe eA ljnkj tkQjh lkgc ftudk e ; mLrkn ekurk g d mUgku ejh 'kj vk 'kk;jh dh gklyk vQtkbZ vkj ljijLrh dhA ccb e 1945 d ckn l txg&txg fy, ?ker jg e'kk;jk e vkj ^^*u;k vnc*** e Nkir jgA fFk;Vj e tk ej rtjckr g, g mudk i'k dju dk lcl vPNk rjhdk ;g g fd e mu rkLljkr dk ftdj d: tk ej tgu ij cpiu l iMr jgA

ej okfyn vkj okfynk dk ftdj vrhdmYyk lkgc dj pd gA ej nk eke FkA ,d dk ge dky eke dgr Fk vkj nlj dk ckl oky ekeA ckl oky eke blfy, d ok ckl idM dj Mjk;k djr Fk e>A dky eke Mki vkmV Fk] vui< rk ugh Fk exj Ldy l Hkkx g, Fk vkj cgr vPN 'kk;j FkA cgr gh 'kLrk mn e xty dgr Fk vkj dkxl d yhMj Fk] [kÌjik'k] jfo'kdj 'kDy d teku dA gekj ckl oky eke vCny j'khn [kku] ok lc bLiDVj ifyl FkA nkuk lx Hkkb FkA ,d dkxl e vkj nlj ifyl eA ,d dk dke cjrkuoh ljdkj d f[kykQ rdjhj djuk] /kvk/kkj vkj nlj dk dke mudk fxj¶rkj djukA bldk f'kdkj gekjh ukuh gvk djrh Fkh tk jk&jk d gydku gvk djrh FkhA 'kj vk 'kk;jh dk tTck dky eke l e> feyk vkj ckl oky eke [k'k xu FkA iDd xku xkr Fk vkj cgr vPN xkr FkA ejh okynk Hkh xkrh Fkh] mldk 'kkd

ogk l e> feykA ej cM Hkkb tghj vgen [kk ‘kj vk ‘kk;jh djr Fk vkj ,fDVx Hkh djr FkA mud Mke n[kdj e cgr erkfLlj FkkA ok Hkh Hkkx g, Fk rkyhe l] bu phtk dk ‘kkd FkkA dkyh ckMh e] e ftdj dj jgk g 1930 l igy dk] 1940 e eu efVd fd;k vkj ejk cpiu FkkA 1935&36 dk nkjku jgkA tkckt] ,d fdjnkj g gkfQt vCnYyk dk *egCcr dk Qy]* ikjlh fFk;Vj d teku dkA ge n[ku x,A ,d eTtQj lkgc Fk tk ghjk dk ikV djr Fk vkj ghjkbu nk FkhA ,d cxkyh nkLr Fk Hkkb tku d ok fd;k djr Fk vkj ,d Hkkb tku djr FkA eu ogk n[kk d ckgj ,d ijk cM ct jgk g vkj oDr erb¸;u ugh g dc ukVd ‘k: gkxkA tc rd cM ct jgk g ;gh le> yhft, d fVdV fcd jg gA fVdV tc fcd pd gky Hkj x;k] bldk vnktk ; gkrk Fkk d cM mBk vkj vnj x;kA vkj fQj ge ykx tk ckgj [kM gkr Fk] xi&’ki djr g, pk; ihr ok lc gtjkr vnj igpr Fk d vc ukVd ‘k: gkxkA cgr yck vkojpj gkrk FkkA E;ftd ctrk Fkk ckdk;nk vkj eklhdh d ckn ink mBrk FkkA igyk tk vlj e> ij gvk in dk ok Fkk d ink uhp l Åij mBrk FkkA pukp igy ij utj vkr FkA ijh drkj [kMh jgrh FkhA cgr vPN fyckl e pedr] nedr cM rke&>ke l fyi ir] edvi fd, ,DVj&,DVfl l ijh ,d lQA ijk l mud fyckl dk vnktk gkr&gkr fQj lj rd igpr Fk tgk mudk gLu mudh fejkt ij utj vkrk FkkA

; ink e> cgr iln FkkA ckn e ijn ; ¼gkFk dk b’kkjk djr g,½ tk gVr g mue e> ok Mkekb dfQ;r ugh egll gkrhA eu ccb e 1945 e ,d dFkdyh urd dk n[kk Fkk vkj cgr xgjk vlj gvk Fkk e> ijA mUgku viu vki dk lj l fn[kkuk ‘k: fd;k vkj ijk rd y x,A ;ofudk d ihN gueku cudj vk, Fk] dFkdyh d e’kgj Mklj Fk] vc ugh jgA ok [ky jg Fk in lA uk[ku fn[kk,] lugjh iV uk[kuk e >ydrk gvk cMk [kclj yxkA fQj tjk lk lj dk ;k fd;k rk ,d QUuk Fkk] lQn fn[kkb fn;k&vkj mld ckn tjk lk edV utj vk;k&lugjh VdMk] fQj vk[k fn[kk d fQj Nik fy;kA [kyr jgA chl feuV yx gkxA /khj&/khj vkj fQj ink fxjk vkj >ek>e ijh rLohj lkeu vkbA dyj Ldhe Fkh lQn vkj xkYM vkj dgh&dgh ykyhA cgr gh [kclj rA ,lk yx jgk Fkk d ,d utj e lh/k utj vk tkr rk mud ij gLu erkfLlj ugh gk ikrA /khj&/khj] vyx&vyx mld vt tk fn[kk,A rc tk ij gLu dk lk{kkRdkj gvk] mldk cgr xgjk vlj gvkA e> ;kn vk;k jke e tc eu ekbdy ,tyk dh ifVx n[kh vkj n[kr&n[kr ejh xnu n[k xb blfy, d ; ¼xnu ihN dk ekM½ n[kuk iMrk Fkk vkj fQj tc vkV dh fdrkck e mlh E;jy dk n[kk rk mle flQ ,d gkFk] ,d vxyh dk VdMk] ok xnu dk [ke! nljh rLohj] rhljh dN vkj & ijk dh ykbu fd/kj tk jgh g! D;kfd bl lc dk vki tkM d n[k pd g] bl le>r g] vkj mld gLu dk vnktk gkrk gA rk tc rd ml vyx vt tk e u n[kk

tk,] ij dk rLLloj djuk cMk ef'dy FkkA igy d ; vljkr vkj ckn d vlljkr ej vnj Mke dh dfQ;r ink dj jg FkA bl lc dk bLreky eu ckn e fd;k] yfdu ogk dk fdLLlk ;g g d *egCcr dk Qy* dk tkckt fxj¶rkj gk tkrk gA ghjkbu jkrh g ;kuh ej Hkkb ghjkbu d :i e jkr g vkj xkr gA lkFk e e Hkh jk jgk FkkA ej Hkkb d ,d nkLr ogk cB Fk ftudk uke Fkk uch] nth FkA mld ckn uch nth clk rd ejk etkd mMkr jgA yRQ yr Fk ml fdLLl dk ;kn dj dA e ccb tk pdk Fkk cMk gk x;k Fkk] dke dj jgk Fkk jfM;k e] fQYek e] fQj Hkh tc&tc jk;ij vkrk Fkk& dgr d ckck vkvk & cpiu dk ejk uke Fkk & cBk pk; fi;k] dl jk, Fk ml fnuA ; mudk eLrfdy ,d etkd Fkk vkj f[kyf[kyk dj glr FkA ;dhuu mu ij ej jku dk cgr xgjk vlj gvk gkxk blfy, cjlk mUgku etkd cuk, j[kkA e 'kekrk Fkk lkp djA ij e> vnktk gvk d Mke dk vlj cgr xgjk gk ldrk g vxj bEi'ucy fdLe dk tgu gA

mlh teku e Ldy e gekj nkLr Fk vtht gkfen enuh] ge nkuk jk;ij d FkA gkfen d ;gk e'kk;j gkr Fk] mud okfyn 'kj dgk djr Fk] T;knkrj etgc dA bdcky dk cgr vlj FkkA dN Åph fdLe dh tcku bLreky djr Fk vkj cgr xt xt l e'kk;jk e rgrYy¶t cMk vPNk i<r FkA mud lkgctkn tk Fk vtht gkfen enuh ok ikfdLrku e] ckn e tkdj cgr tku eku 'kk;j fudyA ge nkuk u ,d lkFk 'kk;jh 'k: dh Fkh vkj ,d lkFk ukVd e Hkh vk, FkA ckn e mudk ukVd dk lkFk NV x;k vkj ejk lkFk ugh NVkA 'kDlih;j d fdx tku dk ,d lhu Fkk ftle fil vkFkj dk fdx tku dk gDe gvk d mldh vk[k QkM nh tk,] ml v/kk fd;k tk,A vkFkj gcV l byrtk djrk g d vxj rEgkjh vk[k e ,d tjk lk tjk iM tk, rk rEg dlk egll gkxkA tjk lh rdyhQ Hkh vk[k cjnk'r ugh djrh g vkj re rk ejh vk[k QkMu vk, gk] oxjk&oxjkA cl ok ing feuV dk lhu Fkk vkj mle e> buke feyk FkkA ej Qkjlh d Vhpj ej cgukb Hkh Fk] ekLVj ekgEen blkd] ok ik- tkon efyd d okfyn FkA mUgku ,d ukVd fy[kk Fkk *xkgj blykl mQ ikfy'k okyk* mldk e ghjk FkkA vtht gkfen enuh ok ljijLr vkneh Fk ftUgku ml ikfy'k oky dh ljijLrh dh vkj ckgj Hktk rkyhe fnykb] oxjk&oxjkA mle fgnk;rdkjh] gekj ,d Vhpj Fk] fMy ekLVj leh mYyk] ok ckMh fcYMj Fk vkj Mke dk igyk fQdjk Fkk d ^^nfu;k] eDdkj vkj vcyk Qjc nfu;k** vkj ekLVj lkgc tk mldk MkbjDV djr Fk ok dgr ; gkFk b/kj j[kk] m/kj n[kk vkj fugk;r ek;lh d lkFk dgk ^^eDdkj vkj Qjch nfu;k**A ml oDr e> ok cgr vPNk yxk Fkk yfdu tc eu ml ij ckn e xkj fd;k rk e> glh vkrh jghA yfdu igyh rkyhe MkbjD'ku dh mul gh feyhA dkyt d fy, ukxij x;kA ccb igpk vyhx< l Qkfjx gkdjA Qkfjx D;k] ogk ,d lky gh jgk

mn d flyfly eA mn eu e teu ugh fy;k Fkk dHkh Hkh] ; lkp djd ; rk gekjh viuh tcku gA ; Hky x;k Fkk d ^^vkrh g mn tck vkr]vkr]** ;g eu xyrh dh FkhA nljh xyrh dk ,glkl ; gvk d eu oLVu fQyklQh yh Fkh ch-,- eA [kklrkj ij bxfy'k yh FkhA eu ; lkpk d ; nljh tcku g vkj bl tcku dk gkfly dju e T;knk dkfo'k dh t:jr gA pukp bll tk Qk;nk gkxk mlI NkMuk ugh pkfg, vkj bl tcku e ch-,- djuk pkfg,A ckn e tc lLÑr d ukVd i< rk e> [k;ky vk;k d eu onkfrd fQyklQh D;k ugh yh D;kfd bu ukVdk dk rkYyd onkr l gA

ccb igpu d ckn db phtl eu dhA jfM;k e 'kkrk vklV vk;k djrh Fkh] Dykfldy xku d flyfly eA cky x/ko vk;k djr Fk] mudk luu dk brQkd gvkA eu ; Hkh n[kk d cMh Qjekb'k gb d ckyx/ko fQj mrj ep ij] ok fjVk;j gk pd FkA mudh me 70 lky dh Fkh] tukuk ikV fd;k djr FkA rk ykxk dh Qjekb'k ij ok LVt ij mrjA e n[ku x;k d ,d vkneh ftlld pgj ij >fj;k g] dej vPNh [kklh ekVh] iV Hkh Fkk] bld ckotn bru lcd] bru uktd vnkt l tjk&tjk l b'kkj e] lkMh igu d bruh [kcljr vnkvk l ,d vkjr dk jky fuHkkrk g vkj xkr Hkh jgA ,dt l;kyk ukVd FkkA cgr e'kgj Mkek gA ,d ejkBh y[kd tk 35 lky dh me e ej x;k Fkk] mI u fy[kk FkkA cgr gh VyfVM jkbVj FkkA mIdk ukVd ,d 'kkgdkj gA Fkhe Fkh 'kjkcuk'khA cgr MkefVd ly gA nxk [kkV dk] eDcFk LVt ij n[kkA ekjokMh fFk;Vj e ikQ'kuy xtjkrh ukVd gkr Fk] ok n[kkA tgk ij pk; fcdrh Fkh vkj phuk ckneke djd ok exQyh cpr Fk chp&chp eA ifÎ;k i cBr Fk ykx] vkoke dk fFk;Vj] QDdMiu dk fFk;VjA cpiu e tk ^^fcx VV** gkrk Fkk] mle n[kk vkj eo dju dk fFk;Vj] tk Mjk ydj pyk djr Fk] mud vnj Hkh ;g dfQ;r n[kh FkhA ckn e tc lu 72 e vQxkfuLrku x;k rk ogk bl fdLe dk fFk;Vj rok;Qk dk vkj dN enk dk] ok Hkh n[kkA mle flQ rok;Q gvk djrh Fkh mI oDrA gekj ;gk ij Hkh ;g nLrj jgk g fd fFk;Vj d vnj cgr&lh e'kgj xku okfy;k tk rc rok;Q Fkh] ok jgrh FkhA cgr cf<;k xku okyh vkj ogh lc ckn e fQYek e vkbA ; lc n[kk vkj lkFk&lkFk bIVk] vUteu rjDdhi ln elfUuQhu vkj mudh egfQyA ftue cUu Hkkb Fk] ljnkj tkQjh] eerkt glu] flCr glu] fd'ku pn] jktn flg cnh] bLer pxrkbA ; reke ykx brokj d fnu cUu Hkkb d ?kj] ekykckj fgYt ij tek gkr FkA dHkh dkb ub dgkuh] dHkh dkb uTe] dHkh xty] dHkh dkb edkyk vkj mI i eckfglkA ; lkj vljkr FkA nlj mLrkn Fk ej fu;kt gnjA fUk;kt gnj l eu blykg dcy dh gA mUgku e> dN b/kj&m/kj b'kkj fd, gA mudh dN fgnk;r e> vHkh Hkh ;kn g& ^^xkrk g r] yk[k vPNk xkrk gkxk] yfdu xk dj 'kj er dgk djA igy i[rk pLr 'kj ckdk;nk fQdj d lkFk dg yk] fQj mIdh /ku tekvk vkj ftruk th pkg xkvk**A

e> egl l gvk d fcYdy lgh dg jg FkA blfy, d cgr ue iM tkrh g ‘kk;jh vxj xuxuk dj lkpk tk,A o lc gekj teku d mLrkn FkA

ml teku e ikp&N% , lh cgj Fkh tk ej fy, ub Fkh & ^^ckyh vEek ekgEen vyh dh tku cVk f[kykQr e n nk** blds dN vjkdhu c<k dj eu dkf’k’k dh Fkh] dN u;kiu ink fd;k tk, cgj d vnj vkj mll xtkb’k ink gk u, eteu dhA pukp ,d nk ‘kj tk e> ;kn vkr g e vkidk lukrk g]xkdj

^^vc xtj tk,xk jtk xe dk tekuk j lkFkh]
; v/kjk rk g jk’kuh dk cgkuk & j lkFkh & 2
vk vk xjtr g ckny] pedrh g fctyh peu e & 2
oDr g& vk cuk,x vc vkf’k;kuk j lkFkh & 2
vklek dh cynh ij ruohj [kuh Qjjk & 2
[kkd e fey pyk fQrjr [kljokuk j lkFkhA

v’kd [k dh ljr e xe dh rjtekuh j e>dk xe l D;k yuk]
*ij ejh oQkvk dh ,d ;gh fu’kkuh gA**

bl fdLe dk nkj FkkA bdykfc;r dk] fQjxh n’euh dk vkj lkejkt n’euh dkA mld rgr bl fdLe dh pht dgh tk jgh FkhA bldk ml teku e ljkgk x;kA ejh vkokt dk Hkh] vk’kkj dk HkhA ljnkj tkQjh dgr Fk ge ykx rgrYy¶t oky g] rEgkj vkj et#g d ikl xyk g vkj lkxj ekfgj g vkokt dA dHkh&dHkh lkFk gkr g vkj egt viuh vkokt d fcuk ij e’kk;jk yV yr gA db ckj xyr fdLe d ektvkr lkeu vkr g] vki ykx mudk edkcyk djd mUg fcBk nhft, rkfd ge ykx rgrYy¶t e tk ijext ‘kk;jh g] mldk i’k dj ldA pukp gkrk ; gh Fkk & vgenkckn d e’kk;j e FkkMh nj luu d ckn lkxj futkeh cB x, FkA gtkjk etnjk dk etek FkkA lcg rd ljnkj tkQjh vkj dQh vkteh viuh pht lukr jg FkA ; lkj vljkr l e dguk ; pkg jgk g fd fdlh pht dh r’kdhy e] ;k mld vnj l ub ‘kDy fudkyu dk tgk rd loky g] mldk rkYyd dN viuh fnypLih vkj dN viuh lyfg;rk l] cfYd cMh gn rd bu phtk l jgrk gA

‘kj e e> ‘kQd jgk gA xku dh FkkMh&cgr ,gfy;r e>e jgh gA pukp xku ej ukVdk e t:j gkr g vkj eklhdh dk ,d tt jgrk gA vc ; vkj ckr g fd eu mu [k;kykr dh ,d ijh Ldhe cukb tokt d rkj ijA e vPNh lkgcr e Fkk] cMh lkgcr e FkkA c[r dh lkgcr vkj ykd dykdkjk dh fjok;rk d lkFkA yfdu e fdlh

nlj e lfUuQ] Mkekfuxkj ;k fdlh MkbjDVj l ; ugh dgxk d rEg t:j xkuk j[kuk pkfg, Mke d vnjA ;k rEg t:j xhr fy[kuk pkfg, ;k fy[kokuk pkfg,A ok rk viuh&viuh rkQhd] viuh&viuh cl r vkj viuh&viuh dkcfy;rA bu phtk ij bldk bufglkj g] vkj mudh cMh xtkb'k gj rjQ l] gj flEr l gA vxj blku d ikl viuh dN ckr dgu dk g] vkj tk gkykr mldk bn&fxn g] mldh vDdklh] mudh rLohjd'kh] vxj ok tkurk g vkj mle viuh >yd i'k dj ldrk g rk r[kyhd dk vlyh jkt ;gh gA

ej ij lQj e tk ml teku l 'k: gvk ml oDr tk ukVd lkeu Fk& ljnkj tkQjh dk *fdldk [ku] bLer pxrkb* dk *?kkuh ckd]* jktn flg cnh dk *uDy edkuh* A ok lc viu oDr dh dn e FkA *uDy edkuh* e] cnh dh ok reke ckjhd vkj uktd phtk tk cnh dh dgkuh e gkrh g] mle Hkh FkhA tkgjk lgxy u ghjkbu dk ikV fd;k FkkA ok ou ,DV ly FkkA e mud lkFk ikV dj jgk FkkA cyjkt lkguh u MkbjDV fd;k Fkk bIVk d fy,A nljk vlj eu cyjkt lkguh l dcy fd;kA mudk e cgr cMk dykdkj ekurk Fkk] vki Hkh tkur g d cgr vPN vkfVLV Fk gkykfd vki ykxk u fQYe d ek/;e l mUg n[kk gkxkA cgr egnn fdLe dh lykfg;r lkeu vkb g fQYe d ek/;e lA LVt d Åij mudk tk dn dker Fkk ok cgr Fkk vkj mudh vnkdkjh dk ikmiklk Hkh fQYe d vnj ugh vk;k gA e lyu fQYe okyk dk ;g irk gh ugh g fd fdru tcjnLr dkefM;u Fk cyjkt lkguhA fdru lgt vnkt l D;k dkeMh fØ;V djr FkA tl k mUgku *tkn dh dlh* e fd;k Fkk] bIVk dk ukVd FkkA

fo'okfe= vkfny u phuh ukVd dk vuokn fd;k Fkk *nDdu dh ,d jkr*] mle ,d 80&90 cjl dk cM<k g] ftldk cVk gA ryxkuk d iletj ij vMIV fd;k FkkA cVk mldk ej tkrk g vkj ok jkrk gA ,d eghu dh fjglly d ckn u rk e jk ik jgk Fkk] u gh 80&90 lky dk cM<k cu ik jgk FkkA bykgkckn e 1948 e bIVk dh cgr gh lxhu dkÝl FkhA tgk ih-lh- tk'kh d ckn j.kfno dk tekuk 'k: gkrk gA ogk ; ukVd i'k gku okyk FkkA nk ct jkr rd fjglly gk jgh FkhA cyjkt MkbjDV dj jg FkA vkf[kj e mUg cgr xLlk vk;k mUgku [khp d ,d rekpk e> jlhn fd;kA vkj ekjr gh dgu yx&vc jk] rk tkfgj g e> dkb cukoVh jku dh t:jr Fkh ugh] e jk iMkA cky&Mk;ykx cky] eu ckyuk 'k: fd;k] fQj fyiV x, vkj dgk vc ugh HkykxA eu dgk] D;k ; vkid MkbjD'ku dk tnhn rjhdk gA rk dgk gk] bl ely eekjh dgr g vkj rEgkj ely dk ;kn jgxk d dl jkuk pkfg, vkj dl c<ki dk ikV djuk pkfg,A rk nlj x# cyjkt lkguh FkA

,d x# Fkh MUdu jkl cfyu fFk;Vj e] tk ikMD'ku fl[kk;k djrh FkhA MUdu jkl u ; dgk d ikMD'ku dgr g dgkuh dk dg tkukA ; g ikMD'kuA cgr lgt

vnkt lA vHkh rd ej tgu e uD'k gkdj jg x;k d njly dgkuh dk dg tkuk gh dke;kc ikMD'ku gA vkj bld vnj gh reke rke&>ke Nik gvk gA mUgku mldh otkgr djr g, dgk Fkk d tk ph t Hkh dFkkud e jkMk cu dj vk,] ukVd d vnj] mldk Qd nhft,A fdruh Hkh fnyd'k] fdruh Hkh [kcljr D;k u gkA pkg ok fyckl gk ;k E;ftd gk] ;k lV gk ;k ykbfVx gkA ,lh tk ph t xj t:jh yx] tk ck/kk cu] jkMk cu] n[kyvnkth dj] ml fudky nkA pukp tc e *feÍh dh xkMh* ij xkj dj jgk Fkk rk ml d vnj tk rlyly g] e mld dkxt ij ikM;l dju e yxk gvk g vkj ok dgkuh dgh u dgh vVd tkrh gA ckjknjh e dkf'k'k dh] vkQ lV cuk,] vkf[kj e tkdj cl ,d pcrjk jg x;k ftle ok dgkuh ?kerh jghA de l de nk cjl dh ,Dljlkbt d ckn e ,d xky pcrj ij igpk FkkA

c[r d ckj e 1955 rd e> dN ugh ekye Fkk] eu ugh i<k FkkA bXy.M tku d ckn eu i<kA lLÑr d ukVdk l ejk viuk dkb erkvyk ugh Fkk] flok; 1954 d tc ngyh e eu vxth e ukVdk d rjte i< rk cgr xgjk vlj mudk gvkA ckn e c[r d ukVdk dk cgr xgjk vlj gvk vkj mll Hkh T;knk tc eu cfyu tkdj mud cM 'kkgdkj& *dkdf'k;u pkd lfdy] enj djt* oxjk&oxjk] vkB ,d eghu jgdj n[k] rk mll cgr xgjk vlj dcy fd;kA ble c[r vkj lLÑr d ukVd l eu lh[kk d vkt rd ftruh rkjh[k fy[kh xbl g exfjc e] rgthc dh] renUu dh ;k vkV dh] Quu dh ok lc ;uku l] fel l ;k jke l 'k: gkrh gA fel dk uke yr g D;kfd ;uku l mldk rkYyd FkkA yfdu dHkh phu dk ftØ ugh vkrk] dHkh fgnLrku dk ftØ ugh vkrk] bjku dk ftØ Hkh cgr de vkrk gA rk bl ij ejh rch;r cgr >Yykrh Fkh d ; D;k rek'kk g\ lkjh rgthc vkj renUu tk g ok lc dk lc ;jki l gh 'k: gvk vkj ;jki ij gh [kRe gvkA vkj ge xyke eYdk d tk ykx g flok, mul lh[ku d gekj ikl dN ugh jg x;kA lLÑr d ukVd i<u d ckn e> vnktk gvkA gekj ifMrk u cgr fdrkc fy[kh g ij fdlh u Hkh vjLr dh rhu ;fuVht& Vkbe] Li l vkj ,D'ku dh rjQ b'kkjk ugh fd;k gA Hkjr efu d ^^ukV;'kkL=** e doy ,d ;fuVh ^^jl** ekt n gA rk ;g cgr cMh ckr FkhA blhfy, lLÑr d ;ukVd e> e[rfyQ yx gA cgr gh NkV yfoy ij vxj dgk tk, rk e ; dgxk d ;uku d tk Dykfld l g] ftue rhuk ;fuVht edEey g] mu e lc l vPNh felky *bMhil jDl* dh g d ftldk fdLlk ; g d mlu viu cki dk ekjkA viuh ek d lkFk 'kknh dh vkj nk cPp ink fd,A ml 'kd gku yxrk g rk cgr bf'r;kd vkj bufgekd l iNrk gA ok ekye djuk pkgrk g vkj vk[khj rd iNrk gA tc ekye gk tkrk g rk viuh vk[k QkM dj fudy tkrk g vkj mldh choh tkdkLVk viu vki dk Qkl h p<k yrh g vkj ej tkrh gA rk bld vnj edke ogh gA ftl oDr ; gk jgk gA

,D'ku vk[khj e g vkj ok vki d lkeu gA ;fuVh bl l T;knk ijQDV ugh gk ldrhA gekj ;gk ; ;fuVh ugh gA *feVVh dh xkMh* e ;g g d ^^vkjr dh yk'k iMh g D;k** rk 'kk/kud rjr tokc nrk g ^^e gk vk;k ogk] ,d vkjr dh yk'k iMh gA** ble tk exfjch uDdkn g mUgku crk;k d ge ukVd fy[kuk ugh vkrk FkkA rk egkdk0; fy[ku oky bru cM r[kbmYy oky] bru cM 'kk;j tl dkfynkl] Hkkk"k] g"ko/ku oxjk&D;k bud ikl bruh vDy ugh Fkh d ,d&vk/kk fQdjk fdlh dk n nr vkj ge ; eku yr d ,d ?kVk ;k vk/kk ?kVk ftruk yxrk g vku&tku e ok chr x;kA bld ihN ; gh jkl dh fFk;kjh Fkh d dgkuh e >ky u vk,] vki dk eryc dFkkud l gA dgkuh ; g& vkjr dh yk'k iMh Fkh** iN jgk g ,d vknehA tokc feyrk g] ^^gk iMh gA** fdLlk vkx c< tkrk gA vkidk bl l D;k yuk&nuk d fdruk oDr xtjk vkj D;k gvkA vkf[kj dgkuh fy[ku okyk rk ,d nk fQdjk e ijh lnh dk c;ku dj ldrk g d lnh e ; gvk FkkA rk ; eku dj py FkA mldh cktx'r gekj ifMrk e feyrh g vkj ok ,d fdLe dh vikykth i'k djr g d gk ge ykx MkekVth ugh tkurA rk ; xyr FkkA ekQ dhft,xk e VDuhdfyVh e blfy, tk jgk g d fo"k; gh dN ,lk g Mke dk vkj blh otg l e ;gk cyk;k x;k g vkj e> bld ckj e ckr djuk eukflc yx jgk gA mn e Hkh bl phtt dh deh jgh g d bu fjok;rk dk erkvyk xgjkb l djd mll Qk;nk gkfly djA

vc ; tk ;ukuh Dykfldh ukVd g bu e dgkuh 'k: l u 'k: gkdj vk[khj l 'k: gkrh g] ihN eMrh g] ekth dk ftØ djrh gA ,lk&,lk gk pdk g] ,d tekuk igyA cPpk gvk Fkk mldk cDl e cn djd ikuh e Mky fn;kA ok cMk gvk vkj vUtku e ,Fkl 'kgj vk;k viu cki dk ekjkA ogk nLrj Fkk d tk jktk thrrk g ok gkj g, jktk dh choh l 'kknh dj yrk gA pukp vutku e viuh ek l 'kknh dj yrk gA ,Vhxuh ink gkrh g] vk[khj e ukVd ,d cMk dne yrk gA exj mld igy ,D'ku dN ugh gA lkjk eoeV ihN dh rjQ gA bclu u tk u;kiu ink fd;k viu ukVdk e 19oh lnh d vk[khj e] ok viu igy oky ukVdk dk NkMdj mlu xhd Dykfldy LVDpj dk vlj dcy djd gh fy[k gA dy ckjg ukVd gA *?kkLV* lcl vPNh felky gA *,fueh t vkQ ihiy] ,MkYQ l gkm l] okbYM Md*] mu lc e ,d ekth g] tk xtj pdk gA vkj mld vlj e fdjnkj n[k tk jg gA /khj&/khj ekth dh ijr [kyrh g vkj vnktk gkrk g d D;k dN gk x;kA *?kkLV* e ekye gkrk g d yMd d fnekx ij vlj gA ok tc dkyt d teku e ckgj x;k Fkk rc vkokjkxnh e viuh eytek d lkFk mldk ekeyk py jgk FkkA mld cki dk Hkh fdjnkj lkeu vkrk gA mldh Hkh [kjkfc;k g vkj pukp ,d ftUlh chekjh dk f'kdkj cPpk gk tkrk gA bldk vlj mld fnekx ij gkrk gA vk[khj e tjk&lk ,D'ku g& mldk ?kj ty tkrk gA yMdk

ijk ikxy gk tkrk g *n lu] n lu* dgrk gA ok ukVd dk vk[kjh Mk;ykx gA 'kDlfi;j d ;gk dFkkud 'k: l 'k: gkrk g] chp e tkrk g vkj vtke rd igprk gA ogh gekj ;gk Hkh g] vkj bld vnj jl dh ,d ;fuVh gA

vc tk dkb ;g dg d eu bl reke lQj e rtjck l D;k gkfly fd;k] rk ej [k;ky e nk&rhu phtk d flok, e dN ugh dgxkA ,d rk ;gh d dgkuh ctkM egll gk 'k: l vkf[kj rd vkj mldk flyflyk tkjh jgA *feÍh dh xkMh* e fon"kd ckj&ckj olrlukk d vkxu l xtjrk g vkj ckj&ckj pkd ij euknh gkrh g tc pk:nÙk dk lyh ij p<ku d fy, y vkr g] rk ckj&ckj ogh vyQkt vkr gA e> bld ckotn ml i<u e yRQ vk;k FkkA vkj e ;g xkj djrk jgk d nkgjku dh t:jr D;k egll gb gkxhA ejk d;kl Fkk d vxj gekjh Dyklhdh eklhdh dk tk vnkt g ftle ,d feljk] ,d cky ;k nk ykbu jkr Hkj xk;d xkrk jgrk g vkj mldk tkn dk;e jgrk g] lek cuk jgrk g] rk bldh otg xk;d dh xydkjh & ftle reke dfQ;rk dk btgkj g& gkrh gA ml dk rkYyd vyQkt l de vkj vkokt l T;knk gA mldk ckj&ckj nkgjku l ,d xgjkb ink gkrh g vkj vlj c<rk tkrk gA bll nkgjku dh dyk ij xkj dju dk ekdk e> feykA rk ctkM dgkuh d ,d lhu dh jhy dh rjg mld vnj #dkoV ugh vkrhA tc *feÍh dh xkMh* i<k tk jgk Fkk rk ;g igy ugh lkpk Fkk d bldk dl i'k djA ,lk dgh ugh yxk d dgkuh #d jgh gk] VV jgh gkA vxj vki bu phtk ij gh xkj dju cB tk, rk vki t:j >ey e iM tk,xA tl d vefjdk dh ,d [kkru iM xb FkhA mUgku *feÍh dh xkMh* dk ckVuk 'k: fd;k rk chfl;k lhu fudy vk,A elyu lMd ij] tvkjh ihNk dj jgk g] ?kj d vnj] cpu d fy, fQj ckgj vkj u tku D;k&D;kA mUgku U;;kd e irk ugh dl bl ukVd dk i'k fd;kA dFkkud d VdM&VdM dj MkyA

rk ctkM dgkuh] mldh jokuh dk;e j[k ikuk] xhrk dh vgfe;r ejh 'kk;jh dh otg l vkj FkkMh cgr l>c> tk e> e Fkh eklhdh dh] mld ukr vkj c[r l tk bfLij'ku e> feyk mll] eu ;g lh[kkA

yfdu eu viu ykd fFk;Vj ;k ngkrh fjok;rk e ;g n[kk d ogk ij dVkfyLV vkj fdfVdy bUVo'ku ;k Mke dh ixfr] tk dgkuh dk vkx c<k,] ,lh dkb pht ugh gkrhA l/kkjoknh fdLe dh pht t:j gA ,d pht cjh g rk mldk NkM nuk cgrj gA cjh vknrk dk NkM nuk pkfg,A 'kjkc ihuk cjk g] 'kjkc ihuk NkM nkA ; dke rk ekgrflc dk g] Qudkjk dk ugh gA Qudkj d ikl nlj rjhd g] dgu d fy,A vxj ok ; fn[kkrk g d ;g cjk g rk ok Hkh ,grlkc d :lk e ugh dgxA ok viu b'kkj&fduk, l ,lh ckr dgxk d vki viu urht ij [kn igp yA dkb ipkjd :i] rcyhdh vnkt mld ikl ugh g] vxj Qudkj g rkA *pjunkl pkj* e ,d xhr ykd

dfo u fy[kk gA exj ykd dfo ,l k u fy[k ikrk] u dg ikrk vxj e mldh jguekbl u djrkA eu dgk ;g er dgk d cjh vknr NkMkA ;g dgk fd ftl rjg 'kjkc dh yr iM tkrh g ;k t, dh yr gk ;k fQj vxj lp ckyu dh yr iM xb g rk NVxh ugh] bruk dg dj pi gk tkvkA pukp bl rjhd l xkuk vkrk g] ;g eu c[r l lh[kkA ,d xkuk *pjunkl pkj* dgrk g & luk&luk luokbl pjunkl pkj ugh gA vxj cM&cM frtkjh okyk dk rkyk [kkyk rk mle l pkj fudyxA pjunkl rk xjhck e ckVrk gA ok pkj ugh gA nljk xkuk iMkfl ;k l dgrk g viuk lkeku lHkky dj j[kk cMk Hk;kud pkj g] gj ,d pht pjk yrk gA cpk Hkkxk] pkj vk jgk g] pkj vk jgk gA c[r d ;gk Hkh tDLVkikth'ku e gA ,d pht dk nljh pht l ,d b[rykQ i'k djuk rkfd rhljh dfQ;r n[ku oky vkj luu oky d tgu e ink gk vkj ok [kn viu urht i] rhlj urht i igp d vkf[kj gdhdr D;k g\ gdhdr dk n'kdk rd igpkuk Qudkj dk dke gA vc rhljh pht ok g& ykd fFk;Vj ijijkvk dk brtkktA eu ;g n[kk d ftUg 'kkL=h; fjok;r dgr g ok ,d txg tkd VV tkrh gA dbl lk lky igy lLÑr ukVd fy[kuk vkj bldk djuk cn gk x;k FkkA rlyly vxj dk;e jgk g rk flQ bykdkb] ngkrh fjok;r tk fFk;Vj e g mUgh e gA

rk e> ; [k;ky gvk d jl dh fFk;kjh dk vlj xko dh fjok;rk ij Hkh gA ogk d jxep ij Hkh g] rk fQj mldk ukrk feyk gA ok viuh reke cnyh gb : ij[kkvk d lkFk ge rd tk igpk g] rk ftnk g] vkj mle rCnhyh dh xtkb'k gA dYpj dHkh #dk gvk ugh gkrk gA bl flyfly e ckyh dh vgfe;r gA mn vkj fgnh dh db 'kk[kk, gA Hkktijh] cnyh] c?kyh] ekyoh] NÙkhlx<h] vo/kh exj LVMM vkj lc&LVMM d pDdj e gekjh tk ikfylh jgh g] ok lc&LVMM dk ijh rjg l utj vnkt dj nrh gA vc bl pDdj e utjvnkt dku&dku gkrk g\ dchj utjvnkt gkr gA rylhnkl ,d dku e Qd tkr g] ehjkckbl dh dkbl gfl;r ugh] fo|kifr dgh vkjA flok, ,d tckuh tek[kp vkj rkd e j[kdj i tk dju dA mUgku ge vYQkt fn,] 'kCnkoyh nh] lkpu dk ,d u;k vnkt vkj u, ek tvkr i'k fd,] ftud vnj vkx gA vxj mlu vkx dk noRo inku djd rkd i j[k d mldh i tk] ijfLr'k e yx tk, rk ekeyk BMk iM tkrk gA ojuk dchj e rk cgr gh bdykch vkx gA bl vkx l cpu d fy, ,d gh rjhdk cgrj g dchj dh i tk djkA lr dchj dguk cgrj g cfuLcr bld d ml bdykch dgA ble xV ;k fyfVy VMh'ku dh Hkh ckr vkrh gA ;g vthc pDdj g d bl Hkh ifMrk u nk ijijk, cuk d j[k fn;k gA lLÑr Hkk"kk e dgr g & ykd /ke vkj ukV; /ke] ykd/keh vkj ukV;/kehA 1954 e tc eu *feÍh dh xkMh* i'k fd;k rk ifMrk u dgk ukV;/keh dk reu ykd/keh e Mky fn;kA eu dgk d Hkb iglu g] dkeMh g] Qkl g] mle cgr l fdjnkj g tk lMd Nki g]

tvkjh g] pkj g] yQx g] QDdM fdLe d ykx gA exj dgu yx ^ukVd ukV;/ke e g vkiu ykd/ke e fd;kA NÙkh lxf<;k dk ydj vk, vkj mul djok;k**A ml oDr e N% vknfe;k dk ydj vk;k FkkA ; pDdj vthc gA uthj d lkFk Hkh ;gh tYe gkrk jgk gA tcku d flyfly e vkj bCr tky d ukrA

ekyoh vCny gd] bru eDrk&pDrk vkneh] eLrfdy ijgtnkj] ikp&oDrk uekth] bru cM vkfyeA mudh fnekx dh dekfu;k bruh [kyh gb Fkh d ok ehj ;k uthj dh [kkukijh dju cBr Fk rk dN vYQkt d bLreky ij [kkukijh djr jgr FkA ,d teku e ok ,d fjlky fudkyr Fk ccb;k tcku eA mUgku ccb;k tcku d ,d 'kk;j dk n;k¶r fd;k vkj dgk ^^ gj ekuk e bldk dlkVh ij j[k d n[k fy;k gA ;g ccb;k tcku dk QDdM 'kk;j gA reke dk;n&dkuu d erkfcd mlu cgrjhu xty dgh gA xty ; Fkh&

e nk: ihdj vkt xVj e iMyk gA
yQMk fd;k rk e Hkh cMk lj fQjyk gA
dCch rk n[k yuk ckMh l >kd d
e >kM dh rjg lMd ij x<yk gA

rk ekykuk vCny gd gh dk ;g fdLlk Fkk d ,l 'kk;jk dk n;k¶r djuk] mudk Nkiuk vkj mudh tk udkr g] ckjhfd;k tk g] mldh ukf'kxkfQ;k djukA

vc ^bLrykgkr i'kkojkuk* & ;g ,d ,lh fdrkc g ftld cxj e *vkxjk cktkj* ugh fy[k ldrk FkkA blfy, d reke fnYyh dh vkokt ftldk fetk QjgrmYyk cx u tek fd;k g mul bLrQknk gkfly djuk FkkA ekykuk tk dj iNr Fk ekph l] pekj l] yxku cuku oky l d bldk D;k dgr gk reA mldk D;k dgr gk] Qyk itd fy, vkj dku&lk y¶t g rEgkj ikl A i'kojk l iN dj vYQkt d pkj Hkkx fudkyA vc tc Hkh xku fy[ku oky dk ;k dgkuh fy[ku oky dk t:jr gk] vkj ok [kn viu vki ftnxh d bru djhc ugh gk rk ok bl fdrkc d ukr ;g lc dN gkfly dj ldrk gA

rk ; tk gekjk dYpj g bl ge mn e ldkQr] rgthc] rennu Hkh dgr gA yfdu dN y¶t ,l g ftudk cnyk ugh tk ldrkA rk dYpj Hkh ,lk gh y¶t g] mn oky Hkh dYpj dk dYpj gh dgr gA eu dgk bld vnj rk cgr l lLdkj Hkh 'kkfey gA rk fdlh u dgk d bldk eryc rk etgc gk x;kA rk eu dgk d etgc Hkh rk dYpj dk ,d fgLlk gA lkj etkfgc dh tk lkjh fjok;r vkj rkj rjhd g ok Hkh dYpj d vnj 'kkfey gku pkfg,A dYpj lc dk yiV yrk gA mUgku dgk ^^ugh flQ fgn /ke e tk lLdkj g mldk rkYyd y¶t ^lLdkj* l gA** eu dgk ejk [k;ky

, lk ugh gA lLdkj dk eryc g lkgj tk cPp d tUe d oDr xkr g] ;k vkj rkj rjhd] e lyekuk d] fgnvk d] fejkfl ;k d] ; lkj d lkj lLdkj g vkj ; lc dYpj dk ,d fgLlk gA tjkvkr d rjhd] [kkuk&ihuk] igukok] vk<uk ;g lc dYpj gA tMh&cfV;k l ge tk nok, cukr g ; lc gekj dYpj dk fgLlk gA yfdu ftl rjhd l dYpj dk rgk¶Qt gekjh ljdkj dju e yxh g& D;k geu ljf{kr dj fy;k viu dYpj dk\ ,d egdek [kky fn;k g] dN ;kxnku dN vunku n fn;k djr g iQkfex vkVl dkA rk ukp xkuk vkj Mkek gh dYpj ugh gA dYpj egt tcku rd Hkh egnn ugh gA gekjk lkjk rjhd, g;kr] gekjk thu dk <x gekjk dYpj gA rk fQj D;k lj{kk gk jgh g] bl rjg d Vyhfotu uVod d pyr\ Qh ,dll V n eYVhu'kuy puYlA cjcknh eDdey gk dj jgxh dYpj dh] tckuk dh] gj ph t dh vxj ;g nLrj dk;e jgxkA mn d lkFk tk tYe gvk ok rk ge lc tkur gA vc rk cl ,e-,- vkj ih-,p-Mh- d fy, i<ku dk ek/;e gh jg xb gA ,d 'kgj D;k] ,d egYyk Hkh ugh dg ldrk fd ;gk dh tcku mn gA ftruh cjcknh eefdu gk ldrh g] ok dju okyk u dj nhA yfdu [kn Hkh viu ijk i dYgkMh ekju e yx g, gA ckypky dh reke tckuk e pkg ok ejkBh gk] cxkyh gk] fgnh gk mul lkr fey g, gA fgnh gh dh felky yh tk, d cky&pky dh tcku NkM d ,d rgjhj dh] fyf[kr tcku vyx ink gk jgh g& ljdkjh tckuA vkj Hkh deky dh ckr ;g g fd tk fyf[kr Hkk"kk g ok vc ckypky dh Hkk"kk curh tk jgh gA dgh Hkh] fdlh Hkh tcku e ,lk ugh gvk gA exfjch tckuk e Hkh ,lk ugh gvk d ckypky dh tcku bl dnj nj gV tk, fyf[kr tcku lA gekj ;gk gk jgk g vkj le> e ugh vkrk D;k ,lk gkuk pkfg,A yfdu ; le> e vkrk g fd ckã.kk u dgk d 'kn d dku e lLÑr d 'kCn dh /ofu Hkh u igpA tkfgj g d Vh-oh- d fy, ;k jfM;k d fy, ;k fdlh vkj ljdkjh egde e dke dju d fy, ,d [kkl fMxh D;k u gkfly dj yA mlh rjg dh ljdkfj;r e D;k u 'kkfey gk tk,] tcku d ,rckj l vkj gj nlj ,rckj lA ugh rk vki ckã.k dl gkx\ ml oDr rd vki 'kn gh jgxA pkg vki fdru gh ltukRed D;k u gk\ pukp vki vui< vkneh d gkFk e fjdkMj nr g d re fjdkM djkA ok cMh rktxh ydj vk,xk] vxj mld ikl dYiuk g] r[kbmYy gA rkyhe d futke l xtju d ckn r[kbmYy ink gk] ,lk rk ugh gkrkA gk] rkyhe rk vkidk cgr lkjh [kcljr ph t nrh gA ,d oKkfud nf"V nrh g] ,d nfu;k d ckj e uDr, utj i'k djrh gA dekfu;k [kyrh g vki d fnekx dhA yfdu rkyhe vkidk dYiuk rk ugh n nrhA dYiuk d Åij rky Mky tk jg gA dejk pyku d fy, flok dYiuk d fdlh ph t dh t :jr ugh gA lVykbV Vh-oh- d lkFk&lkFk ;g Hke d ge dYpj dh fgQktr dj jg g] mldh lj{kk e yx g] mldk rgkQt dj jg gA ; reke ph t gA

eu tk nk&rhu pht crkb g ok ejh miyfC/k gb g cl bruk gh gkfly fd;k g eu] bl l T;knk vkj dN ughA rjhd, dkj ejk bikokbt'ku jgk gA mldk nkjkenkj vnkdkj d viu r[kbmYy ij Hkjklk dju l rkYyd j[krk gA etcjh ; Fkh d vui< dykdkjk d lkFk tc lkcdk iMrk g] tl d e> iMk Fkk] rk dkb vkj olhyk jg ugh tkrk Fkk mudh jguekb d fy, flok, bikokbt'ku d! fQj eu n[kk d bikokbt'ku tk cgkyr etcjh] t:jr d ekrgr djokuk iMk ok ,d vPNk [kklk rjhdk gA bll cgr dN gkfly gkrk g vkj Mkek fd;k tk ldrk gA ftl ge lei.k dgr g vkj ftldh ljkguk dh tkrh g vkj ej gh flyfly e cgr l cM vPN&vPN vYQkt bLreky fd, FkA e> rk ;g gh le> e vkrk g d ,d vkneh dk vxj dkb dke dju e yRQ vkrk g vkj ok mldk djrk gh jgrk g rk ljkguk Hkh gk tkrh gA pkg ok pkjh gh gA ohjliu dh felky vkid lkeu g] ,d vthc fcEc vkid lkeu g d ok cMk Hkkjh dkb ghjk gA bll T;knk e> mldh gfl;r utj ugh vkrhA oQknkjh c'kr mLrokjh&; 'kr g mLrokjh dhA ej vuHko l rhu&pkj pht fudyh gA yfdu ;g ,lh ugh d e dg d ; ,d uL[kk g] rjdhc bLreky fd;k gvk gA vki y yhft, rk vki MkbjDVj cu tk,xA ;k vki Mkekfuxkj cu tk,xA vly e cgr dN pht nk[kyh gkrh gA [kkjth vkj nk[kyh dk tk brtky g r[kyhQ dk bglkc ogh gA pukp gj vkV ,d ek;u e vkRedFkk d leku gA pkg ifVx gk] Mkek gk] uxek ;k xty gkA ; lnkdr vxj c<rh tk jgh g rk mld vnj rjDdh ilnh d lkj igy 'kkfey gA eu vki dk viu 'k: d 1945&48 d teku dh ,d nk pht lukbA vkt e ftl rjg dh pht Mke e bLreky djrk g e ml rjDdh iln le>rk gA

mldh felky e vki dk nuk pkgxkA ; n[k jg g uu dk xhr gA

c[r xhr ugh fy[krk FkkA mld xku mldh 'kk;jh dh otg l cgr mEnk gvk djr FkA mu xhrk dk ik;k cgr cyn gvk djrk FkkA e> Hkh ;g Hke g d ejk tk 'kk;jh dk iletj jgk g mld ukr ukVdk d vnj Hkh e 'kk;jh gh djrk g&ulj e Hkh vkj ute e Hkh& rk bl me e gh dg ldrk Fkk ;g pht tk eu dghA ,d ckj fQj ge ml lu ;g fgjek dh vej dgkuh l gA

¼fnYyh fo'ofo|ky; e 0;k[;ku] 31 vDVcj 2000½

चौथी दीवार के आगे

शमा ज़ैदी

पिछले कुछ दिनों में मैं, 1954 में हबीब तनवीर के साथ अपनी पहली मुलाकात के बाद से, लंबे अर्से में बिखरी उनकी छवियों को याद करती रही हूं। यह ऐसे ही है जैसे आप धुंधली तस्वीरों वाले किसी पुराने खानदानी अलबम के पन्ने पलट रहे हों। मैं हबीब को अपने परिवार के तीन लोगों के साथ उनके रिश्तों के जरिए जानती थी, जो अलग-अलग वक्त पर उनके जीवन में महत्वपूर्ण रहे थे। इनमें पहले थे मेरे झक्की चाचा जुल्फिकार बुखारी, जो आल इंडिया रेडियो के बंबई स्टेशन के डाइरैक्टर थे। 1954 में हबीब अपनी एम ए की पढ़ाई बीच में छोड़कर अलीगढ़ से मुंबई चले आए थे, एक अभिनेता के रूप में बंबई फिल्म उद्योग में जुड़ने के लिए। जुल्फिकार मामू ने उनसे प्रोड्यूसर तथा अभिनेता के रूप में आल इंडिया रेडियो के लिए काम करने के लिए कहा था। मैं नहीं जानती कि यह काम करते हुए हबीब ने रेडियो प्रसारण के बारे में कुछ सीखा या नहीं, लेकिन एक अभिनेता बनने की भूख इससे जरूर बढ़ गयी। और जुल्फिकार मामू के प्रभावित हुए दूसरे बहुत से लोगों की तरह, हबीब ने ठहर-ठहरकर बोलने की उनकी संवाद शैली अपना ली। यह ऐसी चीज थी जो उन्होंने जीवन भर बनाए रखी। कुछ अर्से तक हबीब ने मामू की ''अफ्रीकी'' केश सज्जा को भी अपनाए रखा। बहरहाल, रेडियो में उनका काम करना ज्यादा नहीं चला क्योंकि जुल्फिकार मामू ने 1947 में पाकिस्तान चुना और अपने शहर लाहौर लौट गए। अब हबीब ने तरह-तरह के काम हाथ में ले लिए, फिल्मों के लिए तथा विज्ञापन के लिए लिखना, विभिन्न पत्रिकाओं का संपादन करना और एक अभिनेता बनने के लिए 'स्ट्रगल' करना।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अपनी पीढ़ी के दूसरे बहुत से लोगों की तरह हबीब भी वामपंथी राजनीति से प्रभावित हुए थे और तब से लगाकर हमेशा उनके राजनीतिक

रुख की यही पहचान रही। यह दूसरी बात है कि उन्होंने पार्टी का कार्ड मिलने के कुछ ही बाद, उसे छोड़ भी दिया था। हबीब के बंबई पहुंचने से कुछ ही पहले, इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) की स्थापना होकर चुकी थी। उन्होंने फौरन उसकी गतिविधियों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। वे ऑपेरा हाउस के निकट एक हाल में रिहर्सल किया करते थे और हबीब ने बलराज साहनी तथा दीना पाठक द्वारा निर्देशित नाटकों में काम किया था। मुझे याद है कि उन्होंने मुझे बताया था कि किस तरह वे जेबकतरे और पुलिसवाले की लड़ाई का स्वांग कर के नुक्कड़ नाटक खेला करते थे। यह तमाशा देखने के लिए जो दर्शक जमा होते थे उन्हें इसका पता ही नहीं चलता था कि वे नाटक देख रहे थे और जब तक उन्हें इसका पता चलता था, असली पुलिस भी पहुंच लेती थी और अभिनेता गायब हो जाते थे। जब कम्युनिस्ट पार्टी पर पाबंदी लगायी गयी, इप्टा के कई सदस्यों को जेल में डाल दिया गया या वे भूमिगत हो गए। 1948–50 के दौरान संगठन को चलाने की जिम्मेदारी हबीब पर ही थी। इसके बाद, रणदिवे की कट्टर लाइन ने थिएटर में कुछ भी मानीखेज करना नामुमकिन बना दिया और यह ग्रुप करीब-करीब निष्क्रिय हो गया।

बंबई में हबीब ने **बंबई यूथ लीग** के अंगरेजी मुखपत्र (पत्रिका) का संपादन किया, जिसे उन्होंने मुंबई के फुटपाथों पर बेचा भी। इस उद्यम में उनके शुरूआती सहायकों में से एक, मेरे पति एम एस सथ्यू, मुझे हबीब से जोड़ने वाली उस तिकड़ी के दूसरे व्यक्ति हैं। सथ्यू अपनी पढ़ाई पूरी किए बिना बंगलौर से भाग आए थे और 1951 में बंबई पहुंचे थे। बंबई में वह दो लोगों को ही जानते थे, ख्वाजा अहमद अब्बास और हबीब तनवीर। हबीब एक फिल्मी अखबार का भी संपादन करते थे, जो सथ्यू ने बंगलौर में देखा था। सथ्यू ने हबीब को खोजा और उनमें दोस्ती हो गयी। वे चर्च गेट के निकट एक फ्लैट में साथ-साथ रहने भी लगे।

चूंकि इप्टा बिखर गया था और फिल्मस्टार बनने की हबीब की कोशिशें कामयाब होती नजर नहीं आ रही थीं, उन्होंने बंबई छोड़ने का तय कर लिया।

1953 में हबीब और सथ्यू, श्रीमती एलिजाबेथ गौबा के मोंटेसरी स्कूल में क्रमश: नाटक तथा कला पढ़ाने के लिए दिल्ली चले आए। इंदिरा गांधी, श्रीमती गौबा की घनिष्ठ मित्र थीं और जब हबीब इस स्कूल में पढ़ाते थे, इंदिरा गांधी के दोनों बेटे यहां पढ़ते थे। सथ्यू और हबीब स्कूल परिसर में ही रहते थे और श्रीमती गौबा के परिवार का हिस्सा ही बन गए थे। उनके मित्रों का लंबा-चौड़ा दायरा था। इनमें मेरी मां, बेगम कुदैसिया जैदी भी शामिल थीं, जिन्हें एक पेशेवर थिएटर ग्रुप बनाने के लिए उत्साहित करने में हबीब कामयाब हुए। मेरी मां लाहौर में पली-बढ़ीं थीं और उनके जीजा अहमद शाह बुखारी (जुल्फिकार मामू के भाई) उन पहले लोगों में से थे, जिन्होंने इम्तियाज अली ताज के साथ लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में, जहां वह अंग्रेजी साहित्य पढ़ाया करते थे, आधुनिक नाटक किए थे। बेगम ज़ैदी और हबीब ने तय किया था कि वे योरपीय क्लासिक नाटकों और

संस्कृत नाटकों के रूपांतर पेश करने से शुरूआत की जाए। उस समय तक शांकुतलम के अलावा संस्कृत नाटक, हिंदी-उर्दू थिएटर के लिए अपरिचित ही थे। बेगम जैदी खुद अनेक नाटकों का अनुवाद करने में भी जुट गयीं।

इसी बीच जामिया के कुछ मित्रों ने हबीब से अनुरोध किया कि उन्होंने एक नया ग्रुप बनाया था, उसके साथ नाटक करें। 1954 में उन्होंने **आगरा बाजार** लिखा। यह नाटक उन्होंने ग्रामीणों के एक ग्रुप और जामिया के शौकिया अभिनेताओं के साथ किया। इसके बाद, प्रेमचंद की कहानी को आधार बनाकर, **शतरंज के मोहरे** तैयार किया गया। सथ्यू ने इस नाटकों को डिजाइन किया था और उनकी लाइटिंग भी की थी। बाद में वह चेतन आनंद के साथ काम करने के लिए बंबई लौट गए।

1954 की सर्दियों में मेरी मुलाकात हबीब से हुई थी, जो मेरे माता-पिता से मिलने आया करते थे। उस समय मैं मसूरी में एक बोर्डिंग स्कूल में नौवीं कक्षा में पढ़ती थी और सर्दी की छुट्टियों में घर आयी हुई थी। मैं बहुत जबर्दस्त तरीके से हबीब पर लट्टू हो गयी, जिस पर वह जरा सा मुस्कुराए भी थे। मैं बसंत में अपने स्कूल लौट गयी और उसी साल बाद में हबीब इंग्लेंड चले गए, लंदन में रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामाटिक आर्ट्स में अभिनय सीखने और बाद में ब्रिस्टल के ओल्ड विक थिएटर स्कूल में निर्देशन सीखने। भ्रमण और अध्ययन करते हुए कई महीने गुजराने के बाद, जिसके दौरान उन्होंने पूरे योरप का दौरा किया था, 1958 में वह भारत लौट आए। इस दौर में से आठ महीने उन्होंने बर्टोल्ट ब्रेख्त द्वारा स्थापित थिएटर, बर्लिनेर एन्सेंबल के नाटकों का अध्ययन करते हुए बिताए थे।

ब्रेख्त के असर से उन्होंने वह सब भुला दिया जो इंग्लेंड में सीखा था। उन्होंने ब्रेख्त के सूत्र को दिल में बसा लिया था कि नाटक में मजा आना चाहिए, जैसे म्यूजिक हॉल में आता है या फुटबाल में। कुछ ब्रेख्तीय अवधारणाओं को तो वह पहले ही **आगरा बाजार** तथा **शतरंज के मोहरे** में आजमा चुके थे, जो उन्होंने ओखला थिएटर ग्रुप के साथ किए थे। बहरहाल, बर्लिनेर ऐन्सेंबल के उदाहरण ने उन्हें इसके लिए उत्प्रेरित किया कि गीत तथा नृत्य का उपयोग नाट्य शैली के ही हिस्से के तौर पर किया जाए। उस समय तक इप्टा के मराठी तथा गुजराती नाटकों में लोक शैली का उपयोग चलन में भी आ चुका था। लेकिन, हबीब से पहले हिंदी-उर्दू थिएटर में ऐसा कोई प्रयोग नहीं हुआ था।

इस समय तक मेरी अम्मी हिंदुस्तानी थिएटर कायम कर चुकी थीं और दो नाटक, **शकुंतला** तथा **खालिद की खाला** खेले जा चुके थे, जो दोनों ही मोनिका मिश्रा के निर्देशन में खेले गए थे। अब हबीब ने **मिट्टी की गाड़ी** के नाम से (अनुवाद मेरी अम्मी ने किया था) शूद्रक के मृच्छकटिकम् की संगीतमय प्रस्तुति करने का फैसला किया। जब नाटक की स्क्रिप्ट को तराशा ही जा रहा था, हबीब अपने परिवार के लोगों से मिलने अपने घर रायपुर चले गए। वहां उनकी भेंट छत्तीसगढ़ की **नाचा** शैली के लोक कलाकारों से एक ग्रुप से हो गयी और वह उनसे इस कदर प्रभावित हुए कि उन्हें **मिट्टी की गाड़ी** में

अभिनय करने के लिए अपने साथ दिल्ली ले आए, जहां उन्हें हिंदुस्तानी थिएटर के पूर्णकालिक अभिनेताओं के साथ काम करना था। इस प्रोडक्शन के लिए गीत लिखने के लिए सथ्यू ने नियाज हैदर को बंबई से बुला लिया। हबीब को वक्त की पाबंदी के हिसाब से कुछ भी लिखकर देने के लिए बाबा नियाज को कभी धमकाना पड़ता तो कभी फुसलाना पड़ता। बहरहाल, आखिरकार स्क्रिप्ट बहुत शानदार बन गयी। दिल्ली के नाटक दर्शकों के लिए यह नाटक में पूरी की पूरी क्रांति थी। आलोचकों ने इसे संस्कृत क्लासिक नाटक का अपमान करार दिया था, लेकिन दर्शकों को नाटक पसंद आ रहा था।

आगे चलकर सुरेश अवस्थी, जो इस प्रोडक्शन के सबसे मुखर आलोचक थे, नाटक की हबीब की नयी शैली के भक्त ही हो गए। इस नाटक में लोक कलाकारों के उपयोग को लेकर मेरी अम्मी का हबीब से जबर्दस्त झगड़ा हुआ था। गर्मा-गर्मी में ही उन्होंने हिंदुस्तानी थिएटर छोड़ दिया, अपना अलग ग्रुप बनाने के लिए। मोनिका मिश्रा, जो शुरू में हबीब को अपने से ऊपर रखे जाने से नाराज थीं, इस बीच हबीब से प्यार कर बैठी थीं और वह भी हबीब के साथ हिंदुस्तानी थिएटर छोड़कर चली गयीं। तब तक मैं भी स्टेज तथा कॉस्ट्यूम डिजाइनिंग का अध्ययन करने के लिए इंग्लेंड तथा बर्लिन के लिए जा चुकी थी। 1961 में जब मैं लौटकर भारत आयी, तब तक दिल का जबर्दस्त दौरा पड़ने से मेरी अम्मी की मौत हो चुकी थी और हिंदुस्तानी थिएटर रिपेर्टरी कंपनी बंद हो चुकी थी।

हबीब और मोनिका ने शादी कर ली और अपना ही ग्रुप बना लिया, नया थिएटर। नया थिएटर में बड़ी संख्या में छत्तीसगढ़ के नाचा कलाकार शामिल थे और कुछ हबीब के शहरी मुरीद भी। उन्होंने आगरा बाजार का एक और रूप तैयार किया, जिसमें शहरी व लोक कलाकारों के मिश्रण का प्रयोग किया गया था। वर्षों तक अधिकारियों ने उदारता से, हबीब तथा मोनिका को दिल्ली में सरकार द्वारा निर्मित एक कालौनी में अपने ग्रुप के साथ रहने के लिए जगह दिए रखी और उन्होंने बहुत से स्मरणीय नाटक प्रस्तुत किए।

जहां हबीब तथा मोनिका, लोक तत्वों व नाचा कालाकारों का सहारा लेकर अपने विचारों को मंच पर उतारने में लगे हुए थे, सथ्यू ने और मैंने एक शौकिया ग्रुप के तौर पर हिंदुस्तानी थिएटर को जिंदा रखने की कोशिश की। सथ्यू ने ब्रेख्त के चॉक सर्किल के मेरी अम्मी के अनुवाद को मंच पर उतारा था और मैंने मुद्राराक्षस का निर्देशन करने का फैसला लिया था। नियाज बाबा ने इन नाटकों में पढ़ी जाने वाली कविताओं और गीतों का योग दिया था। लेकिन, मुद्राराक्षस का काम चल ही रहा था कि एक दिन अचानक उन्होंने एलान कर दिया कि उन्हें अब वृंदावन जाना ही जाना है और वह चार महीने तक हमें नजर नहीं आए। तब हबीब ने इस नाटक के गीत पूरे करने का जिम्मा संभाला। कई वर्ष के बाद उन्होंने मुद्राराक्षस की अपनी प्रस्तुति के लिए गीतों की उसी स्क्रिप्ट का उपयोग किया था। हबीब ने नया थिएटर के नये-नये नाटक प्रस्तुत करना जारी रखा, लेकिन हमें हिंदुस्तानी थिएटर को समेटना पड़ा और बंबई के लिए निकलना पड़ा।

चार साल बाद 1969 में, गालिब शताब्दी समारोहों के सिलसिले में मैं लौटकर दिल्ली आयी। हमने गालिब उत्सव के हिस्से के तौर पर अनेक नाटकों तथा अन्य कला प्रदर्शनों को आमंत्रित किया था और इनमें हबीब का एक शानदार नाटक भी था। लेकिन, न जाने किस कारण से उन्होंने इसके बाद फिर कभी उस नाटक का मंचन नहीं किया। हबीब ने पहले तो शहरी व ग्रामीण अभिनेताओं के मिश्रण के साथ काम करना जारी रखा, लेकिन बाद में वह भोपाल चले गए और सिर्फ नाचा कलाकारों के ही साथ काम करने लगे।

इसके बाद, 1974 तक हमारा संपर्क टूटा रहा। चरनदास चोर हबीब ने पहले जयपुर में एक वकशॉप के लिए एक लघु नाटक के रूप में पेश किया था। इसके बाद उन्होंने चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी के लिए, इसी कहानी पर आधारित श्याम बेनेगल की एक फिल्म के लिए, फिल्म स्क्रिप्ट पर मेरे साथ काम किया था। हबीब ने आगे चलकर इसे एक पूरे नाटक के रूप में विस्तार दिया। **आगरा बाजार** के साथ चरनदास चोर के लिए ही उन्हें सबसे ज्यादा लोग याद करते हैं। उस फिल्म में, एक स्मिता पाटिल को छोड़कर, जिन्होंने राजकुमारी की भूमिका अदा की थी, दूसरे सभी अभिनेता नया थिएटर के नाचा कलाकार थे। हमारे कैमरामैन गोविंद निहलानी उनसे आजिज़ आ जाते थे क्योंकि हरेक टेक में संवाद तथा एक्टिंग को इंप्रोवाइज करना होता था और उसका पिछले शॉट से मेल खाना मुश्किल हो जाता था। यह फिल्म पुरानी कीस्टोन कॉप्स तथा चैप्लिन फिल्मों की शैली में शूट की गयी थी और अब भी काफी मजेदार लगती है।

चरनदास चोर के बाद ही हबीब तनवीर की खास शैली को देश भर में पहचान मिली। और जैसाकि किसी ने कहा है, वह जिंदा किंवदंती बन गए। अलग-अलग लोगों से उनके संबंध में बराबर खबर मिलती रही और यह पढ़ने को मिलता रहा कि किस तरह हिंदुत्ववादी ताकतें उन्हें उत्पीड़ित कर रही थीं, किस तरह उन्हें भोपाल में रेपेर्टरी कंपनी से निकाला गया था और उनके **पोंगा पंडित** के मंचन पर रोक लगाने की कोशिश की गयी थी। एक किस्सा जो वह बहुत खुश होकर सुनाया करते थे, भाजपा की सरकार में मंत्री रहे सिकंदर बख्त का था, जिन्होंने एक सेमिनार में ''उर्दू थिएटर'' के हितों की वकालत की थी। हबीब ने उन्हें बता दिया कि अलग-अलग हिंदी और उर्दू थिएटर जैसी कोई चीज है ही नहीं। दोनों का थिएटर एक ही है। वैसे भी मंत्रीजी को खुद तो नाटक के संबंध में कुछ अता-पता था नहीं। उन्हें पता था तो इसका कि पुरानी मस्जिदें कैसे गिरायी जाएं और हबीब उन्हें आसानी से ऐसी और मस्जिदों की सूची मुहैया कराने के लिए तैयार थे, जिन्हें वे नष्ट कर सकते थे।

2003 में मोनिका के निधन के बाद, हबीब पहले जैसे जोश से काम जारी नहीं रख सके। फिर भी आखिरी सांस तक, थिएटर ही उनका भोजन रहा और थिएटर ही जीवन। 2004 में मुंबई में पृथ्वी थिएटर में हुआ उनके अनेक नाटकों का उत्सव, एक विदाई गीत

की तरह था। उत्सव के दौरान कुछ मौकों पर हमारी मुलाकात हुई थी और उन्होंने मोनिका तथा पुराने दिनों की बातें की थीं। इसके बाद, अब से कुछ ही महीने पहले वह अपने संस्मरणों की प्रस्तावित किताब में से पाठ के एक आयोजन के लिए मुंबई आए थे। हबीब की सांस फूलने लगती थी, जिसके चलते महमूद फारुखी ने कुछ अंशों का पाठ किया था और हबीब ने कुछ सवालों के जवाब दिए थे। उनकी बेटी नगीन ने बताया कि वह जब वह अस्पताल गए, वह अपने संस्मरणों के मोनिका से संबंधित हिस्से तक पहुंचे ही थे। वह इस बार अस्पताल से वापस नहीं लौटे।

थिएटर ही थे हबीब

शांता गोखले

हबीब तनवीर की पहचान इतने पक्के तरीके से ऐसे नाटक से जुड़ गयी है जिसमें छत्तीसगढ़ी अभिनेताओं, बोली तथा कथा सामग्री का उपयोग किया जाता था, कि इस पर यकीन करना ही मुश्किल है कि उन्होंने लंदन में, रॉयल एकैडमी ऑफ ड्रामैटिक आर्ट्स में प्रशिक्षण हासिल किया था। लेकिन, उन्होंने यह भी किया था।

कोर्स के अधबीच में ही उन्हें यह बात समझ में आ गयी थी कि जो प्रशिक्षण उन्हें मिल रहा था, नाटक की उनकी कल्पना के लिए कितना अप्रासांगिक था। उन्होंने यह पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और भारत लौट आए। लेकिन उससे पहले वह लिखते और गाते हुए योरप भर में घूमे। इस भ्रमण का अंतिम लक्ष्य था बर्टोल्ट ब्रेख्त से मिलना, जिनके नाटक के वह प्रशंसक थे। दुर्भाग्य से उनके बर्लिन पहुंचने से पहले ही ब्रेख्त की मृत्यु हो गयी। फिर भी तनवीर वहां रुके ताकि ब्रेख्त के नाटक देख सकें। यह सिर्फ संयोग ही नहीं था कि तनवीर के नाटकों में उतनी ही कहानी गाने सुनाते हैं, जितनी कि संवाद। कम से कम आंशिक रूप से यह ब्रेख्तीय विरासत थी।

जब तनवीर लौटकर भारत आए, वह एक सपना लेकर लौटे थे जिसे योरप के अपने पूरे भ्रमण में उन्होंने पाला-पोसा था। वह शूद्रक का **मृच्छकटिकम** खेलना ही खेलना चाहते थे। उसकी आधुनिकता और मुक्त प्रवाह की प्रकृति में उन्हें अपने लिए चुनौती दिखाई देती थी। उनके दिमाग में ऐसे विचार कोंध रहे थे, जो संस्कृत नाटक के संबंध में विद्वानों के विचारों से उलट थे। दिल्ली में बेगम कुदसिया जैदी का हिंदुस्तानी थिएटर इसमें तनवीर का साथ देने के लिए तैयार था। बेगम ज़ैदी ने हिंदी में उनके लिए नाटक का अनुवाद भी किया था। यहां से आगे अचानक खजाना हाथ लगने की कहानी शुरू होती है। रायपुर में जन्मे तनवीर, नाचा तथा पंडवानी जैसे स्थानीय लोक रूपों के बीच पले-बढ़े थे।

एक बार जब वह घर गए हुए थे, उन्होंने सारी रात नाचा देखा और जो पांच अभिनेता उनकी आंखों के सामने थे उनके अद्भुत अभिनय कौशल से वह पूरी तरह अभिभूत थे। एक आवेग में उन्होंने इन अभिनेताओं से पूछा कि क्या उनके साथ दिल्ली चलेंगे और मिट्टी की गाड़ी में काम करेंगे। वे खुशी-खुशी राजी हो गए। बेगम जैदी सन्न रह गयीं। (''हबीब, थिएटर जवान हसीन चेहरों की मांग करता है, न कि इन विचित्र जीवों की'')। बहरहाल, इससे नया थिएटर यानी हबीब की कर्मभूमि की नींव पड़ गयी।

तनवीर की पत्नी तथा नाटक के पेशे में उनकी साझीदार, मोनिका मिश्रा के साथ ही मदन लाल, शिव दयाल, भुलवा राम, जगमोहन तथा लालू राम नया थिएटर की रीढ़ बन गए। उन्होंने साथ मिलकर इसकी कोशिश की, विफल हुए और फिर-फिर कोशिश की कि छत्तीसगढ़ी अभिनेताओं के कौशलों, उनकी स्वतःस्फूर्त ऊर्जा तथा मूवमेंट व गीत के लिए सहज भावना को, कहानी के प्रवाह तथा समग्र संरचना की तनवीर की समझ के साथ जोड़ा जाए।

तनवीर ने एक बार पृथ्वी थिएटर के लिए एक भेंटवार्ता में कहा था, ''मुझे इस सरल सी बात को खोजने में बरसों लग गए कि मुझे अपने कलाकारों को स्वायत्तता देनी चाहिए; कि मुझे उन्हें उनकी मातृभाषा देनी चाहिए। मुझे बोली की मधुरता का तो पता था, लेकिन मुझे इसका बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि क्या उसे गैर-छत्तीसगढ़ी लोगों तक संप्रेषित किया जा सकता है। इसी ने मुझे रोके रखा था। और उनके सहज न हो पाने के चलते मेरे हाथ हिंदी के खराब रूप लग रहे थे और कमजोर अभिनेता। आखिरकार, मैंने कहा कि 'इसे आजमा कर देखते हैं' और तीन साल की विफलता के बाद 'गांव का नाम ससुराल मोर नाम दामाद' और 'चरनदास चोर' से मुझे रास्ता मिल गया।'' पैंतरा यह था कि छत्तीसगढ़ी बोली का प्रयोग किया जाए, अभिनेताओं को इंप्रोवाइज करने दिया जाए और उनके मूवमेंट, तनवीर के विचारों से मेल खाने लगें, उसी मुकाम नाटक के रूप में स्थायी कर दिया जाए।

1974 का नाटक 'चरनदास चोर' भारत में भी और दूसरे देशों में भी हिट हो गया। इससे पहले के 1954 के हिट 'आगरा बाजार' ने, जो आसानी से फुस्स भी हो सकता था, अगर एक ही मंच पर शहरी अभिनेताओं और ग्रामीण गैर-अभिनेताओं को सफलता के साथ रखने की संभावनाओं को उजागर किया था, तो चरनदास चोर ने आधुनिक शहरी नाटक की बारीकियों को, लोक कलाकारों की जीवंतता के साथ जोड़ने का रास्ता दिखाया। यह पद्धति इसके बाद सभी नाटकों में उनके खूब काम आयी।

छत्तीसगढ़ी अभिनेताओं के साथ काम करना, ''चलो गांव की ओर'' के उस आंदोलन का हिस्सा नहीं था, जिसकी हवा 1970 के दशक में भारत के सामाजिक तथा नाट्य हलकों में चल रही थी। तनवीर ने बताया कि वह कोई ऐसे रूपों के पीछे नहीं दौड़ रहे थे, जिनका वे सजावट के तत्वों के रूप में प्रयोग कर लेते। वह तो लोक कलाकारों के पीछे

दौड़ रहे थे और वह भी उस जीवंतता, अभिनय तथा गायन के कौशलों के लिए, जो वे ही नाटकों में ला सकते थे। वह उनकी महान सांस्कृतिक परंपराओं का हिस्सा बनना चाहते थे और इस प्रक्रिया में उन परंपराओं तथा अभिनेताओं के बने रहने में मदद करना चाहते थे। इन अभिनेताओं को 5-6 हजार रुपए महीना वेतन मिलता था, जबकि तनवीर को 10 हजार रुपए। किसी लिखित कांट्रैक्ट की जरूरत नहीं होती थी। ये अभिनेता सेनानिवृत्ति लेने या फिर आखिरी सांस तक नया थिएटर के साथ बने रहे क्योंकि यह उन्हें गरिमा के साथ अपनी कला के बल पर जीने का मौका देता था। गांव में वे नीच से भी नीच थे। नया थिएटर के मंच पर वे राजा और रानी थे।

हबीब तनवीर को नहीं लगता था कि सरकारी योजनाओं से लोक कलाओं की मदद हो सकती है। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, ''सरकारी योजनाएं होती हैं सर्वे, बजट, नतीजे की रिपोर्ट। कला कोई सूखा नहीं है कि आप इसकी गिनती कर सकें कि कितने मर गए।'' उन्होने जोर देकर कहा था कि अगर लोक नाटक को जिंदा रहना है, तो उसके लिए उसके भीतर से ही कड़ी मेहनत काम आएगी, न कि बाहर से ''उत्थान।''

तनवीर ने थिएटर के लिए अपनी ललक को, धर्मनिरपेक्ष-उदार मूल्यों में एक समझौताहीन विश्वास और सामाजिक समस्याओं के साथ जीवन भर लंबी मुठभेड़ के साथ जोड़ा था। उनका सबसे प्रकटत: राजनीतिक नाटक, 'हिरमा की अमर कहानी' कुछ आलोचकों को लगा था कि जैसे जनतंत्र के खिलाफ सामंतवाद का पक्ष लेता हो। लेकिन, तनवीर ने ध्यान दिलाया था कि जनतंत्र भी पूरी तरह से पाक-साफ नहीं है। उसका फासीवादी एजेंडा के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसा गुजरात में हुआ था। इसी तरह, सामंतवाद में भी सब काला ही काला नहीं है। उसने कलाओं को प्रोत्साहन भी दिया था। हिरमा की कहानी सुनाकर वह लोगों को सिक्के के दोनों पहलुओं को देखने के लिए ही उत्प्रेरित कर रहे थे।

अपने विश्वासों पर कायम रहना, झूठ का मुकाबला करना, कट्टरता के खिलाफ लड़ना, निजी जाखिम उठाना भी होता है। हबीब तनवीर ने ठीक यही किया था जब उनके नाटक पोंगा पंडित पर हिंदू दक्षिणपंथियों ने हमला किया था क्योंकि उनके लिये यह हिंदूविरोधी था। उन पर और उनके अभिनेताओं पर माइक और पत्थर फैंके गए थे। लेकिन, वह अपनी बात पर कायम रहे और उन्होंने इस सत्तर बरस पुराने लोक नाटक को खेलना जारी रखा।

हबीब तनवीर, थिएटर शब्द के हरेक अर्थ में थिएटर ही थे। उनके निधन से नाटक कला अनाथ हो गयी है।

'रैनेसां विजन' के कलाकार

एम के रैना

हबीब तनवीर एक 'रैनेसां विजन' के कलाकार थे। अगर कुछ ऐसे नाम हैं जिनके काम का भारत का भविष्य रचने में महत्वपूर्ण योगदान रहने जा रहा है, तो उनमें एक नाम हबीब का आता है। बेशक, इन्हीं में एक और नाम हुसैन का है, जिसे उसके अपने देश में ही आने की इजाजत नहीं है। हबीब के इस विजन के ही चलते, उनकी गतिविधि और दिलचस्पी, इस या उस क्षेत्र तक सीमित नहीं रह सकती थी। वह नाटक निर्देशक थे। वह नाटक लेखक थे। वह अभिनेता थे। वह नाटकों के अलोचक थे। वह कवि थे। वह डिजाइनर थे। वह एक कार्यकर्ता थे। उनकी समझ कोई थिएटर तक ही सीमित नहीं थी। वास्तव में वह धार्मिक विमर्श को भी उतनी ही गहराई से समझते थे। राजनीति को भी और इतिहास को भी। और इस सबके सहारे जब वह अपना नाटक बुनते-बनाते थे, उसमें अपने छत्तीसगढ़ी रूप से भीतर भी, एक सर्वभारतीय नब्ज धड़कती थी। चाहे वह प्राचीन संस्कृत क्लासिक हो या योरपीय क्लासिक, लोक नाटक या एकदम समकालीन, हबीब का नाटक हमेशा आज के संदर्भ से जुड़कर रचा जाता था। और हमेशा खास उदार मानवतावाद की खुशबू से गमकता था।

इसीलिए, हबीब तनवीर के थिएटर को, किसी एक प्रकार के थिएटर के दायरे में रखकर हम नहीं देख सकते हैं। उन्होंने जो थिएटर हमें दिया, उसे कोई एक नाम देना हो तो मैं थिएटर ऑफ एक्सीलेंस या श्रेष्ठता का थिएटर कहना चाहूंगा। लेकिन, यह श्रेष्ठता जनता और उसके दु:ख-दर्द से कटकर, एकांत में बैठकर कला की सेवा के लिए समर्पित किसी कलाकार की कला की श्रेष्ठता नहीं है। इससे ठीक उलट, यह ऐसे कलाकार की श्रेष्ठता है जो जनता और उसके दु:ख-दर्द के बीचौ-बीच और उसके पक्ष में, अपनी कला को खड़ा करता है। वास्तव में उनका थिएटर प्रतिरोध का थिएटर है। उनका थिएटर अवांगार्द थिएटर है।

और इस सबके साथ ही साथ उनका थिएटर विकास का भी थिएटर है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि साक्षरता के प्रसार तथा शिक्षा के लिए, आम लोगों के बीच नाटक के माध्यम से जितना काम हबीब तनवीर ने किया था, शायद ही किसी और नाट्यकर्मी ने किया होगा। सचाई यह है कि अपने अंतिम वर्षों में हबीब तनवीर ने अगर अपने 'नया थिएटर' के साथ भोपाल में डेरा डाल दिया था, तो इसका काफी संबंध साक्षरता से जुड़े उनके काम के तकाजों से भी था। लेकिन, साक्षरता के काम में उनकी दिलचस्पी, साक्षरता का प्रचार करने वाले की सीमित दिलचस्पी नहीं थी। उनकी दिलचस्पी आम लोगों की जिंदगी में साक्षरता से आने वाले बदलाव पर थी। इसीलिए, वह इस काम के बीच से *सड़क* जैसा नाटक निकाल सके, जो उस विकास के औचित्य पर ही सवाल उठाता है, जो आम लोगों की जिंदगियों की बेहतरी की जगह, दूसरे ही आग्रहों से परिभाषित होता है।

छत्तीसगढ़ी कलाकारों के साथ हबीब तनवीर के नाटक की पहचान अभिन्न रूप से जुड़ जाने के चलते, कुछ लोगों को यह भ्रम होता है कि यह कोई ग्रामीण थिएटर या लोक थिएटर है या यह महज छत्तीसगढ़ी थिएटर है। लेकिन, वास्तव में हबीब तनवीर का थिएटर अपनी प्रकट सादगी तथा ग्रामीणता के पीछे, एक बहुत ही सोफैस्टीकेटेड थिएटर है। यह कोई संयोग ही नहीं है कि उन्होंने सिर्फ छत्तीसगढ़ी नाटक ही नहीं किए बल्कि प्राचीन संस्कृत नाटक, शेक्शपियर के नाटक आदि ही नहीं ब्रेख्त, गोर्की आदि के नाटक भी उतनी की सफलता के साथ और अपने खास रंग में रंगकर पेश किए। उनका थिएटर, आधुनिक नाटक की पूरी जटिलता के साथ जूझता है और पूरी रचनात्मकता के साथ, आधुनिक भारतीय नाटक की दुनिया में अपना खास मुकाम बनाता है। *हिरमा की कहानी* तथा *देख रहे हैं नैन,* अपने कथ्य की जटिलता के लिए और *शांतिपुर की शाजाबाई* अपने रैडीकल कथ्य के लिए, आधुनिक हिंदुस्तानी थिएटर में भी बहुत ही दुर्लभ उदाहरणों में गिने जाएंगे। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ब्रेख्त के बाद, यह पहला आधुनिक नाटककार था जो अपने नाटकों के बीच खुद लिखता था। और जिसके नाटक जितना संवादों से बोलते थे, उतना ही अपने गीत-संगीत से।

कहने की जरूरत नहीं है कि परंपरागत छत्तीसगढ़ी कलाकारों के कौशल तथा उनकी जीवंतता के साथ, अपना थिएटर रचते हुए हबीब तनवीर ने गुमनामी के अंधेरे में रहने वाले इन कलाकारों को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलायी और मंच दिलाया। बेशक, यह भी हबीब तनवीर की जन पक्षधरता से ही निकला था। इन कलाकारों को, जिनमें ज्यादातर या भूमिहीन आदिवासी हैं या दूसरी निचली जातियों के गरीब, उनकी लुटी हुई इज्जत वापस मिली, इंसान के रूप में अपनी पूरी पहचान मिली। इतना ही नहीं, इससे एक आंदोलन जैसा भी खड़ा हुआ। नाटक में काम करने वाले बहुत से लोग जैसे रतन थिएम, बंसी कौल और मैं भी, महानगरों से निकल कर दूसरे इलाकों में इस समझ के साथ गए कि अगर नया कुछ करना है, तो गांवों के कलाकारों को साथ लिया जाए। आखिरकार, शहरी

कलाकारों के अनुभव का दायरा सीमित होता है।

हबीब तनवीर को मैं शुरू से ही काम करते हुए देखता रहा हूं और उनके काम से सीखता रहा हूं, किंतु दूर से ही। एकलव्य जैसा संबंध कह सकते हैं। वास्तव में जब वह *आगरा बाजार* कर रहे थे, उसमें मुझे एक छोटा सा रोल भी मिला था। किंतु हबीब साहब की रिहर्सल रात दस बजे शुरू होती थी और मैं दूर रहता था। उस नाटक में मैं काम नहीं कर पाया। पर उनसे संवाद निरंतर बना रहा। उनका काम देख-देखकर और उनसे निजी बातचीत से मैंने बहुत कुछ सीखा। अब से कुछ ही वर्ष पहले की बात है, कोलकाता में पुनर्जीवित किए गए टैगोर थिएटर फेस्टिवल में एक आयोजन में मैंने महात्मा गांधी तथा टैगोर के पत्राचार व संवादों के संकलन ''महात्मा एंड पोइट'' पर आधारिए एक प्रस्तुति की थी। इसका शीर्षक था, ''स्टे यट अव्हाइल''। विषय और मूल संवाद की भाषा को ध्यान में रखते हुए यह प्रस्तुति अंग्रेजी में ही थी। हबीब तनवीर, इस प्रस्तुति पर आयोजित चर्चा की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्हें प्रस्तुति पसंद आयी तो उन्होंने अपनी खास विनोदपूर्ण शैली में शिकायत की— इसने तो कुछ कहने के लिए गुंजाइश ही नहीं रहने दी है।

हबीब के पिछले जन्म दिन से कुछ रोज पहले मैं भोपाल गया था, उनसे मिलने। मगर जैसाकि होना ही था, हमारी ज्यादातर बातचीत समकालीन नाटक पर ही होती रही। वास्तव में आधुनिक नाटक का जो स्वरूप बन रहा है, उसे लेकर वह काफी चिंतित थे। वह देख रहे थे कि महानगरीय प्रस्तुतियों में प्रौद्योगिकी हावी होती जा रही है। वह स्पष्ट थे कि बहुत ही मंहगे उपकरणों और अन्य साधनों के सहारे चलने वाला ऐसा थिएटर, महानगरों के ही बस की बात है, अपेक्षाकृत छोटे शहरों के बस की भी नहीं। उनका यह भी कहना था कि इस थिएटर में अभिनेता की जगह कहां है, अभिनेता तथा अभिनय की जगह कहां है? हमारे आज के थिएटर को इन सवालों के जवाब खोजने ही होंगे।

सफदर की हत्या के खिलाफ बुद्धिजीवियों तथा कलाकारों की जो एकजुटता सामने आयी थी, उसमें हबीब तनवीर आगे-आगे थे। उसी समय मैंने उन्हें सचमुच बेहद विक्षुब्ध देखा। एक मौके पर तो उन्होंने यह सवाल तक पूछा कि क्या ऐसे हमलों से अपनी हिफाजत के लिए कलाकारों को हथियार उठाने होंगे? **सहमत** की स्थापना के समय से ही वह सहमत के साथ जुड़े रहे थे और भीष्म साहनी के गुजरने के बाद से, **सहमत** के ट्रस्ट के चेयरमैन थे। सांप्रदायिकता की ताकतों के खिलाफ वह जितने मुखर थे, उसी के जवाब के तौर पर हिंदुत्ववादी ताकतों ने उनके नाटक ''जमादारिन/ पोंगा पंडित'' को हिंदूविरोधी करार देकर हमलों का निशाना बनाया था। लेकिन, यह हबीब के काम की और जनता के बीच उनके काम की जड़ों की ही ताकत थी कि भाजपा-आर एस एस के सारे हमले, उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए। आधुनिक हिंदुस्तानी नाटक ही नहीं, आधुनिक हिंदुस्तानी (हिंदी+उर्दू +छत्तीसगढ़ी) समाज व संस्कृति का जब भी जिक्र आएगा, उसके निर्माताओं में एक नाम हबीब तनवीर का भी होगा।

हबीब साहब ने थिएटर को कई अर्थों में नया किया

प्रयाग शुक्ल

हबीब साहब हमेशा एक ऐसे सृजनधर्मी व्यक्ति के रूप में याद किए जाएंगे, जिसका गहरा रिश्ता केवल थिएटर से न होकर, सभी कला माध्यमों के लोगों से था। मैं इसका अंदाजा लगा सकता हूं कि आज लेखकों, कवियों, संगीतकारों, फिल्मकारों तथा नृत्यकारों की एक बड़ी जमात की कई पीढ़ियां, उनको कई रूपों में याद कर रही होंगी और आगे भी करती रहेंगी। हबीब साहब ने सभी कला माध्यमों के लोगों के साथ जो रिश्ता बनाया था, उसका कारण सिर्फ यही नहीं था कि थिएटर का स्वयं सभी कला रूपों के साथ एक अर्थपूर्ण संबंध है और एक रंगकर्मी को सभी कला माध्यमों के निकट जाना ही चाहिए। उनका सभी माध्यमों के लोगों से गहरा रिश्ता दरअसल, इंसानी धरातल पर भी था। एक ऐसे धरातल पर जो इस समझ के साथ जन्मा है कि स्वयं व्यक्ति का कला प्रेम तब तक 'पूर्ण' नहीं होता है, जब तक वह मनुष्य समाज द्वारा ईजाद किए गए अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों के साथ अपनी निकटता स्थापित न कर ले। मैं उनके द्वारा अभिनीत/ निर्देशित नाटकों में 'मिट्टी की गाड़ी' को एक अन्यतम प्रस्तुति मानता हूं। शूद्रक के इस नाटक में चारुदत्त जिस धरातल पर कला कर्म को समझता है और एक सच्चे रसिक और सहृदय की भूमिका को अंगीकार करता है, उसी धरातल पर हबीब साहब ने अपनी प्रस्तुति की रचना की थी और उसे हर वर्ग के दर्शक के लिए सुबोध, सरस तथा ग्राह्य बनाया था। यह प्रस्तुति इस मामले में भी बेजोड़ थी कि इसमें किसी तरह का तामझाम नहीं था— न वेशभूषा का, न मंच सज्जा का, न अन्य किन्हीं उपकरणों का। अभिनेताओं के भरोसे ही उन्होंने इस नाटक को साकार किया था और लोकरंग में एक शास्त्रीय रचना को संभव किया था। वह

लोक और शास्त्र को अभिन्न मानते थे और दोनों परंपराओं के गहरे रिश्ते से अच्छी तरह वाकिफ थे। इससे भी आगे बढ़कर वह आधुनिक और समकालीन को लोक और शास्त्र के सुमेल में पिरोने में सफल हुए।

अचरज नहीं कि नाट्यशास्त्र के पारखी और विशेषज्ञ भी उनकी प्रस्तुतियों के प्रेमी थे, नाट्यप्रेमी दर्शक भी और आधुनिकबोध में रचे-पगे बुद्धिजीवी भी। दर्शकों से जो प्रेम उन्हें मिला उसकी मिसाल मिलनी कुछ मुश्किल ही है। देश और दुनिया के न जाने कितने शहरों-कस्बों तक वह पहुंचे, अपने नाटकों के साथ और ऐसी छाप छोड़ी कि जो भी उनकी प्रस्तुतियों का साक्षी बना, वह बार-बार उनकी ओर लौटता रहा। 'आगरा बाजार' हो या 'चरणदास चोर' या 'मिट्टी की गाड़ी' या 'कामदेव का सपना, वसंत ऋतु का अपना'— शूद्रक हो या शेक्‌शपियर या रवींद्रनाथ या फिर खुद उनका अपना रचा हुआ कोई नाटक, वह विट् और ह्यूमर के साथ, गायन और वादन के साथ और एकदम यथार्थ सपनीली छवियों के साथ, अपना एक ऐसा मुहावरा बना सके जो दिल को भी छूता था और दिमाग को भी। कई दशकों तक उनकी उपस्थिति जीवंत बनी रही। शारीरिक रोग-शोक तो किसी न किसी मात्रा में पाय: सब को कभी न कभी घेरते हैं, पर मन से और बहुत दूर तक शरीर से भी वह मानो 'युवा' ही बने रहे। वह एक सतत खोजी व्यक्ति थे। सभी कला माध्यमों में उनकी आंखें युवा प्रतिभाओं को खोजती थीं। वह विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों में पहुंचते थे और युवतर लेखकों-कवियों, चित्रकारों, रंगकर्मियों आदि का काम भी देखते-सुनते थे।

कविता में उनकी दिलचस्पी गहरी थी। स्वयं कविताएं लिखते थे और उर्दू के शयरों की ढेरों चीजें उन्हें याद थीं। जो लेखक-कवि उनके संपर्क में आए, उन्हें यह अनुभव हुआ कि हबीब साहब समय निकालकर काफी पढ़ने वालों में भी रहे हैं। विश्व साहित्य हो, संस्कृत वांग्मय हो या समकालीन लेखकों-कवियों की कृतियां— इन सब से गुजरना उन्हें प्रिय था। वह कला कर्म को जितनी तवज्जो देते थे, उससे कम जीवन मर्म को नहीं। यही कारण है कि उनकी प्रस्तुतियों को देखते हुए, हम जीवन और कला का स्वाद एक साथ चखते थे।

मैं दिल्ली में 1964 में आया था। ओर इसे एक न भूलने वाला तथ्य मानता हूं कि हम शंभु मित्र, इब्राहीम अल्काजी, हबीब तनवीर, ब0ब0 कारंत-इन सब का काम लगभग शुरू से देख सके। हबीब साहब के 'आगरा बाजार' ने तो हम सबको इस तरह आनंदित प्रभावित किया था कि हम उसे पहली बार देखने की ताजगी को अपनी स्मृति से आज भी ताजा कर सकते हैं। 'जब हम भी चले, साथ चला रीछ का बच्चा' पर मेरी बड़ी बेटी थिरकती थी। मेरे कवि-कथाकार मित्र जितेंद्र कुमार उन दिनों घर आते तो उसे दोहराते। जब हम बड़ी बेटी, जो तब नन्ही सी थी, को तन्मय होकर सुनते हुए देखते, तो एक अपूर्व सुख का अनुभव करते। अब वह बेटी चालीस की है, पर हबीब साहब के न रहने की

खबर पाकर उसे ये पंक्तियां आज फिर याद आयीं–नजीर कीं। हर नाट्य प्रस्तुति किसी तारीख विशेष में प्रस्तुत होकर फिर मिट जाती है। और किसी निर्देशक की कोई प्रस्तुति अपने को पुनः उसी रूप में दोहरा नहीं सकती है, पर अगर उसमें दम शेष रहता है तो उसकी हर प्रस्तुति एक ऐसा रंग अनुभव दे जाती है जो देखने वाले व्यक्ति को भूलता नहीं है। हम जो हबीबजी के नाटकों के दर्शक एकाधिक बार बने, हर बार एक रंग–अनुभव और जीवन अनुभव लेकर ही तो लौटे। वह अनुभव हमारी संचित पूंजी है।

कोई पांच–दस वर्ष पहले की बात है, हम भोपाल में थे और रवींद्र भवन में 'चरणदास चोर' की प्रस्तुति थी। कई बार देखे हुए इस नाटक को फिर देखने की इच्छा हुई। कहीं अटक जाने के कारण मुझे पहुंचने में देरी हुई। जब पहुंचा तो नाटक शुरू होने ही वाला था। भारी भीड़ थी प्रवेशद्वार पर भी। आयोजकों में से किसी ने मुझे पहचान कर सलाह दी मैं मंच के रास्ते से ही हॉल में पहुंचूं। मैं झिझका पर कोई और चारा न था। मंच पर 'चोरी' से पहुंचा तो पहुंचते ही हबीब साहब की नजर मुझ पर पड़ी। वे कान्स्टेबल की भूमिका में थे। मुझे देखते ही विनोदपूर्वक उन्होंने अपना डंडा हवा में लहराया। बोले, 'अच्छा आप हैं, चोरी पकड़ी गई पर कोई बात नहीं, जाइए, जल्दी।' मैं मुस्कुराया। आगे की पंक्ति में सीट खाली थी। बैठ गया। न वह प्रस्तुति भूली है, न उसमें उनका अभिनय, न यह कि दस–बीस नहीं, सैकड़ों उस दिन उनका यह नाटक देख रहे थे। उनमें से बहुतेरे मेरी तरह उसे दूसरी, तीसरी, चौथी बार...।

भला कौन भूल सकता है उनके नाटकों को और उस शख्श को जिसका नाम था हबीब तनवीर! और जिसके ग्रुप का नाम था 'नया थिएटर'। उन्होंने सचमुच थिएटर को कई अर्थों में नया ही तो किया।

हरफनमौला थे हबीब

रामगोपाल बजाज

हबीब तनवीर उन रंगकर्मियों में से एक थे जिन्होंने भारतीय रंगमंच का चरित्र निर्माण किया। अपनी राजनीतिक विचारधारा के बावजूद वे ऐसे संस्कृति पुरुष थे जो अखंड रूप से भारतीय थे। जब उन्होंने 'आगरा बाजार' किया था, तब तक तो आधुनिक भारतीय रंगमंच ही रेखांकित नहीं था। उनकी संस्था 'नया थिएटर' का सबसे बड़ा योगदान यह है कि उसने रंगमंच के बारे में दृष्टि परिवर्तन का काम किया।

यह वह दौर था जब इब्राहीम अलकाजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंच प्रशिक्षण के पश्चिमी आधुनिक मॉडल का जादू बिखेर रहा था। हमने जब शेक्शपियर, मौलियर तथा महान ग्रीक नाटक देखने के बाद हबीब तनवीर का काम देखा तो हतप्रभ रह गए। हम बेचैन हो उठे। हमारे मन में जो सवाल उठे उनके जवाब राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में नहीं थे। डिजायन, डॉयलाग, रंग, विचारों की स्पष्टता आदि को लेकर हम पश्चिम के प्रभाव में थे। उस प्रभाव के समानांतर हबीब का रंगकर्म एक वैकल्पिक दृश्य रच रहा था। जब 'चरणदास चोर' आया तो हम दंग रह गए। हमें एहसास हुआ कि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रशिक्षण में कुछ कमी है।

हबीब साहब के नाटकों की सहजता हमें उनका मुरीद बनाती थी। उनके कलाकार दूसरी तरह के थे। वे शहरी कलाकारों की तरह चिकने-चुपड़े नहीं थे। वे ग्रामीण लोग थे लेकिन मंच पर जब वे अपना जौहर दिखाते तो दर्शक विस्मित रह जाते। हमें लगता कि आम लोगों से हमारा संबंध बन रहा है। देखते-देखते हबीब साहब हम सब के 'दूर के गुरु' बन गए। हम सबने कभी उनसे ट्रेनिंग नहीं ली पर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने शेक्शपियर और मौलियर व ब्रेख्त के नाटकों को जब छत्तीसगढ़ी में पेश किया तो पूरी दुनिया के ये महान नाटककार अपने लगने लगे। वे हरफनमौला थे। उनके साथ

बतियाने में मजा आता था। एक ओर हम उनसे संस्कृत नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, रस सिद्धांत आदि पर बात कर सकते थे, तो दूसरी ओर उर्दू शायरी पर भी। उनका रिश्ता हिंदी साहित्य, नृत्य, संगीत और ललित कलाओं से था। वे न सिर्फ एक बड़े रंग निदेशक थे बल्कि कुशल अभिनेता, संगीतकार और डिजाइनर भी थे। उन्होंने दर्जनों नाटक लिखे। इन दिनों वे अपनी आत्मकथा लिख रहे थे। इन सारी विशेषताओं के बाद भी वे एक भारतीय ग्रामीण की तरह सहज होकर बात करते थे।

हबीब तनवीर का जन्म एक सितंबर 1923 को रायपुर, छत्तीसगढ़ में हुआ था। यह ध्यान देने की बात है कि जिंदगीभर छत्तीसगढ़ी कलाकारों के साथ काम करने के बावजूद वह आधुनिक शहरी और उच्च शिक्षाप्राप्त रंगकर्मी थे। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से बीए तथा अलीगढ़ मुस्लिम विवि से एमए करने के बाद, रंगमंच का प्रशिक्षण लंदन की रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स (राडा) से प्राप्त किया था। आकाशवाणी मुंबई और दिल्ली दूरदर्शन में काम करने और काफी समय तक इप्टा से जुड़े रहने के बाद, उन्होंने 1954 में दिल्ली में हिंदुस्तानी थिएटर की स्थापना की। आज हम उस संस्था को 'नया थिएटर' के नाम से जानते हैं। उसकी स्थापना उन्होंने 1959 में की। उन्होंने लंबे समय तक, 1970 तक पत्रिकारिता तथा नाट्य समीक्षाएं भी कीं। 1969 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरुस्कार मिल चुका था। 1972 में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किए गए। यही वह दौर था जब रंगकर्म में नये रास्तों की तलाश की बेचैनी उन्हें छत्तीसगढ़ खींच ले गई और शहरी रंगमंच को उन्होंने अलविदा कह दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हबीब तनवीर ने भले ही पारंपरिक और लोक कलाकारों के साथ काम किया हो, लेकिन अपने संस्कार और दृष्टि से वे हमेशा आधुनिक बने रहे। इसमें शक नहीं कि उन्होंने दुनिया भर में भारतीय रंगमंच को प्रतिष्ठा दिलवाई। साथ ही भारतीय रंगमंच के जनसंस्कृति मॉडल का वैकल्पिक ढांचा भी खड़ा किया। एक बात हमें आश्चर्य में डालती है कि हबीब तनवीर को जीवन में वह सब मिला जो भारत जैसा एक देश उन्हें दे सकता था। किसी रंगकर्मी का राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया जाना एक बड़ी घटना थी, लेकिन क्या वजह है कि छ:साल तक राज्यसभा में रहने के बावजूद वह सरकार से रंगमंच के पक्ष में कोई बड़ा फैसला नहीं करा पाए। पिछले पांच-दस सालों से उनमें एक खास निराशा दिखाई देती थी। तब हम सोचने लगते थे कि अस्सी साल के इस दिग्गज रंगकर्मी के पास ऐसा क्या नहीं है जिससे वह उदास है। उन्हें राष्टीय नाट्य विद्यालय ने सम्मान के साथ शंभुमित्र पीठ पर आमंत्रित किया था। इन दिनों वह महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर थे। असल सवाल यह है कि उनके जाने के बाद उनकी विरासत को हम कैसे संभालते हैं?

भारतेंदु के सच्चे उत्तराधिकारी हबीब

कमला प्रसाद

हबीब तनवीर के निधन के साथ एक जमाने का अन्त हो गया। थियेटर में हबीब तनवीर युग को भुलाने का साहस किसी में नहीं होगा। तनवीर के बारे में रंगमंच के शीर्ष पुरूष ब.व. कारन्त ने कहा है, 'हबीब तनवीर ने भारतीय संस्कृति को समकालीनता से जोड़ते हुए लोक नाटक को बीसवीं सदी में नयी शक्ति और ऊर्जा प्रदान की है। वे रंगधुनी थे।' हबीब साहब कैसे रंगधुनी रहे हैं, यह वही जानेगा जो उनकी दिनचर्या देखता रहा होगा। काम करते देखता रहा होगा। अथवा उनके साथ काम करता रहा होगा। नाटकों की सृजन प्रक्रिया को अनुभव किया होगा। गोर्की मानते थे कि यह दुनिया और इसमें जीवन की अनन्त रूपात्मकता ही सब से बड़ा विश्वविद्यालय है। जिसने इसमें दाखिला लिया, वह सही अर्थ में विद्वान हुआ। इस विश्वविद्यालय से लगाव हो तो आदमी ज्ञानी और कलाकार क्या नहीं हो सकता। देखिए, जीवन के ही चित्रों से खजुराहो के सौंदर्य का आकार बना और शेक्सपीयर के नाटक बने। भरत ने नाट्य शास्त्र में लोकधर्म का व्याकरण पेश कर उसे पांचवां वेद बना दिया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लोक जीवन की अनुकृति में 'अंधेर नगरी' जैसा नाटक लिखा। आजाद भारत में भारतेन्दु के सच्चे उत्तराधिकारी बने हबीब तनवीर। कोई पाठक 'अंधेर नगरी' के बाद 'आगरा बाजार' का पाठ करे तो उसे अनुभव होगा कि जैसे एक शताब्दी की सरिता के ऊपर कोई पुल बन गया है। भारतेन्दु की आत्मा विकास क्रम में जैसे हबीब की चेतना में उतरी हो। देश काल का रंग और अंदाज अलग- अलग पर दोनों में लोक का अनलंकृत स्वभाव। भारतीयता इससे बाहर कहां होगी? बीसवीं शताब्दी के उतरते- उतरते भारतीयता ने एक क्रूर राजनीतिक व्यापार का रूप ले लिया है। ऐसे में हबीब तनवीर की रची दुनिया एक विश्वसनीय जवाब है। मुझे लगता है कि देशप्रेम का मर्म आगरा बाजार, चरणदास चोर, मिट्टी की गाड़ी, बहादुर कलारिन, जिन लाहौर नहीं

देख्या वो जन्म्या ही नई जैसे नाटकों को देखकर प्रतीति में आएगा। ऐसा स्वाभिमान जहां वर्चस्व का भाव हो- लोक स्वभाव के अनुरूप नहीं होता।

हबीब तनवीर के काम को देखने के लिए उनकी कार्यशालाओं के पास जाना चाहिए था। मुझे दो बार यह अवसर मिला। एक बार रीवा विश्वविद्यालय में, दूसरी बार भोपाल में। रीवा की कार्यशाला दक्षिण मध्यक्षेत्र सांस्कृति केन्द्र नागपुर के सौजन्य से थी। वे नया थियेटर की टीम के साथ आए थे। टीम के कलाकार 'देख रहे हैं नैन' का अभ्यास करते और कार्यशाला के लिए चयनित 30-40 युवा रंगप्रेमी हबीब साहब के निर्देशन में अभिनय, नाट्य संगीत तथा रंगमंच की अन्य समस्याओं के बारे में जानते हुए अभ्यास करते। हबीब ने पहले चार- पांच दिन एक जीप से स्थानीय साथियों का सहयोग लेकर कई गांवों का चक्कर लगाया। अंचल में बसने वाली पेशेवर जातियों की लोक कथाओं- लोकगीतों के बारे में जाना और आवश्यकतानुसार संग्रह किया। इसी क्रम में वसदेवा जाति के गीतों में उन्हें कुछ विलक्षणताएं दिखीं। कार्यशाला में जो नाटक तैयार कर रहे थे, उसमें स्थानीय लोक तत्वों का समावेश किया। अभ्यास करते- करते नाट्य संगीत और उसकी धुनें निर्मित कीं। इस तरह जो नाट्य प्रस्तुति हुई, उसे दर्शकों ने अपने आसपास की संस्कृति के रचनात्मक रूपांतरण की तरह देखा।

हबीब साहब की कार्यप्रणाली में यह प्रश्न बार-बार उभरता है कि न उन जैसे नाट्य लेखक हैं और न निर्देशक। कथानक में लोक है और मंच पर अदाकार। लोक के अभिनय में कौशल का वैसे भी ऊपर से दिखना संभव नहीं होता। यहां यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि निर्देशक और नाट्य लेखक हबीब साहब की भूमिका का कोई पक्ष नहीं है। यह प्रश्न खूब होता है, पूरी ताकत के साथ अनुस्यूत होता है। उनके सभी नाटकों में राजनीति है, राजनीति का पक्ष है। वर्गदृष्टि है। शोषित- पीड़ित जनता का पक्ष है। धर्मनिरपेक्ष चरित्र है। शोषकों पर हमला है, उन पर मजाक है, व्यंग्य है। अपने समूचे निहितार्थ में हबीब साहब के नाटक राजनीतिक रंगमंच का निर्माण करते हैं। कार्यशाला के दौरान राजनीतिक रसायन की पहचान करना कठिन नहीं होता। यह प्रक्रिया पात्रों, परिस्थितियों के अपने स्वभाव से उभरती चलती हैं, निर्देशक उन्हीं में घुलमिल जाता है लगता है कि जैसे पिंजड़े की तीलियां बोलने लगी हैं।

हबीब साहब की कार्यशाला संयोजित करने का एक और अवसर मध्यप्रदेश कला परिषद में ही मिला। उनकी ही इच्छा थी कि वे नाट्य लेखन शिविर का निर्देशन करें। जीवन भर का नाट्य लेखन, निर्देशन और अभिनय के अनुभव उनके पास हैं। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से सहयोग लेकर परिषद ने इसे संभव किया। शिविर में लगभग 15 युवा लेखक आए। नया थियेटर के कलाकार सहभागी बने। शिविर के दिनों नेपाल में राजपरिवार की हत्या की घटना सुर्खियों में थी। कार्यशाला आरंभ हुई बातचीत की शक्ल में। युवा लेखकों की कुछ पहले से तैयार पाण्डुलिपियां थीं। उनका पाठ हुआ। चर्चा हुई। एक अन्य कार्यक्रम

में हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने 'मार्क्सवाद की प्रासंगिकता' पर व्याख्यान दिया था। कार्यशाला में शामिल लोग उसमें गए। अगले दो- तीन सत्रों में उस व्याख्यान पर विमर्श हुआ। नेपाल की घटना की अलग- अलग व्याख्यायें अखबारों में छपीं थीं। हबीब साहब ने 'न्यूज पेपर प्ले' की धारणा प्रस्तुत की और शिविरार्थियों को नाटक लिखने की जिम्मेदारी सौंपी, सारी खबरों को एक कथानक में लाने की जिम्मेदारी, कल्पना की आजादी का उपयोग करने की जिम्मेदारी। लेखक सोचें कि यह सब क्या है, कैसे हुआ, भीतर छिपे तत्व क्या हो सकते हैं? राजनीतिक- कूटनीतिक चक्रों के निहितार्थ कहां से आ सकते हैं- इन तमाम प्रश्नों पर खुली बातचीत हुई और 'न्यूज पेपर प्ले' तैयार हो गया। विचार- विमर्श के साथ पाण्डुलिपियों के संस्कार से नाटक बने। कुछ नए नाटक, शिविर की प्रक्रिया से उभरे। शिविर में जो रचा जाता, उसे अभिनेता जांचते और प्रस्तुत करते और लेखन, निर्देशन, अभिनय का आपसी संचरण होता रहता। शिविर समाप्ति के अवसर पर शिविरार्थियों के पास कुछ नाटक थे, नाटकों के अंशों का मंचन था और नाट्य संगीत भी। नाट्य लेखन शिविर की अद्भुत उपलब्धि सामने थी। हबीब तनवीर, मोनिका जी, नगीन, नया थियेटर के कलाकार, शिविरार्थी, एक परिवार बन गया था। रचे गये नाटक परिवार के मंथन का परिणाम थे। लेखकों की प्रतिभा, सृजनक्षमता, लोकवृत्त निर्देशन का अनुभव और दीक्षा- कहीं खण्ड रूप में नहीं दिखे। आधुनिक दृष्टिसंपन्न लेखक, निर्देशक और अभिनेता का प्रवेश बेमालूम तरीके से हुआ। संभवतया गुरु- शिष्य परंपरा का यही रहस्य है। इसी तरह गुरु ऋण की अदायगी होती आई है। हबीब साहब की छियासी वर्ष की जिंदगी पूरी हो चुकी थी। उनके मन का उत्साह उमर से काफी बड़ा रहा है। वे सपनों से भरे हुए रहे हैं। अभी 'नया थियेटर' का परिसर बनना था और उसे रंगकर्मियों की जन्म भूमि होना था। उन्होंने इतने नाटक लिखे हैं, पाण्डुलिपियां बिखरी हैं, नज्में- गजलें डायरियों में कैद हैं। संस्मरणों का अम्बार है। रंगकर्म का सौंदर्यशास्त्र उनके अनुभव कोष में रक्षित है।

हबीब साहब को खूब पुरस्कार मिले। सम्मानों की लंबी सूची है। राज्यसभा के सदस्य बने। पद्मश्री, पद्मभूषण की उपाधियां भारत सरकार ने दीं। हबीब साहब के चेहरे से यह आभास नहीं होता था कि वे इतने सम्मानित हैं। हिन्दुस्तान की जनता में उनका अटूट विश्वास रहा है। आस्था गहरी रही है। वे आपादमस्तक धर्मनिरपेक्ष आदमी रहे हैं। कहीं भी साम्प्रदायिक दंगे होते, इस तरह की प्रवृत्तियों भनक मिलती तो जैसे वे जनसमुद्र में कूद पड़ने को उतावले हो जाते रहे हैं। मैत्री भाव, पारिवारिकता का भाव और स्नेह प्रवाह उनके व्यवहार में सदा परिलक्षित होता रहा है।

लेनिन ने कहा था कि आदमी अपने ज्ञान और योग्यता से बहुत ऊपर उठता है। बड़ा काम है यह। इससे भी बड़ा काम है हजारों को एक हाथ ऊपर उठाना। हबीब साहब ने लोक को ऊपर उठाया। छत्तीसगढ़ के निरक्षर साथियों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलायी। लोक और लोक के कलाकारों की प्रगति का निहितार्थ उन्हें नए जमाने में ढालना रहा है।

उसके आर–पार होना रहा है। रंगमंच में प्रवेश कर गई आधुनिकता आज लोक से दूर होकर पश्चिमी नकल बन गई है। उसमें आधुनिकता या उत्तर आधुनिकता की कलमें लगी हैं। अपनी बगिया सूखी है और नए–नए पार्क बन गये हैं। यहां निर्गंध फूलों की भरमार है। हबीब साहब ने पचास से अधिक नाटकों को मंचित किया है। कुछ नाटकों की प्रस्तुतियों की गिनती नहीं है। संस्कृत और अंग्रेजी नाटकों छत्तीसगढ़ में उतार लाए हैं। शूद्रक के **मृच्छकटिकम्** से **मिट्टी की गाड़ी** और शेक्सपीयर के **मिडसमर नाइट्स ड्रीम** से **कामदेव का अपना वसन्त ऋतु का सपना** बना है। आगरा बाजार में जैसे उर्दू के शयर नजीर उतर आए हैं। विजयदान देथा की कहानी से **चरणदास चोर,** असगर वजाहत के उर्दू नाटक से **जिन लाहौर नहीं देख्या वो जन्म्या ही नई** का सृजन हुआ है। इस तरह कितनी भाषाएं छत्तीसगढ़ी की अपनी हो गई हैं। लोक भाषा तथा मानक भाषाओं के बीच आवाजाही के रिश्ते से बनी हबीब तनवीर की रंगभाषा नए सौंदर्यशस्त्र का आधार बनी है। नाट्यशास्त्र की जिस लोकधर्मी रंगधारा की मांग भरत ने की थी, हमारे समय में हबीब तनवीर ने उसे रचा है।

हबीब तनवीर के अनेक पड़ाव रहे हैं। मंचों से शायरी सुनायी, फिल्म की दुनिया में अपनी क्षमता को परखा, इप्टा में शमिल होकर राजनीतिक दृष्टि के साथ रंगमंच की व्यवस्थित यात्रा शुरू की और 'नया थियेटर' उनकी सर्वांग रचना है। नया थियेटर और हबीब साहब पर्याय रहे हैं। इसी में उनके परिजन हैं और यही उनकी संतानें हैं।

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं तो देश– विदेश में फैले हजारों उनके परिजन दुखी हैं। दुख का कारण यह है कि हम सबकी आंखों का यह ध्रुव तारा टूट गया है।

हबीब तनवीर : कैसे कोई किंवदंती बन जाता है

जावेद मलिक

किसी भी संस्कृति में और किसी भी युग में, ऐसा दुर्लभ ही होता है कि कोई शख्श जीते जी किंवदंती बन जाए। बहरहाल, देश के विभिन्न हिस्सों में दर्शकों की विशाल संख्या उनके नाटकों को जितने भारी उत्साह तथा दिलचस्पी से लेती है, उसे देखते हुए ऐसा लगता है कि समकालीन भारतीय रंगमंच के 76 वर्षीय पुरोधा, हबीब तनवीर ने वह मोर्चा पहले ही मार लिया है। फिर भी किंवदंतियां चूंकि पैदा नहीं होती हैं बल्कि बनती हैं, इसलिए यह याद रखना उपयोगी होगा कि तनवीर साहब की जबर्दस्त सफलता तथा लोकप्रियता, कोई उन्हें तश्तरी में परोस कर नहीं दे दी गयी है बल्कि जीवन भर के गंभीर तथा अनवरत प्रयत्न व संघर्ष से उन्होंने अर्जित की है।

लोक मानस में हबीब तनवीर का नाम लोक नाट्य के विचार के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। बहरहाल, जब उन्होंने अपने कैरियर की शुरूआत की थी, ''लोक'' का समकालीन नाट्य व्यवहार का एक प्रमुख आग्रह बनना अभी दूर ही था। वास्तव में उन्हें प्रस्तुति के लोक रूपों तथा परंपराओं में दिलचस्पी जगाने के पथनिर्माताओं में माना जा सकता है। फिर भी लोक संस्कृति के प्रति उनकी दृष्टि, समाकालीन नाटक के दूसरे अनेक सर्जकों से बहुत अलग ठहरती है। खासतौर पर लोक के प्रति उनकी दृष्टि और आम तौर पर उनकी सांस्कृतिक चेतना, वामपंथी सांस्कृतिक आंदोलन— खासतौर पर इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) तथा प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन (पी डब्ल्यू ए) की कुठाली में ढ़ली थी। विश्वविद्यालय के बाद के अपने शुरूआती वर्षों में तनवीर ने इन संगठनों में सक्रिय रूप से हिस्सेदारी की थी।

तनवीर, लोक में अपनी दिलचस्पी की शुरूआत की कड़ी अपने बचपन से जोड़ते हैं। वह रायपुर में जन्मे और पले-बढ़े थे। उस जमाने में रायपुर एक छोटा सा कस्बा हुआ करता था, हर तरफ से गांवों से घिरा हुआ। कस्बे के बाशिंदों और गांव के लोगों के बीच रोजाना का और लगातार संपर्क रहता रहता है। हालांकि उनका अपना परिवार कस्बे में रहता था, उनके कुछ चाचा-मामा जमींदार थे और अक्सर गांव आया-जाया करते थे। बचपन में उन्हें भी गांवों में जाने के बहुत मौके मिले थे, जहां वे लोगों से स्थानीय गीत-संगीत सुना करते थे। वह इन गीतों से इतने प्रभावित थे कि इनमें से कुछ तो उन्होंने याद भी कर लिए थे। स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद उन्हें स्नातक की डिग्री के लिए अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय भेजा गया था। वहां की पढ़ाई खत्म करने के बाद, 1945 में वह मुंबई पहुंच गए और फौरन इप्टा तथा पी डब्ल्यू ए में शामिल हो गए।

काव्य और संगीत में तनवीर की इस दुहरी दिलचस्पी को नाटक के मंच पर पहली महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति हासिल हुई **आगरा बाजार** में। यह नाटक उन्होंने दिल्ली चले आने के फौरन बाद, 1954 में लिखा और खेला था। जब वह दिल्ली पहुंचे और यहां नाटक में अपने कैरियर की शुरूआत की, तब तक राजधानी के नाट्य जगत में शौकिया या कॉलेजी नाट्य ग्रुपों का ही बोलबाला था, जो महानगर के आंग्लप्रेमी अभिजात वर्ग के एक छोटे से सामाजिक तबके के लिए ही या तो अंग्रेजी में ही अंग्रेजी के नाटक प्रस्तुत करते थे या फिर भाषाओं में उनके अनुवाद। ये नाट्य ग्रुप और इसके एक दशक बाद नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एन एस डी) भी, नाटक की अपनी अवधारणा और अभिनय, मंचन तथा निर्देशन के अपने मानकों में उन्नीसवीं सदी के आखिरी तथा बीसवीं सदी के आरंभिक दौर के योरपीय मॉडलों से ही संचालित होते थे। इसकी कोई कोशिश ही नहीं थी कि नाटक के काम को प्रस्तुति की देसी परंपराओं के साथ जोड़ा जाए। यहां तक कि ऐसा कुछ कहने की कोई कोशिश तक नहीं थी जो एक भारतीय श्रोता समूह के लिए तत्काल महत्व का और दिलचस्पी का हो। इससे बिल्कुल उलट, **आगरा बाजार** रूप और अंतर्वस्तु, दोनों में ही एक मूलगामी तरीके से भिन्न अनुभव प्रस्तुत करता था। शहर ने इससे पहले कभी ऐसा कुछ देखा ही नहीं था।

यह नाटक, जैसाकि हम जानते ही हैं, अठारहवीं सदी के बहुत ही अनूठे उर्दू शायर, नज़ीर अकबराबादी की रचनाओं और उनके जमाने पर आधारित है। नज़ीर अकबराबादी ने न सिर्फ आम लोगों तथा उनकी रोजमर्रा की चिंताओं के बारे में लिखा था बल्कि ऐसी भाषा व शैली में भी लिखा था जो काव्य भाषा तथा विषय वस्तु के संबंध में पुराणपंथी, अभिजात विधि-निषेधों को धता बताकर चलती थी। हबीब तनवीर ने एक बहुत ही दिलचस्प और अपने वक्त के लिए क्रांतिकारी कलात्मक रणनीति आजमाते हुए, एक ओर शिक्षित मध्यवर्गीय शहरी अभिनेताओं और दूसरी ओर ओखला गांव से कमोबेश निरक्षर लोक तथा नुक्कड़ कलाकारों के मिश्रण का सहारा लेकर, मंच पर जो उतारा वह कोई

सामाजिक व वास्तु की दीवार से घिरी निजी रिहाइश नहीं थी बल्कि यह तो एक बाजार था। एक ऐसा बाजार, जिसमें बाजार की सारी चहल-पहल थी, जिसमें एकजुटताओं की मिसालें भी थीं तो विरोधी स्वर भी थे और सबसे बढ़कर बाजार की तीखी सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक ध्रुवीयताएं थीं। यह नाटक ऐसी शायरी को भी सामने रखता है, जो आम लोगों को (उनकी जिंदगियों को और उनके रोजमर्रा के संघर्षों को भी) संबोधित भी करती है और उन्हीं से प्रेरणा भी लेती है। उसमें नज़ीर की शायरी की मिसाल को तथा अवाम पर उसकी पकड़ को, पुराणपंथी, अभिजात साहित्यिक मानकों को चुनौती देने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इस तरह यह नाटक उस चीज का एक खुशकर्दा उत्सव प्रस्तुत करता है, जिसे मिखाइल बाख्तिन ने 'बाजार की संस्कृति' का नाम दिया था।

आगरा बाजार में, उन दो चीजों पर तनवीर के विशेष जोर की पहली और बेहतरीन अभिव्यक्तियों में से एक देखने को मिलती है, जो उनके नाट्यकर्म की पहचान ही बन गया। पहला, गरीब-गुरबा के प्रति एक कलात्मक तथा विचारधारात्मक झुकाव। और दूसरा, नाटकों में संगीत तथा कविता का उपयोग करने की और एक फालतू चमक-दमक के रूप में नहीं बल्कि ब्रेख्त की ही तरह, एक्शन के अविभाज्य हिस्से के तौर पर उनका उपयोग करने की रुचि इस प्रस्तुति के कुछ ही समय बाद तनवीर इंग्लेंड चले गए, जहां रॉयल अकादमी ऑफ ड्रामैटिक आर्ट्स (राडा) और ब्रिस्टल ओल्ड विक थिएटर स्कूल में नाट्य कला का अध्ययन करते हुए तीन साल से ज्यादा गुजारे। उन्होंने योरप का भी विस्तृत दौरा किया था और उनके नाटक देखे थे। उन्होंने 1956 में करीब आठ महीने बर्लिन में गुजारे थे और बर्टोल्ट ब्रेख्त के अनेक ताजा नाटकों का मंचन देखा था। (ब्रेख्त की मृत्यु उसी वर्ष हुई थी।) यह इस जर्मन नाटक लेखक-निर्देशक की नाट्य कृतियों से तनवीर की पहली ही मुठभेड़ थी और वह इस मुठभेड़ से जितनी गहराई से प्रभावित हुए थे, उतनी गहराई से राडा में हुए अपने सारे शिक्षण-प्रशिक्षण से नहीं हुए थे। वास्तव में, भारत लौटने के बाद जल्द ही उन्होंने इंग्लेंड में जो सीखा उसे अनसीखा करना शुरू कर दिया और इस तरह विकास का ऐसा मार्ग अपनाया, जो ब्रिटेन में प्रशिक्षित भारतीय निर्देशकों द्वारा अपनाए गए रास्ते से ठीक उल्टा था। तनवीर का यह विश्वास अब और ज्यादा पक्का हो गया था कि कोई सामाजिक रूप से सार्थक तथा कलात्मक रूप से दिलचस्प नाटक तब तक संभव ही नहीं है जब तक अपनी ही सांस्कृतिक परंपराओं तथा संदर्भ से जुड़कर काम न किया जाए।

इसी की बढ़ी हुई चेतना का नतीजा था कि उस समय के नाट्य परिदृश्य पर जो औपनिवेशिक मानस हावी था उसकी ओर से मुंह मोड़कर, तनवीर नाट्य प्रस्तुति की एक देसी भाषा, शैली की अपनी लंबी तलाश में जुट गए। इस तलाश के फलस्वरूप ही यह निर्देशक उस नाट्य रूप व शैली तक पहुंचा, जो अब उसके नाट्यकर्म की पहचान ही हैं। लेकिन, वह कम से कम दो स्पष्ट रूप से अलग चरणों से गुजर कर यहां तक पहुंचे हैं।

उनका पहला कदम था, छत्तीसगढ़ के कुछ लोक कलाकारों तथा उनके परंपरगात रूपों व तकनीकों के साथ काम करना। योरप से लौटने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने जो पहला नाटक किया, वह था **मिट्टी की गाड़ी** (शूद्रक के **मृच्छकटिकम** का अनुवाद), जिसकी कास्ट में छत्तीसगढ़ के छः लोक कलाकारों को रखा गया था। इसके अलावा उन्होंने लोक मंच की परंपराओं व टैक्नीकों का उपयोग किया था और इस तरह पूरी प्रस्तुति को एक स्पष्ट रूप से भारतीय शैली व रूप प्रदान किया था। इस नाटक को, जिसे अब भी जब-तब पुनर्जीवित किया जाता रहता है (हालांकि अब यह नाटक पूरी तरह से ग्रामीण अभिनेता ही खेलते हैं) बहुत से लोग इस प्राचीन क्लासिक कृति की सर्वश्रेष्ठ आधुनिक प्रस्तुति मानते हैं।

मिट्टी की गाड़ी से हबीब तनवीर को इसका पक्का विश्वास हो गया कि लोक नाटक की शैली व तकनीकें, संस्कृत नाट्य लेखकों की कृतियों की नाट्यकला में अंतर्निहित शैली व तकनीकों से मेल खाती हैं। उनका मानना है कि संस्कृत नाटकों की नाट्य शैली तक, लोक परंपराओं से होकर पहुंचा जा सकता है। तनवीर का कहना है कि क्लासिक नाट्य लेखक जैसे कल्पनाशील लचीलेपन व सरलता से अपने नाटकों में एक्शन का देश व काल स्थापित करते हैं तथा बदलते हैं, वह हमारी लोक प्रस्तुतियों में बहुतायत में पाया जाता है। मिट्टी की गाड़ी और विशाखदत्त के मुद्राराक्षस की उनकी ताजातरीन प्रस्तुति, इसे व्यवहार में प्रमाणित करते हैं। मिसाल के तौर पर इन दोनों ही प्रस्तुतियों में, नाटक को बाकायदा रोके बिना ही, संवादों तथा मूवमेंट के जरिए, देश व काल के बदलाव को सूचित कर दिया जाता है। **मिट्टी की गाड़ी** से एक मिसाल देना चाहूंगा। नाटक में एक पात्र अपने मातहत को आदेश देता है कि बागीचे में जाए और देखकर आए कि क्या वहां किसी औरत की लाश है। मातहत बस एक बार मंच के गिर्द चक्कर लगाता है और लौटकर जवाब दे देता है, ''मैं बागीचे गया और मैंने देखा कि वहां एक औरत की लाश है''।

तनवीर और उनकी पत्नी मोनिका मिश्रा ने (जो खुद अमरीका में प्रशिक्षित नाट्कार थीं) 1959 में अपनी एक नाटक कंपनी की स्थापना की थी और उसे नया थिएटर का नाम दिया था। इस ग्रुप ने अनेक नाटक खेले थे, जिनमें भारत तथा योरप के आधुनिक व प्राचीन क्लासिक नाटक भी शामिल थे। हालांकि, इनमें से ज्यादातर नाटक शहरी अभिनेताओं को लेकर खेले गए थे, लोक परंपराओं व कलाकारों में हबीब की दिलचस्पी बनी रही और बढ़ती गयी। बहरहाल, 1970 के दशक के आरंभ में कहीं जाकर ही यह लगाव एक नये तथा कहीं ज्यादा टिकाऊ चरण में पहुंच पाया।

अपने कैरियर के उस चरण में तनवीर लोक कलाकारों के साथ अपने काम से पूरी तरह से संतुष्ट नहीं थे। उन्हें लोक कलाकारों के प्रति अपने रुख में दो ''खोट'' नजर आए। पहला, यह उनकी समझ में आ गया कि मूवमेंट तथा रौशनी की गति कागज पर तय करने के जरिए, पहले से अनमनीय तरीके से कलाकार के प्रदर्शन को तय कर देना, सही नहीं

था। उन्हें यह महसूस हुआ कि इस तरह की व्यवस्था ग्रामीण कलाकारों के साथ नहीं चल सकती है, जो लिख–पढ़ नहीं सकते थे और यह भी याद नहीं रख सकते थे कि किस तरफ से और किस लाइन पर उन्हें गति में आना है। दूसरी मुश्किल यह थी कि हिंदी या हिंदुस्तानी में नाटक करने में, वह इन कलाकारों से मानक हिंदी बुलवा रहे थे और यह ऐसी भाषा थी जिसके वे अभ्यस्त नहीं थे। इसका नतीजा यह होता था कि उन्हें एक गंभीर कमजोरी के साथ अभिनय करना पड़ता था और इस तरह नाटक के प्रदर्शन में, उनकी सर्जनात्मकता की पूर्ण तथा अकुंठ अभिव्यक्ति नहीं हो पाती थी।

इन खोटों को पहचान कर हबीब ने अपने काम को उनसे बरी करना शुरू कर दिया। उन्होंने इंप्रोवाइजेशन करने की पद्धति का उपयोग शुरू कर दिया। उन्होंने इन लोक कलाकारों को अपनी छत्तीसगढ़ी बोली में बोलने का भी मौका देना शुरू कर दिया। 1970–73 का दौर उनके लिए एक तलाश का दौर था। इस दौर में उन्होंने बड़े सघन तरीके से ग्रामीण कलाकारों के साथ, उनकी बोली में तथा नाट्य प्रदर्शन की उनकी अपनी शैली में काम किया। वह उन्हें अपने ही परंपरागत टुकड़े, ज्यादातर अपने ही तरीके से करने देते थे और उन्हें मंच प्रस्तुति के लायक बनाने के लिए उनका संपादन करने तथा यहां–वहां उन्हें निखारने भर का ही काम करते थे। इस दौर में उन्होंने मंदिरों के कर्मकांडों से लेकर, जाने–पहचाने लघु नाटकों तथा **पंडवानी** तक, बहुत कुछ आजमा कर देखा था।

दूसरा महत्वपूर्ण मोड़ आया नाचा कार्यशाला के दौरान जो 1972 में रायपुर में हबीब तनवीर ने आयोजित की थी। इस कार्यशाला के लिए रायपुर, दिल्ली तथा कोलकाता से पहुंचे अनेक प्रेक्षकों के अलावा, इस क्षेत्र के सौ से ज्यादा लोक कलाकारों ने महीने भर से ज्यादा चली इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। इस कार्यशाला के दौरान नाचा की प्रस्तुतियों के जाने–पहचाने खजाने में से तीन अलग–अलग परंपरागत हास्य कृतियों को लिया गया और उन्हें कमोबेश एक–दूसरे के हिसाब से ढालकर, एक एकीकृत, पूरी लंबाई के नाटक का रूप दे दिया गया। कुछ संक्षिप्त दृश्यों को इंप्रोवाइज किया गया और बीच में जोड़ दिया गया, जिससे सब को मिलाकर एक कहानी बन सके। समुचित संपादन के बाद ऐसे कई गीतों को भी जोड़ दिया गया, जिन्हें इससे पहले कभी मंच पर नहीं लाया गया था। इस तरह जो नाटक बना उसे नाम दिया गया, ''गांव नाव दामाद, मोर नाव ससुरल।'' यह एक खुशगवार मंच नाटक था जो लगभग पूरी तरह से इंप्रोवाइज होकर तैयार हुआ था।

यह नाटक हबीब तनवीर के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस प्रस्तुति के साथ, जो छत्तीसगढ़ में ही नहीं दिल्ली में भी जबर्दस्त ढंग से सफल रही थी, उन्होंने नयी जमीन तोड़ी थी। उन्हें यह महसूस हुआ कि 1950 में एक निर्देशक के रूप में नाटक की दुनिया में अपने पदार्पण के बाद से वह बराबर जिस रूप और शैली की तलाश कर रहे थे, वह उन्हें मिल गयी थी। 1973 की कार्यशाला के बाद, उनके लिए यह आसान हो गया कि इंप्रोवाइजेशन के जरिए अपना नाटक गढ़ें तथा उसकी कास्टिंग करें। वह आज भी इसी

पद्धति का व्यवहार करते हैं। 1975 में जब उन्होंने अपना मास्टरपीस ''चरणदास चोर'' खेला, जो देश भर में नाटक के दर्शकों का सदाबहार चहेता बना रहा है, नाटक की उनकी शैली और रूप ने अपना चरमोत्कर्ष हासिल कर लिया था।

तनवीर का नया थिएटर करीब-करीब पूरी तरह से लोक कलाकारों के साथ ही काम करता है। बहरहाल, तनवीर ने जब तब शहरी अभिनेताओं के साथ तथा नया थिएटर के सिवा दूसरे ग्रुपों के लिए जो नाटक किए भी हैं— जैसे ''दुश्मन'' (गोर्की के एनीमीज़ का रूपांतर) एन एस डी रिपर्टरी के लिए या ''जिस लाहौर नहीं देख्या वो जन्म्याई नहीं'' (लेखक, असगर वजाहत)— उस शैली की छाप लिए हुए हैं, जो लोक कलाकारों के साथ अपने काम के जरिए उन्होंने विकसित की है। फिर भी तनवीर ने जो नाटक विकसित किया है, एकदम ठीक-ठीक कहें तो उसे ''लोक नाटक'' नहीं कह सकते हैं। वास्तव में वह तो एक बहुत ही सचेत तथा अत्यधिक बारीकी तक जाने वाले शहरी कलाकार हैं, जिनका दृष्ट्रिकोण व संवेदना आधुनिक है और जो इतिहास व राजनीति की गहरी समझ रखते हैं। लोक संस्कृति में उनकी दिलचस्पी और उनका नाट्य प्रस्तुति की परंपरागत शैलियों के साथ तथा उनकी भाषा में काम करने का निर्णय अपने आप में, जितना सौंदर्यबोधात्मक चुनाव का मामला था, उतना ही विचारधारात्मक चुनाव का भी मामला था। यह दूसरी बात है कि तनवीर खुद उसके ऐसा चुनाव होने के बारे में सचेत रहे हों या न रहे हों। परंपरागत रूपों की ओर उनके झुकाव और उनके वामपंथी झुकाव के बीच, एक घनिष्ठ संबंध है। वामपंथी सांस्कृतिक आंदोलन के साथ उनका जुड़ाव, जो कितने ही ढीले-ढाले तरीके से क्यों न हो वह अब तक बनाए हुए हैं, आम आदमी तथा उसके हितों के लिए एक प्रतिबद्धता तो पहले ही निश्चित कर चुके थे। नाटक में उनका काम, अपनी शैली तथा अपनी अंतर्वस्तु दोनों में ही, इस प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करता है और इसे जनता के शक्तिकरण की वृहत्तर (समाजवादी) परियोजना के हिस्से के तौर पर देखा जा सकता है।

लोक के प्रति तनवीर का लगाव किसी पुनरुत्थानवादी या प्राचीनतावादी आवेग से संचालित नहीं है। इसके बजाय यह इसकी जागरूकता पर आधारित है कि इन परंपराओं में जबर्दस्त सर्जनात्मक संभावनाएं और कलात्मक ऊर्जाएं छुपी हुई हैं। तनवीर उनसे कथ्य, टैक्नीक तथा संगीत लेने में नहीं हिचकते हैं, लेकिन वह इस नामुमकिन काम से जरूर बचते हैं कि पुरानी परंपराओं को उनके मूल रूप में पुनर्जीवित किया जाए और उन्हें खाल में भुस भरकर संग्रहालय में खड़े किए गए जंतुओं की तरह पेश किया जाए। इस संबंध में आम तौर पर जो भ्रांतिपूर्ण धारणा बनी हुई है उसके बावजूद, उनका नाटक सम्पूर्णता में या शुद्ध रूप से किसी एक रूप या एक परंपरा में नहीं रखा जा सकता है। वास्तव में वह कभी यह ध्यान दिलाने में नहीं चूकते हैं कि वह अगर पीछे भागते रहे हैं तो लोक रूपों के पीछे नहीं भागते रहे हैं बल्कि लोक कलाकारों के पीछे भागते रहे हैं, जो अपने साथ अपने ही

रूप तथा शैलियां लेकर आए हैं। इसमें शक नहीं कि उनके नाटकों के कलाकारों की प्रस्तुति शैलियां परंपरागत नाचा की पृष्ठभूमि से जुड़ी रही हैं, लेकिन उनके नाटकों को नाचा की प्रामाणिक प्रस्तुतियां नहीं माना जा सकता है। एक बात तो यही है कि जहां नाचा में वास्तविक अभिनेताओं की संख्या दो या तीन तक ही सीमित रहती है और बाकी सब जरूरत पड़ने के हिसाब से गायक, नर्तकों का जिम्मा संभालते हैं, हबीब तनवीर के नाटकों में अभिनेताओं की पूरी कास्ट होती है, जिसमें से कुछ नाचते तथा गाते भी हैं। इससे भी महत्वपूर्ण यह कि उनके नाटकों में एक संरचनात्मक सुसंगतता तथा जटिलता रहती है, जिसे सामान्यत: नाचा के ''सरल'' रूप से जोड़कर नहीं देखा जा सकता है। एक और महत्वपूर्ण अंतर यह है कि जहां नाचा में गीतों तथा नृत्यों का उपयोग बहुत हद तक स्वतंत्र संगीतपूर्ण अवकाशों के रूप में किया जाता है, तनवीर के नाटकों में उनकी भूमिका न तो सिर्फ सजावटी होती है और न उनकी स्थिति ऐसी बाकायदा स्वायत्त इकाइयों की होती है, जिन्हें अलग–अलग खाकों (स्किट्स) के ढ़ीले–ढ़ाले संकलन के बीच–बीच में जोड़ दिया जाता है। उल्टे उन्हें नाटक के एक्शन के ताने–बाने में गहराई से बुना जाता है और ये नाटक की समग्र कथ्यगत तथा कलागत संरचना के महत्वपूर्ण अंग की भूमिका अदा करते हैं।

हबीब तनवीर की शहरी, आधुनिक चेतना और लोक रूपों व शैलियों की इस समृद्ध अंतर्क्रिया की शायद सबसे अच्छी अभिव्यक्ति उनके नाटकों के गीतों में होती है। **अ मिड समर नाइट्स ड्रीम** का शानदार रूपांतर, **कामदेव का अपना, बसंत ऋतु का सपना** और **द गुड वूमन ऑफ शेजुआन** का ऐसा ही रूपांतर, **शाजापुर की शांतिबाई**, इस तरह की अंतर्क्रिया के बिना संभव ही नहीं था। इन नाटकों में उन्होंने मूल पाठ तथा लिखित गीतों के नजदीक रहकर काम किया है, शेक्शपियर की कविता की समृद्ध कल्पना व हास्य को और ब्रेख्त के जटिल विचारों को सामने लाना संभव हुआ है। लेकिन, मूल पाठ के प्रति इस तरह वफादार बने रहने के बावजूद, हबीब तनवीर ने अपनी गीत रचनाओं को मूल की प्रामाणिकता व ताजगी से ही संपन्न नहीं बनाया है, उल्लेखनीय सरलता तथा कुशलता के साथ, अपने शब्दों को लोक धुनों में ढ़ाला भी है।

इस तरह की अंतर्क्रिया की सबसे असाधारण मिसाल है, हबीब तनवीर का नाटक **देख रहे हैं नयन**, जो स्टीफन ज्वेग की कहानी पर आधारित है। इस नाटक में उन्होंने एक जटिल कथ्य को, अपने लोक कलाकारों की जीवंतता तथा सर्जनात्मकता को बनाए रखते हुए बहुत ही सफलता के साथ पेश किया है। हबीब तनवीर को ज्वेग की कहानी में जिस चीज ने आकर्षित किया था, वह थी साहसी योद्धा कथानायक की नैतिक दुविधा, जो अपने भाई को मारने पर मजबूर होने के पाप बोध से पीड़ित है। बहरहाल, इस कहानी पर आधारित नाटक लिखते हुए वह कहानी से आगे तक जाते हैं और नयी घटनाओं, स्थितियों, पात्रों का आविष्कार करते हैं और नये पहलू व अर्थ–संकेत जोड़ते हैं, जिस सबसे कहानी

और समृद्ध हो जाती है और आज के लिए भावनात्मक रूप से और ज्यादा प्रासंगिक हो जाती है। इसका नतीजा एक ऐसे नाटक के रूप में सामने आया है जो संकेतकों के जटिल समूह के बीच से यात्रा करता है और अमूर्त से, आंतरिक शांति की लगभग आधिभौतिक तलाश से चलकर युद्ध, मंहगाई और राजनीतिक भ्रष्टाचार की पृष्ठभूमि में, आम लोगों की लौकिक समस्याओं तक जाता है; राजनीतिक सत्ता के त्याग तथा पूर्ण एकाकीपन की दिशा में आदर्शवादी आवेग से मुड़कर, इसकी जरूरत के तीखे एहसास की तरफ जाता है कि दुनिया को बदलने के साझा प्रयत्न के लिए, दूसरों के साथ जुड़ा जाए। हबीब तनवीर इस संबंध में बहुत ही सावधान हैं कि एक कवि-नाट् लेखक-निर्देशक के रूप में खुद अपनी एक शिक्षित व्यक्ति की चेतना को, अपने अभिनेताओं की अशिक्षित सर्जनात्मकता के मुकाबले, किसी निरपेक्ष तथा आरोपित तरीके से ऊपर रखे जाने की, कोई सोपान व्यवस्था न बनने दें। उनके काम में सामान्यत: ये दोनों तत्व, एक सामूहिक, सहयोगी उद्यम में बराबरी के हिस्सेदारों के तौर पर मिलते हैं तथा परस्पर एक-दूसरे में प्रवेश करते हैं। इस सामूहिक उद्यम में दोनों ही एक-दूसरे से लेते-देते हैं और इस तरह दोनों ही एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं। इस शोषणमुक्त रुख की बेहतरीन मिसाल है, हबीब तनवीर का अपनी कविता को परंपरागत लोक व आदिवासी संगीत में ढ़ालना तथा उसके हिसाब से ढालना। इस प्रक्रिया में कविता अपनी कल्पनाशीलता की व भाषायी शक्ति को तथा सामाजिक-राजनीतिक अर्थ को भी बनाए रखती है और दूसरी ओर किसी भी तरह लोक व आदिवासी संगीत का अवमूल्यन या विनाश नहीं करती है। इसी की एक और मिसाल इसमें देखी जा सकती है कि वह किस तरह, बहुत विस्तृत स्टेज डिजाइन तथा जटिल प्रकाश व्यवस्थाओं का उपयोग करने के सारे प्रलोभनों को छोड़कर, नाट्य प्रस्तुतियों में अपने कलाकारों तथा उनके कौशलों को प्रमुखता से सामने आने का मौका देते हैं।

इस तरह, एक ओर फैशनेबल, साधारणिक किस्म के नाटक और दूसरी ओर पुनरुत्थानवादी व पुराणपंथी किस्म के 'पारंपरिक' नाटक के विपरीत, हबीब तनवीर का नाटक परंपरा तथा आधुनिकता का, एक ओर लोक रचनाशीलता व कौशल तथा दूसरी ओर आधुनिक आलोचनात्मक चेतना का, धारदार योग पेश करता है। यह समृद्ध तथा समृद्धकारी योग ही है जो उनके काम को इतना अनोखा तथा स्मरणीय बना देता है।

(नवंबर , 2000)

c[r vkj gchc nj ;k djhc

Hkkjrjru Hkkxo

chloh lnh d lcl egÙoi.k ukVddkjk] fun'kdk vkj jxfpUrdk e crkYr c[r lHkor% lcl vf/kd pfpr vkj i'kflr jg gA [kkl rkj l blfy, fd ik'pkR; jxep dh cfu;kn le> tku oky vjLr d ukV; fl)kUrk dk vUrjk"Vh; Lrj ij bruk cMk >Vdk igy dHkh ugh yxk FkkA vkrk vkrk] e;j xkYM] xkVkOLdh] ihVj cd] fjpM 'k[kuj vkfn vud jxfpUrdk u Hkh bl fn'kk e de egÙoi.k ;kxnku ugh fn;k(yfdu c[r dh ekuoh; lonuk ;k jktufrd nf"V u fo'o&Lrj ij dyk&foe'k dk tk ,d loFkk ub vkj iHkkodkjh fn'kk nh] og vU;re FkhA

fo'o d vud jx leh{kdk u gchc ruohj d jxde dk c[r d ?kjku dk gh ifrikfnr fd;k gA dN jx leh{kdk u mUg Hkkjrh; ikjifjd jxep vkj c[r d chp dh dMh d :Ik e n[kk gA ,fMucjk QfLVoy e ^*pjunkl pkj*ß dh iLrfr d ckj e ,d leh{kd u ;g Hkh dgk^ ykd uR; vkj xhrk l l t bl ukVd e lLdr ijEijk vkj c[r dk vnHkr leUo; gAÞ

Lo; gchc ruohj u dHkh bl utfj, dk [kMu&eMu ugh fd;kA cfYd mUgku viu vud y[kk] HkV&okrkvk vkj Hkk"k.kk e c[r d jxde dh egÙkk dk ifrikfnr djr g, ml x#rY; ekU;rk nh gA

c[r tl egÙoi.k jx 0;fDrRo dk nfu;k Hkj d vudkud 'kh"kLFk fun'kdk] ukVddkjk vkj leh{kdk u mUeDr eu l ljkgk gA mudh jkg l vyx gVdj ub jkg vUof"kr dju oky jxdfe;k u Hkh mudh i'kIk dh gA blfy, ;fn gchc ruohj Hkh c[r d fopkjk] vo/kkj.kkvk ;k ekU;rkvk dh i'kIk djr g rk ble dN Hkh

vLokHkkfod ugh gA yfdu egÙoi.k i'u ;g g fd gchc ruohj c[r d i'kId ek= g ;k mud fI)kUrk d vudrk ;k vuxkeh Hkh! D;k gchc ruohj dk jxde fopkj vkj ekU;rk,] c[r d fI)kUrk dk vudj.k g \

dgh ,Ik rk ugh viuh jkg d vUo".k d nkjku gchc ruohj dk c[r d fI)kUrk vkj ekU;rkvk e cgr dN ,Ik utj vk;k gk tk mud fopkjk d IekukUrj jgk gkA D;k bIdk foopu djuk vko';d ugh fd gchc ruohj dk jxde c[r d fdruk fudV g vkj dgk dN ,Ik g tk mUg c[r dh iLrfrdj.k 'kyh I vyx Hkh djrk gA

D;k mud ukVdk dh iLrfr;k dk vkLokn c[r d ukVdk vkj mudh iLrfr;k I n'kdk ij iMu oky iHkko I dN gVdj g\

D;k gchc ruohj d ukVdk dk iHkko fdIh Hkh :Ik e ,d IoFkk u;k vuHko nu okyk g \ bu i'uk d mÙkj dh [kkt d fy, ge tjk xgj tkdj fo'y"k.k djuk gkxkA

Ip rk ;g g fd c[r vkj gchc nkuk d 0;fDrÙok e dN tcjnLr Iekurk, gA nkuk gh fny I 'kk;j vkj fnekx I dVVj ekuorkoknh gA nkuk dh ekuorkoknh nf"V e Iekt d mI ox dk ifrfuf/kRo g tk doy Iogkjk gh ugh] cfYd mif{kr vkj R;kT; Hkh gA nkuk gh vR;Ur Ik/kkj.k I utj vku oky pfj=k dh vIk/kkj.krk ij viuh fo"k;&oLr dk Itu djr gA c[r vkj gchc] nkuk u gh jxep dh LFkkfir vkj Lohdr ekU;rkvk dk [kMu djd n'kdk dk ,d u, vkLokn I ifjfpr djk;k gA bIh u, vkLokn dh ryk'k e nkuk u viu&viu rjhd I e'kDdr dh gA nkuk u gh viu&viu n'k vkj Iekt e tcnLr jktuhfrd gypy n[kh vkj 'kkf"kr rFkk Iogkjk d nn dh vkokt cuA nkuk d y[ku vkj fpUru e I?k"k d ; Loj jxep ij vfHk0;Dr gku I io gh mud Itu&de e e[kfjr gku yx FkA

yfdu] bu vud Iekurkvk d ckotn mudh jkg ,dne vyx&vyx jgh gA

IcI cMh ckr rk ;g g fd tc gchc ruohj dk jxep I ukrk Hkh ugh tMk Fkk] rc rd crkYr c[r jxep dh nfu;k e ijh rjg LFkkfir gk pd FkA c[r] gchc ruohj I me e 25 o"k cM FkA Iu 1948 e tc gchc ruohj doy 15 o"k d Fk] rc crkYr c[r u viu ukV; fI)kUrk dh ifI) iLrd ^fDyuI vkxuku Qkj nkI fFk,Vj* ;kuh ^, 'kkV vkxue Qkj nk fFk,Vj* fy[k yh Fkh vkj mI iLrd d idk'ku d IkFk gh fo'o& jxep e tcjnLr gypy ink dj nh FkhA

;g vueku yxkuk dfBu ugh g fd ;okoLFkk e tc gchc ruohj bIVk d cuj e cyjkt Ikguh] nhuk ikBd vkj ekgu Igxy tI IfoK ykxk d IkFk ukVd dj jg Fk] rc rd ekV rkj ij mudk ifjp; dN ie[k ik'pkR; ukV;&fI)kUrk I gk pdk gkxkA ,d vR;Ur fnypLi iIx e gchc ruohj u LrkfuLyk0Ldh d ukV;&I= bek'ku eekjh dh rt ij cyjkt Ikguh }kjk ^ely eekjh* dk ikB Ik<k; tku dk ftd fd;k

gA

fdlh lkekU; l fun’kd d fy, ;g cgr vklku vkj ljy rjhdk gkrk fd viu ge&[;kykr d ukV;&l=k vkj fl)kUrk dh ylhd ij py dj mUgh dk fi"V&i"k.k djrk] yfdu gchc ruohj u ;g jkLrk ugh viuk;kA ;g rk Bhd g fd viu jx&thou d vkjfEHkd fnuk e o c[r vkj mud ukV;&fl)kUrk l ijh rjg ifjfpr ugh Fk] yfdu mud vkjfEHkd jxde e ,d [kkl :>ku t:j utj vkrk gA

lu 1948 e cEcb dh ,d fey d ckgj etnjk d chp mUgku viuk fy[kk igyk uDdM ukVd ^*’kkfUrnr dkexkj** iLrr fd;kA mld ckn iepUn dh ifl) dgkuh ^’krjt d f[kykMh* dk :ikUrj fd;k&^*’krjt d ekgj** d uke lA ;g mud }kjk :ikUrfjr vkj funf’kr igyk jxeph; ukVd Fkk] ftle mUgku l=/kkj dh Hkfedk Hkh fuHkkbA bld ckn lu 1952 e :lh ukVd ^*n Qfeukbu Vp** dk :ikUrj ^*tkyhnkj in** d uke l fd;kA yfdu ;g mud vUreu d if’k{k.k dk nkj dgk tk ldrk g] ftll xtju ij mud eu e ,d futh egkoj dh ryk’k dh Hk[k tkxhA

rc rd gchc lkgc bIVk d l;ktd cu pd FkA ljnkj tkQjh] cyjkt lkguh] nhuk xk/kh oxjg ikVh d urk ukVdk d tfj, v’kkfUr Qyku d te e ty e Mky fn, x, FkA blfy, gchc lkgc ij bIVk d ukVd puu] fy[ku vkj funf’kr dju dk Hkkj vuk;kl vk iMkA

bIVk dE;fuLV ikVh dk lkLdfrd idk"B FkkA LorU= :lk l jxep vkj ukVdk d lEcU/k e bIVk dh dkb Li"V jhfr&uhfr ugh FkhA dE;fuLV ikVh d foHkktu d ckn bIVk e ,d lEHke dh fLFkfr ink gk xbA

;|fi gchc ruohj ikVh d lfd; lnL; ugh Fk] fQj Hkh o dE;fuLV ikVh d fopkjk d dVVj leFkd FkA d’u pUnj] jkftUnj flg cnh] bLer pxrkb] ljnkj vyh tkQjh] ‘kyUn] ekgu lgxy] cyjkt lkguh vkj nhuk xk/kh tl ykxk u ukVdk dh ctk; fQYek dk viu fopkjk dh vfHkO;fDr dk ek/;e puk] yfdu gchc ruohj cEcb NkMdj fnYyh py vk,A bl lEcU/k e mUgku fy[kk %

Þe> tk Hkh dN dguk Fkk&lkUn;Z ‘kkL= e] in’kudkjh dykvk e vkj lkFk gh lkekftd :lk l jktufrd utfj, l] mldk ek/;e fluek ugh Fkk] fFk,Vj FkkA ;g ,d cgr lkQ ck/k Fkk eu e] ikpo n’kd d vkjfEHkd fnuk e] tk e> fnYyh y vk;kAß

;gk ge gchc ruohj vkj crkYr c[r e ,d vkj lekurk utj vkrh gA lrgh rkj ij yxHkx rhl o"kk rd c[r dE;fuLV ikVh d dVVj leFkd rk Fk] yfdu o dHkh Hkh ikVh d lnL; ugh jgA lu 1947 e viu fo#) ,d edne dh luokb d nkjku mUgku dgk^ ;g ej fy, lcl vPNk Fkk fd e fdlh Hkh jktufrd ny dk lnL; u cu- - -ejk [;ky g fd o ¼ vFkkr teu dE;fuLV ½ e> ek= ,d ,l y[kd

d rkj ij eklU;rk nr g tk lp fy[kuk pkgrk gk] tl k fd mlu n[kk] yfdu ,d jktufrd 0;fDr dh rjg ugh - - -eu ik;k fd ; ejk dke ugh gAß

bl lekurk dk nljk i{k Hkh de fnypLi ughA c[r vkj gchc Hky gh dE;fuLV ikVh d lfd; lnL; u jg gk] yfdu jktuhfrd nf"V l mld fl)kUrk vkj fopkjk l ijh rjg tM jgA ;g dguk 'kk;n vR;fDr u gkxh fd nkuk d jxde dk lkekftd fn'kk nu okyk ie[k rRo d :lk e ekDlokn h fopkj/kkjk gh dUn e jgh gA

yfdu] nkuk dh ekDlokn h fopkj/kkjk dh vfHk0;fDr min'kkRed ;k ipkjkRed ugh jghA ;g lp g fd min'k vkj fopkj dh vfHk0;fDr d rRo nkuk d gh ukVdk e ie[k :lk l mHkj g vkj mUgku budh vfHk0;fDr dk ub [k'kc vkj u;k :lk Hkh fn;k g] yfdu bu nkuk dh vfHk0;fDr e dykRedrk dk igy bruk ie[k g] tk bUg ,d ub tehu ij [kMk djrk gA bu nkuk d fy[k ukVdk vkj mu ukVdk d xhrk e rk ;g ckr >ydrh gh g] yfdu budh 'kk;jh e ;g dykRedrk fo'k"k :lk l utj vkrh gA blhfy, gchc vkj c[r nkuk gh] ukVddkj] fun'kd vkj jxfpUrd gkr g, Hkh] viuh 'kk;jh dk flDdk [kc tekr gA ,d mnkgj.k

c[r dh ,d dforkk ^viu mÙkjkf/kdkfj;k l* ,d v'k %

^;g dlk le; g tcfd iMk dh ckr djuk yxHkx xukg g D;kfd
og vud foHkhf"kdkvk d ifr
[kkek'kh dk /ofur djrk g
ogk og vkneh tk pipki ,d xyh ikj djrk g
'kk;n viu nkLrk dh igp l ckgj g
tk t:jreUn g
;g ,dne lp g fd e
vc Hkh viuh jkth dekrk g
ij ;dhu djk ejk fd ; egt ,d n?kVuk g
e tk dN Hkh djrk g
og e> Hkj iV [kku dk gd nrk g
yfdu
n?kVukoa'k
e> NkM fn;k x;k g(
vxj ejk HkkX; vPNk ugh rk e [kyk l
o dgr g e>l] [kkvk vkj fi;k

‘kdxtkj gkok] tk dN rEgkj ikl g] mld fy,
yfdu e dl [kk vkj ih ldrk g vxj e
,d Hk[k vkneh dh jkVh Nhu jgk g
vkj ej fxykl d ikuh d fy, l;kl l rjl jgk g
fQj Hkh e [kkrk g vkj ihrk gA

c[r dh bl dh dfork e fopkjkRed vkRekykpu gA vR;Ur dfBu le; e le>krk u dju dh bPNk d ckotn le>krk dj yu dh foo’krkA ;gk c[r Lo; d ek/;e l viu vklikl d mlu lekt l lEckf/kr g] tk lc dN n[k lu dj Hkh ifjfLFkfr;k d ifjoru d fy, lp”V ugh g vkj rVLFk cuk cBk gA lekt d rFkkdfFkr cf) thoh ox dh blh rVLFkrk dh >yd ge gchc ruohj dh ‘kk;jh e Hkh feyrh gA mudh ,d uTe] ^*evjkt rgthc** d dN v’k &

^tEgfj;r d njckjk e
lQnik’k blku fdruh ‘khjkuh l xQrx djr g
gekj evk’kj dh nu g fd bu njckjk e
tk Hkh vkrk g] igy ej0otk vUnkt e lyke djrk g
fQj u’kLr vkj xQrx e ,lk lyhdk cjrrk g
tk ej0otk g] blfy, fnyd’k Hkh g
vkj edcy vke Hkh
ykx ekle dh ckr djr g
,d nlj dk fetkt iNr g
vke fl;klr ij rCv vktekb djr g
ehj vk xkfyc dk dkb ‘kj ;kn vk tk, rk mll
ekt dk fu[kkjr g vkj bld ckn fugk;r ‘kkbLrxh l
ennv&,&fny c;ku djr g
ygt e xj eukflc f’knnr ugh gkrh
vk[kk e ykyp dh vkp ugh gkrh
luu okyk [knk i’kkuh l lurk g
fdlh d ekFk ij
cy rd ugh vkrkA

vkt ,l gh njckj e

,d ‘k[l vk;k
,d vtho ‘k[l
u lyke nvk
u fetkt&iqlh
cl] fcyfcyk dj dgk mBk
e Hk[kk g
u mldh vkokt e rgtho Fkh
u vYQkt e v[ykd
yQt iRFkj dh rjg egfQy i cjl iM
vk[kk l ykok mcy vk;k
R;kjh l euk xckj cyn gk x;k
lkgc [kkuk u utj mBk d ml n[kk
vkj Qkju viuh vk[k uhp dj yh
tl egfTTkc vkneh fdlh glhuk i
utj mBkr gh
vxj mld iko e yx n[kr g
rk Qkju fuxkg gVk yr g
egfQy d lc ykx
tcku gky l dg jg Fk
fdl dnj ‘kkbLrk vkneh gA

e [kkek’k gk x;k
ejh [kkek’kh e ,d nkLrku Fkh
u tku ok ejh [kkek’k vUnkt&,&r[kkrc dl Hkki x;k
Hkki x;k gkxk rHkh rk dg mBk
lkQ vYQkt e c&vkokt cyUn dh mBk
e tkurk g
>B u cky dj gh e Hk[kk g
lp dh ikni’k e vkneh nkj i [khp fn;k tkrk g
e> tgj dk l;kyk drjk&drjk fn;k tk jgk g
ej xy&,&[k’d e
jlu dh ftjg vkfgLrk&vkfgLrk rx dh tk jgh g
rgtho dh evjkt ;gh g fd

ldjkr vk eUlj vk elhgk
tEgfj;r dh lgjkvk e
djkMk dh rknkn e ink gkdj Hkh
tc vk [okj g
vkj tc vk [okj utj vk,x
vkj dN bl rjg fd ftnk jg dj Hkh
xeuke vk cek;k jg
*vkj ej dj HkhA**

c[r vkj gchc] nkuk dh bu dforkvk dk dfUn; fo"k; Hk[k vkj Hk[kk vkneh gA 'kkf"kr vkj logkjkA c[r dk Hk[kk vkneh nk fo'o&;)k dh foHkhf"kdk >yu d ckn grk'k vkj dfBr g] tcfd gchc dk Hk[kk vkneh vktknh feyu d ckn d liuk d VVu&fc[kju l {kC/kA vkdk'k l HkjkA nkuk dh dforkvk dk ey Loj 0;X; g] yfdu Hkfxek, ,dne vyx&vyx gA c[r dk 0;X; rd d gfFk;kj l cf) vkj food ij Hkjij igkj djrk g] gchc dh dfork dk 0;X; fnekx l T;knk fny dk Nrk gA mld roj rh[k vkj vkdked gA nkuk dh dfork, 0;oLFkkfojk/kh g] yfdu ,d dk Loj l;r vkj njxkeh g] nlj dk rkRdkfyd vkj tkf[ke >yu dk r;kjA

c[r dh l;r vkj food'khy enkvk vkj gchc d vkdked vkj t>k: rojk dh i"BHkfe Hkh de egÙoi.k ughA mld ihN bu nkuk d xgj jxkuHko gA

c[r u ;g dfork lu 1949 d vklikl fy[kh tk mud nlj dfork lxg e ldfyr gA rc rd c[r viu ,fid fFk,Vj d vud egÙoi.k l= n pd FkA ^, bQDV* ;kuh ,fyu'ku bQDV ;k vyxko d fl)kUr ij vUrjk"Vh; Lrj ij ppk 'k: gk pdh FkhA lkFk gh ^, 'kkV vkxue* dk fo'o dh vud Hkk"kkvk e vuokn gk pdk FkkA rc rd c[r LrkfuLykOLdh dh eFkM ,fDVx dh i)fr] mld i;ktu rFkk n'kdk ij iMu oky iHkko d fo#) ,d ubl ukV;&i)fr d vUo"kd d :lk e ifrf"Br gk pd FkA og ,lk le; Fkk tc c[r viu ltu dk lQy iklr dj jg Fk vkj xfjek&efMr gk pd FkA ml le; mudh dfork e ll;r vkj food tU; fopkjk dh xU/k LokHkkfod Hkh Fkh vkj vif{kr HkhA

nljh vkj] gchc ruohjA ; uTe mUgku 1964 e fy[kh] rc o viuh igpku cuku d fy, l?k"kjr Fk vkj futh egkoj dh [kkt e lyXu FkA 1954 e ^ *vkxjk cktkj** dh iLrfr d }kjk o vud dykife;k vkj Hkkjrh; lLdfr d leFkdk dk /;ku viuh vkj vkdf"kr dju e lQy gk x, FkA yfdu lkFk gh ik'pkR; jxeph;&vo/kkj.kkvk dh ckf)d tdM e dl&Ql vf/kdk'k jx&lehf{kdk u ^vkxjk cktkj* dk ukVd ekuu l

gh bUdkj dj fn;k FkkA

yfdu fnypLi ckr ;g Fkh fd gchc dk ;ykx gkf'k, ij Hkh ugh Mky ldrs FkA mudh foo'krk FkhA ^vkxjk ckt kj* dh 'k#vkrh iLrfr;k d ckn gh o ynu py x, Fk vkj ij ;jki d jxep dk xgjk v/;;u djd ykV FkA LrkfuLykoLdh vkj [kkIrkj l c[r d jxep dk ijh rjg le>k FkkA ynu iokl d nkjku c[r d ukV; fl)kUrk l mudk xgjk ifjp; gk pdk Fkk vkj ;jki Hke.k d nkjku mUgku cfyuj ,UlkfEcy e c[r }kjk funf'kr vud ukVdk dk n[kk vkj mudk l{e foopu fd;k FkkA ;gk o c[r vkj mud ukV; fl)kUrk l cgr vf/kd iHkkfor gk pd FkA

yfdu] ynu vkj ;jki Hke.k d ckn mUgku c[r dk vU/kkudj.k dju dh ctk; ,d Hkkjrh; egkoj dh lkFkd ryk'k djuk T;knk Bhd le>kA 'kDlih;j] xkYMkuh] ekfy;j tl Dykfldy ukVddkjk d i[;kr ukVdk d :ikUrj fd,A o ub iLrfrdj.k 'kyh dh [kkt e tV Fk vkj vud Lrjk ij i;kx dj jg FkA lu 1958 e mUgku 'knd d ukVd ^ePNdfVd* d :ikUrj dk ^feVVh dh xkMh* d uke l iLrr fd;k] ftle igyh ckj NŸkhlx< d ikjifjd dykdkjk dk 'kgjh dykdkjk d lkFk ep ij iLrr fd;k x;k FkkA viu bl i;kx dk mUgku ub ukVdh dk uke fn;k Fkk ftl dh i'kLk Hkh gb vkj vkykpuk HkhA

ml le; mue tcjnLr vkRefo'okl FkkA Hkkjrh; ykd&ukV;k dh vnE; 'kfDr vkj Åtk dk ydj o eu gh eu cgr mRlkfgr FkA yfdu ,d fo'k"k ekufldrk okyk ox mud dke dk vlEHko cuku d fy, tl ekpk&cUn FkkA lu 1961 e Hkkjrh; ukV; l?k }kjk vk;kftr vf[ky Hkkjrh; ukV;&ifjppk e gchc ruohj rFkk mud leku/kfe;k d Hkkjrh; ukV;&ijEijk d leFku e nyhy nu ij Qrok fn;k x;k Fkk% ^yxrk g bl ifjppk e dN ?klifB; Hkh vk x, g] ftudk ledkyhu Hkkjrh; jxep l dkb lEcU/k ugh gA*

voekuuk vkj vLohdfr d bl okrkoj.k u gh gchc ruohj d Lojk dk cgn vkdked cuk fn;kA ,d rjQ i'kIk vkj ekU;rk vkj nljh rjQ mu ij gYdh NhVkd'khA lxhr ukVd vdkneh ijLdkj feyu d ckn vxth dh ukV;&if=dk ^buDV* u mudk ,d yEck bVjO; idkf'kr fd;kA bVjO; if=dk d likndh LoO jktUn iky u fy;k FkkA ml bVjO; dh ifjp;kRed fVIi.kh d :Ik e Jh iky u fy[kk %

Þgchc ruohj Hkkjrh; jxep e dekc'k ,d fooknkLin 0;fDr gA o ludh Hkh g] vkj rud fetkt HkhA mud dke dju d rjhd dk ydj vkj mldh vfUre ifj.kfr d ckj e vud dFkk, tMh gb gAß

gchc ruohj dh vkdked Hkfxek mud jxde e vud Lrjk ij utj vkrh gA c[r dh rjg gchc u Hkh jx&;k=k d vkjfEHkd nkj e llkj d J"Bre ukVdk dk

iLrr fd;kA nkuk u gh ipfyr i)fr;k vkj ekU;rkvk l vyx gV dj viuk u;k jkLrk cuku dh dkf'k'k dhA ;gk Hkh nkuk dh pukfr;k vyx&vyx fdLe dh FkhA c[r d lUe[k ,d Hkjk&ijk ik'pkR; jx&llkj Fkk] ftle fujUrjrk Fkh] tk thoUr Fkk vkj ijh rjg LFkkfirA blfy, leh{kdk l ydj n'kdk rd d fetkt d ckj e ipfyr ekU;rkvk d vk/kkj ij dN fu"d"k fudky tk ldr Fk vkj o ekU; ;k Lohdr Hkh gk ldr FkA blfy, u, jkLr d infpUgk dk n[k dj mudk vkdyu djuk Hkh dfBu ugh FkkA

yfdu gchc dh pukrh dgh T;knk cMh FkhA ml le; dk LFkkfir Hkkjrh; ukV; egkoj ijh rjg ik'pkR; rduhd vkj i)fr ij vkfJr Fkk] ftl gchc flj l udkjr Fk] yfdu ml LFkkfir vkj ekU; egkoj dk udkju d ckn mud ikl fodYi d :Ik e fuf'pr vkj loekU; dkb Lo:Ik ugh FkkA lLdr ukVdk dk ep ij iLrr dju dk 'kkL= yxHkx ,d gtkj o"k ijkuk gkdj viuh vfLerk [kk pdk Fkk vkj gekj n'k d ykd&jxep dk vk/kfud dg tku oky jxep l dkb lc/k ugh FkkA lkFk gh ykd&ukV;k d eY;kdu d lc/k e Hkh dkb fuf'pr i.kkyh] i)fr ;k jhfr ugh FkhA ikjEifjd jxep] fo'k"k :Ik l fgUnh Hkk"kh in'kk e xfr'khy rk Fkk] yfdu mldh dkb lolEer ifjHkk"kk ugh FkhA viuh tehu dh x/k vkj dyoj ij vk/kkfjr ;g ukV;&ijEijk le; d lkFk&lkFk viu dk cnyrh Hkh jgh gA bld :Ik vkj iHkko Hkh vyx&vyx gA ;fn LFky :Ik l n[k rk fgekpy d dfj;kyk vkj djy d dFkdyh e cgr vUrj utj vkrk gA

,lh ifjfLFkfr;k e lLdr ukVd] ;k dfg, fo'k) Hkkjrh; ukVd dl efpr fd;k tk,&;g pukrh dk fo"k; FkkA gchc ruohj bl pukrh dk tokc nu d fy, xgj ?kli vU/kj e jk'kuh dh ryk'k e n'k d ,d dku l nlj dku rd HkVd jg FkA

c[r vkj gchc d vUrjx lEcU/kk dh 'k:vkr blh fcUn l gkrh gA

rRdkyhu Hkkjrh; jxep dh LFkkfir ik'pkR; vo/kkj.kkvk dk ijh rjg udkj nu d ckn gchc dk vUreu c[r l iHkkfor gvk D;kfd c[r tku ;k vutku gchc dh vkUrfjd Hkkoukvk d vR;Ur fudV FkA [kklrkj ij bXyM vkj ;jki dh ;k=kvk d nkjku mUgku c[r dk viu utfj, d lcl T;knk utnhd ik;kA ;gk ykVu ij mUgku c[r d fy[k ukVdk dk lgkjk Hkh fy;k vkj lu 1962 e ^*xM oeu vkQ lRtvku** dk fun'ku fd;kA ;g ukVd vxth e vkj cf[r;u 'kyh e gh efpr fd;k x;k FkkA bl ukVd dh Hkjij i'klk gbA 'kk;n c[r d ukVdk dh iLrfr d ckn gchc u ,d vky[k e c[r d lcU/k e viuh Hkkouk dk Li"V :Ik l iLrr fd;kA ^c[r Qkj ou ikM;lj* 'kh"kd bl vky[k e o dgr g%

^ge viuh tMk rd xgj tkuk gkxk vkj jxep dh futh 'kyh fodflr djuh

gkxh tk gekjh fo’k”k leL;kvk dk lgh rjhd l ifrfcfcr dj ldA blе Hkh] c[r ,d egku f’k{kd gA ie[kr% c[r vkidk viuh vfLerk cuk, j[kuk fl[kkr gA blfy, ;g ,d foMcuk gh g fd vxj Hkkjrh; ukVddkj ,d okLrfod n’kt jxep fodflr djr g rk og lkFk gh lkFk lpep cf[r;u fFk,Vj Hkh gkxkA nlj ‘kCnk e og ,lk jxep gkxk] tk u doy Hkkjr dh ‘kkL=h; vkj ykd ijEijkvk dk vkRelkr dju okyk gkxk] ftld epu e lxhr vkj uR; ijh rjg lekfgr gkx] cfYd og mld lkFk&lkFk lkonf’kd Hkh gkxk*A

vkj ‘kk;n c[r l gh ij.kk iklr djd gchc ruohj viuh vfLerk cuk, j[ku d fy, dfVc) utj vkr g] ftl mUgku ^V ch ;kj&lYQ* dgk gA

Li”V g fd ;g ^;kj&lYQ* udy dju dh btktr ugh nrk vkj blhfy, gchc ruohj dk jkLrk ekfydrk dh ekx djrk gA lkFk gh ;g fnypLi ckr g fd gchc ruohj dk ;g jkLrk c[r d fl)kUrk ;k fopkjk dk [kMu drb ugh djrk] cfYd vud LFkyk ij leku fopkjk okyk yxrk gA n[kuk ;g gkxk fd bl jkLr d dku&l ekM ij gchc ruohj c[r l vyx gk tkr g] tgk mudh vUo”k.kk ekfyd] fo’k) Hkkjrh; vkj c[r d jxde l ,dne tnk gA

lp rk ;g g fd ;gh og fcUn g tgk gchc ruohj dh jxeph; futrk dh igpku gk ldrh gA c[r u, ukV;&l=k] vo/kkj.kkvk ;k ukV;&fl)kUrk dh jpuk djr g vkj llkj Hkj d jx&fpUrd c[r d jxde dk mud fl)kUrk d ifji{; e n[ku dh dkf’k’k djr g] yfdu gchc ruohj viu ukVdk d fy; dkb u, fl)kUr ugh x<r] u gh o jx&fpUrdk d fy, viu ukVdk dh i)fr dk 0;k[;kf;r gh djr gA

c[r vkf[kj rd viu fl)kUrk d ijh rjg ifrikfnr u gk iku d dkj.k vlUr”V utj vkr gA mud fl)kUr mud in’kuk l dgh cM fl) gkr gA

nljh vkj] gchc ruohj fdUgh fuf’pr ukV;&l=k dh mn?kk”k.kk ugh djrA viuh iLrfr;k d ek/;e l n’kdk dk ,d ,l vkLokn l ifjfpr djokr g tk n’kdk d fy, vifjfpr ugh] yfdu fQj Hkh mldk vkLokn mUg ,dne u;k yxrk gA gchc ruohj vR;Ur lgtrk l viu n’kdk dk ,d gtkj o”kk d vUrjky d ml iy ij y tkdj [kMk dj nr g tk fo’k) Hkkjrh; g] ikjEifjd g vkj gekjk viuk gA

viuh ;okoLFkk e gh ch-l vkj rhl d n’kd e tc teuh e tcnLr mFky&iFky ep jgh Fkh] c[r dk Lon’k NkMuk iMkA blh nkjku o ekDlokn fopkjk d dVVj leFkd cu x, FkA rRdkyhu jktufrd fLFkfr;k] lkekftd vkj lkLdfrd eY;k d guu vkj iru l {kC/k o ,d ub ekufldrk dh vkxk’k e c/k pd FkA dfo vkj vfHkurk gku d dkj.k mud eu e ml le; d teu fFk,Vj d ifr vlUrk”k FkkA ml le; dk teu fFk,Vj vfr’k; Hkkodrk l vkr&ikr FkkA n’kdk d eu e ;FkkFkoknh

vfHku;] dFkkud vkj iLrfrdj.k 'kyh d }kjk mRiUu lEekgd iHkko jxep d lkekftd i;ktu dk u"V dj jgk FkkA ;ok c[r d eu e ml le; d dFkkudk ;k ukV;&vky[kk l dgh vf/kd lUrk"k mldh iLrfrdj.k 'kyh dk ydj FkkA mu ukVdk d epu l n'kdk d eu ij iMu oky iHkko l og ijh rjg vlUr"V FkA mudk ekuuk Fkk fd ;FkkFkoknh jxep viu lEekgd iHkko l n'kdk dk Hkkodrk d f'kdt e dl yrk g vkj ml ukVd e of.kr fLFkfr;k] pfj=k vkj }U} dk food d vk/kkj ij fo'yf"kr dju dk vodk'k ugh nrkA

c[r bl vfHku;&i)fr ;k jxep d bl i;ktu l ijh rjg vlger FkA mudh ekU;rk Fkh fd vfHkurk dk ukVd dk pfj= bl rjg l iLrr ugh djuk pkfg, fd vfHkurk vkj pfj= ,de; gk tk,A vfHkurk vkj pfj= d chp ,d dykRed njh cuk, j[kuk t:jh g] ftll n'kdk dk jxep ij ?kfVr fLFkfr;k d ifr okLrfodrk d Hke dk ck/k u gkA blfy, mud eu e ^fMLVULM ,fDVx* dk fopkj vk;k vkj mUgku viu vud y[kk rFkk Hkk"k.kk e bldk ftd fd;kA ml le; d vkykpdk u mud fopkjk ij rh[kh ifrfd;k Hkh 0;Dr dhA

^ c[r d ^vfHku; d vyxko* ¼fMLVULM ,fDVx½ d fl)kUr dh lkFkdrk dk egÙo blfy, g fd teu jxep e ml le; vR;f/kd Hkkodrk l Hkjk gvk ?kkj ijEijkoknh vfHku; ipfyr FkkA ----eu mud ukV;&fl)kUrk dk i<k g vkj i;kx Hkh n[k gA bu nkuk e ijLij dkb rkyey ugh gA lkekU;r% jpuk igy gkuh pkfg, vkj fl)kUrk dk x<uk mld cknA*

bl leh{kk ij fVli.kh dju g, ekxjV ,Mj'kk u viuh iLrd ^ijQkfex c[r* e fy[kk%

^vfr Hkkodrkoknh teu vfHku; d lEcU/k e ;g fVli.kh ijh rjg ;fDri.k gA fu'p;r% c[r ml le; ipfyr teu vfHku; i)fr dk n[kdj rh[kh ifd;k 0;Dr dj jg FkA mUgku viu fl)kUr d vk/kkj ij jpukRed i;kx ugh fd, yfdu viu jpukde dk T;knk vPN rjhd l 0;k[;kf;r dju d fy, mu l=k dk lgkjk fy;k] tk igy l mud eu e txg cuk, g, FkA*

bl rjg dh vkykpukvk d ckotn c[r viu i;ktu l ijh rjg ifrc) Fk vkj vudkud ukV;&;fDr;k d }kjk viu ^vyxko d fl)kUr* dk ifrikfnr dju dh p"Vk dj jg FkA

rHkh c[r d jx thou dh lEHkor% lcl egÙoi.k ?kVuk gbA

lu 1935 e ekb yu Qx dh lkfo;r l?k dh ;k=k d nkjku tc c[r u fgVyj d neu vkj vR;kpkj l cpu d fy, ekLdk e jktuhfrd 'kj.k y j[kh Fkh] mUg ekb yu Qx dk vfHku; n[ku dk volj feykA o ekb yu Qx dh dyk l bru iHkkfor

g, fd 1936 e mUgku ,d vky[k iLrr fd;k&^ojQeMx bQDV vkQ nk pkbuh f'kpu cxu* ¼phuh cy dk vyxko iHkko½] ftle mUgku HkkoHkhu 'kCnk e ekb yu Qx vkj phuh jxep ¼ihfdx vkijk½ dk ftd fd;k rFkk vR;Ur mRlkgiod dgk fd ftl ph t dh ok o"kk rd foQy ryk'k djr jg Fk] og vUrr% mUg ekb yu Qx d mRd"V vfHku; e fey xb gA*

;g ukVd Fkk ^*n fQ'kj eUl fjoUt*A* vkf[kj bl iLrfr e ,lk D;k Fkk ftlu crkYV c[r d fy, ,d u, ukV;&fl)kUr dh cfu;kn r;kj dj nhA

bl iLrfr vkj mldh vfHku; i)fr d ckj e dN 'kCn%

^,d ;orh] tk eNvkj dh cVh g ,d dkYifud uko dk [ku dh enk e [kMh gA uko dk pyku d vfHku; d fy, og ,d irokj Fkke g tk ef'dy l mld ?kVuk rd igprh g vkj ml irokj d lgkj og uko pyku dk vfHku; djrh gA unh dh /kkjk tl&tl rt gkrh g ol&ol og ;orh viuk lUryu cuk, j[ku e dfBukb dk vuHko djrh gA dN nj e uko ,d ldjh [kkMh e igprh g vkj mldh xfr /kheh gk tkrh gA------

----uko pyku dk ;g Hkko vfHkurk&i)fr d ek/;e l n'kdk rd lEif"kr djrk gA fdlh ;FkkFkoknh ep lkexh dh lgk;rk fy, fcuk ekb yu Qx doy viu 'kkjhfjd vfHku; vkj enkvk rFkk Hkfxekvk d tfj, bl ilx d lHkh Hkkok dk dykRed rjhd l iLrr djr gA ;g vfHkurk dk deky g fd og viu J"B vfHku; l bl n'; dk vfoLej.kh; cuk nrk gA*

ekb yu Qx dh bl vfHku; {kerk u c[r d eu vkj cf) ij fdruk xgjk vlj Mkyk gkxk] bldk vueku yxkuk dfBu ugh gA [kklrkj l ml oDr tc fd ij fo'o e Lrkfuyk0Ldh d ukV;&l=] ftue ^pfj= e io'k dju dk fo/kku*] ^HkkoukRed Lefr*] pkFkh nhokj dh ifjdYiuk* vkfn ie[k g(fun'kdk] vfHkurkvk vkj ukV;&leh{kdk d fnekx e flj p< tkn dh rjg vlj fn[kk jg FkA

nljh vkj gchc ruohjA blVk d nkjku gh mud eu e Hkh rRdkyhu 0;oLFkk] lkekftd fo"kerk vkj Hkkjrh; lLdfr d voeY;u d dkj.k ,d vlUrk"k tUe y pdk FkkA jxePk dh nf"V l mudk >dko Hkkjrh; ijEijkvk vkj [kklrkj l ykd&ukV; dh vkj gk pdk FkkA ^vkxjk cktkj* dh iLrfr d nkjku NÙkhlx< d dykdkjk dh mtk vkj vfHku; dh lgtrk u mUg eX/k dj fy;k FkkA lxhr] uR; vkj vfHku; dh ,dl=rk l n'kdk ij iMu oky iHkko dk og vktek pd Fk] fQj Hkh vfHku; dh ub i.kkyh vkj bl i)fr d l= mudh fxjQr e ugh vk ik, FkA 'kgjk d if'kf{kr vkj J"B vfHkurkvk d lkFk NÙkhlx< d dykdkjk dk ydj o vud iLrfr;k dj pd Fk] ftue l vf/kdk'k e mUg lQyrk ugh feyh FkhA viuh bl foQyrk l mUgku lh[k

fy;k Fkk fd ‘kgjh vfHkurkvk dh vfHkku; ‘kyh e ,d cMh [kkb g] ftl ikVuk yxHkx vlEHko gA blh nkjku mUgku mMhlk d igykn ukVd] gfj;k.kk d Lokx] mÙkj in’k dh ukVdh] jktLFkku d [;ky vkfn d vud e’kgj nyk vkj mud dykdkjk d lkFk dke Hkh fd;kA mud lkFk db u, ukVd Hkh iLrr fd,A mudk i;ktu Fkk fd bl rjhd l o Hkkjr dh fofHkUu ykd&ukV; ijEijkvk l lh/k lk{kkRdkj dj ldx] yfdu bu lc i;kl d ckotn dgh ubi tehu VVrh utj ugh vkbA

lu 1973 e mUgku jk;ij e **ukpk** d vud dykdkjk d lkFk ,d dk;’kkyk vk;kftr dh] ftle ogk dh rhu ykd&dFkkvk dk ,d lkFk xFk dj u;k ukVd r;kj fd;k x;k Fkk&^xko dk uke lljky] ekj uke nkekn*A

^ xko dk uke lljky* d fun’ku d nkjku gchc ruohj u bu dykdkjk l dN ckr lh[khA bUgh dykdkjk d tfj, gchc ruohj dk viu jxeph; egkojk d o l= fey ftudh mUg o”kk l ryk’k FkhA

iokH;kl d nkjku gchc ruohj fun’ku dh LFkkfir vkj ekU; rduhdk dk bLreky dj jg FkA Lkoknk dk ekV rkj ij ;kn djk nu d ckn] ;k dfg, fd dykdkjk dk pfj= dh dN [kkl ckr crk nu d ckn] lcdk dgkuh d lkj ilx vPNh rjg le>k fn, x,A mld ckn mUgku Cykfdx ‘k: dhA o dykdkjk dk crku yx fd ved lokn dk ckyr le; mUg nk dne vkx vkuk g ;k vxy lokn dk ckyu d fy, ,d [kkl vUnkt e eMuk gA ,d [kkl fLFkfr e ck, dh ctk, nk;k gkFk mBkuk gA vxyk lokn nk dne ihN tkdj ckyuk gA nlj pfj= l fdl rjg e[kkfrc gkdj viuk vxyk lokn ckyuk gA vkfn] vkfnA

ifj.kke cMk fofp= gvkA gchc lkgc d fun’kk dk ikyu dju dh bekunkj dkf’k’k e dykdkjk d loknk dh lgtrk u”V gk xbA gjd dne uki&rky dj j[ku dh dkf’k’k e vfHkku; lk;kl gku yxkA lgtrk] LQfr vkj mtk d LFkku ij vkipkfjdrk] likViu vkj ;U=hdr vfHkku; dh >yd vku yxhA gchc lkgc u bl rkMu dh dkf’k’k dh rk dykdkj foHke dh fLFkfr e vk x,A dykdkj ;g le> iku e foQy Fk fd gchc lkgc d fun’kk dk ikyu djr g, o viu vfHkku; e lgtrk dl yk ldr g\

vudkud i;Ru dju d ckn vkf[kj gchc ruohj gkj x, vkj mUgku dykdkjk dk viu rjhd l lokn ckyu dh NV n nhA cl] fQj D;k Fkk! mud vfHkku; e tk thoUrrk utj vkb] og gchc lkgc d fy, vkYgkndkjh FkhA dykdkj ijh ‘kfDr] lkeF;] d lkFk lokn ckyu yxA chp e eux<r lokn ckyu dh NV u vfHkku; dk vkj Hkh xfr’khy] vkd”kd] LokHkkfod vkj lgt cuk fn;kA bl rjg d vfHkku; dk n[kdj n’kdk dk ftl rktxh dk vuHko gvk] og mud fy, furkUr ub FkhA

gchc ruohj dk dN bl h rjg dh vfHku; i)fr vkj [kkl rkj l n’kdk d eu ij iMu okyk bl h iHkko dh o”kk l ryk’k FkhA ^*xko dk uke llljky** dh iLrfr d nkjku og ryk’k ijh gbA

c[r vkj gchc dk viu&viu rjhdk l vkf[kj og ph t rk fey xb] ftl dh og o”kk l ryk’k dj jg Fk vkj vudkud i;kxk d ckotn og ml ikl r dju e vc rd vl eFk jg FkA yfdu bu nkuk fun’kdk dh >kyh e vUrr% tk fxjk] ml e Hkh tehu vkl eku dk vUrj FkkA

c[r u ekb yu Qx d vfHku; dk n[kdj fl)kUr igy x<k vkj ckn e viu ukV;&ny d lkFk ml 0;kogkfjd :Ik nu dh dkf’k’k dju yxA yfdu mud vfHkurk dHkh Hkh ekb yu Qx tl h vfHku; {kerk ;k mRd”Vrk dk ifjp; ugh n ik,A lEekgu d iHkko l cpu d fy, vUrr% mUgku vud ukV;&;fDr;k dh ‘kj.k yhA u, ukVd fy[k] ijku Dykfl Ldk ukVdk d :ikUrj fd,A l)kfUrd nf”V l o cgpfpr Hkh g, vkj i’kfl r HkhA yfdu mud vfHkurkvk d vfHku; e mud fl)kUrk dk ifrQyu ugh FkkA

^fFk,VjkjcV* ,d ,l h iLrd g] ftl e cfyuj ,Ul fEcy dh vud iLrfr;k dk fooj.k rFkk fo’y”k.k ,df=r gA bl dk lEiknu Lo; c[r vkj mud nk vU; lg;kfx;k u fd;k gA bl iLrd e lu 1952 l 1955 rd ;kfu c[r dh eR; l ,d o”k igy rd dh iLrfr;k dk ftd gA ijh iLrd e c[r dh iLrfr;k d 0;kogkfjd i{k dk fo’k”k :Ik l mdjk x;k gA bl iLrd e u, fopkjk dk vkdyu ugh g] cfYd ijku l=k vkj fopkjk dh fd;kUofr dk y[kk&tk[kk gA bl iLrd d ,d v/;k; e bl h i{k ij fopkj fd;k x;k g fd D;k lpep cfyuj ,Ul fEcy d jx&eMy d lnL;k d fy, vfHku; if’k{k.k dh dkb fuf’pr i.kkyh ;k i)fr g\ ;fn ugh rk ml dk dkj.k D;k g\

ml dk ,d v’k%

^lEHkor% bl dk dkj.k ;g rF; g fd u rk c[r Lo; vkj u gh cfyuj ,Ul fEcy dk dkb vU; fun’kd iokH;kl d nkjku c[r d fl)kUr i{k&vFkkr , ‘kkV vkxue Qkj n fFk,Vj&dk dkb ftd djrk gA dN ukVdk e t :j mu 0;kogkfjd fun’kk dk gokyk fn;k tkrk jgk g] tk iLrd e fn, x, gA yfdu ;g c[r dk fopkj g fd oreku le; e jxep ml fLFkfr e ugh g fd mu lHkh fl)kUrk dk ijh rjg ikyu fd;k tk ldA*

c[r d fl)kUrk vkj 0;kogkfjdrk d chp dh njh u vud vfHkurkvk d eu e Hkkfr ink dj nhA ikpo n’kd d e/; e c[r ifjl] ynu] U;;kd vkfn vud fo’o ukV;&dUnk e ukV;&fpUrd vkj fun’kd d :Ik e vkefU=r fd, tku yx FkA ,l h

fLFkfr e mud vfHkurk i=k d ek/;e l mul lid j[kr FkA mud ,d vfHkurk u c[r dk mud fl)kUrk vkj 0;kogkfjdrk d lnHk e ,d i= fy[kk] tk vud HkkfUr;k l Hkjk FkkA ml i= d mÙkj e c[r u fy[kk%

^e ;g vuHko dju d fy, ck/; l k gk jgk g fd jxep d lc/k e ejh vud fVlif.k;k dk xyr rjhd l le>k tk jgk gA e bl fu"d"k ij mu vudkud i=k vkj y[kk dk i<u d ckn igpk g tk l)kfUrd rkj ij e>l lger gA rc e lkprk g fd fdlh xf.kr&'kkL=h dk dlk yxxk vxj ml viuh i'klk e ;g i<u dk fey--- - ^fi ; egkn;] e vkid fopkjk l lger g fd nk vkj nk ikp gkr gA*

c[r d jxeph; fl)kUrk dh dkb ,d fuf'pr if'k{k.k 'kyh u gku dk ,d cMk dkj.k ;g Hkh Fkk fd cfyuj ,UlkfEcy e io'k yu d fy, doy if'pe teuh d gh ugh] cfYd 'k"k ;jki] bXyM vkj vefjdk l Hkh et g, vfHkurk cMh l[;k e vkr FkA tkfgj g fd mu lHkh dk ikjfHkd vfHku; if'k{k.k ;FkkFkoknh 'kyh d vk/kkj ij gh gkrk FkkA blfy, ;g vueku yxkuk dfBu ugh gkxk fd l)kfUrd :lk l c[r dh vfHku; lc/kh ekU;rkvk dk ijh rjg Lohdkj dju d ckotn cfyuj ,UlfEcy d vfHkurkvk d vfHku; e ;FkkFkoknh vfHku; i.kkyh dk iHkko >ydrk jgk gkxkA

ihVj cd u crkYr c[r }kjk funf'kr cfyuj ,UlkfEcy dh iLrfr ^*n enj djt*^* dk n[kdj dN ,lk gh vuHko fd;k FkkA viuh iLrd ^n f'kfQVx ikbV* e o viu bl vuHko dk ftd dN bl idkj djr g%

^1950 e tc e 'kDlih;j eekfj;y fFk,Vj d fy, Lo; }kjk funf'kr ukVd ^*etj Qkj etj** dh iLrfr d lkFk Hke.k dj jgk Fkk rc cfyu e c[r l ejh igyh eykdkr gbA geu jxep dh leL;kvk d ckj e ijLij ckrphr dh vkj eu ik;k fd e lpep okLrfodrk d Hke vkj okLrfodrk l vyxko dh mudh ekU;rkvk l lger ugh gA cfyuj ,UlfEcy d fy, ^*enj djt** dh mudh iLrfr dk n[kr g, eu ik;k fd ep ij okLrfodrk d Hke dk rkMu d fy, o ftru vf/kd i;kl djr g] e rg fny l ml Hke d ?kj e cUn gkrk tk jgk gA*

'kk;n ;gh og lcl cMk dkj.k jgk gkxk fd c[r viuh iLrfr;k e ;FkkFkoknh jxep dh lEekgd 'kfDr dk ijh rjg /oLr djd ^,&bQDV* ink dju d fy, db rjg dh ukV;&;fDr;k dk lgkjk yr gA ;gk ;g dguk ikl fxd lk yxrk g fd ekb yu Qx d ftl vfHku; dk n[kdj crkYr c[r u ^,&bQDV* dh vo/kkj.kk dh] mlh ekb yu Qx dk viu vfHku; e ^,&bQDV* d fy, fdlh vkj ukV; ;fDr dh t:jr ugh iMrhA lEekgu dh lHkkouk l ,dne nj o viu vfHku; l n'kdk dh dYiuk'khyrk dk txk, j[ku e ijh rjg leFk gA og mudh vfHku; 'kyh dk vfHkUu vx g vkj ml

vfHku; i)fr d j’k&j’k e jpk&clk gA

;g dguk ‘kk;n xyr u gk fd crkYr c[r viu thou d vfUre fnuk rd viuh ukV; vo/kkj.kkvk d vulkj vfHku; dk og iHkko iklr ugh dj ld] ftldh mUg thouHkj ryk’k jghA

nljh vkj] gchc ruohj u Hkkjrh; jx&ijEijkvk dk ckj&ckj [kxky dj n[ku d ckn fon’kk d le) jxep l iklr fd, x, gfFk;kj NkM fn, vkj ykd dykdkjk dh vfHku; ‘kfDr] mtk vkj lgtrk dk cuk, j[ku d fy,] ijh rjg mud lEe[k lei.k dj fn;kA lpep NÙkhlx< d Bkdj jke] enu yky] fQnk ckb] Hkyok jke vkfn dykdkjk u ijk{k :Ik l gchc ruohj dk Hkkjrh; ikjifjd vfHku; ‘kyh d {kh&lkxj l ifjfpr djk;k gA gchc ruohj u viu dk’ky] nf”V&lEiUurk vkj jx&food l mlu eFkk gA mudh eFkuh l tk eD[ku fudyk g mldk vkLokn fo’o&jxep d fy, vnHkr gA

¼jktdey] ub fnYyh l idkf’kr] ^jx gchc l½*

efgek mudh jgxh ftudk uke gchc

v'kkd okti;h

gchc ruohj l eykdkr igy gbl vkj mudk ukVd ckn e n[kkA lu 1960&61 dh ckr g tc e fnYyh d lV LVhQUl dkyt e Nk= FkkA ,d NkV 'kgj lkxj l vk;k Fkk vkj viu dk dykvk e lf'kf{kr dju dh vnE; ykylk l Hkjk FkkA lk tl Hkh gk lxhr] uR;] ukVd] yfyr dykvk vkfn dh iLrfr;k e vDlj vukef=r gh igp tk;k djrk FkkA lkxj e dk;n dk ukVd n[ku dk dkbl l;kx ugh gvk FkkA ;k dFkkdkj fot; pkgku d fun'ku e ,d ckj ,d NkV l ukVd e] p[ko fyf[kr] dfo&dFkkdkj ftrUn dekj d iHkko'kkyh vkj dUnh; vfHku; d lkFk]eu Hkh ,d ed Hkfedk fuHkkbl Fkh vkj lkxj fo'ofo|ky; d fdlh ukVîny }kjk ^Loluok lonÙk* dh ,d iLrfr n[kh Fkh] ,d fluek?kj e] ftl e fgUnh d ncx v/;kid vkj ikDVj jktukFk ik.M; u Hkh Hkfedk fuHkkb FkhA yfdu jxep n[ku d ; LoYi vuHko vi;klr FkA gchc ruohj d dke dh ppk ^dYiuk* vkj ^Ñfr* tlh if=dkvk e i< pdk FkkA mul feyu dh mRldrk blfy, Hkh Fkh fd o Hkh gekj ?k:&in'k d FkA

gchc l igyh eykdkr gbl tkMk e lj 'kdjyky lxhr lekjkg d nkjku ftl e io'k d fy, e ckgj lldkp [kMk FkkA o fn[kkbl fn, vUnj tkr g,] gkFk e ,d peM dk cx fy,A e mu rd yidk vkj o #d x;A lkHkkX; l mUgku ejk uke lu j[kk FkkA o mu fnuk vxth lkIrkfgd ***'fyd'*** e lxhr dh leh{kk fy[kr FkA e mud lkFk vUnj pyk x;kA mud ikl il dk ikl FkkA mul xi'ki l irk pyk fd mudk 'kkL=h; lxhr dk Kku cgr xgjk ugh FkkA ejk 'kkL=h; lxhr d ifr mRlkg] ol gh vKku d dkj.k] FkkMk vkØked lk FkkA lk ge nkuk dh dN 'kkek d fy, ,d tkMh&lh

cu xbA mLrkn vehj [kk] if.Mr jfo'kdj] mLrkn vyh vdcj [kk] mLrkn foyk;y [kk] xxckb gxy] if.Mr Hkhe lu tk'kh vkfn dk thou e igyh ckj gchc d cxy e cBdj luu dk lkHkkX; feykA mu fnuk ikfdLrku d ;xy&xk;d mLrkn utkdr vyh vkj mLrkn lyker vyh [kk cgn ykdfi ; Fk vkj mUg yu gokb vì rhu&pkj lk ykx tk jg FkA gchc d lkFk gku l ;g lc n[ku&luu d fy, vPNh lhV fey tkrh FkhA gchc lxhr dh ,d rjg dh iHkkooknh lehf{kk fy[kr FkA ge ykx tc&rc feydj dN pLr vkj lVhd fQdj x<r FkA ml le; ;g [k;ky ugh vk;k Fkk fd ,d ,lk jx&e/kU; ,lh fou;'khyrk d lkFk ?k.Vk cBdj lxhr&e/kU;k dk lxhr lu jgk g vkj fQj mudh ckj e fy[ku tk jgk gA irk ugh ^***fyd**** dh Qkbyk l dHkh bl lkexh dk ucjdj ckgj fudkydj gchc d fy[k e 'kkfey fd;k tk ldxk ;k ughA Hky 'kkL= ij u gk] lxhr ij gchc dh idM FkhA y;] rky] NUn vkfn dh mudh le> xgjh FkhA cfUn'k Hkh o vklkuh l idM&le> yr Fk D;kfd o vo/kh vkfn e gkrh FkhA db ckj fdlh jkx dk ydj mudh ftKklk gkrh Fkh fd mldk ey Hkko D;k g vkj ge nkuk feydj vVdy yxkr FkA njvly] bl vVdyckth d pyr gh ;g le> cuuk 'k: gbZ fd jkx dk dkbZ :< ;k fLFkj Hkko ugh g] ml ij lxhrdkj viuk eupkgk jx fdlh gn rd p<k ldrk gA

lu 60 dk n'kd Hkkjrh; jxep d fy, db nf"V;k l fu.kk;d nkj FkkA fgUnh] ejkBh] cxyk] dUuM vkfn e u, ukVddkj mHkj jg Fk vkj ,d rjg l Hkkjrh; jxk/kfudrk u, vkj njxkeh :ikdkj y jgh FkhA fnYyh e mu fnuk bckfge vydkth d fun'ku e jk"Vh; ukVî fo|ky; d lkotfud lk/kuk l yl vkj if'peh jxep tl ifj"dkj] rh[kiu] l;e vkj Vftd vHkk l Hkjk u;k jxep vkdkj y jgk FkkA vydkth d fun'ku e Qhjkt'kkg dkVyk d ijkrkfÙod vo'k"kk d chp [ky e /keohj Hkkjrh d dk0;&ukVd ^*v/kk ;x** dh Hk0; iLrfr ml le; Hkkjrh; jxep dh ,d f'k[kj iLrfr dh rjg ixV gbZ FkhA ,lk ;kn iMrk g fd ftl 'kke geu og iLrfr yxHkx vokd gkr n[kh Fkh] ml 'kke tokgjyky ug: Hkh n[ku vk, FkA gchc ruohj Hkh 'kk;n n'kdk e FkA mul nvk&lyke gbZ FkhA

;g u;k vkj vkØked :i l vk/kfud jxep i<&fy[kk dk jxep Fkk % mld lHkh dykdkj jxdk; e lif'kf{kr FkA bld cjDl gchc ruohj dk jxep Fkk] ftld vf/kdk'k dykdkj NÙkhlx< d ykd&dykdkj Fk ftUgku jxdk; dk dgh ckdk;nk if'k{k.k ugh ik;k FkkA tk 'kk;n i<&fy[k rd ugh Fk vkj tk fojklr e feyh ykd&ijEijk l gh lh[kdj vk, FkA gchc lk/ku&foiUu FkA ij mUgku lk/kuk d vHkko dk ,d rjg dh jx&j.kuhfr e :ikUrfjr dj fy;k FkkA mudk jxep vk/kfud Fkk] ij

mle vk/kfud jxep d midj.k] lk/ku] iip vkfn ugh FkA blfy, og ,d rjg dh pukrh FkhA og blhfy, fooknkLin Hkh FkkA

bl jxnf"V vkj 'kyh ij gchc lh/k ugh vk x; FkA mUgku jx if'k{k.k ynu e ik;k FkkA ;jki dh ?keôMh dj ogk dk cgrjk vk/kfud jxep viuh vk[kk n[kk FkkA mUg c[r d jx&i ;kxk dk irk FkkA og cEcb e bIVk e jg pd FkA vuHkok dh bl foiy lEink u mUg viuh tM [kktu dh vkj <dyk FkkA o viu ird vpy]viu jxdk; e okil x,A ogk dh uR;] lxhr vkj ukV; dh vfojy ykd&ijEijk e] mld vikj dk'ky vkj vnE; tkn e gchc dk viuh vkj mudh jx&lEHkkouk, utj vkbA mUgku vk/kfudrk vkj ykd&ijEijk d }r vkj vUrfojk/k dk yk?ku dh BkuhA mUg yxk fd vk/kfudrk dh i'uokpdrk vkj l'k;'khyrk vkj ykd dh vkuUnofÙk vkj 'kk'orrk e ey&feyki lEHko gA gchc ruohj dk bl le> l fudyk jxep ,d rjg l ml vk/kfudrk dk lcoV djrk Fkk tk ykd dk fiNMk] ifj"dkjghu vkj vk/kfud vfHkik;k d fy, loFkk vi;kIr ekurh FkhA ;g vk/kfudrk dHkh vydj.k&foHk"k.k d fy, Hky dN ykdrÙok dk bLreky dj y] ml dUnh;rk nu dk r;kj ugh FkhA ,lh dkbl lEHkkouk Lohdkj dju d fy, u og r;kj Fkh] u mR lA bl vk/kfudrk l fcydy vyx gchc ruohj u tk jxk/kfudrk foU;Lr&fodflr dh] mll igyh ckj gekj le; e ;g igpku gbl fd pje ekuoh; i'uk] bfrgkl dh my>uk vkj foMEcukvk l jxHkfe ij fuiVu dk Bdk 'kgjh dykvk dh cikrh ugh g] fd Hkkjr e dyk, i'uokpd vkj mRlo/keh ,d lkFk gk ldrh g] gkrh jgh gA ;g Hkh fd vk/kfudrk dh eugl&grk'k xEHkhjrk d cjDl ,d xkrh&>erh et yrh vk/kfudrk lEHko g tk igyh d edkcy dN de vk/kfudrk ugh gA vkx tkdj] gchc ruohj dk mtyk mnkgj.k j[kdj gh c-o- dkjUr] dkoye ukjk;.k if.kôj] jru fFk;e vkfn u viu&viu vpyk dh ykd&ijEijkvk dk viuh jxnf"V vkj jx'kyh e 'kkfey fd;kA bu lHkh dk jxep gchc l dkQh vyx g vkj vkil e vyxA ij mld ihN gchc dk dk; ,d fn'kk&fun'kd dh rjg g] ble 'kd ughA gchc uk;d jxdeh FkA uk;d og gkrk g tk nljk dk jkLrk fn[kkrk] tkf[ke mBku dh fgEer nrk gA

;g ukV djuk fnypLi g fd 'kkL= vkj vk/kfud d ifjlj e] vk/kfudrk vkj ledkyhurk d l[rh l pkdcUn jkT; e rhu {k=k e ykd dh l/k yxhA jxep] lxhr vkj yfyr dykvk d {k= eA ;g fujk l;kx ugh gk ldrk fd ;g dke e/;in'k e gh gvkA ,d ,l in'k e tk vk/kfudrk vkj bfrgkl dh jxHkfe l FkkMk nj FkkA ogk ykd vHkh Hkh l'kä vkj lfØ; FkkA bldh 'k:vkr rk fu'p; gh gchc u gh dhA m/kj ekyok e cl dukVdh dekj xU/ko u gekj le; e ;g igpku djkbl fd 'kkL= ykd

l gh mitrk g vkj vkt Hkh ml Åtkflor dj ldrk gA rfeyHkk"kh fp=dkj txnh'k LokehukFku u vk/kfud fp=dyk d bfrgkl e igyh ckj vk/kfudrk dk 'kgjkrh lhekvk l eä djku dk tkf[ke mBk;k vkj Hkkjr Hkou d :idj lxgky; e glu] xk;rk.M] vdcj inelh] r;c egrk] jkedekj] jtk vkfn d lkFk&lkFk iek QR;k] feÎh ckb] xkfoUn >kjk] Hkjh ckb] tux.k flg ';ke vkfn dk 'kkfey fd;k vkj ;g crk;k fd ledkyhu fIQ 'kgj e jgu okyk dykdkj ugh] og Hkh g tk xko ngkr vkj txyk&igkMk e jgrk gA dukVd d c-o- dkjUr u Hkkjr Hkou d jxe.My e cUny[k.Mh e cVkYV c[r] NÙkhlx<h e le,y cdV] ekyoh e 'knd vkfn dh iLrfr;k dj gchc dh gh ijEijk e jxep dk ckfy;k dh foiy lEink vkj Åtk nhA ;g Hkh ;kn fd;k tk ldrk g fd u;h dfork e Hkokuhilkn feJ u Hkh cUny[k.Mh ykd&ijEijk dh dFkkvk] NUnk vkj vk'k;k dk xFkdj bl dfork dk Hkxky Hkh foLrr fd;kA

gchc ruohj d dke l e/;in'k l ckgj Hkh NÙkhlx< tkuk tku yxkA lkj Hkkjr e] djy l ef.kij rd] NÙkhlx< dh igyh ckj gchc ruohj }kjk i{kfir mld ykdlxhr] uR; vkj ukVî l 0;kid Nfo cuhA ,lk de gh gvk g tc ,d ij vpy dh n'kO;kih igpku mldh ykd&lEink dk dYiuk'khy mi;kx dju oky jxde l cuh gkA tc NÙkhlx< dk u;k jkT; xfBr gvk Fkk rk gee l db;k dk yxk Fkk fd gchc ruohj dk mldk igyk jkT;iky fu;ä fd;k tkuk pkfg, FkkA

tk ykx vk/kfudrk d if'Pkeh jx d dkj.k viuh ykd&ijEijkvk dk dN vfo'okl vkj cpuh l n[kr Fk] mue u;k vkRefo'okl tkxkA gchc d dke u]u fIQ mu ykxk dk tk tMk l VV&fcNM pd Fk] mu ij oki l tk ldu dk Hkjkl k fnyk;k cfYd tk mu tMk d vklikl vkRefo'oklghu eMjk jg Fk] mUg Hkh fQj l tMk ij teu dk yxHkx U;krk lk fn;kA ,fMucjk d fo'oifrf"Br ukVî lekjkg e tc gchc ruohj dk igyk ijLdkj feyk rk Hkkjr e cgr l ykx pkd FkA ;g ijLdkj ml vk/kfudrk dk ugh feyk Fkk tk vydkth u if'pe d J"B jxrÙok dk lekfgr dj fodflr dh FkhA ;g ijLdkj ml vk/kfudrk dk ugh feyk Fkk ftl l;e&tru l ifrc) 'kEHk fe= u foU;Lr fd;k FkkA ;g ijLdkj feyk ml odfYid vk/kfudrk dk] tk ÅcM&[kkcM] dN vViVh yfdu ,d rjg dh dPph&lk/kh Åtk l Hkjh&ijh FkhA bl gchc u dN gn rd rk [kktk&chuk Fkk yfdu dkQh gn rd vkfo"Ñr vkj fodflr fd;k FkkA ;g gekj le; e mud jx{ki dh vUrjk"Vh; LohÑfr FkhA

HkkjrUn d ckn fgUnh jxep l [kMh ckyh d vykok lkjh ckfy;k xk;c gk pdh FkhA mue l ,d NÙkhlx<h dk jx&iuokl db ek;uk e ,frgkfld FkkA lLÑr ;k

vxth d Dyfld *^feÍh dh xkMh** ;k *^dkeno dk viuk olUr _r dk liuk** tc gchc d ;gk NÙkhlx<h e gkr g rk cgn l tukRed ruko ink gkrk gA /khjknkÙk uk;d] no vkfn fuiV lk/kkj.k ykxk e cny tkr g ‘kkL= viuh Åpkb l uhp mrj vkrk g ij lkFkd cuk jgrk gA ckyh dk dN efgeke.Mu gkrk g] ij ykd ‘kkL= dk dN eg Hkh fp<krk gA ;g u, fdLe dh viR;kf’kr ukVdh;rk g tk vfHkktkr ukVd d jxkFk dk l?ku vkj mRdV dju d flok; ml foy{k.k <x l ykdk;Ùk djrh gA

gchc ruohj dh nfu;k dkQh pkMh Fkh vkj mle mudh vU; fpUrkvk vkj vfHkik;k l tM db ykx ‘kkfey FkA mUg n’k d vud Hkkxk e dHkh f’k{kk] oKkfud pruk] i;koj.k vkfn l tMh ?kVukvk] vk;ktuk] lokn e ij mRlkg vkj r;kjh d lkFk f’kjdr djr gee l cgrk u n[kk gA og ,d ,l jxdeh Fk tk viu jxde d vykok vU; lkekftd xfrfof/k;k l tM jguk viu jxde d fy, vko’;d vkj fgrdj ekur FkA mud fy, lkjh ftUnxh vkj lekt] fj’r vkj ?kVuk, vkfn lc ,d 0;kid jxep gh FkA mudk jx&thoV vkj vnE; ftthfo"kk blh jxep l vkrh Fkh] flQ lhfer jxdk; l ughA gchc dh fnypLih vkj dN xfrfof/k jktuhfr e ‘k: l jghA blVk d teku l gh mudk Økfr vkj lkekftd ifjoru e tk fo’okl tek] og vkthou v{kr jgkA lkE;oknh lektk e gb n”Ñfr;k vkj vUrr% lkfo;r l?k d iru vkj fo?kVu d ckotn gchc u Økfr d liu dk f’kFky ugh gku fn;kA 1948 e mUgku viuh dfork e fy[kk Fkk % ^tk u bfUdykc dk lkFk n ok ejh utj e c’kj ughA* ;g utj vUr rd cuh jghA vkt ;g n[kk tk ldrk g fd Økfr dk liuk n[ku vkj tru dju okyh ‘kfä;k u lÙkk:< gku d ckn dl viu cfu;knh eY; vkj y{; rt fn; vkj Økfr nj gh cuh jghA yfdu tl gchc ftn dj viu rjg d jxdk; vkj nf”V ij vkthou vM jg ol gh og bl liu ij Hkh iô <x l te jgA ;g vkdfLed ugh g fd rjg&rjg d tu vkUnkyuk dk gchc u fuLldkp viuk e[kj vkj lfØ; leFku fn;kA viuh bl Li”V ifrc)rk d dkj.k gh og jkT;lHkk d ,d lnL; d :i e uketn g,A vkj blh dkj.k db ckj mudh iLrfr;k vkj mu ij Hkkfrd vk?kkr Hkh fd; x;A ij bl lcl ?kcjkdj gchc u viuh vku vkj yhd u NkMhA mudk cgr lkjk lp mud liu l mitk Fkk vkj mudk liuk mud cgr lkj lp dk vFk nrk FkkA ckgj dh nfu;k e lpkb vkj liu d chp fdruh gh njh D;k u jgh gk] gchc viu jxde e bl njh dk yk?k tkr FkA mle lp liuk gk tkrk Fkk] liuk lp gk tkrk FkkA

gchc ruohj l eykdkr ej e/;in’k ykVu d ckn gkrh jghA dN fnuk d fy, e igy egklelUn vkj ckn e ljxtk e inLFk Hkh jgkA ml le; ;g lh/k vuHko dju

dk volj feyk fd gchc u NÙkhlx<h dykdkjk l tk dke fy;k g] og flQ mudh LokHkkfod ifØ;k dk l?kj mi;kx Hkj ugh jgk g ½ mUgku mu dykdkjk dh vjktdrk vkj HkVdkok dk cgr tru l l;fer dj vkj dykRed vkj iHkko'kkyh cuk;kA ;g lHkh tkur g fd gchc ruohj d db ukVd bl vFk e Hkh ik;kfxd g fd o lpep jx&f'kfojk dh dk;'kkyk e fodflr g,A ;g ftruk ^pj.knkl pkj* d ckj e lgh g] mruk gh ^ekj uko nekn xko uko llqjkj* d ckj eA og viu vfHkurkvk dk NV nr Fk fd o dN eupkgk dj yfdu ml ij jx&fu;=.k j[kr FkA LoPNUnrk dk ?kjdj l;e d vgkr e ykr FkA ;g flQ jxkof/k dh t:jr ugh Fkh ftldk /;kku u j[kk tkrk rk ukVd cgn yEc gk tkr & bld ihN jxkuHko dk l?ku&mRdV ij lf'y"V j[ku dk nokc Hkh jgrk FkkA NÙkhlx< d vud ukVî&uR; :i jkr&jkr Hkj cfYd db jkrk rd pyr gA mue vUrHkr foLrkj vkj fc[kjko dk leVdj l?kfur djuk vklku ugh FkkA gchc u ;g dYiuk'khy lonuk d vykok Qlykdj] tc&rc MkV&MiV dj Hkh fd;k vkj ble tk jx&dk'ky fn[kk;k] ml vyf{kr ugh fd;k tk ldrkA

gchc d ;gk ifØ;k dk yxHkx dUnh; egRo FkkA mud ;gk ukVd lpep ^[ky* tkr Fk ½ o ,d rjg l [ky&[ky e fodflr gkr FkA ;g vkdfLed ugh g fd mud ukVdk dk n[kr g, ge'kk yxrk Fkk fd ge yhyk n[k jg gA yhyk e tk vkuUn vkrk g] og gchc d ukVdk dk fo'k"k vkj vfuok; i{k FkkA o ,d vFk e vpd mRlo/kehZ vkj yhyke; Fk ½ o vkuUnnk;h vkj i'uokpd ,d lkFk FkA gchc ruohj viu jxde e] viuh lkjh opkfjd ifrc)rk vkj fu"Bk d ckotn] thou dk mRlo eukr FkA ^pj.knkl pkj* vkj ^vkxjk ckt+kj* vkj ^feêh dh xkMh* vxj rhu gh mnkgj.k fy, tk,] rk lHkh i'uokpd g] ij rhuk e gh icy vkj lfØ; mRlo&yhyk Hkko gA og vDlj dgr Fk fd ftl n[ku e etk u vk, og jxep D;k\ ;g #[k Hkh ml vk/kfudrk dk ifri{k Fkk tk l'k; vkj i'u rk mBkrh Fkh yfdu ftldk ekgky grk'kk vkj vyxko dk FkkA gkykfd gchc ruohj d jxep dk viu lkj e 'kkL=h; dguk dN pkdkuokyh ckr yx ldrh g] ij og bl vFk e fu'p; gh 'kkL=h; Fkk fd og eu"; d pje i'uk dk mBku d vykok ;g Hkh ckj&ckj 0;ä djrk Fkk fd ; lk'u] eu"; d l[k&n[k vkj foMEcuk, vkfn gj le; e mBr vkj ogh jgr gA eu"; dh Lolu'khyrk] efä dh pkg] lp dh [kkt lHkh vlekIl; gA ge viu le; e mUg mBkr&[kkstr g] mudh yhyk n[kr g vkj jxep bl vFk e iFker½ vkj vUrr½ 'kk'or dk ledkyhu yhykep gA

tc Hkkjr Hkou cuu d igy jkT; jxe.My e/;in'k e cuku dk iLrko eku fy;k x;k rk ;g vfuok; vkj mfpr nkuk gh Fkk fd mld fun'kd cuu dk fue=.k lcl igy e/;in'k d lcl cM jxdeh] tk fd rc rd n'k d Hkh uk;d&jxdeh d

:i e lifrf"Br Fk] gchc ruohj dk fn;k tk,A yfdu mudk bl Lohdkj djuk vklku ugh FkkA bldk vFk Fkk fd vxj og eku yr g rk mUg fnYyh NkMdj Hkkiky vkuk gkxk vkj viu ^u;k fFk,;j* dk vyx l pykuk gkxk ;k fd mlu jxe.My e lekfgr dju dk fu.k; yuk iMxkA m/kj gekjh dfBukb ;g Fkh fd vud ckfy;k d Hkj&ij in'k e ge flQ mldh ,d ckyh NÙkhlx<h e viuk jkT; jxe.My ugh xfBr dj ldr FkA lk mUgku bdkj dj fn;kA mld ckn gh U;krk c-o- dkjUr dk fn;k x;k] ftl mUgku Lohdkj dj fy;k] D;kfd jk"Vh; ukVî fo|ky; d fun'kd d :i e mudk dk;dky lekIr gk jgk Fkk vkj mUg ,d u;k jxe.My xfBr dju dk volj vkd"kd yxkA

l[kn l;kx l Hkkjr Hkou dk tc ,d U;kl d :i e ifj.kr fd;k x;k rk mld iFke U;kfl;k e gchc ruohj d vykok dekj xU/ko] txnh'k LokehukFku vkj c-o- dkjUr Hkh FkA vFkkr o lHkh ftUgku Hkkjrh; lLÑfr txr e viu&viu <x l vkj viu&viu {k= e Hkkjrh; vk/kfudrk dk vf/kd lekö'kh cuku dk tkf[ke mBk;k Fkk] tk fd ,d rjg l Hkkjr Hkou dk cfu;knh n'ku Hkh cukA n'kdk ckn tc fnYyh l =Lr gkdj og viu cj lj k; d edku vkj dykdkjk dk ydj gchc u Hkkiky tk ldu dk eu cuk;k vkj ej bl vkxg dk eku fy;k fd o jxe.My d fun'kd gk] rk foiUu gk pd jxe.My d cp&[kp dykdkjk u mud ogk viu dykdkjk d lkFk vku dk fojk/k fd;k vkj gchc dk jxe.My NkMuk iMkA jxe.My u viu dk iuthfor dju dk ,d lugjk volj xok fn;kA gchc ruohj dk dN ugh fcxMk flok; mUg bl dkj.k g, cotg Dy'k dA ij Hkkjr Hkou dh xEHkhj {kfr gb] blе de l de e> dkb lUng ugh gA vud fofHkUu nf"V;k vkj 'kfy;k d fun'kdk d lkFk dke dju dh tk ijEijk dkjUr u jxe.My e Mkyh Fkh]mldh Hkh voKk gbA

gchc ruohj dk jxep vfHkurk dk jxep ugh FkkA mld dykdkjk dk ge vDlj mud gko&Hkko ;k e[kkfHkku; ;k vkgk; bR;kfn d fy, ;kn ugh djrA ge mUg ;kn djr g mudh bul vyx vkj FkkMh vifjHkk"k; jx&lfØ;rk d fy,A ^pj.knkl pkj* e enuyky ep ij ftruh nkM yxkr g] b/kj l m/kj Hkkxr g] mruh vk/kfud ep ij de l de eu igy vkj ckn e Hkh dHkh ugh n[khA enuyky ,d J"B dykdkj Fk ij mudh J"Brk dk fu[kkju vkj l{ke cuku e gchc dh fu.kk;d Hkfedk l bdkj ugh fd;k tk ldrkA yfdu ;g Hkh nt fd;k tkuk pkfg, fd gchc d dykdkj mud gkFkk dh dBiryh ugh FkA ^*feÍh dh xkMh*^ e fQnkckb ,d yxHkx vf'kf{kr dykdkj gkr g, Hkh olUrluk dh Hkfedk ftl Bld l fuHkkrh g] og mldh futh miyfC/k ugh g] mle gchc d lLi'k dh Hkh Hkfedk gA ;g iokn gkrk jgk g fd gchc viu ykd&dykdkjk

d lkFk n0;ogkj djr jg FkA bl vkjki dh lpkbZ dk iR;k[;ku blh rF; l gk tkrk g fd ; dykdkj mud lkFk yxkrkj dke djr jgA de l de Hkkjr e ,lh dkbZ jx&lLFkk ^u;k fFk,Vj* d vykok ugh g] tk viu dykdkjk dk yxHkx Ng eghu dh NÍh nrh gk rkfd o viu [krh d dke ij okil tk ldA gchc d eu e dgh u dgh ;g /kkj.kk c)ey Fkh fd bu dykdkjk dk viu vpy] viuh tehu vkj viu /kU/k l tMk jguk thounk;h rk g gh] mudh jx&ifrHkk dk Hkh lof)r djrk gA gchc dk jxep ykd&jxep ugh FkkA og cfu;knh :i l 'kgjkrh n'kdk d fy, vfHkir lEckf/kr FkkA ij mle vof/k d vykok dkbZ vkj 'kgjkrh fj;k;r ugh nh x;h FkhA mlu n[kdj gh gekjk ;g ukxfjd nEHk dN njdrk Fkk fd ge thou d pje i'uk vkj foMEcukvk l t> jg gA gchc dh dkbZ Hkh iLrfr n[ku d ckn eu fou; l Hkj tkrk FkkA dgk x;k g fd fo|k fou; nrh gA bl ilx e gchc dk jxep fo|k Fkk] flQ ykdfo|k ugh] ukxfjd fo|k HkhA

gchc ruohj d ukVd lxhr i/kku Fk] ;g dgu l mud cfu;knh pfj= ij dkbZ idk'k ugh iMrkA og lxhr dk bLreky i"BHkfe d fy, Hkj ugh djr Fk] u gh fdlh rjg dk ekgky cuku d fy,A mud ukVdk e lxhr dh ektnxh yxHkx ,d pfj= tlh gA lxhr dFkk dk vkx c<krk g] i'u iNrk vkj fVIi.kh djrk g] dN&dN olk gh tlk fd xhd VtMh e dkjl dh Hkfedk gkrh gA pfd mudk jxep yhyki/kku Fkk] lxhr bl yhykHkko dk db rjg l rho djrk FkkA gchc d vud ukVîxhrk e l ,d ukVd dh ;g ifä;k] tk ukVd dh cfu;knh foMEcuk dk btgkj g %

pkj pj.knkl dgyk;k lp cky d
,d pkj u jx tek;k lp cky d

blh ukVd e lrukeh uR; d lkFk ; cky xk; tkr g %

lÙk uke lÙk uke efgek vikj

lR; dh efgek tk Hkh gk] gchc ruohj u viu lkj jx&lkj e lk/kkj.k dh efgek ifrikfnr vkj ifrf"Br dhA ;g vdkj.k ugh g fd ik;% mud gj ukVd e fuiV lk/kkj.k ykx g] tk eVey gku d ckotn dN cgn mtyk] dN ifo=] dN lgt ekuoh; djr ;k ifrcfEcr djr gA lk/kkj.k e gchc dh vkLFkk vVy Fkh vkj mudh jx;k=k e ;g vkLFkk xgjh vkj e[kj gkrh xbA

^*vkxjk cktkj*^* e vkxjk dh vke ftUnxh dk ijk ifjn'; uthj vdcjkcknh dh dforkvk d ek/;e l [khpk x;k gA ukVd e dN ugh ?kVrk % flQ vke ftUnxh dh

yhyk pyrh gA mldk vR;Ur ekfed vkj jkekpd lekiu dku Hky ldrk g] tc lHkh pfj= ,d lkFk ep ij feydj uthj vdcjkcknh dh egku dfork ^vknehukek* legxku d :i e xkr g %

efLtn tk vkneh u cuk;h g ;k fe;kA
cur g vkneh gh beke vkj [krckk[kkAA
i<r g vkneh gh djku vkj uekt ;kA
vkj vkneh gh mudh pjkr g tfr;kAA
tk mudk rkMrk g lk g og Hkh vknehA

;k vkneh i tku dk okj g vknehA
vkj vkneh i rx dk ekj g vknehAA
ixMh Hkh vkneh dh mrkj g vknehA
fpYyk d vkneh dk idkj g vknehAA
vkj lu d nkMrk g lk g og Hkh vknehA

gcbc dh utj viu jxdk; e cjkcj bl vkneh ij] mld fofo/k :ik ij jgh gA mUgku dfork, Hkh fy[kh gA ij mudk vlyh ^vknehukek* mudk fFk;Vj jgk gA og lk/kkj.k dh efgek dk mld lHkh ekuoh; vkj ukVdh; C;kjk e nt djuokyk vknehukek gA

;g ugh fd bldh mUg ijokg ;k [kkt Fkh] ij ;jki e ,d vuk[k Hkkjrh; jxdeh d :i e gcbc ruohj dh ifr"Bk FkhA nk&rhu cjl igy l;kxo'k tc gcbc ifjl e Fk] mn;u okti;h Hkh ogk Fk vkj viu v)okf"kd iokl ij e HkhA ge rhuk bl le; ;jki e f'k[kj jxdeh d :i e cgekU; ,fy;u ef'du dh u;h ukVî&iLrfr n[ku x,A ge gcbc d dkj.k fVdV ugh yuk iMkA ukVd yEck Fkk gkykfd vnHkr Hkh vkj mle nk b.Vjoy FkA nkuk ckj gekjh et ij ef'du Lo; vkdj cBhA tc ge ihVj cd d ^egkHkkjr* d vky[kdkj T;k Dykn dkfj; l feyu x; rk mud 0;ogkj e Hkh gcbc d ifr vuU; lEeku ixV gvkA vxj if'pe l loFkk vukØkUr gkykfd ml c[kch tkuu&le>u oky jxdfe;k dh lph cukb tk, rk 'kk;n mle lcl igyk uke gcbc ruohj dk gkxkA mudk jxde vkj ftn u gkr rk 'kk;n ge jxep e Hkh ;g le> u ikr fd fuiV LFkkuh; gkdj Hkh lkoHkke gvk tk ldrk g] fd ykd Hkh vk/kfud g] fd lk/kkj.k dh Hkh efgek gA

gcbc ruohj LFkku l Hkfe dh vkj x,A mudk LFkku NÙkhlx< Fkk % og mudh

tUeHkfe Hkh Fkk vkj jxde&Hkfe HkhA ;g ;k=k LFkku l Hkfe dh] LFkkuh;rk l lkoHkkfedrk dh ,d dfBu vkj yEch ;k=k FkhA ij gchc ,d nLlkglh ;k=h cfYd ;k;koj FkA ij ,l fd jkLr e tk dN feyrk g] ml cVkjr&ucjr pyr g vkj bl mEehn d lkFk fd irk ugh mue l dc D;k dke dk fudy vk;A

gchc ruohj dk jxep egkdk0;kRed jxep FkkA og vkneh dh cMh vkj tfVy dgkuh Hky [ky&[kYk e dgrk gk] mld vk'k; ge'kk xEHkhj FkA lcl cMh ckr ;g fd ;g egkdk0; lk/kkj.k dh bckjrk e fy[kk x;kA og eu”; dh dUnh;rk ij ,dkx egkdk0; gA mle uk;d] ifruk;d vkj vU; pfj= lc leku :i l ekuoh; vkj Lej.kh; gA db ckj yxrk g fd mÙkj&vk/kfudrk e ftl cgdfUndrk ij vkxg g] og gchc d ;gk 'k: l FkhA ^*vkxjk cktkj** tl ukVd e dkb dUnh; pfj= ;k dFkk g gh ugh] fQj Hkh ge ml ekfgr nk&<kb ?k.V] fcuk Åc] n[kr jgr g rk blfy, fd mle ge lce ^lk g og Hkh vkneh* dk Hkko xgj mrjrk tkrk gA ;g ek= eu”; gku dk ukVd g % ,d ckj fQj norkvk ;k Qfj'rk dk ugh lk/kkj.k eu”; dk yhykepA

gchc ruohj dh vk/kfudrk ml nkjku fy[k x, cgpfpr ukVddkjk tl fot; rUnydj] /keohj Hkkjrh] ckny ljdkj] fxjh'k dukM vkfn d ukVdk ij vk/kkfjr ugh FkhA mUgku 'kDlih;j] 'knd] ekfy;j vkfn db Dyfld ukVddkj d ukVd rk fd;] vlxj otkgr dk NkMdj 'kk;n gh dHkh dkb ledkyhu ukVddkj mBk;kA bldk ,d dkj.k rk fu'p; gh ;g jgk gkxk fd mudh jx'kkyh e ^v/kk ;x*] ^[kkek'k vnkyr tkjh g*] ^ckdh bfrgkl*] ^rxyd* vkfn fd;k tkuk yxHkx vlEHko FkkA mudh jxk/kfudrk bu ukVdk e ixV vk/kfudrk dk] fdlh gn rd] ifri{k FkkA gchc ruohj u D;k fd;k ftruk egÙo mldk g] mruk gh bldk fd mUgku D;k ugh fd;kA

gchc ruohj 'kEHk fe=] bckghe vydkth vkj c-o- dkjUr d lkFk feydj og pkdMh cukr g ftUgku gekj fy, Hkkjrh; jxep e chloh 'krkCnh dk x<kA Hkkjr dh chloh 'krkCnh dh lLÑfr ftu 0;fDr;k dk deQy g] mue fuLlUng gchc ruohj dk LFkku gA ,lk cgr lkjk jxep vkt g tk vxj gchc dh nf”V] thoV vkj ftn l fn[kkb fn;k u gkrk rk lEHko u gkrkA

^vkxjk cktkj* d 'k: e ,d ikFkuk xkb tkrh g ftldh vfUre ifä g % ^efgek mldh Hkh jg ftldk uke uthj*A gchc ruohj d fy, ,l fdlh ikFkuk xhr dh t:jr ughA ^efgek mudh jgxh ftudk uke gchc*A

हबीब तनवीरः एक अनोखे विश्व नागरिक

सुधन्वा देशपांडे

हबीब तनवीर (1923–2009) भारत के प्रमुख नाट्यकर्मी थे। वे नाटककार थे, निर्देशक थे, अभिनेता थे, गायक थे, कवि थे, मैनेजर थे, डिजाइनर थे, शिक्षक थे। उनका कैरियर 60 साल की अवधि में फैला है। वे रचनात्मकता की अद्भुत मिसाल थे। उनकी पहचान, उनकी थियेटर कंपनी ''नया थियेटर'' से अभिन्न रूप से जुड़ी है, जिसका गठन उन्होंने अपनी पत्नी मोनिका मिश्रा तनवीर के साथ मिलकर कोई पचास साल पहले 1959 में किया था।

उनके निधन से हमने एक जन–बुद्धिजीवी खो दिया है, जिसने अपने समय और अपने आसपास की घटनाओं के तकाजों का पूरा किया। नाटकों के जरिए भी और कभी लेख लिखकर, कभी वक्ता के रूप में, कभी विरोध मार्चों में शामिल होकर और कभी बयानों पर हस्ताक्षर करके भी।

उनका पूरा नाम था हबीब अहमद खान। जब उन्होंने कविताएं लिखना शुरू किया तो उन्होंने ''तनवीर'' तखल्लुस अपनाया (और यह ताजिंदगी रहा)। उन्होंने 1942 में रायपुर से मैट्रिक की परीक्षा पास की और 1945 में नागपुर के मौरिस कालेज से ग्रेजुएट हुए। इसके बाद सिनेमा में अपना कैरियर बनाने के लिए वे बंबई चले गए। तब तक दूसरा विश्वयुद्ध अपनी समाप्ति पर था और भारत छोड़ो आंदोलन के चलते आंदोलित युवा पहले ही सड़कों पर थे। वहीं वे नौसेना विद्रोह के भी गवाह बने। उन्हीं दिनों 1942 में इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसियशन (इप्टा) का गठन हुआ था और वे जल्द ही उसका हिस्सा बन गए।

1954 में हबीब तनवीर दिल्ली आ गए और कुदसिया जैदी के "हिंदुस्तानी थियेटर" में काम करने लगे। उन्होंने बच्चों के थियटर में भी काम किया। यहीं उनकी मुलाकात युवा अभिनेत्री तथा निर्देशिका मोनिका मिश्रा से हुयी और बाद में उनकी पत्नी बनी।

उनका पहला प्रमुख नाटक **आगरा बाजार** उन्हीं दिनों का है। यह नाटक जनकवि नजीर अकबराबादी के जीवन और रचनाकर्म पर आधारित है,जो गालिब के समकालीन थे, लेकिन उम्र में काफी बड़े थे। नजीर के जीवन के बारे में बहुत कम ज्ञात है, इसलिए हबीब तनवीर ने एक ऐसा नाटक तैयार किया जिसमें खुद नजीर कहीं नजर नहीं आते हैं। यह नाटक एक बाजार पर आधारित है,जो नजीर की शायरी को जिंदा रखे हुए है।

वास्तव में इस नाटक का कोई प्लॉट नहीं है। यह नाटक अपने समय में अपनी शैली के लिए विख्यात हुआ। हबीब तनवीर ने दिल्ली के ओखला गांव के बाशिंदों के साथ यह नाटक किया। यह एक प्रयोग था,जिसे कुछ साल बाद उन्होंने छत्तीसगढ़ के ग्रामीण कलाकारों के साथ दीर्घावधि आधार पर दोहराया।

कुदसिया जैदी का असमय निधन हो गया। इससे पहले हबीब तनवीर रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामाटिक आर्ट्स (आर ए डी ए) और ब्रिस्टल ओल्ड विक थियेटर स्कूल में प्रशिक्षण के लिए इंग्लैंड चले गए। इंग्लैंड में उन्होंने ब्रिटिश अनुशासन, ब्लॉकिंग के सिद्धांत और निर्देशन के कौशल की कुछ ट्रिक्स समेत बहुत सी चीजें सीखी।

लेकिन अधिकतर उन्होंने वे चीजें सीखीं, जो वे करना नहीं चाहते थे। उन्हें लगता था कि इंगलिश थियेटर कुछ ज्यादा ही कट्टर है और भारतीय थियेटर को जो मुक्त माहौल चाहिए, उसकी इजाजत वह नहीं देता।

अरस्तु के जमाने से चला आ रहा पश्चिमी थियेटर समय, स्थान तथा एक्शन में सामंजस्य की मांग करता है। जबकि भारतीय थियेटर, चाहे वह प्राचीन संस्कृत थियेटर हो या ग्रामीण थियेटर, निरंतर इस सामंजस्य को तोड़ता है। इसमें केवल एक ही सामंजस्य चलता है और वह है रस।

इसके बाद वे यूरोप घूमे, नाटक देखे, जिप्सियों के गाने सीखे और कई बार उन्होंने पैसे के लिए बारों में अपनी जन्मस्थली छत्तीसगढ़ के गाने गाए। इस तरह वे बर्लिन पंहुच गए और उन्होंने बर्तोल्त ब्रेख्त से मिलने का निश्चय किया। यह 1956 की बात है। कुछ दिन पहले ही ब्रेख्त का निधन हो गया था, लेकिन ब्रेख्त की प्रस्तुतियां जिंदा थीं। हबीब तनवीर बर्लिनेर एनसेम्बल की प्रस्तुतियों की सादगी और सीधे बात पंहुचाने के अंदाज से बेहद प्रभावित हुए। उन्हें संस्कृत नाटक याद आया, जिसमें तकनीक और प्रस्तुति की बेहद सादगी रहती है।

गांव नाम ससुराल, मोर नाम दामाद उनकी पहली महत्वपूर्ण छत्तीसगढ़ी प्रस्तुति थी। यह नाटक उन्होंने 1972 में किया। इसके बाद 1973-74 के दौरान **चरणदास चोर** की रचना हुयी। कुछ वर्ष बाद ही इस नाटक ने एडिनबर्ग फ्रिंज प्रथम पुरस्कार जीता और

इसके रचयिता और ग्रामीण अभिनेताओं की उनकी टीम को स्टार बना दिया। यह नाटक लंदन में भी खेला गया और इस नाटक की प्रस्तुति के समय प्रेक्षागृह ठसाठस भरे रहे।

मिट्टी की गाड़ी शूद्रक के क्लासिकल संस्कृत नाटक का छत्तीसगढ़ी रूपांतरण है। यह नाटक उन्होंने 1977 में किया। इसके बाद उन्होंने **बहादुर कलारिन** नाटक किया जो एक लोकाख्यान पर आधारित है। उन्होंने 1978 में **शाजापुर की शांतिबाई** (ब्रेख्त के नाटक **गुड पर्सन ऑफ शेजुआन** का हिंदी रूपांतरण) नाटक किया, जिसमें बेमिसाल फिदाबाई मुख्य भूमिका में थी। फिर 1981 में उन्होंने **लाला शोहरतीराय** नाटक किया (जो मौलियर के बुजुर्आ जेंटलमैन का हिंदी रूपांतरण था)।

दूसरे शब्दों में सत्तर के दशक के मध्य तक, हबीब तनवीर ने अपना एक खास मुहावरा विकसित कर लिया था और बाद के वर्षों में उन्होंने इसे विस्तार दिया और परिष्कृत किया। इसके बाद जो लोग उनका नाटक देखने आते थे और उनके नाटकों से प्यार करते थे, वे मुहावरे और शैली को मानकर चलते थे। और इसलिए इस बात को बड़ी आसानी से भुला दिया जाता है कि इस मुहावरे और इस शैली तक पंहुचने में उन्हें 1958 से 1972 तक चौदह साल लगे थे।

हबीब तनवीर के नाटकों को लेकर आमतौर पर दो तरह के विचार सुनने को मिलते हैं। एक विचार वह है जो उनमें इप्टा की परंपरा के विकास को देखता है। और दूसरा विचार वह है जो उन्हें लोक नाटककार के रूप में देखता है।

ये दोनों ही विचार गलत हैं। इप्टा ने जहां ''लोक'' रूपों को मुख्यत: क्रांतिकारी विचारधारा को लोगों तक पंहुचाने के वाहक के तौर पर इस्तेमाल किया, वहीं हबीब तनवीर ने ग्रामीण नाट्य परंपराओं से चीजों को लेकर एक लोकप्रिय आधुनिक थियेटर तैयार किया जो क्रांतिकारी से ज्यादा स्वप्नदर्शी था।

हबीब तनवीर का जोर लोक रूपों पर नहीं था, बल्कि लोक कलाकारों पर था। उन्होंने छ: ग्रामीण अभिनेताओं की पहली टीम 1958 में बनायी। ये अभिनेता अपनी शैली भी अपने साथ लेकर आए। उन्होंने 1958 से 1972 तक अनेक नाटक किए।

लेकिन उनमें से अधिकतर जैसा कि वे खुद कहते थे ''विफल'' रहे। उन्हें आश्चर्य होता था कि ये ग्रामीण कलाकार खुद अपनी सैटिंग में तो शानदार थे, लेकिन जब उनके नाटकों में अभिनय करते थे, तो बड़े अस्वाभाविक और घिसे–पिटे लगते थे?

उन्होंने मुख्यत: दो खामियों की पहचान की। वे अपने इंगलिश तौर–तरीके उन पर थोपने की कोशिश करते थे और वे उन्हें हिंदी बोलने के लिए मजबूर करते थे, जिसको लेकर वे सहज नहीं थे। छत्तीसगढ़ी उनके लिए सहज थी, जिसे वे धाराप्रवाह बोलते थे। इसलिए जब एक बार उन्होंने उनको अपनी भाषा का इस्तेमाल करने छूट दे दी तो उनमें निखार आ गया और उनके नाटक में भी।

उनकी रेंज जबर्दस्त थी। खुद अपने नाटकों के अलावा उन्होंने प्राचीन संस्कृत

नाटककारों–शुद्रक, भास, विशाखदत्त और भवभूति के नाटक भी किए। उन्होंने अगर शेक्सपीयर, मौलियर तथा गोल्डिनी के यूरोपीय क्लासिकल नाटक किए तो आधुनिक महारथियों ब्रेख्त, गार्सिया लोर्का, गोगोल तथा गोर्की और यहां तक कि ऑस्कर वाइल्ड के नाटक भी किए। उन्होंने भारतीय लेखकों रवींद्रनाथ टैगोर, शिशिर दास, असगर वजाहत, शंकर शेष, सफदर हाश्मी और राहुल वर्मा के नाटक भी किए। छत्तीसगढ़ी लोककथाओं के अलावा उन्होंने प्रेमचंद, स्टीफन ज्वेग तथा विजयदान देथा की कहानियों का नाट्य रूपांतरण भी पेश किया।

इस तरह हबीब तनवीर एक विश्व नागरिक थे और उन्होंने बिना किसी भेदभाव के सारी दुनिया से प्रभाव ग्रहण किए, सबसे लिया, पढ़ा। लेकिन वे एक लंबे, कठिन तथा रचनात्मक संघर्ष के जरिए छत्तीसगढ़ के बाशिंदे बने। छत्तीसगढ़ वह प्रिज्म था जिसने उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को परावर्तित किया। उनकी आत्मकथा का नाम है–**एक मटमैली चद**रिया। एक ऐसा जीवन जो विविध धागों से बुना गया, एक ऐसा जीवन,जो धरती के धूसर रंगों से बना। वे मिडास का एकदम उल्टा रूप थे। वे जिस चीज को भी छू देते थे, वही अपनी चमक खो देती थी। वह रफ हो जाती थी और छत्तीसगढ़ी में बदल जाती थी। जैसा कि ब्रेख्त ने कहा है कि सच्ची कला जनता के साथ जुड़कर जनता की गरीबी को प्रतिबिंबित करती है और इस क्रम में समृद्ध होती है।

यही वह आदमी है, दक्षिणपंथी हिंदू नब्बे के दशक की शुरूआत से जिसके पीछे पड़े रहे हैं। यह कहना, जैसा कि दक्षिणपंथी हिंदुओं का तर्क था, कि हबीब तनवीर हिंदू–विरोधी हैं, जिसका अर्थ यह है कि वह भारतविरोधी हैं, निश्चय ही व्यक्ति तथा उसके काम को प्रतिबिंबित नहीं करता बल्कि उन पर हमला करनेवालों के भ्रष्ट तथा ओछी सोच को ही दिखाता है। चांद पर थूका हुआ, खुद अपने मुंह पर ही गिरता है।

हबीब तनवीर मूलगामी ध्येयों के करीब बने रहे। उन्होंने 1988 में जन नाट्य मंच के लिए नाटक निर्देशित किया और 1989 में कांग्रेसी गुंडों के हाथों सफदर हाश्मी की हत्या के बाद हुए विरोध प्रदर्शनों में आगे रहे। इस अवधि में वे और वामपंथ दोनों एक–दूसरे के करीब आए और संघ परिवार द्वारा उन पर किए गए हमलों और उनके सामने झुकने से उनके इंकार करने के संदर्भ में वे,वामपंथी संस्कृतिकर्मियों के हीरो हो गए।

एक थीम जो उनके सारे रचनात्मक कार्य में **आगरा बाजार** से और उससे पहले से भी लेकर आज तक देखने को मिलती है, वह यह है कि वे गरीब–गुरबा के पक्षधर के रूप में सामने आते हैं। छत्तीसगढ़ी किसानों तथा आदिवासियों की संस्कृति, उनके विश्वासों, प्रथाओं, उनके हंसी–मजाक, उनके गीतों और उनकी कहानियों सभी को उनके थियेटर ने अद्भुत जीवंतता के साथ पेश किया। उनके चरित्रों में धार्मिकता की कमी नहीं है, लेकिन भगवान के साथ उनका संबंध एकदम मानवीय है, जमीनी है। चरणदास मूर्ति चुराने से पहले पूरी गंभीरता से भगवान को साष्टांग दंडवत करता है। एक किसान या आदिवासी

किसी चट्टान, किसी पेड़, किसी पशु या किसी भी चीज को भगवान में बदल देता है।

हबीब तनवीर इस खुलेपन से तथा लचीलेपन से बेहद प्रभावित थे। उन्होंने हिंदुत्व का विरोध इसलिए किया क्योंकि अन्य चीजों के अलावा वह किसानों तथा आदिवासियों की इस आजादी को खत्म करना चाहता है और विश्वास तथा प्रथाओं के ढ़ांचे को कट्टर बना देना चाहता है।

हबीब तनवीर संकीर्णता, धर्मांधता, तत्ववाद और विकास के उस रूप के शत्रु थे, जो गरीब को कुचल देता है। अगर **जमादारिन या पोंगा पंडित** में जीवंत अंदाज में जाति प्रथा, अंधविश्वास और पुरोहिती की आलोचना की गयी है तो दूसरे नाटक में वे मुस्लिम तत्ववाद पर कड़ा हमला बोलते हैं। असगर वजाहत रचित नाटक **जिस लाहौर नहीं देख्या,वो जन्म्या ही नहीं** एक ऐसी हिंदू महिला की कहानी है जो बंटवारे के बाद लाहौर में छूट जाती है। उनकी अंतिम प्रस्तुति **राज रक्त**, टैगोर की रचना **विसर्जन** पर आधारित है और वह भी अंधविश्वासों के खिलाफ है। उनका एक पुराना नाटक **मोटेराम का सत्याग्रह**, प्रेमचंद की कहानी पर आधारित है, जिसे उन्होंने सफदर हाशमी के साथ मिलकर लिखा था। धर्म जब राजनीति के साथ गड्डमड्ड हो जाता है, तो क्या होता है, यह इस पर व्यंग्य है। दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद उन्होंने दिल्ली के एक ग्रुप के लिए शिशिर कुमार दास का **बाघ** पेश किया था। यह शिकार पर निकले एक सांप्रदायिक बाघ की प्रतीक कथा है। उन्होंने 1999 में **जन नाट्य मंच** के लिए **एक औरत हिपेशिया भी थी** नाटक लिखा और निर्देशित किया। यह चौथी सदी की एलेक्जेंड्रिया की एक महिला गणितज्ञ की कहानी है, जिसे ईसाई धर्मांध सड़क पर पीट–पीट कर मार डालते हैं। **सड़क** एक लघु नाटक है। इसमें उस ''विकास'' का मजाक बनाया गया है, जो ग्रामीणों, आदिवासियों, उनकी जमीन तथा उनकी संस्कृति को तबाह कर देता है। **हिरमा की अमर कहानी** में दिखाया गया है कि आदिवासियों के लिए विकास का क्या अर्थ है। उनका बच्चों का एक पुराना लघु नाटक है **गधे**, जिसमें शिक्षा प्रणाली की धज्जियां उड़ाई गयी है,जो सिर्फ गधे पैदा करती है। राहुल वर्मा की **जहरीली हवा** पर आधारित उनकी प्रस्तुति भोपाल गैस त्रासदी की कहानी कहती है। उसके बाद **देख रहे हैं नैन** एक और नाटक है और शायद यह दार्शनिक रूप से सबसे परिष्कृत नाटक है। यह एक राजा के एक ऐसे काम की विफल कोशिश की कहानी है, जिससे किसी का कोई नुकसान नहीं होता।

यही हबीब तनवीर थे जो भारतीय थियेटर की दो महान परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते थे–एक अभिनेता–निर्देशक, नाटककार–मैनेजर की परंपरा का और दूसरी व्यापक सामाजिक और राजनीतिक ध्येयों में वामपंथ की ओर से सक्रिय भागीदारी की परंपरा। पहली परंपरा हबीब तनवीर के निधन के साथ ही खत्म हो गयी। दूसरी परंपरा अभी जिंदा है और इसका श्रेय कुछ हद तक हबीब तनवीर को भी जाना चाहिए, जिन्होंने रास्ता दिखाया।

gchc ruohj vkj ykd ijijk dh iklfxdrk

tojheYy ikj[k

ifl) jxdeh] ukV; fun'kd] y[kd vkj vfHkurk gchc vgen [kku dk] ftUg lHkh gchc ruohj d uke l tkur g] yxHkx 86 o"k dh voLFkk e 8 tu 2009 dk Hkkiky e ngkr gk x;kA o viu thou d vfre {k.kk rd lfd; jgA gchc lkgc dh iflf) jxdeh d :i e gh T;knk gA yfdu mUgku viuk r[kYyl ^ruohj* mn e 'kk;jh dju d fy, gh j[kk FkkA ckn e tc o 1945 e ecb x;] rc mUgku fgnLrkuh fQYek d fy, xhr Hkh fy[k FkA blfy, ;g dgk tk ldrk g fd ukVdk l igy o ,d 'kk;j FkA ruohj miuke mud uke d lkFk bl gn rd tM x;k Fkk fd o ftnxh Hkj gchc ruohj d uke l gh igpku x;A Nrhlx< ¼tk vktknh d ckn cu e/;in'k dk gh fgLlk Fkk½ dh jkt/kkuh jk;ij e mudk tUe gvk Fkk vkj f'k{kk&nh{kk Hkkiky e gb FkhA ,e- ,- dju d fy, mUgku vyhx< efLye fo'ofo|ky; e io'k fy;k FkkA yfdu ,d lky i<kb dj 1945 e o ecb py x;A ecb e mUgku vky bfM;k jfM;k e ukdjh dhA yfdu ogh o fQYek l Hkh tM] lkFk gh] ixfr'khy y[kd l?k vkj Hkkjrh; tu ukV; l?k ;kuh bIVk l Hkh tMA ecb l 1954 e o fnYyh vk x;A ;gh mUgku mlh lky viu ifl) ukVd ^vkxjk cktkj* dk epu vkj fun'ku fd;kA ^vkxjk cktkj* ukV; {k= e u flQ ,d u;k i;kx Fkk] cfYd ,d mn tudfo ftl bfrgkl d gkf'k, ij Mky fn;k x;k Fkk] bl ukVd d tfj, gchc ruohj u mlh dn e yk fn;kA xkfyc l ofj"B vkj mlh vkxjk e jgu vkj thu oky dfo uthj vdcjkcknh d thou ij vk/kkfjr bl ukVd u] gchc ruohj dk jxdfe;k dh igyh ifDr e yk [kMk fd;kA

^vkxjk cktkj* e dke d fy, mUgku i'koj dykdkjk dh ctk; fnYyh d vk[kyk xko e jgu oky ykxk] ykd dykdkjk vkj tkfe;k bLykfe;k d fo|kfFk;k dk ydj

fy;kA bles dy 52 dykdkjk u Hkkx fy;k FkkA bl rjg ,d vR;r tfVy fdLe d ukVd dk mUgku u doy lQyrkiod i'k fd;k cfYd og bruk ykdfi; gvk fd blh otg l gchc lkgc dh iflf) n'k dh lhekvk d ikj ;jki rd igphA bxyM dh jk;y vdfMeh vkQ MkefVd vkVl e vfHku; lh[ku d fy, gchc ruohj 1955 e ogk x;A 1956 e fcLVy vkYM fod fFk;Vj Ldy e fun'ku dk if'k{k.k ikIr dju d fy, io'k fy;kA 1956 e gh vkB eghu d cfyu iokl d nkjku mUg crkYr c[r d ukVdk dk n[ku dk volj feyk ftll mUgku cgr dN lh[kkA c[r d ukVdk dk epu mudh viuh 'kyh] ftldh >yd o ^vkxjk cktkj* d ek/;e l n pd Fk] d dkQh utnhd FkhA c[r d ukVdk dh iLrfr u ekuk mudh lkp ij gh ekgj yxk nh Fkh vkj blh dk urhtk Fkk fd 1958 e Hkkjr ykVu d ckn 1959 e ftl ^u;k fFk;Vj* uked lLFkk dh LFkkiuk mUgku dh mldk ,d edln c[r dh ijijk e gh tukUe[kh ukVdk dk [kyuk FkkA bl fn'kk e tk ekfyd vkj egÙoi.k dke mUgku fd;k og Nrhlx< d ykd dykdkjk dk ydj ukVdk dh iLrfr dh 'k#vkr djuk FkkA bl nf"V l mud mYy[kuh; ukVdk e ^*pj.knkl pkj*] ^*xko dk uke llqjky] ekj uke nkekn** vkj ^*dkeno dk viuk clr _r dk liuk** mYy[kuh; gA ^*pj.knkl pkj** [kkl rkj ij ifl) gvk ftle mUgku Nrhlx<h dykdkjk dk ydj gh ukVd r;kj fd;k FkkA jktLFkku dh ,d ykddFkk ij vk/kkfjr bl ukVd dk vk/kfud :ikrj.k jktLFkkuh Hkk"kk d ;'kLoh y[kd fot;nku nFkk u fd;k FkkA ble ^vkxjk cktkj* l Hkh T;knk 72 dykdkjk u ,d lkFk dke fd;k FkkA bl ij 1975 e ';ke cuxy u blh uke dh fQYe cukb FkhA bl fQYe d fy, iVdFkk vkj xhr fy[ku dk dke Lo;a gchc ruohj u fd;k FkkA gchc ruohj vkj ';ke cuxy u bl fQYe e ,d vkj i;kx fd;k FkkA bl fQYe e ifl) vfHkus=h fLerk ikfVy u dke fd;k Fkk vkj bld uk;d ,d Nrhlx<h dykdkj ykyjke FkkA

ukVdk e mud ;kxnku dk n[kdj ,lk irhr gk ldrk g fd gchc ruohj dk e[; dk;{k= ukVdk dk epu vkj fun'ku djuk FkkA yfdu ;g ckr ijh rjg l lgh ugh gA bl ckr dh ppk igy dh tk pdh g fd gchc u viu ;okoLFkk e viuh jpukRed vfHk0;fDr dh 'k#vkr 'kk;jh l dh Fkh vkj bld fy, mUgku ^ruohj* miuke Hkh j[kk FkkA ckbl o"k dh me e o ccb ukVd [kyu d fy, ugh x; Fk cfYd fQYek e vfHku; dju x; FkA mUgku vky bfM;k jfM;k e dke fd;k vkj blVk l Hkh tMA yfdu fQYek l tMu dk Hkh o dkb volj ugh NkMuk pkgr FkA ;gh dkj.k g fd mUgku fQYek e vfHku; Hkh fd;k vkj xhr Hkh fy[kA 1952 e mUgku [okTk vgen vCckl dh fQYe ^jkgh* e dke fd;k Fkk ftld uk;d cyjkt lkguh FkA blh rjg fnyhi dekj d uk;dRo okyh fQYe ^QVikFk* ¼1953½ e Hkh dke fd;k FkkA fQYek e

dke dju dk ;g flyflyk mud vfre fnuk rd tkjh jgkA mUgksaus u doy uk l vf/kd fQYe e vfHkku; fd;k] mUgksaus db Vyhfotu fQYek e vkj /kkjkokfgdk e Hkh dke fd;kA ckn dh mudh fQYek e fjpMZ ,Vucjk dh ^xk/kh* ¼1982½] ^; ok efty rk ugh* ¼1987½] ^ghjk ghjkyky* ¼1988½] ^igkj* ¼1991½ vkj ^fn jkbftx* cyM vkQ exy ikM; ¼2005½ [kkl rkj ij mYy[kuh; gA bl vfre fQYe e mUgksaus cgknj'kkg tQj dh Hkfedk fuHkkbZ FkhA bld vykok ^LVbx vku* ¼1980½] fn cfux lhtu* ¼1993½ vkj ^Cyd ,M 0gkbV* ¼2008½ fQYek e Hkh dke fd;kA mUgksaus jkx; jk?ko d i[;kr miU;kl ^dc rd idk:* ij cu l/khj feJ d /kkjkokfgd e Hkh ,d egÙoi.k Hkfedk fuHkkbZ FkhA

gchc ruohj d thou d lf{klr fooj.k l ;g Li"V g fd o ,d lkFk dfo] vfHkurk] ukV; fun'kd] iVdFkk y[kd vkj xhrdkj FkA vfHkku; vkj fun'ku dk if'k{k.k ;jki l yu d ckotn mUgksaus viuh dykvk dk lh/k tehu l tkMkA bl vFk e o c[r dh tuoknh ijijk l tM dykdkj FkA lPpkbZ ;g g fd dykvk d chp mUgksaus vfHktkr vkj ykd dyk tl dkbZ Hkn ugh fd;kA ftl ek/;e d }kjk Hkh mUg turk rd viuh dyk dk igpku dk volj feyk mUgksaus ml viuk;kA yfdu gj txg mudh n'f"V tukUe[kh jghA mud ukVd pkg ^ikxk ifMr* gk ;k ^ekVjke dk lR;kxg* ;k ^ftl ykgkj ubZ n[;k* ;g LkkQ g fd jxep dh ijijk e iLrr djr g, Hkh bu ukVdk dh dFkkoLr u fl Q ixfr'khy Fkh cfYd budh iLrfr e dgh Hkh vkfHktkR; dk leko'k ugh fn[kkbZ nrkA

oLrr% l Hkh dykvk e] yfdu n'''; dykvk d lnHk e rk [kkl rkj ij ;g io'fÙk ik;h n[kh x;h g fd vkfHktkR; vkj ykdfi;rk dk bl rjg [kkuk e ckVdj n[kk tkrk g fd ;g eku fy;k tkrk g fd tk ykdfi; g og dyk ugh g vkj tk dyk g og ykdfi; ugh gk ldrhA bl h rjg n'''; dykvk e ;jki&vefjdk dk vudj.k djr g, mu ijijkvk dh ik;% mi{kk dh tkrh g ftudk lc/k ;k rk ifrjk/k dh tukUe[kh ijijk l g] ;k ykd ijijkvk l gA ukVdk e gchc ruohj dk lcl cMk ;kxnku ;gh g fd mUgksaus if'pe l vkbZ jxep dh vk/kfud ijijk dk Hkkjrh; jxep dh ykd ijijk l tkMkA NrhlX<h ukVdk dh iLrfr blh tMko dk urhtk FkhA bl lnHk e bl ckr dk /;ku e j[kk tkuk pkfg, fd Hkkjr e ukVd vkj jxep dh ijijk if'pe l de ijkuh ugh gA lLd'r e u fl Q ukVd fy[k tkr Fk cfYd ukVd vkj dk0; l lcf/kr l)kfrd iLrdk e ukV;'kkL=] vkj ukVdk dh jxeph; iLrfr d foLr'r fooj.k feyr gA dk0;'kkL= dk lokf/kd ifl) fl)kr ^jl fl)kr^ jxep ij ukVdk dh iLrfr l gh mitk gA vkt lLd"r d tk ukVd miyC/k g] o T;knkrj lLd'r dh vfHktkr ijijk l lc) g] yfdu 'knd d ^e'PNdfVde* dk lc/k ml ifrjk/k ijijk l g] ftl ijijk d vf/kdk'k ukVd u doy miyC/k ugh g cfYd mudk mYy[k rd

ugh feyrkA ;g tkfgj g fd ‘knd dk ;g ykdifl) ukVd gok e vioknLo:i ugh mitk gkxkA bld ihN dkb ijijk vo’; jgh gkxh Hky gh og mruh l’kDr u gk ftruh vkfHktkr ijijk fn[kkb nrh gA gchc ruohj u bUgh ‘knd d ^e‘PNdfVde* ukVd dk ^feVVh dh xkMh* d uke l iLrr fd;k FkkA Hkkl] dkfynkl] HkoHkfr] fo’kk[knÙk] g"ko/ku vkfn d jgr ‘knd dk puko gchc ruohj dh ;FkkFkoknh vfHk#fp dk |krd dgk tk ldrk gA

lLd‘r d ukVd Hkkjrh; bfrgkl d e/;;x e ylrik; gk x;A fgnh lkfgR; d yxHkx ,d gtkj lky d bfrgkl e ukVdk dk y[ku flQ mUuhloh lnh d mÙkjk) e feyrk gA ,d&nk ukVd viokn :i e jhfrdky e fy[k x; Fk] yfdu jxep d vHkko e mudk fy[kk tkuk dkb [kkl egÙo ugh j[krkA yfdu blh ,d gtkj lky e ykd jxep u doy cuk jgk] og ukVdk d ml vHkko dh ifr djrk jgk tk vfHktkr ox d gkFk [khp yu d dkj.k ylr gk x; FkA ;g egt l;kx ugh g fd 1853 e l;n vkxk glu u ftl ^bnjlHkk* uked ukVd dh jpuk dh Fkh vkj tk ikjlh jxep ij i’k fd; tku oky ukVdk d fy, vkn’k iLrd cu x;h Fkh] mldh ‘kyh ij u flQ if’pe d ukVdk dk iHkko Fkk cfYd ml ij Hkkjrh; ykdukVdk dk iHkko Hkh lkQrkj ij n[kk tk ldrk gA blh ikjlh fFk;Vj d ukVdk u tk eykMekb ‘kyh viukb mldh tM Hkkjrh; ykd ukV; ijijk e Hkh ektn gA fgnLrkuh fluek d mn; dk ikjlh jxep dh ijijk l tkMdj gh n[kk tk ldrk gA ;g egt l;kx ugh g fd gchc ruohj dk tc Hkh ekdk feyk mUgku fQYek e u doy dke fd;k cfYd mUgku bl ckr dk rk /;ku j[kk fd fQYe d ihN dkb lkekftd edln gkA yfdu mUgku dfFkr dykoknh fQYek l tMu dh dkb dkf’k’k ugh dhA de&l&de ,l dykoknh fluek l tMu dh dkf’k’k ugh dh tk ykdfi;rk dk tufojk/kh eY; ekurk gkA

Ng n’kdk rd ukVd djr g, Hkh gchc ruohj u dHkh Hkh fluek ;k Vyhfotu d ifr fgdkjr dk Hkko inf’kr ugh fd;kA dkb Hkh lPpk dykdkj fdlh ek/;e dk fgdkjr d Hkko l n[k Hkh ugh ldrkA ukVd dh rjg fluek Hkh n’kdk ij viuk iHkko fdlh Hkh vU; ek/;e l rRdky vkj rho xfr l Mkyrk gA fu’p; gh ukVd vfHkurk d fy, bl vFk e T;knk pukrhi.k g fd ml fjVd dh NV ugh feyrhA ukVd ‘k: gku l igy og fjgly d nkjku pkg ftruh ckj vH;kl dj viu ijQkel e l/kkj dj y yfdu ,dckj ukVd ‘k: gku d ckn ml Hky dju dk volj ugh feyrkA blfy, ukV; fun’kd dk viu dykdkjk l cgrjhu dke yu d fy, ukVd dh ijh eph; ldYiuk d vu:i ^vfHku;* dju d fy, r;kj djuk gkrk gA bl vk’ofLr d lkFk fd o lc feydj mldh ldYiuk dk ep ij mldh xj ektnxh e Hkh lkdkj djxA bld foijhr fQYe dk fun’kd vfHkurkvk l lokÙke dke yu e l{ke gkrk gA

fQj Hkh] vfHkurkvk dk fQYe d liknd dh et ij igpu l igy rd ;g irk ugh gkrk fd mudh vfHkur {kerk dk ijh fQYe e fdl rjg mi;kx gku okyk gA ;g ijh rjg fQYe fun'kd ij fuHkj djrk g fd og viuh fQYe dk viuh ldYiuk d vu:i iLrr dj ldA ;gh dkj.k g fd fluek dk fun'kd dk ek/;e le>k tkrk g vkj ukVd dk vfHkurkvk dkA gchc ruohj fun'kd Hkh Fk vkj vfHkurk HkhA mUgku ukVd Hkh [ky vkj fQYek e Hkh dke fd;kA blfy, o bu nkuk ek/;ek dh 'kfDr vkj lhek nkuk dk tkur FkA 'kk;n ;gh dkj.k g fd o mu xji'koj dykdkjk l Hkh ^vfHku;* djk ld Fk] tk vk/kfud jxep l ifjfpr ugh Fk ;k ftUgku dHkh Hkh ukVdk e dke ugh fd;k FkkA

ukVd vkj jxep dk vk/kfud bfrgkl u;&u; i;kxk dk bfrgkl gA ;g rk ugh dgk tk ldrk fd gchc ruohj gh vdy ,l dykdkj Fk ftUgku u; i;kx fd; FkA yfdu ;g lgh g fd vk/kfud if'peh 'kyh d ukVdk dk ykd ukVdk l tkMdj u; rjg d ukVd iLrr dju dk dke fu'p; gh gchc ruohj u lcl igy fd;kA gchc ruohj u ,lk djd ykd ukVdk dh gtkjk lky dh ijijk dk ,d vk/kfud igpku nh vkj ml ikLfxd Hkh cuk;kA ,lk djr g, mUgku viu ukVd dh fo"k;oLr d lkFk dkbl le>kSrk ugh fd;kA ;fn ge ukVdk d ,l i;kxk l fgnLrkuh fluek dh vc rd dh ijijk dh ryuk dj rk ge ,l i;kx ik;% de gh n[ku dk feyr gA 1970 d n'kd l tk u;k fluek 'k: gvk Fkk] ml e ;g lHkkouk fufgr FkhA yfdu bl ijijk e i;kx dk of'k"V; inku dju dk vkxg rk Fkk] yfdu ml ykdfi; cuku dh dkf'k'k cgr de FkhA ;g dkf'k'k dN gn rd ';ke cuxy d fluek e fn[kkb nrh g ftUgku dykRed mRd"k vkj lkekftd lknn';rk d chp lryu cuku dh Hkjld dkf'k'k dhA blh dk ifj.kke Fkk fd mUgku gchc ruohj dh i[;kr iLrfr ^pj.knkl pkj* dk 1975 e fQYekrj.k dju dk lkgl fd;kA ^pj.knkl pkj* ftl ykddFkk ij vk/kkfjr Fkk] mldk vk/kfud :ikrj.k fot;nku nFkk u fd;k Fkk] ;g ckr igy dgh tk pdh gA ;gk nFkk dh gh ,d vkj dgkuh ij vk/kkfjr ef.k dky dh fQYe ^nfo/kk* dk ftd fd;k tk ldrk g] tk mUgku 1973 e cukbl FkhA ykddFkkvk d fQYekrj.k dh ; nk vyx&vyx fdLe dh dkf'k'k FkhA eefdu g fd dyk dh nf"V l ^nfo/kk* ,d cgrj fQYe lkfcr gk] yfdu tgk rd li"k.kh;rk dk loky g] ^pj.knkl pkj* dyk d Lrj ij Hkh fcuk fdlh rjg dk le>krk fd; fQYekrj.k dh ,d T;knk ykdfi; vkj dke;kc iLrfr FkhA ykddFkkvk dk iLrr dju d i;kl ckn e Hkh gkr jg ftue dru egrk dh xtjkrh fQYe ^Hkouh Hkob* ¼1980½ dk mYy[k fd;k tk ldrk gA bl fQYe e Hkob 'kyh dk i;kx djr g, Hkh fQYe dk ledkyhurk l lQyrkiod tkMk x;k FkkA ;g fQYe Hkh li"k.kh;rk d fygkt l ,d dke;kc fQYe dgh tk ldrh gA

fo t ;nku nFkk dh gh ,d vkj dgkuh ij idk'k >k u 1987 e ^ifj.kfr* fQYe cukb FkhA yfdu bl fQYe e fun'kd u ;FkkFkoknh 'kyh dk gh mi;kx fd;k vkj ykddFkk dk ykddFkk dh rjg iLrr ugh fd;kA fo t;nku nFkk dh dgkuh nfo/kk ij gh veky ikydj u ^igyh* uke dh fQYe cukbZ FkhA veky ikydj u bldh iLrfr e dN gn rd ykd ijijk dk mi;kx fd;k g yfdu fQYe dk n[ku l ;g lkQ gk tkrk g fd fQYedkj ij fdlh u fdlh :i e 0;kolkf;drk dk ncko Hkh gA ;g t:j g fd veky ikydj dh fQYe e dgkuh dk L=h efDr d i'u l tkMdj] ml iklfxd vkj ixfr'khy vk;ke fn;k x;kA

ukVdk dh ryuk e ,d egxk ek/;e gku d dkj.k fQYek e i;kx djuk bruk vklku ugh gkrkA vxj fQYek dk turk rd igpuk g] rk mue lai"k.kh;rk d ,l rjhd viuku gkx tk vklkuh l ykdfi; Hkh gk ldA yfdu ,lk ey dFkk e fufgr ln'k dh dher ij gkrk g] rk fQYe dh jpukRedrk ij bldk udkjkRed vlj fn[kkb nxkA fiNy ,d n'kd e fgnh fluek e i;kx'khyrk dk vkxg c<k gA ,l db fQYedkj g tk viuh fQYe dk fcey jk;] egcc] x#nÙk] jktdij] _f"kd'k e[kth tl fQYedkjk dh rjg ykdfi; Hkh cukuk pkgr g yfdu ,lk lkekftd ln'k vkj dykRedrk dk v{k..k j[kr g, djuk pkgr gA bu fQYedkjk e vujkx d'; i] vkfej [kku] vk'krk"k xkojhdj] fuf'kdkr dker] e/kj HkMkjdj] jkd'k egjk] jktdekj fgjkuh] fo'kky Hkkj}kt] f'kfer vehu] vkfn d uke fy; tk ldr g] ftUgku ykdfi; fluek vkj lkÌ'; fluek d chp lryu LFkkfir dju dk i;Ru fd;k gA lkFk gh] mUgku u;h rjg d dFkkudk ij fQYe cuku dk lkgl Hkh fn[kk;k gA yfdu fQYe iLrfr e u;h rjg d i;kx dju dh dkf'k'k vc Hkh gkf'k, ij gA ;fn ,lh dkf'k'k g Hkh rk mu ij gkyhoM dk iHkko lkQ rkj ij n[kk tk ldrk gA if'pe l lh[ku ;k mll xg.k dju e dN Hkh xyr ugh gA yfdu Hkkjrh; ;FkkFk dk ;fn Hkkjrh; ykd ijijk l tkMdj i'k dju dh dkf'k'k dh x;h gkrh] tl kfd gchc ruohj u ukVdk d lnHk e fd;k Fkk] rk fu'p; gh fluek e Hkh ,d u; ;x dh 'k#vkr gbZ gkrhA

1970&80 d n'kd e fgnh d u; fluek u ;FkkFk d uke ij eykMkekbZ 'kyh l eDr gku dh dkf'k'k dh FkhA bl dkf'k'k d rgr mUgku viuh fQYek e u xhr j[k vkj u gh uR;A ;g lgh g fd vf/kdk'k fQYek e ukp&xku cgr gh QgM <x l iLrr fd; tkr gA yfdu bl ckr dk Hkyk fn;k x;k fd Hkkjrh; ukV; ijijk e ukp&xku vfuok; rRo jg g] [kkl rkj ij ykdukV; ijijk eA ikjlh fFk;Vj d ukVdk e ukp&xkuk dh ijijk ykdukV; ijijk l gh vk;h FkhA fQYek u Hkh bl viuk fy;k FkkA fQYeh xhr rk fQYek l vyx viuh ,d vyx igpku dk;e dju e vkjHk l gh dke;kc jg FkA bu xhrk d fy, xhrdkjk vkj lxhrdkjk u ykd ijijk dk vudj.k

dju vkj mudk viukr g, u; i;kx dju dk lkgl fn[kk;k FkkA fQYeh xhr&lxhr e ftl lgtrk d lkFk ykdrRo dk viuk;k x;k Fkk] olh dkf'k'k Lo; fQYe dh dgkuh dgu ¼;k fn[kku½ d lnHk e ugh dh x;hA ;g egt l;kx ugh g fd ipkl&lkB lky ijkuh fQYek d xhr vkt Hkh 0;kid :i e lu tkr g vkj turk d chp dekc'k mlh :i e Lohdk; g tl ykdxhrA fQYeh xhrk dh ;g ijijk ;|fi vc detkj iM x;h g] yfdu vc Hkh tc ,lh dkf'k'k fn[kkb nrh g] rk mldk 0;kid iHkko Hkh vklkuh l egll fd;k tk ldrk gA jkd'k egjk dh fQYe ^fnYyh&6* e xnk&Qy oky xhr dh ykdfi;rk bldk mnkgj.k g] tk l;kx l gchc ruohj dk gh jpk gvk xhr gA flueke ykdijijk dk xhrk l vkx tkdj viuku dh t:jr vkt Hkh cuh gbZ gA ukVdk d lnHk e gchc ruohj d dke;kc i;kxk l rk ;gh lkfcr gkrk gA n'; dykvk e gchc ruohj d ;kxnku dk eY;kdu djr g, ykd ijijkvk dh iklfxdrk d fy, fd; x; mud i;kxk vkj l?k"kk dk vo'; /;ku e j[kk tkuk pkfg,A

नाट्य आधुनिकताएं और हबीब तनवीर

रवींद्र त्रिपाठी

आजादी के बाद हिंदी रंगमंच कई राहों पर आगे बढ़ा। उसकी कई दिशाएं रहीं। खोज और अन्वेषण की भी और परंपरा से जुड़ने की भी। हिंदी साहित्य की आधुनिकता पहले से ही शुरू हो चुकी थी। भारतेंदु के जमाने में। उसी जमाने में भारतेंदु ने 'अंधेरी नगरी' जैसा नाटक लिखा, जो आज भी प्रासंगिक है। बाद में जयशंकर प्रसाद ने नाट्य लेखन को नयी ऊंचाइयां दीं। लेकिन, हिंदी रंगमंच या तो पारसी रंगमंच के दायरे में फंसा रहा या लोक नाट्य शैलियों में सिमटा रहा। हालांकि, पारसी या लोकनाट्य शैलियों के ऋण को नकारा नहीं जा सकता है, लेकिन रंगमंच की संभावनाएं उनमें समा नहीं पा रही थीं। हिंदी समाज में एक ऐसे रंगमंच की जरूरत थी, जिसमें नए भावबोध हों। जहां परंपरा या परंपराएं तो हों, लेकिन नई दिशा में बढ़ने की अकुलाहट ज्यादा हो। आजाद भारत में इसी आकांक्षा और बेचैनी ने हिंदी रंगमंच को नए प्रयोगों की तरफ प्रेरित किया। पारसी रंगमंच की शैली पर मुख्य रूप से पश्चिम का असर था।

लेकिन, जब तक भारत में पारसी रंगमंच की जगह बनी तब तक पश्चिमी देशों में रंगमंच काफी आगे बढ़ चुका था और भारत के भी सजग रंगकर्मी उससे अवगत थे। इसके अलावा उपनिवेशवाद–विरोधी संघर्ष ने भारतीय समाज के हरेक वर्ग को अपनी अस्मिता की तरफ प्रेरित किया। इससे रंगमंच भी अछूता न था। इन वजहों से आजादी की लड़ाई के दौरान ही आधुनिक रंगमंच की पीठिक तैयार हो चुकी थी। इसलिए, तरह–तरह के प्रयोग शुरू हो गए। ये प्रयोग एक ही तरह के नहीं थे। कहीं आधुनिक पश्चिमी रंगमंच की ओर ज्यादा झुकाव था, तो कहीं भारतीय पारंपरिक शैलियों के पुनराविष्कार पर जोर, कहीं किसी और पहलू पर बल। दूसरे शब्दों में कहें तो हिंदी रंगमंच की कई आधुनिकताएं हैं और ये सभी अपने आप में मुकम्मल हैं। यानी जिसे आधुनिक हिंदी रंगमंच कहते हैं,

अपने आप में कई आधुनिकताओं का समुच्चय है। इसमें वह आधुनिकता भी है, जिसकी शुरूआत इब्राहीम अल्काजी ने की और वह भी है जिसके पुरोधा वी वी कारंत थे। तीसरी आधुनिकता वह है, जिसकी शुरूआत हबीब तनवीर ने की और जो अपने आप में इतनी बड़ी होती गयी कि स्वयं में एक बड़ी धारा बन गई। कुछ और धाराओं की चर्चा भी की जा सकती है, पर फिलहाल हमें हबीब साहब पर बात करनी है।

हबीब तनवीर ने जिस ढ़ंग से हिंदी रंगमंच को आधुनिक बनाया उसे ठीक से समझने की जरूरत है। कई अन्य विषयों की तरह भारतीय रंग-आचोलना मुख्य रूप से व्यावहारिक समीक्षा तक सीमित रही है। इसी वजह से पिछले साठ-सत्तर वर्षों में हिंदी रंगमंच ने जो नई उपलब्धियां हासिल कीं उन्हें समझने के लिए सैद्धांतिक पीठिका नहीं बन पायी। बेशक, हिंदी रंगमंच कई संकटों से ग्रस्त है, लेकिन इसका यह भी मतलब नहीं है कि सिर्फ दारिद्र्य का ही रोना रोते रहें। तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि हिंदी रंगमंच में कई तरह की समृद्धियां भी आयी हैं और इनका अलग से विश्लेषण किया जाना चाहिए।

इसी परिप्रेक्ष्य में हबीब तनवीर पर बात होनी चाहिए। उन्होंने रंगमंच में जो किया और जितना किया, वह कई दृष्टियों से इतना महत्वपूर्ण है कि उसके आकलन के लिए नये सैद्धांतिक दृष्टिकोण की भी जरूरत है।

हबीब तनवीर वामपंथी थे और वामपंथ के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आखिर तक रही। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने इसी वजह से उन्हें और उनके नाट्य दल को काफी परेशान किया था। उनके निधन के बाद अब छत्तीसगढ़ सरकार ने उनके प्रसिद्ध नाटक, 'चरनदास चोर' के वाचन पर प्रतिबंध लगा दिया है। पर फिलहाल हम सिर्फ हबीब साहब की कलात्मकता की बात करेंगे। बात उनके वामपंथी होने से शुरू हुई थी। लेकिन, उनके नाट्यकर्म को सिर्फ प्रचलित वामपंथी मुहावरे में नहीं समझा जा सकता है। उनके कई नाटक तो ऐसे हैं, जिन्हें वामपंथी तो क्या आधुनिक भी कहना मुश्किल है। जैसे 'चरनदास चोर'। एक अर्थ में तो यह आधुनिक नाटक लगता ही नहीं है। यह लोक-नाटक लगता है। इस नाटक पर मार्क्सवाद का भी वैसा असर नहीं दीखता है, जैसा अमूमन मार्क्सवादी कहे जाने वाले दूसरे रंगकर्मियों के नाटकों में मिलता है। ये नाटक तो धर्म और संप्रदाय की परंपरा से जुड़ता है, इसलिए ऊपर तौर पर मार्क्सवादी नहीं कहला सकता है। लेकिन, 'चरनदास चोर' आधुनिकता का उत्कर्ष है। देश ही नहीं, दूसरे देशों में भी इस नाटक को दर्शकों के अलावा सुधी समीक्षकों की भी सराहना मिली है। इसकी वजह क्या है?

वजहें कई हैं। दरअसल किसी एक वजह से कोई कृति क्लासिक का दर्जा हासिल नहीं कर पाती है। वह क्लासिक का दर्जा अगर हासिल करती है, तो इसकी उसमें कई सामाजिक और कलात्मक वजहें होती हैं। 'चरनदास चोर' में लोक नाटक के तत्व भी हैं, अभिनय की बारीकियां भी तथा संगीत व अन्य पक्षों की प्रचुरता भी। लेकिन, सार्वभौम रूप से यह नाटक जिस सनातन सत्य को रेखांकित करता है, वह है 'सत्य'। सत्य की

कीमत चुकानी पड़ती है। चरनदास चोर को सत्य बोलने के प्रण की कीमत अपनी जिंदगी देकर चुकानी पड़ती है। इस नाटक में एक अजीब सी विडंबना भी है। चरनदास की जिंदगी सत्य की रक्षा के लिए तो जाती ही है, लेकिन प्रेम की वजह से भी वह त्रासदी का शिकार बनता है। नाटक के अंत में रानी उसे मरवाने का आदेश देती है। हालांकि, वह चरनदास से प्रेम करती है। लेकिन, चरनदास रानी का प्रेम आमंत्रण ठुकरा देता है क्योंकि गुरु के सामने लिए प्रण से बंधा हुआ है। रानी को यह बात नागवार गुजरती है, फिर भी वह उसे जाने के लिए कहती है। शर्त सिर्फ एक है— चरनदास रानी के प्रेम निमंत्रण के बारे में किसी से नहीं कहेगा। लेकिन, चरनदास इस शर्त को स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि वह सत्य से बंधा है।

चरनदास एक ट्रैजडी है। उस अर्थ में जिस अर्थ में ग्रीक ट्रैजेडी होती है। इस अर्थ में भी यह नाटक रंगमंच की विश्व परंपरा से जुड़ता है। जिस राजस्थानी लोककथा पर यह नाटक आधारित है, उसमें अर्थ की इतनी संभावनाएं नहीं हैं। इसीलिए, 'चरनदास चोर' लोक नाटक नहीं है। सिर्फ उसका रूप लोक नाटक का है। हबीब तनवीर के हाथों में एक लोक कथा, सार्वभौम कथा बन जाती है।

हिरमा की अमर कहानी' हबीब साहब का एक ऐसा नाटक है, जिसकी चर्चा कम ही हुई है। लेकिन, यह ऐसा नाटक है जिसमें हबीब साहब के नाटकों में से सबसे ज्यादा राजनीतिक तत्व है। इसके राजनीतिक पक्ष को शायद इसलिए नजरंदाज कर दिया गया कि एक तो हमारी रंग-समीक्षा राजनीति की बारीकी को ही नहीं समझ पाती है और दूसरे खुद हमारे राजनीतिक विमर्श में बहुत सारे पक्ष अनदेखे रह गए हैं। स्थानीय राजनीति से लेकर आदिवासी राजनीति तक, बहुत से पक्ष हमारे यहां लगभग अचर्चित ही रह गए हैं। आज भी देश के बड़े हिस्से में, हो आदिवासी बहुल है, तथाकथित नक्सलवाद के उभार को ठीक से पहचाना नहीं जा रहा है। हकीकत तो यह है कि भारतीय राष्ट्र-राज्य में आदिवासी का प्रश्न अब भी अनसुलझा है। आदिवासी समाज और राज्यव्यवस्था से, भारतीय राज्य का सहज संबंध नहीं बन पाया है। इसी वजह से आदिवासी इलाके सुलग रहे हैं। यह किसी एक राज्य का मसला नहीं है। जब तक पूरे देश के सिलसिले में आदिवासी समस्या पर पुनर्विचार नहीं होगा, इसका निराकरण मुश्किल है। लेकिन, समस्या इतनी आसान भी नहीं है और उसे समग्र रूप से समझने की शुरूआत हम 'हिरमा की अमर कहानी' से कर सकते हैं।

लोक और शास्त्र, लोक बनाम शास्त्र, इन पर कई बहसें हमारे यहां हैं। कई लोग यह नहीं समझते हैं और कई जान-बूझकर समझना नहीं चाहते हैं कि लोक और शास्त्र में वैसा विरोध नहीं होता है, जैसा मानने का पिछले लंबे अर्से से चलन रहा है। हबीब साहब के यहां लोक और शास्त्र की ऐसी घुलावट मौजूद है, जो लंबे अर्से से विरल थी। 'मिट्टी की गाड़ी' जो शूद्रक के 'मृच्छकटिकम' पर आधारित है, लोक है या शास्त्र? इस सवाल का

जवाब हां या ना में नहीं दिया जा सकता है। वह लोक भी है और शास्त्र भी है। हबीब साहब के यहां दोनों का ही स्वीकार है। यह दीगर बात है कि शास्त्रवादी इसे स्वीकार नहीं करेंगे। न करें। इससे फर्क क्या पड़ता है। 'मृच्छकटिकम्' में तो नाटक के भीतर एक और शास्त्र की चर्चा है—चोर शास्त्र। इसका भी उल्लेख हबीब साहब की उस भूमिका में है, जो 'चरनदास चोर' के बारे में लिखी गयी है। लोक बनाम शास्त्र का झगड़ा खड़ा करने वालों को यह भूमिका जरूर पढ़नी चाहिए। फिर शायद इस बारे में वैचारिक धुंधलका थोड़ा छंट जाए।

हबीब साहब ने जितना किया वह हम सबके सामने है। फिर भी उसका आकलन आसान नहीं है। जो सामने घटित हो रहा होता है, हमें अच्छा या बुरा तो लगता है, लेकिन उसका महत्व क्या है यह समझने के लिए नजरिए की जरूरत पड़ती है। कई बार हमारा नजरिया ही पिछड़ा होता है, इस कारण सामने घट रहा महत्वपूर्ण दीखते हुए भी अदृश्य बना रहता है। अगर ऐसा नहीं होता तो छत्तीसगढ़ सरकार और वहां के सतनामी धर्मगुरु, हबीब तनवीर के खिलाफ इतना नकारात्मक रुख नहीं अपनाते। पता नहीं क्यों लोग छत्तीसगढ़ को पिछड़ा मानते हैं जबकि सांस्कृतिक रूप से यह देश का बहुत ही समृद्ध इलाका है। इस छत्तीसगढ़ को अंतर्राष्ट्रीय छवि हबीब साहब ने ही दी। साथ ही सतनामी समाज को भी। 'चरनदास चोर' अपने आप में सतनामी परंपरा की कृति है। शायद यह अकेली ऐसी कृति है जिसे पूरी दुनिया में इतना सम्मान मिला है। लेकिन, उसी समाज के गुरु इसके खिलाफ हो गए हैं। यह कितनी अजीब विडंबना है। शायद ही दुनिया में किसी राज्य और समाज ने अपने सांस्कृतिक व्यक्तित्व के साथ ऐसा व्यवहार किया होगा।

og dku Fkk tk ekj fn;k x;k

gchc ruohj

,d vkfVLV] ,d Økfrdkjh] lQnj gk’eh dk vki D;k dgx\ fFk;Vj vkj Økfr lQnj d fy, nk vyx&vyx ph t ugh FkhA cfYd ; nkuk mldh ‘kf[’k;r e dN ,lh ?ky fey xb Fkh fd bUg vyx&vyx ugh n[kk tk ldrkA

lQnj u fFk;Vj vkj Økfr nkuk dk liuk ,d lkFk n[kk FkkA bud firk guhQ gk’eh ej nkLr FkA ge nkuk gh lkfo;r bUQke’ku fMikVeV e ,d vjl rd ukdjh djr jgA lQnj dh me dkb vkB&uk o”k dh gkxh] tcfd ,d fnu eykdkr djkr g, mud firk u e>l dgk] ^^bul fefy, ; vkid uD’k&,&dne ij py g] ,fDVx Hkh dju yx g vkj cgr bdykch Hkh gk jg gA vkid lkj Mke n[k pd gA** e [kn rk ;g ludj >ik gh Fkk] lQnj Hkh ,d rjQ [kM dN ‘kekr] eLdjkr jg x,A teku dh foMcuk nf[k, fd Bhd ml le; tcfd e> g, Økfrdkjh vkfVLV dh gfl;r l gekj lkeu vku yx Fk] mUg etj&,&vke l tYe d gkFkk u gVk fn;kA

Økfr vkj vkV nkuk gh lQnj dh fQrjr e ,d lkFk uD’k gk x, FkA mudh lkjh egur bUgh nkuk phtk dk le>u e yxh(v/;;u d tfj, Hkh vkj vuHko }kjk HkhA ,d rjQ jktuhfrd] lkekftd leL;kvk vkj nljh rjQ jxde dh ckjhfd;k dk le>u e mUgkus viuk le; yxk;k] vkj ;g dke cMh egur] gkl ykenh vkj n<rk l djr jgA

mudh tkudkjh dk nk;jk cgr O;kid Fkk] mn] fgUnh] vxth] rhuk Hkk”kkvk ij vPNk [kklk vf/kdkj FkkA fgUnh dh dLckrh ckfy;k le>r Hkh Fk vkj viu y[ku e budk i;kx Hkh djr FkA ckrphr dk fo”k; dkb Hkh gk] lkfgR;] jktuhfr] vk”kf/k;k] foKku] gj fo”k; e lQnj tkudkjh l cgl dju dh ;kX;rk j[kr FkA

fiNy vDVcj e eu viuk ukVd ^^exyk nhnh** fy[ku d ckn lQnj d Mkek xi tu ukV; ep d dN lnL;k dk ,d fo'k"k xk"Bh e luk;kA ukVd ludj lQnj [kc gl vkj dgu yx] ^^;g ukVd dN gn rd *fyfILVkVk* dh ;kn fnykrk gA bl h fn'kk e bl vki dN vkj D;k ugh mHkkjr** ;gk lQnj d tgu d nk igy mtkxj gkr gA

,d rk lQnj dk vfjLVkQuhl dh ;g egku 'kkL=h; dkeMh ekye Fkh] ftl ij e> T;knk vk'p; blfy, ugh gvk fd e lQnj dk bl gn rd rk tkurk Fkk ftld vk/kkj ij ;g dg ld fd 'kDlfi;j d lkj ukVd vkj ;uku d reke Dykfld mudh utj l t:j xtj gkxA nljk igy ftl tkudj e> T;knk gjr gb og Fkk lQnj dk lkfgR; e Jxkj (bjkfVDl) dh rjQ jo;kA vkj og Hkh ;g n[kr g, fd lQnj egurd'k rcdk d ,d lkekftd vkj jktuhfrd urk Hkh Fk vkj fgUnLrkuh okrkoj.k e dke dj jg FkA bl ckr dk vkj T;knk lkQ dju d fy, e ,d vkj felky i'k d:A

fiNy tu d eghu e tc ge nkuk iepUn dh dgkuh ij vk/kkfjr ukVd *^^ekVjke dk lR;kxg*** ij dke dj jg Fk] rk mle ,d u; n'; dh jpuk dh xbA ;g n'; Fkk] ,d rok;Q dk dkBkA tkfgj g fd bldk dkb lEc/k iepUn dh dgkuh l u FkkA eu bl n'; ij tk nkckjk dke fd;k rk ble cM:e dkeMh d ftru igy lHko gk ldr Fk] og lc lkeu vk x,A lQnj dh iRuh ey;Jh rok;Q dk ikV dj jgh Fkh vkj lQnj [kn ml eftLVV dk] tk dkB ij tkrk gA lHkh ykxk dh bl n'; e cgr vkuUn vk jgk Fkk] u fIQ blfy, fd n'; cgr gIku okyk Fkk] cfYd blfy, Hkh fd ukVdh;rk d nf"Vdk.k l ;g n'; ukVd dk lcl T;knk iHkko'kkyh n'; FkkA gkykfd lQnj [kn fjglyk d nkjku bl n'; e cgr vkuUn yr g, vkj [kydj ikV dj jg Fk] ,d fnu ;dk;d mUg ,d olol u vk ?kjkA mUgku dgk] gkykfd n'; cgr etnkj g vkj 'kk;n jktuhfrd ,rckj l vFki.k Hkh g] fQj Hkh mUg bl ckr ij 'kd g fd tc l;kj yky Hkou vkj vU; fFk;Vjk d ikjfEHkd pUn 'kk d ckn og lMdk ij bl ukVd dk ydj tk,x rk ogk turk ij bl n'; dk D;k iHkko gkxkA ckr mud fny e dN bl rjg dh FkhA fnYyh d fFk;Vjk e tku okyk] tk vkerkj ij e/;e ox d i<&fy[k ukxfjd gkr g] mUg rk 'kk;n bl rjg d n'; d gkL; l yRQ vnkt gku dh vknr g] yfdu 'kgj dh turk] ftle vf/kdrj xjhc rcdk d ykx 'kkfey g] dgh mu ij ,l gkL; dk mYVk iHkko u iM] vkj dgh ,lk u gk fd ukVd d okLrfod mÌ'; l mudk /;ku gV tk,A e> ckr dN xHkhj yxh] D;kfd gekjk mÌ'; rk iepUn dh dgh gb ckr dk vkx c<kuk FkkA mudh dgkuh lR;kxg njvly ,d 0;X; g ftle jktuhfr dk /ke d lkFk feykdj f[kpMh idku okyk dh f[kYYh mMkb xb gA bl fo"k;

ij iepUn dh dN dgkfu;k] tk gekj lkeu Fkh] mue l bl dgkuh dk p;u geu blh vk/kkj ij fd;k Fkk fd fo"k; dk ;g igy gekj oreku jktuhfrd gkykr l cgr lekurk j[krk gA eu Qkju lc dykdkjk dh ,d ehfVx cyku dk Qlyk dj fy;kA

dkb rhl l T;knk dykdkj gkxA lc bl ckr ij fopkj dju d fy, cB x,A yxHkx lcdk Qlyk ;gh fudyk fd tgk rd uDdM ukVd d n'kdk dk lEc/k g] bl n'; dk mud lkeu iLrr dju e ljklj [krjk gA eu iLrko j[kk fd fQygky bl n'; dk dkV fn;k tk, vkj dykdkjk d fe=k] lEcf/k;k dk ,d ckj cykdj fjglly fn[kk;k tk,A bl n'; d gVk nu l ukVd e dN myV Qj djuk ykfteh Fkk] tk eu Qkju dj fy;kA u; lokn dh tgk t:jr Fkh] fy[k fn, x,] dN egRoi.k ckr tk vc NV x;h Fkh] mUg u; :Ik e mtkxj fd;k x;kA dykdkjk u vko';drkulkj r;kjh edEey dh] vkj ,d ckj fQj lkj ukVd dk fjglly ykxk dk fn[kk;k x;kA ifjoru l ey dgkuh e dkb [kkl Qd ugh vk;k FkkA ftUgku igyk fjglly ugh n[kk Fkk] mUg fdlh rjg dh deh dk ,glkl Hkh u gvk] yfdu tk igy fjglly n[k pd FkA mudh nk jk; cuhA ,d ijku n'; d i{k e vkj nljh mld f[kykQA dykdkjk dh jk; 'kkfey dju d ckn cger ijku n'; d f[kykQ cjdjkj jgkA

;gk ;g crk nuk 'kk;n t:jh g fd lQnj d viu [k;kykr bl ekey e ogh Fk tk ,d jk'ku [k;ky lkfgR;dkj vkj dykdkj d gk ldr gA bl leL;k ij lQnj u tk e>l ckr dh Fkh mul lkQ tkfgj gk x;k Fkk fd og lkfgR; vkj ufrdrk d flyfly e dVVj gjfxt ugh FkA ge nkuk bl ckr ij lger Fk fd bu ekeyk e eYykiu lkfgR;dkjk vkj dykdkjk dk 'kkHkk ugh nrk] pkg vke vkneh dk bl flyfly e dN Hkh jo;k gkA ge bl ckr ij Hkh lger Fk fd Jkxkfjd ufrd ekeyk e dVVjiu dh f[kYyh mMkuk turk d jktuhfrd if'k{k.k dk ,d t:jh vx gkuk pkfg,A tgk gekjh jk; vyx&vyx Fkh og jktuhfrd elygr dk ekeyk Fkk] ;kuh fdu ckrk dk ikFkfedrk nh tkuh pkfg,] oreku jktuhfrd lkekftd i"BHkfe e dku lh ckrk dk lcl T;knk egRo nuk pkfg,] okLrfod jktuhfrd mÌ'; iklr dju d fy, fdu ckrk dk ,d gn rd utj vUnkt dj nuk t:jh g] ekdk egy d jktuhfrd rdkt D;k g] vkfn vkfnA ol tgk rd bu leL;kvk dk lEc/k g ejh utj e ; egRoi.k g vkj budk gy ryk'k dj yuk vklku gjfxt ugh gA

cgjgky bl efty ij lQnj u ;dk;d dgk fd bl n'; d flyfly e vkf[kjh Qlyk vki [kn djx vkj lc dykdkjk u bl jk; ij lgefr idV dhA vc ftEenkjh dk lkjk Hkkj e> ij vk x;kA eu fQj ,d fjglly dk iLrko j[kk] ftle bl ckj dkB okyk n'; T;k dk R;k okil yk;k x;kA eu pkgk fd e> n'; ij xgjkb l fopkj dju dk ,d ekdk gkFk vk,A eu Qlyk lgh fd;k gk ;k xyr] cgjgky fjglly n[ku d

ckn e bl h urh t ij igpk fd bl n'; dk cjdjk j[kuk pkfg,A cl fQj ml fnu d ckn bl ely ij nl jh dkb cgl ugh gbA u dHkh fdl h dk dkb f'kdk;r ink gb] u ekgky e dHkh dkb ruko ink gvk] gl h [k'kh fjgl y gkr jg] vkj bl h rjg lkj 'kkA lQnj d tgu e tk ykp&ypd Fkh] mldh bl l cgrj felky dku lh gk ldrh g\

e> lQnj d lkFk dke dju e tk vkuUn vk;k g] 'kk;n gh fdl h vkj dykdkj d lkFk dke dju e vk;k gkxkA urkvk e og bl kfu;r de n[kh gkxh tk lQnj e Fkh] og bl kfu;r tk mldh yhMjf'ki dh cfu;kn FkhA ftld vk/kkj ij tu ukV; ep d lkj dykdkj vkt rd ,d txg ij etcrh l tV g, gA ; og dykdkj g] tk lekt d fofHkUu oxk l lEc/k j[kr g vkj fofHkUu jktuhfrd fopkj/kkjkvk d leFkd gA jktuhfrd xfrfof/k;k dk iHkko'kkyh f'k{kd lQnj l cgrj ejh utj e ugh vkrkA

,d xyr nf"Vdk.k ,d Økfrdkjh d lEc/k e ;g Hkh g fd tl og lj l iko rd ,d ngdrk gvk vxkjk gk] cl vkj dN u gkA Hkkbpkjk] lokHkko] bl kuh fQrjr l okdfQ;r] turk l lPph gennh] egt rch;r dh lknxh] [k'k&rcb og fo'k"krk, g] tk ,d 0;fDr dk lPpk Økfrdkjh cuk nrh g] bUg ik;% utj vUnkt dj fn;k tkrk gA lQnj dh ftUnxh vkj mldk vkpj.k ,d Økfrdkjh l lEcf/kr xyr fopkjk l NVdkjk fnykrk gA

e> fiNy tykb dh og ?kVuk ;kn vkrh g tcfd e> viu ,d vkfVLV dk bykt d flyfly e lQnj tx vLirky y tkuk FkkA tc eu lQnj l bl ckr dk ftØ fd;k rk mlu vLirky d uktoku MkDVj dk ejht d ?kj evk;u d fy, fHktok;k] vLirky d MkDVjk l dgdj tkp dk brtke fd;k] vkj bl flyfly e ej vkj ejht d lkFk vLirky d uk [k'kxokj dejk rFkk cjkenk e db&db ?kV xtkj fn,A ;g og tekuk Fkk tc og ukVd fy[ku vkj bld vykok vkj cgr l dkek e cgn mYk>k gvk FkkA e lQnj dh tku igpku d ykxk dk 0;kid nk;jk n[kdj gjku jg x;kA fnYyh dk 'kk;n gh dkb cMk vLirky gkxk] tgk d fdl h u fdl h MkDVj ;k efMdy LVkMV dk lQnj u tkurk gkA dku ugh tkurk fd ,l h ykdfi;rk oDr t:jr ,d nlj d dke vku vkj lok d ,d fuLokFk tTc l gkfly gkrh gA ejh jk; e ;g igy lQnj d Økfrdkjh fetkt dk ,d egRoi.k vx cu x;k FkkA

e> viu ukVd *ÞfgjekÞ dh vej dgkuh*** d o 'kk ;kn vk jg g] tk geu 1986 e Jh jke lVj e iLrr fd, FkA ;g ukVd cLrj dh vkfnokl h ftUnxh vkj bfrgkl l lEcf/kr gA lQnj bld ckj e dN fy[kuk pkgr FkA geu bl ukVd d yxkrkj lkr 'kk fd,] fdl h Hkh 'kk e n'kdk dh l[;k T;knk ugh Fkh] exj lQnj cjkcj 'kk n[ku db fnu rd vkr jg vkj e>l feydj ukVd d ckj e ckr djr jg vkf[kj

dkj mUgku ***Qk;uf'k;y VkbEl*** e ,d yEck vkj Bkl y[k Niok;kA bl ukVd dh bll cgrj leh{kk ejh utj l ugh xtjhA i'kl dk igy vxj NkM nhft, rk bldk vkykpukRed igy Hkh cgr rh[kk vkj xgjk FkkA lQnj u tk cfu;knh loky viu y[k e mBk;k Fkk] og jktuhfrd FkkA njvly ukVd ;k rk bl loky l gV dj xtj tkrk g] ;k bldk bldk tokc iLrr dju e vleFk gA

ukVd cLrj dh dN ,frgkfld ?kVukvk dh ,d >yd b'kkjkru i'k djrk gA ftl teku e ;g ?kVuk, gb Fkh] lQnj ml le; Ldy e jg gkxA ;k rk lQnj yMdiu gh e bu ?kVukvk l iHkkfor g, gkx] ;k mUgku vkx pydj ijku v[kckjk d v/;;u l bldh tkudkjh iklr dh gkxhA e ugh le>rk fd lQnj dh uLy d ykxk ij bu ?kVukvk dk bruk xgjk vlj iMk gkxk ftruk fd ejh uLy d ykxk ij iMk FkkA ejh ejkn ichjpUn Hktno d teku l gA e dguk ;g pkgrk g fd lQnj d Økfrdkjh fetkt dh rjdhc e dchykrh leL;kvk l ,d xgjh fnypLih Hkh 'kkfey FkhA

ftu dfBu ifjfLFkfr;k e lQnj ,d eÌr rd fugk;r eLrfdy fetkth l ljxe jg] og viuh txg [kn ,d gjrvxt ckr gA vlguh; xeh d teku e] dhpM iuh l Hkjh gb cfLr;k d bykdk e e> lQnj d dN uDdM ukVdk dk n[ku dk volj feyk gA xkfe;k d ekle e p<r ljt d le; nj njkt d lQj ij fudy tkuk] cfLr;k e txg&txg viu uDdM ukVd fnu e nk rhu ckj iLrr djuk] vkj jkr nj l ?kj okil vkuk] tQkd'kh dk ,d ;g igy Hkh dkfcy&,&xkj gA bld fy, ,d vPNh [kklh ukdjh dk NkM nuk] gj jkt dk ;gh ,d nLrj cuk yuk] bl dh ftUnxh e dlk lei.k] turk d fy, dlh ciukg egCcr 'kkfey jgh gkxhA

;g ukVd lQnj [kn fy[kr Fk ftudk lEc/k egurd'k turk dh ftUnxh vkj mudh leL;kvk l Fkk] mud fy, xku fy[kr Fk] vDlj mudh /ku [kn cukr Fk] mu ukVdk e vfHkurk dh gfl;r l Hkkx yr Fk] xkr Hkh Fk vkj ik;% mudk fun'ku Hkh djr FkA bruk lkjk dke ,d vkneh d fy, dN de dke u Fkk] vkj ;g dke yxkrkj nl lky rd cjkcj tkjh jgkA

lQnj cgr [kcljr xku fy[kr Fk] exj viu vkidk xhrdkj ;k 'kk;j dh gfl;r l dHkh egRo u fn;kA ukVdk dk fun'ku Hkh djr Fk exj ge'kk ektjr [okg jgr fd mUg fun'ku ugh vkrkA ,fDVx cgr vPNh djr Fk exj [kn dk dHkh ,DVj u le>kA og ,d yhMj Fk] ftlu viu dk yhMj dHkh u ekukA lQnj ,d lknk rch;r vkj gle[k 0;fDr Fk] ftUg ckr&ckr ij f[kyf[kykdj gl nuk vkrk FkkA ftl ?kj e Hkh dne j[k nr ekgky e ftUnxh dh ygj nkM tkrh] ,d jkud Qy tkrhA mudh fo'k"krkvk e ; dN fo'k"krk, ,lh g] ftUgku mUg ,d ykdfi; urk cuk fn;kA

, lh fo’k”krk, tk nlj rFkkdfFkr urkvk e de utj vkrh gA

nl o”k dh uDdM ukVd dh vuFkd ljxfe;k d ckn lQnj u eMdj ml fFk;Vj dh rjQ utj dh] ftl og fFk;Vj dh e[;/kkjk ;k euLVhe fFk,Vj dgk djr Fk] dHkh og ml uDdM ukVd dh ryuk e ikIhfu;e fFk;Vj Hkh dgrA ;kuh og fFk;Vj ftl og eÌrk igy ihN NkM vk, FkA dgr Fk fd og bl fFk;Vj l bruk nj gV x, g fd tk dN ml teku e rtc l lh[kk Fkk] og Hkh Hky cB FkA vc og bl fFk;Vj dh rjQ fQj l okil vkuk pkgr Fk] pkg og viu uDdM ukVd d dke dk T;knk ukokdfQ;r nu d fy, gh D;k u gkA mUgku viu fy, ,d dk;Øe cuk;kA mldh igyh dMh ;g Fkh fd e> viu xi d fy, ,d ukVd d fun’ku d fy, dgk] ftldk urhtk Fkk fiNy tykb dh iLrfr *ekVjke dk lR;kxg**A bl flyfly dh nljh dfM;k e dN ,l ukV; f’kfoj ‘kkfey Fk] tk ,e-d- juk] clh dky vkj bl rjg d vU; fun’kd tu ukV; ep d dykdkjk d fy, pyku oky FkA lkFk&lkFk og [kn t-,u-;- vkj nlj ;od dUnk d fy, ukV; f’kfoj dj jg Fk] ftle e> tl dN fun’kdk dk Hkh cykr FkA blh teku e igyh ckj og ml tu mRlo dh ckr dju yx Fk] ftle jxdeh] dfo] y[kd] fp=dkj vkj rjg&rjg d nLrdkj] Qudkj vkj dkjhxj turk d chp e ,d [ky ekgky e viu dke i’k dj vkj ,d nlj dk vlj dcy dju dk [kn dk ekdk nA vHkh ;g [k;ky ,d liu gh dh ‘kDy e Fkk fd tYe d gkFkk u bUg ekr d ?kkV mrkj fn;kA

lQnj u ,l fFk;Vj dh rjQ okil vku dh t:jr D;k egll dh gkxh] ftle mudk xi nk <kb ?kV dh eÌr d ukVd iLrr dj ld vkj ftl n[ku d fy, ykx fVdV [kjhn dj nkf[kyk ikIr djA ,d dkj.k rk lkQ ogh g tk og [kn crk;k djr Fk ;kuh [kn viu fy, vkj viu xi d dykdkjk d fy,] fFk;Vj dh rduhdh leL;kvk ij vf/kdkj ikIr djukA

og [kn dgk djr Fk fd cjlk uDdM ukVdk e] [ky ekgky e dke dju l ,DVj ph[k dj ckyu dk vknh gk tkrk g vkj tgk rd eoeV dk lEc/k g] ,DVj etcj g fd pkjk rjQ tgk&tgk n’kd [kM g] ogk tk tkdj ,fDVx dj vkj bl rjg xky ?kerk jgA og jxdeh dh bl t:jr d ckj e ckr djr fd og vkokt d mrkj&p<ko] lokn ckyu d fofHkUu vUnkt ep ij mÌ’; vulkj pyu d vyx&vyx rjhd] vkj ikMD’ku dh fHkUu ‘kfy;k e Vfux ikIr djA

,d y[kd dh gfl;r l Hkh lQnj u ;g egll fd;k gkxk fd mUg ,d fHkUu idkj d rtc dh t:jr gA blI mUg cgrj uDdM ukVd fy[ku e Hkh enn feyxhA fiNy tu d eghu e tc lQnj e>l ,d ukVd d fun’ku d flyfly e ckr dju d fy, vk,] ftldk vk/kkj iepUn dh fdlh dgkuh ij gkuk Fkk] ftldk fo”k; lQnj

u lkEinkf;drk r; fd;k Fkk vkj tk iepUn fnol ij iLrr fd;k tku okyk Fkk] rk mUgku e> dN dgkfu;k nh vkj viuh ilUn dh nk ,d dgkfu;k dh rjQ b'kkjk fd;kA bUg ,d dgkuh [kklrkj l ilUn Fkh ftldk ,d ik= *tkfen* uke dk FkkA og bl dgkuh dk nljh ,d dgkuh d lkFk feykdj ukVd fy[ku dh lkp jg FkA eu mul dgk fd ukVd fy[k ykvk rk [k;ky dk le>u e vklkuh gkxhA mUgku ,d NkVk lk ukVd Qkju fy[k fy;kA n'; vkj lokn vPN Fk yfdu lQnj [kn eglll dj jg Fk fd vr detkj gA eu n[kk fd vr dk etcr cuku d fy, nljh dgkuh l dke ugh pyxkA eu dgk fd *^lR;kxg*** dk mBkvk vkj fdlh vkj dgkuh dk feyk, cxj bl ij ukVd fy[kk] 'kk;n bl rjg gekjk edln ijk gk tk,xkA blh rth l lQnj *^ekVjke dk lR;kxg*** fy[k yk,A bl ij ge nkuk lr"V g,] vkj vc ukVd vkid lkeu g] vki [kn n[k fd n'; fdruh mEnxh l fudky x, g vkj xku vkj lokn fdl i[rk e'kdh l fy[k x, gA

bl ukVd dh iLrfr d ckn fnYyh d fey etnjk d oru dk elyk lQnj d lkeu vk;k vkj mUgku ,d u;k ukVd *^pDdk tke*** fy[kk tk ckn e cnyrh gb ifjfLFkfr;k d vulkj myV Qj dj yu d ckn *^gYyk cky*** dgyk;kA eu bldk 'kk t-,u-;- d enku e n[kkA e tc bl ukVd vkj *^ekVjke dk lR;kxg*** dk bud fiNy ukVdk l edkcyk djrk g rk e> egll gkrk g fd lQnj ,d ,l ekM ij vk x, Fk] tgk l ,d i[rkdkj y[kd dh 'k#vkr gkrh gA bud u, uDdM ukVd e T;knk lLil l] T;knk xgjkb Fkh] O;X; dk igy T;knk rh[kk] gkL; dk vnkt] T;knk fnypLi FkkA lykV e T;knk iphnxh Fkh] vkj ukVd dh jktuhfrd pkV T;knk Hkjij FkhA

ejh jk; e ,d vkj Hkh dkj.k] 'kk;n bll Hkh cMk dkj.k Fkk] ftld fy, lQnj nljk jxdfe;k d lg;kx dh ryk'k e FkA bue dN ,l jxdeh Hkh Fk] ftul og eÌrk igy fcNM x, FkA ej [;ky l mudh jktuhfrd l>c> u mUg bl urht ij igpk fn;k Fkk fd fFk;Vj d ek/;e e dke dju oky jxdeh dk fFk;Vj vkUnkyu l tM g, Hkh t:j jguk pkfg,A ej [;ky e mUg fFk;Vj d vUnj ,d cgr cMk nk;jk ,lk utj vk jgk Fkk] tk yxHkx lkj jxdfe;k d fy, leku Fkk] pkg mud jktuhfrd [k;ykr ,d nlj l fdru gh vyx gkA bl nk;j dk lEc/k mu fo"k;k l Hkh g tk ukVd d fy, mi;Dr le> tkr g] vkj bu leL;kvk l Hkh g] ftudk jxdfe;k dk vk; fnu lkeuk djuk iMrk gA bl ykbu ij ,d cgr O;kid fFk;Vj ÝV dh >yd mud lkeu Fkh] tk fey tyl dj viuk mÌ'; iklr dju d l?k"k e yxk jgA ejh utj e lQnj dh jktuhfrd vkj dykRed ifjiDork dk ;g ,d vkj irhd gA

bl l cMh foMcuk vkj D;k gk ldrh g fd Bhd blh volj ij lQnj dk [ku cgk fn;k x;kA ,d uktoku vkj xgjh utj j[ku okyk dykdkj] fFk;Vj vkUnkyu dk

,d lPpk vkj vlk/kkj.k yhMj gekj chp l pyk x;k] ;g deh dN ,lk egl l gkrk g fd ykbykt gA vxj og thfor gkrk rk ;dhu g fd og lkj dke ij dj xtjrk tk mlu viu fy, edjj dj j[k FkA yfdu gdhdr ;g g fd og xtj x;k vkj mldh me 34 l vkx ugh igp ikbA

mldh ekr u ge ij tkfgj fd;k fd mldh iflf) dk nk;jk fdruk Qyk gvk FkkA flQ ;gh ugh cfYd mldh ekr gh g tk mu ekpk ij fot; ikrh utj vk jgh g] ftldk mlu viuh ftUnxh e liuk n[kk FkkA og vkn'k ftl ikIr dju d fy, og ftUnxh Hkj lfØ; jgk vkj ftld Åij mlu viuh tku fuNkoj dj nh] og ,d cgrj lekt Fkk] cgrjh d fy, lkekftd ifjorlu Fkk mLrokjh] mÌ'; dk lkextL;] ftUnxh vkj ekr d njfe;ku erkfcdr] blI T;knk Hkyk vkj D;k gk ldrh gA vxj og viuh ekr d }kjk viuk [okc gkfly dj yrk g] rk fQj mldh ekr 'kk;n cdkj u gbl gkA

lQnj dk dRy fnu ngkM vkj tkuc>dj fd;k x;kA og viuk uDdM ukVd ^^gYyk cky** ftyk xkft;kckn d bykd lkfgckckn e u; lky d igy fnu nkigj d le; iLrr dj jgk Fkk tcfd mlij geyk fd;k x;kA nlj fnu nl ct mlu vkf[kjh lkl yhA njvly og igyh tuojh gh dk 'kghn gk pdk Fkk] tcfd mldh Qkfytt tnk cgk'k yk'k [ku e ugkbl gbl lMd ij ikbl xbl FkhA bld ckn fQj nkckjk lQnj dk gk'k u vk;kA vl[; pkV tk mlu lgh Fkh] og lkjh dh lkjh lj vkj xnu ij Fkh] tk ykfB;k vkj 'kk;n ykg dh NMk l yxkbl xbl FkhA geykoj fxjkg u dRy dju dh uh;r l mI ij geyk fd;k vkj ctkfgj mUgku viuk dke cM bRehuku vkj dke;kch l vtke fn;k] vkj ifyl u ;k rk ogk l eg ekM fy;k vkj ;k tkuc> dj viu vkidk okjnkr d ekd l nj j[kkA

mI fnu ,d ugh nk [ku g,A ,d ekle n'kd] ,d etnj] jke cgknj uke dk] og Hkh >ey e tku l ekjk x;kA ;g dRy fiLrky l fd;k x;kA og 0;fDr mIh le; ogh <j gk x;kA ;g vkneh D;k ekjk x;k\ D;k ykxk e vkrd Qyku d mÌ'; l pykbl gbl xkyh fNVd dj mI yx xb\ ;k fQj mI dRy dk dkj.k Hkh dN vkj Fkk\

vkj oI lQnj Hkh vkf[kj D;k ekjk x;k\ D;k blfy, fd mlu etnjk dk mfpr oru fnyoku d flyfly e viuh vkokt cyUn dh\ ;k 'kk;n blfy, fd mlu voke d xjhc vkj egurd'k rcdk dk gj ekd ij lkFk fn;k] gj tYe d f[kykQ mud i{k e [kMk gk x;k\ fQj dkfry vkf[kj dku Fk\ luk g p'enhn xokg ek tn gA vkrd dk ekgky vxj lkQ gk tk, rk og lkeu vk ldr gA ;g t:j g fd ;g ekeyk tYnh l tYnh blkQ dh efty rd igp!

t:jh g fd bl rjg d dRy o xkjrxjh dk flyflyk [kRe gkA n'k e funk"k

ykxk dk dRy dj fn;k tkuk vc gn l vkx c< pdk gA v[kckj gj jkt ,lh [kcjk l Hkj gkr gA ;gk rd fd ykxk dk ,glkl feVrk tk jgk gA ge v[kckj d gj i"B ij eju okyk dh l[;k ij ,d mNyrh utj Mkyr g, vkx c< tku d vknh gkr tk jg gA vkj vc ;g ukcr vk xb g fd lekt d cgrjhu fny o fnekx j[ku okyk 0;fDr;k dk ?kkl&Ql dh rjg dkV dj Qdk tku yxk gA le; vk x;k g fd ge bl lkj flyfly dk [kRe dj nu d fy, vkokt mBk;A vxj lQnj dh ekr l ;g ifj.kke fudyrk g fd lc dykdkj vkj cf) thoh lxfBr gkdj lekt d dpy g, oxk d lkFk tM tkr g vkj ,d ,lk etcr vkj l;Dr ekpk dk;e dj yr g] tk dRy o xkjrxjh dh jktuhfr dk ge'kk d fy, [kRe dj n] rk Hkh lQnj dk ejuk cdkj lkfcr u gkxkA

¼1989½

lLÑfr vkj lkinkf;drk

gchc ruohj

nkLrk ^lLÑfr vkj lkinkf;drk* & bl VkbVy e el FkkMk rjehe dj n & lLÑfr vkj /keA bl rjg vxjp lkp] rk gekj ftru Hkh /kkfed lLdkj g ok gekjh lLÑfr Hkh gA

lLÑfr dk /ke l cgr xgjk rkYyd gA vkj gekjk dkb lLdkj ,lk ugh g] dYpj dk dkb Hkh 'kkck] ftl e dgh u dgh /ke dk dkb rkYyd u gkA ftruh jok;r g] ftruh gekjh ijEijk g] ok lc bl l tMh gb gA egje] bn] cdjkbn] 'kCcjkr dh ijuikyh tk fgUnvk e cVrh vkj nhokyh dh feBkb tk ge rd vkrh jgh g ge'kk] vkj vc Hkh vkrh gA gekjh ijEijk jkeyhyk dh] ftl e jkeyhyk d e[kkV tk elyeku cukr g] ogh egje d rkft; Hkh cukr g & ;gk pknuh pkd eA y[kuÅ e Hkh ;gh gky gA jkek;.k vkj egkHkkjr d fdLl&dgkfu;k & ok lc gekj dYpj l tM g, gA djcyk dk fdLlk vuhl vkj nchj dh tcku l vki lur vkj ok ykx tgk djcyk dk okd;k gvk FkkA glu] glu] dh ekr gb FkhA ,d dk tgj fn;k x;k Fkk vkj nlj dk l;kl ekj fn;k x;k Fkk] lkj [kkunku dk [kRe dj fn;kA rk ok ,d jkxV [kM dj nu okyk futke Qkfl;r l Hkjk gvk] cjgeh l Hkjk gvk ok FkkA mld ejfl, tc vuhl vkj nchj vkj nljk u fy[k rk ,gr'kke glu u viuh rgdhd l ml ij rudhn fy[kh] mldh vkykpuk fy[kh rk mUgku dgk fd ftru fgUn lLdkj g ok bld vnj vk x, gA Qkfrek dk cu djuk vCckl dh ekr i] ;k cPpk] ;k tuc dh ekr i& mu lc d vUnj ok reke rjhd cu d ektn g] ftudk rkYYkd fgUnLrku dh tehu l gA ogk tgk i dcyk gvk Fkk ogk i'ku ly dh 'kDy e egje d teku l ,d fcYdy nljh fdLe dh i)fr pyrh vkb gA ;gk tk egje d 'kj ukpr g] gekj ;gk

jk;ij e] nDdu e] cLrj e] txnyij e] pkjk rjQ lkmFk e] ‘kj vyh d uke l mld vnj fgUn lLdkj cgr l feyr gA vkj egje e tk cxj ckt k d lkt i<k tkrk g] mldk ^xk;k tkrk g*] ugh dg ldrA dguk ek;c Hkh le>k tkrk gA mle dkb lkt ugh gkrk exj cMh [kyh ikVnkj vkokt e vPNk lkt i<u oky] cM vPN lj e Vhi dh vkokt e lukr gA ml e n[ky ugh g] e lyeku dku g vkj dku fgUn g] lcdh vk[kk e vkl vk tkr gA ;g lc gekj lLdkj vkj ?ky&fey lLdkj ftudk cgr xgjk rkYyd /ke l] etgc l gA ,d nlj ij tk vljvnkt g, g gekj etkfgc] mul Hkh bldk rkYyd jgk gA tc mn ‘kk;jh e xkfyc ;g dgr g%

oQknkjh c’kr mLrokjh vLy bek gA
ej cr[kku e rk dkc e xk<k fcjgeu dkAA

fgUnLrku dk ‘kk;j gh bl rjg dh ckr dg ldrk FkkA bl dYpj l ok okfdQ gA ckã.k dh ok rkjhQ dj jg g fd vxj mle oQknkjh] mLrokjh g] dfUlLVlh g n;k/ku dh rjg dh & lb d ukd d cjkcj Hkh tehu ugh nxk & lk Hkkb ejok fn;] dVok fn;] vkf[kj rd ugh ekuk] urhtru gkj x;kA yfdu tc ikMo fl/kkj vkj ogk igp rk n[kdj nx Fk fd n;k/ku dk Lox e txg feyh gA ij tokc feyk fd vkneh e oQknkjh Fkh] bfUVfxVh Fkh] dfUlLVlh Fkh] ,d ckr ij vMk jgk rk vkf[kj rd vMk jgkA rk xkfyc Hkh ;gh dg jg g fd vxj ckã.k ink gvk g cr[kku e] lue dh itk djr g,] crijLrh djr g,] dkfQj g] dÝ ij vkf[kj rd] ejr ne rd dk;e gA chp e ,d dMh xk;c djd xkfyc u dgk g %

oQknkjh c’kr mLrokjh vLy bek gA
ej cr[kku e rk dkc e xk<k fcjgeu dkAA

n fDoUVlsl vkQ QFk bt dUMh’kM ck, dfUlLVlh] bQ nV iheksbl bt djDV] nu &ej cr[kku e rk dkc e xk<k fcjgeu dkA rk ink rk cr[kku e gvk] dÝ dh Hkfedk e] mldh fQtkvk e ink gvk] iyk] chp e NkMk ughA mUgku flQ eju dk ftØ fd;k gA rk beku dk rk iDdk FkkA blfy, fd vxj beku dk ey :i mldk lR; g] mLrokjh g] dfUlLVlh g & mldk mUgku igy fMQkbu dj fn;k g & oQknkjh & QFkQyul dUMh’kM ck, dfUlLVlh bt n fDoUVlsl vkQ QFkA vxj ;lp g rk fQj mldk ogk y tkvk vkj cM rke&>ke l] ,greke l dkc e mldk xk<kA rk [kj dkc e rk dkb ckã.k ugh tk;xk x<u d fy,A yfdu dgu d fy, mUgku ; dgk fd og dkfcy&,&,grjke g] mruk gh ftruk dkb Hkh bekunkj vkneh gk ldrk gA

fQj lCcg vkj tukj dk gekj ;gk mn ‘kk;jh e vki dk ckj&ckj ftØ feyxkA lCcg vkj tukj dk eryc tuÅ vkj tki dh ekykA ; irhd] flcYl cu tkr gA rk lLÑfr dgk&dgk l QV d fudyh g] dl ok iuih g vkj dgk rd igph gA ekfeu tc dgr g %

me lkjh rk dVh b’d crk e ekfeuA
vk[kjh oDr e D;k [kkd e lyek gkxAA

rk yQt cr l Qk;nk mBk d] cr ;kuh ek’kd] vYykg d flok fdlh vkj dh ijfLr’k bLyke e ukt k; t g] ok okfgn g] bufMfo tcy g] ,d gA ^nb* dk ok cjnk’r ugh djrk gA mld ikl vYykg d vykok dkb vkj ugh g ftldh ijfLr’k dh tk;A vkj e glhukvk dh ijfLr’k djrk jgk g mruh gh ;k ‘kk;n T;knk] cfuLcr vYykg d] rk e rk dkfQj gvkA vc e vkf[kjh oDr e elyeku D;k [kkd gkÅxkA fdl cdxkmUM l ‘kj dgk x;k g] bl ij xkj djA crijLrh] crf’kduh budh vkidk gtkj felky feyxhA ehj rdh ehj dgr g %

ehj d nhuk etgc dk iNr D;k gk d mUu rkA
d’kdk [kpk] nj e cBk] dc dk rd bLyke fd;kAA

rk ehj lkgc u rk fryd yxk yh Fkh] efnj e cB x,A bLyke rk btktr ugh nrk bu phtk dhA exj ok ogk cr[kku e cBkA mldk Hkh b’kkjk crk d b’d l g] glhukvk dh egCcr l gA ml fdLe dh okfygkuk egCcr tk fd tk;t g [knk d fy,A ij vxj ok bUlku d fy, cjrh tk jgh g rk ok dkfQj gA rk ; fdl eYd dk ‘kk;j dg ldrk g flok; fgUnLrku d \ fgUn etgc rk vkj dgh ugh gA Qkjlh dh tk xty g mld vnj ; felky vkidk ugh fey ldrh] gkykfd mn dh xty d Åij cMk xgjk vlj Qkjlh dh jok;rk dk gA yfdu bld ckotn ; flQ fgUnLrku dk ‘kk;j dg ldrk FkkA ftldh eu vki dk felky nhA

;kl ;xkuk pxth y[kuoh cM vPN ‘kk;j Fk] vHkh gky gh e mudk bUrdky gvkA mudh lkgcr l ge Hkh cMk Qk;nk gvkA mudh ckr Hkh cgr ijyRQ Fkh vkj ‘kj cgr vPNA cgr [kjkc ‘kj Hkh dgr FkA xkfyc n’euh e mUgku cgr l mYV&lh/k ‘kj Hkh dg gA yfdu tk ljnkj tkQjh u mudk NkV d] c[kkjh d gDe i NkVk lk bUr[kkc fudkyk g] mle l vki ,d felj k Hkh ugh gVk ldr] lc dk lc ijk ‘kkgdkj g] ekLVjihlA ejlk xty g] ery l ydj eDr rdA y[kuÅ d ckj e mUgku dgk g & mle ,d ‘kj g %

lc rj flok dkfQj vkf[kj bldk eryc D;kA

lj fQjk n bUlk dk] ,lk [kCr etgc D;kAA

cgr ijyRQ 'kk;j FkA

eth;k d eth dk iM pd cgr iky
MI pd cgr dky
eth;k d eth dk fQØ u'k vdjc D;kA
lj fQjk n blk dk ,lk [kCr etgc D;k
lc rj flok dkfQj vkf[kj bldk eryc D;kA

'k[k th d e[kkfrc g] tkfgj g eYyk l dÍjiu d f[kykQA eYykiu d f[kykQ mni 'kkvjk dh ijh lQ [kMh gA

, ekgrflc u Qd] vj ekgrflc u Qd
tkfye 'kjkc g] vj tkfye 'kjkc gA

ftxj ejknkcknh dk 'kj gA ekgrflc ;kuh llj dju okyk dku gk ldrk g flok; 'kklu d vkj eYyk dA vkj ^efLtn d tj lk;k [kjkckr pkfg,**

VkVyh v.Mjekbfux vky QMkeVfyTe] d efLtn d ikl gh vxj 'kjkc[kkuk Hkh gk rk nkuk pht dj yxA 'kjkc Hkh ih yx vkj uekt Hkh i< vk;xA nkuk pht k l cfQØhA e mni 'kk;jh dh jok;rk l fudyk g rk pukp ; felky T;knk n jgk gA gtkjk pht vkidk nljh txgk l fey tk;xhA pkg ok egknoh oek gk] efDrcksk gk] fujkyk gk] vkj 'kvjk gk] j?kifr lgk; fQjkd gk] ifMr n;k'kdj ulhe gk] ijku ykxk e vdcj bykgkcknh gkA bu reke d vUnj ; gekjh fojklr] ; gekjk fojlk] gfjVt jgk gA pukp /ke dk cMk tcjnLr dVhC;'ku dYpj dh rjQ jgk gA uthj vdcjkcknh dk uke e Hky x;k %

tkj cyno th dk eyk g
tj v'kQh g] ilk /kyk g
okg D;k&D;k ok [ky [kyk g
HkhM g] [kYdrk dk eyk g
Ekkfr;k g] peyh] cyk g
tkj cyno th dk eyk g

egkno dk C;kg] ;k lc feydj vjnkl djk vkj lc tu ckyk okg x#A rk /ke l rku&cku gekj dYpj d bruh xgjkb l fey g, g fd mudk vyx ugh fd;k tk

lrdkA

lkEinkf;drk dk D;k /keZ dk ykteh v'k ekuk tk ldrk g\ D;k ge vxj viu&viu /keZ dk ikyu djr g vkj dYpj mldk bruk Qk;nk mBkrk g] rk D;k ge ; dgx fd nfu;k d lHkh etgck e lcl vPNk bLyke g ;k fgUn etgc g vkj tk ckdh ykx g ok fudEe g] ?kfV;k] derj gA ok Cy vkbM vk;Ul] ftudk fgVyj u dgk Fkk] ok ugh gA ; dky cky] dkyh vk[kk oky ;gnh g] ftudk [kRe dj nuk ,u lckc dk dke g(; rk fdlh etgc e vkidk ugh feyxkA rk lkEinkf;drk dk dkbZ rkYyd dYpj l ugh gA /keZ dk exj gA lkEinkf;drk dk lc/k D;k /keZ l g\ ugh gA lLÑfr dk /ke] etgc l cgr xgjk rkYyd gA yfdu lkEinkf;drk dk u dYpj l rkYyd g u /keZ lA ; ckr vki vkj ge lc vPNh rjg l tkur g fd ; dkbZ vkj pht g] bl fpfM;k dk dN vkj gh uke gA bld ikfyfVdy dkElyhd'ku g] ; ink dh xbZ g] igy ugh FkhA vxtk u bl ikyk&iklk] c<k;k] iuik;kA tue dk fugk;r mEnk ukVd] pVxko ij eu dy n[kkA mle cgr HkMdkuk dh dkf'k'k dh xbZ fd elyekuk dk ekj jg g fgUn & fudyk ckgj rkfd mudk ekjk tk, vkj Qlkn 'k: fd;k tk, & yfdu ok ugh fudyA gnj vyh vkj Vhi lYrku tk elj e Fk vkj vkflQnkyk vkj futke&my&eYd gnjkckn e FkA ejkBk d lkFk vxtk dh lkt&ckt Fkh fd dN dkV&NkV djA lkjh fgLVh bl l Hkjh gbZ gA

cgr nj vxj u tk;s rk lkEinkf;drk dh beh fM;V bfCrnk] fd dgk l ; 'k: gbZ rk gedk 200 lky d vUnj ; fgLVh feyrh g(xÌkjk dh fgLVhA bdcky dgr g %

^^tkQj vt cxkyk lkfnd vt ndu
*ux feYyr] ux nhu] ux oru**

cxky l mB tkQj vkj elj ¼ndu½ l mB lkfnd vkj ; feYyr] ;kuh dE;fuVh d uke ij ykur Fk] etgc d uke ij ykur Fk] vkj oru d uke ij ykur FkA rk mle ux feYyr] ux nhu] nhu dk eryc etgc] ux oruA bl ij ,d tkQjh u tk ykgkj d gvk djr Fk vkj etkfg;k vkj ruft;k 'kk;jh cMh vPNh djr Fk] tl mUgku vktkn uTe dk 0;X; fy[kk Fkk %

,d feljk Qhy c t tkh j dh ekfun

yEck pkMk ok feljk FkkA gkFkh d iko dh yEch lh tthj dh rjg dk feljkA nljk m'krj dh ne] ÅV dh neA bl rjg dh 'kk;jh djr FkA bdcky d 'kj i etkd mMkr g %

xk/kh vt xtjkrk
Hkko vt nDdu
ux iko] ux lj] ux cnuA

ux dk eryc gh cny fn;k mUgkuA ux dk eryc ykur gA rk ;g gekjh dYpjy gjhVt gA lkEinkf;drk dk dkb rkYyd gekjh fojklr l ugh gA ; dN vxtk dh nu g] dN fgVyj egkn; dh nu gA lkEinkf;drk vkj Qkf lTe e cgr de Qd ckdh jg x;k gA

gj etgc ;k mld ckj e dkb fpru] fQØ tc gb g rk ,d rjDdh iln rgjhd dh rjg vk;k gA nfu;k dk gj etgc mle fgUn etgc 'kk;n blfy, 'kkfey ugh g D;kfd mldk etgc ekuuk tjk lk xkjryc gA o vkQ fFkfdx] o vkQ fyfox] ,d rjhdk , g;krA rjhdk mldk [kyk&Myk] fugk;r vPNk] ftle u if.Mr dk rkYyd g] vkj u efnj dkA ; lc reke pht fgUn etgc e utj ugh vkrh] ; lc ckn dh pht g] viuk&viuk tek;k&deku /keku dk /k/kk & fd ej cxj 'kknh ugh gk ldrh] ej cxj ekr ugh gk ldrh] ej cxj cPpk tUe ugh y ldrk] lkj lLdkj ej ek/;e l gkxA e Hkxoku vkj vkid chp e ek/;e g] iy gA ifMr dk jky ckn e vk;k] efnj Fkk ughA ?kj e cBdj itk dj ykA iM dk eku yk] ukx&lki dk eku yk] fdlh Hkh noh&nork dk eku yk] lc cjkcj gA ; bruk [kyk&Myk etgc g] ble bruh vkVkukeh gA bld vnj l bruk dĺjiu dl ink gvkA if.Mr Hkh bru dĺj ugh FkA ; rk jktufrd ykx g ftUgkus u, fdLe dh ifMr dke cukb gA vk; lekt Hkh fycjy] mldh fFkfdx HkhA vdcj dk nhu , bykgh ;k cgkb eoeV] ; lc ykx eQfDdj g] fpUrd g] tk lkpr g fd ;g Qd feVk;k tkuk pkfg,A ;g lc pht ckn dh gA bVjdE;uy 'kknh ugh gk ldrh rk vk; lekt e vk tkvk] gk tk;xhA pukp D;k vPNk ukoy fy[kk g johUnukFk Vxkj u &xkjk& lkjk vk; lekt d Åij gA rk fQj viu ';kek ilkn e[kth && tl M< bV dh efLtn eYyk u cukb] o l gh mUgku Hkh ,d efnj LFkkfir fd;k tul?k uke dkA ftll ckn e fo'o fgUn ifj"kn fudyh] ch-t-ih- fudyh] f'ko luk Hkh vkbA vc tul?k dh cgr vkykn g] ok bruh iuih g] bruh c<h g fd gjr gkrh gA vki l e <dkly vkj Qd j[kuk] viuh&viuh f'kuk[r vyx cuk, j[kuk] vnj gh vnj lcdh feyh Hkxr gkuk vkj lcdk ,d ikxke gkukA pkg ok , ch okti;h gk ;k ,y d vkMok.kh gk] cfu;knh rkj l ,d gh gA vejhdk tkdj , ch okti;h dgr g fd e Lo;lod gA ogk dN vkj ;gk dN vkjA

dgr g T;knk l T;knk vki ge i lkEinkf;drk dk bYtke yxk ldr g] vkrdokn dk bYtke ugh yxk ldrA eu lkpk] xuher g bruk rk eku jg gA yfdu

bruk ugh le> jg g fd lkEinkf;drk c<d vkrdokn] QkflTe rd vkjke l] cMh vklkuh l igprh g] tk e> ;dhu g voke cgr lkQ rjhd l n[k jg gA fQj Hkh ,y d vkMok.kh dgr g fd ge lÙkk e vk; rk dl vk;\ ckcjh efLtn rkMdj gh rk vk;A lgh dgr g] fcYdy lp dgr gA ,d ckr rk lp dgr g & mlh d cy ij rk vk,A vkj fdl rjg cgr l okV nu okyk dk cjxyk;k ok [kn gh e ,d peRdkj gA vkj lÙkk e vk x;A vc mudk [k;ky g fd mlh ikxke e fQj ,d ckj pdek n nxA rk ejk viuk tkrh [k;ky g fd nk ckj xPpk [kku okyh ; e[kyd] ; turk] ; voke ugh gA ok fdlh Hkh etgc] fdlh Hkh nhu d gkA lÙkk dk tk jkLrk bUgku fn[kk;k] lkEinkf;drk d ek/;e l] ok jkLrk ykxk dk bruk lkQ utj ugh vk;k] ;k utj vk;k rk ;g ekye gvk fd ; lÙkk dk gh jkLrk gk ldrk g] etgc dk ugh gA viu m)kj dk jkLrk ; ugh gA nf[k; cM ekV :lk l vxj n[kk tk, rk flQ nk rcd g & ,d ‘kk”kd ox nljk ‘kkf”kr oxA ox rk [kj cgr l g e/;e ox vkj fupyk rcdk oxjkA ij ekV :i l nk gA rd vkidk ekye gkxk fd bldk tk nk;jk g cgr olhg gA ; Qd vkidk ,d Xykcy yoy ij Hkh yk,xkA ce fxjxk vejhdk dk] ekj&dkV tgk gkxh rk ,f’k;k] vÝhdk] bLV ;jkfi;u n’kk e gkxh] detkj eYdk e ykfru vejhdk] fo;ruke] dkfj;k] dklkok] bjkd] ioh ;jki ftle :l Hkh ‘kkfey g] lkekfy;k] fpyh oxjkA ; xkj dju dh ckr g fd budk ,d Hkh ce U;fDy;j] mud eYdk ij ugh fxjkA rk ; dku lk Qd g\ Qd rk ogh gA ,d cktkj [kyk g gfFk;kjk dk vkj ry dkA dHkh vkt rd ; luu e ugh vk;k fd mTcfdLrku dk ry pkfg, rk vQxkfuLrku dk viu gd e j[kuk pkfg,A vQxkfuLrku dh tk QMkeVfyLV lkinkf;drk l Hkjh gb gder rkfycku dh jgh g] mld gd e dku fycjy vkneh gk ldrk g\ vklkek fcu yknu dk tk ekx g mldk dku Hkyk vkneh] ekdy vDy j[ku okyk lkFk n ldrk gA yfdu mldk Bhd dju oky ; dku\ bld Åij tjk lk ‘kd gkrk g fd D;\ fQj ;g le> e ugh vkrk fd vkrdokn ; g fd Vkoj dk mMk fn;k tk;] tk fd g & cgr gh [kjkc ckr g ftl rjg fd;k x;kA

yfdu nlj ; d vkidk vHkh lcr Hkh ugh ekye vkj lkj eYd d reke xjhc vQxkuk dk vki ihl py tk jg gA dkjiV ckfEcx dj jg gA lkFk&lkFk [kkuk cjlk jg g ifCyd fjy’kUt d fy,A vkj dN viu tehj d fy,] ok Hkh eyker t:j djrk gkxkA dFkkfyd tehj Hkh eyker dj ldrk g] djrk gkxk] ok Hkh etgch ykx gA rk mldh rykQh d fy; dN nok, Qd nk] dN [kkuk Qd nkA fdlh u dgk fd Hkb flQ [kkuk vkj nok Qdr rk D;k rkfycku dk futke myV ugh ldrk FkkA ,u eefdu g fd myV tkrkA blfy, fd Hk[kk ej jg Fk] nku&nku d fy, ekgrkt Fk rkfycku d teku e Hkh] vc rk vkj Hkh cjh gkyr gA ,d ok ikfylh gk ldrh FkhA ; rk fefyVhTe

g f t l e mudk mTcfdLrku dk ry pkfg,] f t l dk f tØ mud gkBk ij dHkh ugh vkrk gA f t l dh ikbi ykbu ok vQxkfuLrku] ikfdLrku] fgUnLrku l ioh ,f'k;k rd y tk; vkj djkMk Mkyj dek,A b l ikxke d ckj e vki Vh-oh- ij ugh luxA gekjk ehfM;k eLrfdy ; ckr dj jgk g fd dÍj] vkrdoknh tk g] lkjh nfu;k l mudk uLrkukcn dju d fy, ge fudy gA b l d vnj vVy fcgkjh ok t i ;h Hkh 'kkfey g vkj ijot e'kjQ Hkh g vkj Vkuh Cy;j HkhA m l dk uke gekj nkLrk u j[kk g & c'k dk ukdjA ok c'k d ukdj dh rjg ?ker jgA cgr ij'kku dHkh Hkkjr] dHkh ikfdLrku] lhfj;k] fQyhLrhuA ok ?kek jgk g ok py jg gA rk fefyVhTe dk D;k vkrdokn ugh dg ldrA rk ed l n vxj dN vkj g] lkjk dk lkjk ikfyfVdy g] bdukfed g] ckt kj l rkYyd j[krk gA Xykcykbt'ku] dUT;efjTe l rkYyd j[krk gA rk fQj b l yMkb dk eryc D;k g\ D;k vki nfu;k l dÍj vkrdokn dk feVk jg g\ f t l dk vkiu [kn ekdk fn;k iuiu dk] vejhdk e m l dk ikyk ik l k] rjch;r nh] mudk lc f l [kk;k] fd fd l rjg VfjfjTe djr g] ce cukr g] d l gokb tgkt mMkr g] rkfycku dk f l [kk;k] vk l kek dk l h vkb , u VM fd;kA ; dE;fuTe dk gVkuk pkgr Fk] :f l ;k dk Hkxkuk pkgr Fk] tc ok gV x, rk ok Hkh fey x,] mUgh dh cukb gder ogk : l e Hkh gA vc e l hcr ;g vk xb g fd ge f'kdkj gk x; g ,l h nfu;k d f t l d vnj dN rk V'ku igy Fkh] dN jkd&Fkke FkhA nk cMh ikot FkA vc rk ,d cM Hkkb MMk fy, ?ke jg g pkjk rjQ lkjh nfu;k dh ukd e ne dj j[kk gA rk lkEinkf;drk ogk rd tkrh gA fgVyj d QkfllTe dk lkEinkf;drk dgu i e etcj gA c'k lkgc dh lkjh ikfylh dk flok, VjfjTe ;k fefyVhVjfjTe d ft l e cgr de Qd e> utj vkrk g vkj dN ugh dg ldrA vlyh ed l n gh g fd ejknkckn d cru cuku oky] ljr d nth] vgenkckn d dkj[kkunkj] ftru Hkh e l yeku g] lc ;gk l HkkxA ,d lkgc u Vhoh ij] ***ch ch lh*** ij xtjkr d ckj e [kydj dgk Fkk fd ge e l yeku dk ekjx vkj b l rjg fd gedk dkb rkYyd ugh fd [ku fxj jgk gA fcuk ryokj d] fcuk [ktj d] jktxkj Nhu yx rk tkfgj g ; cgr ekjuk gA

vc jgh efLye lkEinkf;drkA ft l dk mUgku iuik;k vkj cdoM j[kkA vkj ,d l ,d beke c[kkjh ink g, g vkj lcu y yh gkFk e ckxMkj] lkj e l yekuk dh jguekb dhA ef'dy ; g fd fycjy fdLe dk dkb efLye yhMj cu d lkeu [kMk ugh gvkA ,td'ku] cdoMul vyx vkj T;knfr;k vyxA lkEinkf;drk gbA ,d uVod e l yekuk dk] lkEinkf;drk dk] vkrdokn dh gn rd dk e> utj ugh vk;k g] m l dVVjiu d ckotnA e l yekuk e tk fycjy g mudh e l hcr ; g fd xjhc vkj vehj d Qd dk n[kr g vkj lkpr g fd xjhc fgUn] xjhc efLye] xjhc b l kb] xjhc f l [k] ftru Hkh g] ok ,d ox d gA vkj ftud ik l /ku g] nkyr g] edku g]

lc dN g] ok nlj rcd d gA yMkb bu nk rcdk dh gA xjhch] etgc d Qd dk ugh ekurhA nkuk e’rjd gA pukp nkuk e ftru Hkh lekt d ykx g mudk ,d jguk pkfg,A ;| rk cgr vPNk ikxke gA yfdu mld lkFk&lkFk elyekuk dk cjxyku d fy, eYyk fdLe d ykx b/kj&m/kj [kM t:j gk x; gA LVMUVl dk] enjl dk tk flyflyk py jgk g] cgr gh egnn fdLe dh i<kb ogk gkrh gA ml i<kb e dN vkenuke dk] Qkjlh dh n[ky gA dN djku ‘kjhQ dh n[ky gA dN uekt dl i<r gA ; rk ijku enjl g,] ftll e Hkh fudyk gA mld cy i vkj cgr dN gkfly Hkh dj fy;kA ok Qkjlh cgr de Fkh] ,fye.Vy FkhA djku d fdLl&dgkfu;k tl egkHkkjr e g] cgr fnypLi fdLl gA gj etgch fdrkc e feyxA ogh gekjk dYpj gA ckbcy e g] cgr gh MkefVd fdLlA [knk l fojk/k d] tk lcj v¸;ch] ygu nkmnh] nkmn dk MfoM dgr g] ckbfcy e] cgr vPNk xkr Fk] jckc ctkr FkA lyeku ftudk lkykeu dgr g] cM vPN ‘kk;j Fk] bf’d;k ikbVh djr FkA ckn’kkg FkA fcydhl i vkf’kd g, FkA vkj ok Hkh mldk ugkr g, n[k fy;k cjguk cnu] rk vkf’kd gk x, FkA pukp ml d ‘kkgj dk yMu d fy,] ÝV ij Hkt fn;k bl mEehn l fd og ej tk;xk vkj pukp og ej x;kA vkj bl fcuk i ml l ‘kknh dhA g;eu LVkjht egkHkkjr l ydj djku rd e ektn gA ;g gekjk dYpj gA ok dYpj ugh g] fd efLye vPNk g] fgUn cjk gA fleh ftl ij cu yxk;k x;k g vkj ;gk fnYyh e idM fy;k LVM.Vl dkA ikVk ‘k: fd;k gA ,lh&,lh pht ftue QkflTe dh c vkrh gA VkMk dk uke cnydj ikVk j[k fn;k gA ikVk Hkh vthc g] VkMk Hkh vthc FkkA vkokt gh vthc gA eykfgtk dhft; ; budh ,LFkfVd lUl g] lkmM lUl gA budk uVod] f’koluk dk oh ,p ih dk] bXyM] vejhdk rd Qyk gA ok vkrdoknh ugh gA ; g] gekj lj ij cB gA gder dj jg gA ekdk feyk g ijk Ve dj yxA ; ih lkeu g] [knk dj gkj] dN rk mudk vDy vk;A ogk gkj rk ‘kk;n lVj e Hkh gkjxA lVj e rk vxy oDr ugh vk,xA [knk u dj ; vk;A ; vxj vk; rk cMk xtc <ku oky gA vxj etkfjVh l ,d ckj vk tk, fQj vki budk vlyh pgjk n[kx & QkflTe l Hkjk gvkA vxj fFkvkØfVd LVV ikfdLrku e cu ldrh g rk fFkvkØfVd LVV ;gk Hkh cuuk pkfg,A vxj mud ikl ,Ve ce g] rk gekj ikl Hkh ,Ve ce gkuk pkfg,A ; lc rjhd le>kr vkj ‘kkfUr voke d veu vkj m)kj] jkth&jkVh d lk/ku ink dju d ugh gA djkMk #i; dkjfxy e cc knA gtkjk] ldMk uktoku dkjfxy e [kReA cok, ?ke jgh g] ek, cVk l eg:eA [kke[kk dh yMkbA lkEinkf;drk fFkfdx gk tk, rk dku dg ldrk g fd etgc dk ikyu dju oky gA etgc d ckj e bruk rk ugh tkur g ftruk Ldkyl tkur g] pkg og fgUn gk ;k elyekuA ejk [k;ky g fd e Hkh fgUn etgc d ckj e tkurk g FkkMk&cgrA vkj vxj ryuk dh tk; bud

tk jktufrd urk g mu I] rk m I urk dk iyMk de iM tk;xk] 'kk;n e T;knk tkurk gA tk tkur g] ok bruk xyr tkur g fd ok tgkyr d cjkcj tkur gA ;k tk mIdk i;kx g ok tgkyr d cjkcj gA ckcjh efLtn dk rkMuk mI vkrdokn gh dgxA budh utj e ILÑfr ,Ih g fd mI cn dj nk fMCc e vkj fQj nku dh rjg ckVk ykxk e] dN ;kxnku] dN xkV ;gk ogkA dN ijQkfex vkVI] dN Ixhr] dN ukpA rk tgk rd bu dykvk vkj ge dykdkjk dk rkYyd g] rk gekjk rk dkb okV cd g ughA tgk okV cd g ogk foHkktu ink fd;k x;k gA vkj ok foHkktu fIQ etgck d chp e ugh g] dkLV d chp e Hkh gA Åph tkr dk vkneh] uhph tkr dk vkneh] Bkdj dk vyx] nfyr vyx] Ic okV cd dk;e djd bIdk viukvk vkj IÙkk dk jkLrk Ih/kk j[kkA bIdk rkYyd u rk fodkI I g vkj u /ke etgc IA Ih/k&Ih/k IÙkk dk jkLrk gA i'kkIu dk Hkh jkLrk ugh gA xM xouI bIe I fudyuk cgr ef'dy gA ILÑfr dk vki Qkby e cn ugh dj Idr] fMikVeV e cn ugh dj IdrA vxj dYpj gekjk vk<uk&fcNkuk g] ILÑfr vxj gekj ILdkjk I rkYyd j[krh g] vxj ge fdI rjg dk'r djr g] dku Ih [kkn bLreky djr g&&ok gekjk dYpj gA fdu&fdu tMh&cfV;k I ge Igr d ckj e tkur g] gekjh ek, vkj gekj ctxA tk ge pVdy tkur g] ok gekjk dYpj gA vxj ; bI rjg I Qyk gvk g] ijofIo g dYpj] rk fQj vkiu dYpj dk fi to dju dk ne D;k Hkjk\ ;g nkok rk xyr gA bIfy, fd vkiu vkIeku d reke njhp [kky fn; gA ogk I tk dnj cjI] nfu;k Hkj dh ,fy;u] xj eYdh] xyr fdLe dh] ekfyd fdLe d cncnkj] iki E;ftd] fgUnh xyr cky jg g] foKkiuk dh otg I] vejhduk dh rjg fgUnh ckyh tk jgh gA dYpj i ; igkj g] cPp viu ij[kk I fcNM x; g] mudh viuh nknh&ukuh dh dgkfu;k I rjch;r ugh gk jgh gA

,d ckj b ,e QkLVj u dgk Fkk & nkt g vkj cku bu ¶yVI ekb fM;j go uk ,uILVIA ; ,uILVI d cxj oky cPp ink gk jg g] ; ub ik/k tk vk jgh gA dkb rkyey dgh I Hkh ugh gA ,d fMikVeV ektn g dYpj dk] gj LVV d ikI] IUVj d ikI Hkh ektn gA exj Qkju fefuLVh dkb vyx ikfyIh pyk jgh gA vkb ,M ch dk foHkkx vyx ikxke pyk jgk gA Ñf"k dk ikxke fcYdy vyx fdLe I py jgk g] xhu jokY;'ku yk;xA bUVyDpvy ikiVh jkbVI dh ,Ih&rIh dj j[kh gA xk;k ckIerh] uhe] thjk vkj tku D;k&D;k vkj tk;xkA nuknu iVV fd;k tk jgk g vkj dyhQkfu;k igp jgk g] f'kdkxk tk jgk gA mIdh rjQ budk /;ku ugh gA ÝkI dgrk g vke gekjh ikiVh g dHkh dkb vkj eYd dgrk g] mIdk gA cxykj dk vke ogk dk vke ugh gA rk cktkj d tkj i ; geI D;k&D;k Nhu yxA eYVhu'kuy dk tkj g] cktkj xe gA gkV euh pyh vk jgh gA iHkkr iVuk;d dgr g & ;gk I ilk

yku fy;k vkj ikMD'ku e ugh MkykA ?ke d #i;k dek;k vkj nlj eYd e Mky fn;k vkj ?kerk jgk ilkA il l ilk c<rk jgk ij ikMD'ku e] inkokj e fdlh rjg ennxkj ugh gvkA eutj ikM; bldk dgr g & ydokxLr prukA ,ClkY;Vyh ijkykbTM ckb ukufFkfdxA bldk ge f'kdkj gk jg gA bl cktkj d vnj tk dUT;efjTe g] nk feuV ikxke fn[kxk vkj nl feuV d foKkiuA ,M nM bt Fkkfbx bV Mkmu ;kvj FkkV vky n xMl Fk nV ehfM;eA dYpj dh D;k lok gk jgh g\ ok rk feVu dh pht g] feV tk,] gekj lkj lLdkj] gekj ukp] xku] xhrA ne Hkjr jg egkHkkjr d] jkek;.k d] dy rd ok Hkh ,lk :i y yxh fd igpku e ugh vk,xhA rk gj fygkt l vxj bl rxutjh l n[kk tk;xk rk dkb fodkl dk igy fudyrk ugh gA fodkl d igy d flyfly e fyi lfol rk nfu;k Hkj dh gA Mhl Vykbt'ku ,d y¶t ; gh y yhft,A D;k Mhl Vykbt'ku gk jgk g\ ipk;rh jkt dk;e gvk ogk] D;k gk jgk g\ & Mlyhd'ku ,M jlyhd'ku vkQ , flLVe fop bt Qy vkQ uikfVTe ,M djl'ku ,M vky n vnj dUVkfMD'ktA ogk xko e Hkh eu n[kk dkb Qd ugh gA fo/kkulHkk e] yftLyfVo ,lEcyh] ikfy;keV vkj ipk;r eA mlh dh NkVh Qke g vkj ogk Hkh dN ykx mldk idM d cB x; vkj 'kk"k.k py jgk g] djl'ku tkjh gA *lMd* ejk ,d ukVd gA lMd d ek/;e l cykfMyk dk ykgk tkrk g tkikuA ,d vkfnokl h bykd l lMd xtj jgh g& ml ykg dk] dk;y dk] ,Y;fefu;e dk ;k dkb vkj inkFk ydj tku d fy,A dkb m)kj mud jkLr e iM xko dk ugh gA cfYd mud fy, cktkjh eky] [kjkc fdLe dh 'kjkc] ftle ok vyx cjckn gk jg g] igp jgh gA igy ohdyh ekfdV 'k: fd;k Fkk vxt d teku eA vc gj jkt dk ekfdV g] lMd d ek/;e l cpk tk jgk g vkj mudk 'kk"k.k Hkh dj jgk gA bl rjg gekj ftru Hkh lLdkj g mudk feVku ij vkeknk gA vU/k bru g fd mudk dN utj ugh vk jgk g ;k vk jgk g rk eg ekM yr g] mudk rk lÙkk pkfg,A ;gk vk x;k g ikfyfVdy flLVeA xoueV vkj dYpj e dN ,lk fojk/k vkil dk g]tlk fdlh lkryh ek dk gk ldrk gA ;k vxj nk chfo;k g rk mud chp e gk ldrk gA dYpj vkj xoueV dk lkFk pkyh&nkeu dk lkFk ugh gA /ke vkj lLÑfr dk rk gA rk tc Hkh gkFk yxkrh g xoueV dYpj d uke i fdlh pht dk] ;k ijQkfex vkVl dk] ;k dykvk dk] rk ok dN ej>k d [kRe&lk gk tkrk gA bV gt xkV , Cykbfvx bQDVA vxj ; nj jg mll rk cgr vPNk gA yfdu udh dj vkj nfj;k e Mky] ; budk ugh vkrk gA ,lk ugh djr fd n nk budk ;kxnku] ftldh t:jr g mu cpkjk dk nk rk dVky djk] viu vkneh dk MkykA pkg ok cky Hkou gk] pkg ,dMeh vkQ ,MfefuLV'ku gk ;k ftruh Hkh lLFkk, gk] ikp lky dk ekdk feyk gA fQj okV fey u fey] dYpj tk; tgUue eA ok bl oDr gk jgk gA ,d likViu] gkekftukbt'ku tk miHkkDrkokn d

ek/;e vkj Xykcykbt'ku d ek/;e l vk jgk gA ok gekj dYpj dk tcnLr n'eu g & gj dYpj dkA ,d rk Mkbol fdLe d MoyieV iVUl gk ldr g vxj [kne[rkjh nh tk;A rk vxj db yoy dh lklkbVh g vkj mudh lH;rk vxy&vyx gA lH;rk l ejh ejkn ok reke flLVe ftldk rkYyd dYpj l gA mud ikl g ^^ekth** flLVe] vkfnokfl;k d ikl] T;fjliMUl mle 'kkfey gA dYpj Hkh 'kkfey gA D;k mll ge ugh lh[k ldr\ t:j lh[k ldr gA ij ok lV ugh djrkA cMk gh cvkjkeh dk jkLrk g ml fdLe dk fodklA

lk{kjrk tl vkUnkyu i vxj ikcUnh yxkb tk,] blfy, fd lk{kjrk d ek/;e l Hkh vkneh Økfr rd igp ldrk g] cnyu rd] lekt e ifjoru yku rdA D;kfd vxj pruk ink dh tk; v{kj d flyfly e fd vkidh D;k t:jr g vkj mldk D;k lek/kku g] vkj ok mud ikl ektn gA vkj mle ,drk vkj lxBu vk tk; rk mll ok ykx Mjr g] rk mld cjlj b[kfrnkj gA pkg rk ch Mh vk gk] pkg dyDVj gk] pkg rglhynkj gkA ; ykx lk{kjrk dk Hkh vkUnkyu pykr jg gA cM tkjk e lk{kjrk dk vkUnkyu 'k: gvkA djy buDyfMM] igy rk mlh u dhA fQj tkdj xd dj fn;k bUgku vkUnkyuA blfy; mldh vkx egll gku yxh fd viuh dc [kknuk g] ; rk viu iko ij dYgkMh ekjuk gA blfy; fd vthc pruk ink gk jgh g ykxk eA ;g ,glkl ink gk jgk g fd ge lc feydj pkg rk ok ifjoru yk ldr g] ftll ge ikVhf'ki'ku] Hkkxhnkjh fey tk; lkp&fopkj dhA 'kklu d flyfly e ;k ikxkEt] iktDVl vkj Ldhek d flyfly eA ; ekudj py g fd ; rk vui< g] xokj g] tkfgy g] codQ g & ; rk ,d teku l pyk vk jgk gA f'k{kk tk g ok ,d dkj[kkuk g] ,l codQk dk ink dju dkA mudh lkp&le> eQyt gk tk;] ydokxLr gk tk; vkj ok gh utj vk; fd ; diM vPN gA vkj ok tk ejk lekt igurk g] vkfnoklh ;k dkb Hkh] mld ifr ?k.kk gkA vxj ok fdlh Ldy dk pijklh cu tkrk g rk ok viu vki dk cgrj le>rk g cfuLcr ml vkneh d tk xk jgk g] ukp jgk gA ,d ,e ,y , lkfgc u nk n'kd igy dgk Fkk & 'k[k xykc dh Ldhe d tokc e] mudh Ldhe Fkh vkfnoklh cPpk dk ukp&xkuk fl[kku dhA mud fy, xkV feyA cM xLl e ,lEcyh e ,d vkfnoklh [kMk gvk vkj dgk&^0gkV] ekb fpYMu foy flx ,M MklA ljVuyh ukV] n 'ky ch ,tdfVMA* ,tdfVM dk eryc le>! rk f'k{kk e lLÑfr dk dkb v'k vkidk ugh feyxkA ,d Vhpj l cLrj e ejh eykdkr gbA Ldy cn] Vhpj xk;c] cPpk dkb ughA irk yxk;k fd D;k gvkA Vhpj u viuk jkuk jk;k & bruh nj l vkuk iMrk gA cPp ugh vk jg rk D;k d:] ru[okg yrk g vkj cBk jgrk g ?kj eA xko okyk l iNk mUgku dgk&D;k fdLlk g\ cPp dke djr g mll gekjh jkth&jkVh py jgh gA Vhpj dk rk ru[okg fey jgh gA vxj ge cPpk dk Ldy

Hkt rk mldh ru[okg e l ge Hkh feyA mI i<ku dh ru[okg feyrh g rk ge i<u dh ru[okg D;k ugh feyrh\ cMh ekdy ckr yxhA mI dec[r dk rk i<ku dh ru[okg fey jgh g gekj cPp Hk[kk ej jg g] budk i<u dh ru[okg feyuh pkfg,A othQk feyuk pkfg,A ogk ij f'k{kk dk dk;Øe vkx ugh c<k gA tgk c<k g ogk mUg ,fyfu,V dj jg gA dkj[kkuk g f'k{kk dk tk futke gA bldh f'kdk;r ,d teku igy xk/kth u [kn dh Fkh fd e viu ykxk dk ckc ugh cukuk pkgrkA e cfu;knh ,td'ku pkgrk g rkfd ok dke dh pht lh[kA exj fdlh u /;ku ugh fn;kA xk/kth egkRek Fk] ij ikxke xyr Fkk] ; dgu dh t:jr gh ugh gA ge pky Hkh ugh djxA mud ikl lLÑfr dk Hkh dkb fotu ugh Fkk vkj bdkueh Hkh ugh tkur FkA ok pkgr Fk fd lYQ fjyk;UV vfglkoknh dUVh ink gkA ; lkEinkf;drk] ; vkrdokn mud tgu e ugh Fkh] u gh fdlh Hkh ekdy vkneh d tgu eA

rk f'k{kk dh Hkh cgr T;knk n'euh lLÑfr l ink gk xbl gA f'k{kk 0;oLFkk vkj dYpj e vkilh fojk/k ink gk x;k gA vc [kn gh vki dYpj e Mc tk; rk ,d vyx ckr gA f'k{kk d ek/;e l dYpj dh rjQ jkLrk ugh fudyrk] cgr nj gVrk gA rk xk;k pfd gekj ikl dkb okV cd ugh g vkj ftl dYpj dgr g ok budh utj e bufMQkbucy g rk tk pkgr g] djr gA tk fodkl dh ijr g mle Hkh ?kiyk g vkj rk ckrkj [ky x; g mle Hkh ?kiyk gA gfFk;kj vkj ry e Hkh nxk] /kk[kk&Qjc gA ; tk gkekftukbt'ku vk jgk g mld vnj Hkh dYpj ij gh igkj gA lekt e ifjoru lc dN yk;k tk ldrk gA ge ykx blVk e ih lh tk'kh dh ljijLrh n[k jg Fk] ftUgku bru tcnLr vkUnkyu dk viuh jguekb e tUe fn;k FkkA oDr cnyk] ogk l gV] bykgkckn vk;A ;gk ie lkxj xlrk vkj Mkx lkgc l fey fd ,d VM ;fu;u fFk;Vj dk;e fd;k tk,A ie lkxj xlrk dk ckr vPNh yxh] Mkx lkgc dk Hkh vPNh yxh] ij urhtk dN ugh fudykA ih lh tk'kh d ikl fotu FkkA dYpj e vxj MV jgk rk lekt e ijk ifjoru jktufrd Hkh fudyxkA vkj ;gk D;k g mYVk] tk vHkh py jgk g bl oDr && dkxl l ydj Hkktik rd] ftldk jkt dk;e gvkA jktuhfr vkj lÙkk d ek/;e l tkdj lh/kk dYpj ij igkj dk eryc vki d thu d rjhd vkj igpku dk uLrukcn dj nk] ml l ikV cuk nk fd ml nfu;k dk vki ,d fgLlk cu tk; tl fd vefjdk] Ýkl bR;kfnA ; Qd rk feVxk ughA ok feVkuk Hkh ugh pkgr] yfdu ge ; Hke g fd ge ykV lkgc cu tk,x vxj viuh xykekuk tgfu;r dk fy, mudh udy i pyr g,] mUgh d jkLr pyr jgxA

e viu oDr0; dk lekIr djrk g] cgr&cgr 'kfØ;kA

¼ukok lQnj gk'eh Lefr 0;k[;ku] uocj 2001½

ykddFkkvk vkj ykdxhrk e ifrokn dk Loj

ykddFkkvk e cgr tku gkrh gA cPpk dh ,d od'kki yh Fkh euA mudk ik;Fku dh dgkuh lukb FkhA vkerkj ij ikVLV utj ugh vkrk bu dFkkvk eA ,d NÙkhlx<h dFkk g cgknj *dykfju*] dykfju dk fdLlk gA dykj tkr 'kjkc cpu oky gkr gA vkj NÙkhlx<h e mudk dykfju dgx] ,d vkjr Fkh tk 'kjkc cprh FkhA mldk uke Fkk cgkjh] cgr [kclijr FkhA mldk n[ku d cgku nj&nj xko l ykx vk;k djr Fk 'kjkc ihuA pukp mldh ndku cgr rjDdh djrhA cgr ilk mlu dek;kA cgr /ku gk x;k mld iklA m/kj l ,d jktk mli ekfgr gvkA nkuk e ie gk x;kA ,d cPpk ink gvk mldk uke Fkk NNku NkMA NNku NkM dk eryc g ckt] tk ifjnk gkrk g tk >iVrk g] f'kdkjh Hkh gkrk g] NNku NkM dgr g mldkA ok jktk pyk x;k fQj nckjk ugh vk;kA vdyh FkhA cgr ykx mll 'kknh djuk pkgr FkA yfdu mlu bdkj fd;kA mldk cVk Fkk vkj 'kjkc dh ndku Fkh] nkuk [kc dekr FkA cV dh 'kknh gbl ,d d lkFkA yfdu ok vlr"V Fkk] nljh l 'kknh dh] rhljh yMdh] pkFkhA ,d lk NCchl 'kkfn;k dhA N% vkx N%dkMhA N% vkx N% dkMh gekj NÙkhlx< e dgr gA dkMh chl dk gkrk g vkj N% vkx eryc 6 T;knkA N% dkMh ;kuh 120 d vkx 6A 126 'kkfn;k d ckn yMdk viuh ek l tkdj dgrk g d eu rjh tlh vkjr ugh n[khA ek le> tkrh g d ; yMdk Bhd ugh gA ok mldk [kkuk&okuk f[kykrh g] cMh rt fep e lky okyk] [kc ?kh oh Mky d] yglu l;kt MkydA ok cgr et y&ydj [kkrk g] ok vkj Hkh nrh gA fry dk yMM Hkh nrh g rkd ml vkj l;kl yxA 126 cgvk dk euk dj nrh g d d, l ikuh&okuh er [kpukA mldk l;klk jgu nkA mldk l;klk NkM nrh gA [kkuk cM et l [kkrk gA mldk l;kl yxrh g] rMirk g] dgrk g d, l vkt

ikuh fdlh u ugh fudkyk\ xko okyk dk euk dj nrh g] dkbi ikuh er nuk mldkA dykfju dh cMh ekU;rk Fkh xko eA xko oky lu yr Fk mldhA pukp ok l;klk vkrk g] rk dgrh g [kn tkd] Mky yd fudky y ikuh vkj ihy] l;klk g rkA ok [kn tkrk g ikuh fudkyuA ml /kDdk n nrh g vkj [kn [ktj ekj dj ej tkrh gA blе ixfr'khyrk D;k g\ bl dgkuh d vnj vkfMil dklyDl utj vkrk gA Ýk;M dh eukoKkfud Fkhflt bld vnj gA

nx d ikl dN efr;k gA uokxko vkj ppkjh d chp eA eu [kn tkdj n[kk g] ogk ij ,d f'kyk Hkh iMh gA ,d iRFkj dh cMh Hkkjh pÍku gA ml ij ikyh e fy[kk gA mld fdLl Hkh ykx crkr g d ;gk dhpd o/k gvk Fkk oxjkA dN VdM eu ogk l mBk fy, FkA ogk txg&txg ij NkVh&NkVh efr;k iMh gb FkhA tc e cMh efr d ikl x;k] mldk n[kk rk ogk dk ekyxtkj tjk gkf'k;kj gk x;k vkj efr dk viu ?kj d vgkr e y fy;kA eu cgr dkf'k'k dh d de l de jk;ij d E;ft;e e rk vk tk, vxj fnYyh ugh tk ldrhA ml oDr u:y glu f'k{kk e=h Fk vkj e ikfy;keV dk ecj FkkA eu mul dgk d ; dke dj nhft,] bldk ogk d fdlh E;ft;e e] lxgky; e j[kok nhft,A mUgku dgk ^^gchc] lkjk eYd Hkjk iMk g] dku dku e t[khjk iMk gvk gA fdru E;ft;e cuk,x\ dgk rd j[kx** ; mUgku tokc fn;kA cgjgky ok vHkh rd ogh iMk gA bXyM oxjk e de feyr g ,l vttk ogk rk ,d VdMk Hkh fey tkrk g iRFkj dk rk mldk vyx l j[kr g] vyx l ykbV Mky djA gj y[kd dk p'ek] dye] mld tr] mldh fdrkc] mldk reke Quhpj oxjk dk vtk;c?kj cuk gvk g] pkg ok Vh-,l- bfy;V gk ;k pkYl fMfdl ;k 'kDlfi;j gkA lcd vkbdkul cu tkr g vkj cgr lHkky d mu phtk dk j[kr gA gekj ;gk rk phtk ;gk l ogk rd iMh gb gA ukyUnk g] x;k g& blh tehu ij dHkh xkre c) ?ke gkxA u tku fdru vttk g tk lxgky; d vnj gA cgr l ,l g tk ckgj g vkj ekye Hkh ugh g ykxk dk] vxj ekye g rk dkb dN ugh dj ldrkA

cgknj dykfju d bl fdLl dk tc e ukVd e rCnhy dju yxk rk e> nk lky yx ;g lkpu e d bld vnj D;k igy fudkyA e> ij'kkuh ; Fkh d tc e bikokbt'ku djok jgk Fkk rk xko d ykx] NÙkhlx< d] tc dju mBr Fk rk ckj&ckj gkrk ; Fkk d Nnku tk cVk Fkk] mldk cnek'k lkfcr djr FkA ok vkneh tk ogk vk;k Fkk] mldk cki] jktk vkj pyk x;k Fkk] nckjk ugh vk;k mldk Hkh ,d cnek'k dh rjg i'k djr FkA jktk dh 'kknh ihN gb Fkh] mldh choh Fkh igyA ;gk vk;k vkj b'd djd pyk x;k FkkA vc e> e'kkgn l vkj [kn viu tkrh rtck dh fcuk ij ; yxk d vxj dkb 'kknh'knk vkneh yc lQj ij g vkj fdlh yMdh d lkFk dN fnu fcrkrk g rk dkb Hkkjh vijk/k ugh gA cVM jly dk vki i< "Mrrige & Morl" mudk Hkh

;gh ekuuk gA gekj vkfnokl h {k= e xkVy dh ijijk g] ftl ex educt ion dgr g vkj mld ckn 'kkfn;k VVrh ugh gA bld ckj e e vki l ftØ igy dj pdk g 'kk;nA pukp e> xkookyk dh bl le> l fojk/k FkkA e ugh pkgrk Fkk d ml vkneh dk cjk Bgjk, vkj ml yMd dk Hkh cjk le>k tk, ;k ek dk funk"k crk;k tk,A pukp eu ykxk dk le>ku dh dkf'k'k dhA eu dgk incet d ckj e re ykx dN ugh tkur ;k tkur gk\ ;kuh ek d lkFk cV dk fj'rk ;k dN cki d lkFk cVh dkA bld ckj e vki ykxk dk dN [kcj] dN lukk g dHkhA cl bruk dguk Fkk d mUgku nfl;k fdLl luk,A pkpk Hkrhth d lkFk] cki cVh d lkFk vkj vHkh gky gh e gR;k gb blh fcuk i d Qyku d ckj e 'kd 'kck gA ek vkj cV lkFk jgr gA ge ekye ugh D;k id jgk g] exj lc ;gh dgr g d nkuk e fj'rk xyr fdLe dk dk;e gA eu dgk tc bruk dN tkur gk rk ckyr D;k ughA e> rk ekye ugh Fkk] xko e ; lc gA rk eu dgk eku yk] Qt djk d ok jktk vk;k vkj lpep ml i ekfgr gvk vkj lpep mll oknk fd;k d vkÅxk e okfil A exj fQj bl rjg my>k viu dkek e d fQj okfil ugh vk ldkA mud tgu e reke my>u vkj nlj dke] Qjk;t ftru Hkh Fk mudk lyVkr&lyVkr bruk tekuk chr x;k d FkkMh cgr ;kn jgh Hkh gkxh] rk mld fy, ; t:jh ugh Fkk d ok okfil vk,A ; Hkh rk gk ldrk g] rk mUgku lcdk Lohdkj fd;kA viuh ftnxh e rk cgr Hkkx pd Fk] cgr vuHko Fkk xko okyk dkA bl ekey e cgr T;knk vuHko gkrk g D;kfd cgr [kyh gb ftnxh gkrh gA rk mldk eku x,A eu dgk nljh oKkfud pht e vki dk crkrk gA ;g Hkh rk gk ldrk g] Qt dj y] eku y] d mlu viu cV dk cM pko l ikyk&cMk gku rd mldk viu gkFk l ugykrh Fkh] /kykrh Fkh] ckyk e ry yxkrh Fkh] d?kh djrh Fkh vkj 12&13 lky rd viu lkFk lyk Hkh yrh gA ok mld lkFk lkrk Fkk] eerk e] ek dh gfl;r l vkj cVk cV dh rjg vkj mld lkFk gh jgrk Fkk vkj fcLrj e vDlj i'kkc dj nrk Fkk rk mldk /kkuk lkQ djuk [kn djrh Fkh ekgCcr lA mldh otg l mldh ,d uky ; eku yhft, dVh gh ugh] tMh jghA pukp ok fixt ion mldk gk x;k ek d lkFkA ml cnek'k D; dgx\ 126 'kkfn;k e vxj ge le> d ok n[krk Fkk d mldh enkuxh xk;c gk tkrh g tc ok tkrk g vkjk d ikl A ckj&ckj gkrk g] yfdu ; n[krk g d tc ek ml tjk lk Nrh Hkh g rk mldk lkjk cnu tkx mBrk gA mld ckj e vxj ok dg nrk g d r>l] vPNh] [kcljr vkjr eu dkb ugh n[kh] D;kfd mldh ,lh dfQ;r gk xb gA ek d ikl dkb pkjk ugh gA ok fj'rk rk dk;e ugh dj ldrhA mldk ekjuk gh jkLrk gA bdykr cV dk ekj nu d ckn D;k jg tk,xk mld ikl] pukp [kn dk Hkh ekj yrh gA

bldh =klnh gA bl dnj lonu'khyrk l fQnk ckb u mldk ikV fd;k d cl

deky gA mUgku bru cM&cM vPN&vPN ikV fd, FkA cgr vPNh ,DVj Fkh] vui< ok Hkh] nokj dchy dh] exj cMh ncx ,DVj Fkh okA cgr vPNk xkrh Fkh] ukprh Hkh Fkh vkj mUgku igyh ckj u;k fFk;Vj e vkd ,fDVx 'k: dh FkhA ckdh lc ukpu xku e tk nokj tkfr dk rjhdk gkrk g] mudk vkrk gh FkkA cM [kclijr rjhd l i'k fd;kA eu ,d ifjoru dgkuh e fd;k] ok ifjoru ; Fkk d jktk okfil vkrk gA ok tehu;k¶rk gvk] mldk jkt c< jgk gA ok bÙkQkd l mlh xko e igp tkrk gA mldk cVk mldk ugh igpkurk vkj mll tehu ij >xMk gk tkrk gA ml >xM e yMkbl gk tkrh g] ykBh py tkrh g vkj cVk ekj nrk g cki dk] rkfd bMhil dk fdLlk ijk gkA bMhil dk fdLlk vki ykxk dk ekye gkxk d ok viu cki dk ekj d mldh choh l ;kuh viuh ek l 'kknh dj yrk gA nk cPp gkr g] nkuk yMfd;k gkrh g ok nkuk mldh cgu Hkh g] vkj mldh cfV;k Hkh gA ckn e ok viuh vk[k QkM yrk g tc ml ekye gkrk g d ; eu D;k fd;kA mldh choh viu vkidk lyh p<k yrh g] D;kfd ok mldh ek Hkh gkrh gA rk bMhil d bl element dk iDdk dju d fy, e jktk dk okil ydj vk;kA [kn jktk dk ikV eu fd;k Fkk] vkj Nnku NkM] tk mldk cVk Fkk] mlu Hkh cgr lonu'khy jky fd;k FkkA ,d leL;k VDuhdy ; Fkh fd 126 'kkfn;k dl fn[kk,\ rk eu ,d 'kknh fn[kkb vkj ogk l mldk :B d vkuk d >xMk gvk choh d lkFkA ek dk eukuk] le>kuk vkj mld ckotn ok dg jgk g fd e nljh 'kknh d:xkA fcxMk gvk cPpk Fkk pmper fd;k gvk] ek u fcxkMk Fkk mlA pukp ok mldh ckr eku yrh g vkj nljh 'kknh djkrh g] nljh 'kknh e ,l gh >xMk&oxMk gkrk gA fQj ok >kM Qd djkrh g] cgykrh&Qlykrh gA exj ok fdlh dh ugh ekurk vkj dgrk g] ^^e rk d:xk 'kknh** mld ckn ,d xkuk ^pkyk ekVh d g jke* gkrk gA ; eMyk dk xhr g] ; eMyk dh /ku ij xxkjke l[kr tk ykx dfo g mu l fy[kok;k FkkA nk&<kbl feuV d xku e ,d&,d djd yMdh vkrh jgrh gA db ckj 2&4 yMfd;k Hkh vkrh g] xkuk gkrk g vkj ukp Hkh gkrk jgrk gA mld lkFk ; lhu fuiVk fn;k tkrk gA bldk blfy, bruh rQlhy l crk jgk g D;kfd ;gk cgr lkj ykx g tk jxdeh g rk ,lk crku l Li"V gkrk tk,xk vkj dN mldk mi;kx Hkh c< tk,xkA

126 oh 'kknh e ,d cyok lk gkrk gA mldk gku okyk le/kh mldh igyh chfo;k l dgrk g d vkiu rk lc dj yh 'kknh&oknhA vc bldh f'kdk;r dj jg gkA dgr gk d mld ?kj dk rgl&ugl dj nk] tykdj Qd nk] [kRe djk] cgk nkA ejh cPph dh fdEer [ky jgh g] vPN ?kj e tkuk pkgrh g vkj re ; dj jg gk\ cgknj vkrh g] ncx rjhd l ckr djrh g d tkvk] c<k] rkMk&QkMk] cgr fey tk,xh gedk yMfd;kA bl rjhd dk cjrko djrh gA lc py tkr g] lUukVk gk tkrk gA ok 'kknh

gk tkrh gA xxkjke l[kr vPN dfo g vkj et et dh /kuk e xkr Fk vkj mudh /ku ,d tlh gkrh Fkh vkerkj lA mudh otg l] ge xk yr Fk vPNkA [kku ihu dk cgr ‘kkd Fkk vkj idkr Hkh cgr vPNk Fk] ‘kkdkgkjh FkA reke lfCt;k rjg&rjg l cukr FkA [kku ij cMk mEnk xkuk fy[kk mUgkuA tjk lk ok xkuk lu y] ijk rk ;kn ugh vk,xk ij ,dk/k dMh l vnktk gk tk,xk vkidk d ok fdl rjg fy[kr g xxkjke th

lnj [kokor g cVk yk prj ukjhA
vky e euxk] djyk e dn:] fpxjh e Mky d jkn g cMhAA

bl rjg l dFkkvk e ef’dy i’k vkrh gA mldk ; eku yuk d ; fdLlk lkerokn dk g vkj vc bld dkb ek;u vkt d teku e ugh fudky ldr] e> xyr yxrk gA eu dkf’k’k dh g fudkyu dh ek;uA pkg okg igykn ukVd gk] bldk rkYyd ‘kkL=h; dFkk l g& yfdu fQj Hkh ykd ‘kyh e vk x;k mMhlk e xktke bykd e gA

bld vnj tk rxutjh g] fgn etgc e ugh gA fgnRo ,d vyx pht gA fgnRo ch-t-ih- dk y¶t gA mld vnj ; lc g] dVVjiu oxjkA yfdu fgn /ke d vnj ,lh pht ugh gA igykn ukVd tk ; ykx i’k djr g] mle ;g igy e> utj vk;k FkkA bldk eu mHkkjk FkkA ykd dFkk e gLr{ki djuk iMrk Fkk dVfyfLVd rjhd lA Ctlim ml dgr g d tl d fdlh ekey e ; felky nh xbi Fkh yfdu e vkerkj ij ;gh dgrk g& lkQ cgr ikuh e db ckj #dkoV ink gk tk, rk #dko vk tkrk g] mle lMk/k gk tkrh g] eD[kh&ePNj ink gku yxr g] dkb te tkrh g] mldk dkb ihrk ugh] mle ugk ugh ldr] /kk ugh ldr] xnk gk tkrk gA gekjh ykd dFkkvk vkj ykd xhrk e Hkh #dko vk tkrk gA mle FkkMk fudkl ink dj nhft, rk ok ikuh dh rjg vkx cgr&cgr fQj lkQ ‘kQkd gk tkr gA rk ; fudkl ink djuk ,d dVfyfLVd dke g] ;kuh mle gLr{ki djukA fot;nku nFkk [kn ,d y[kd g] mu dh lc dgkfu;k e lkekftd igy utj vkrk gA mudh viuh ,d pruk g] bl thrh tkxrh concioune d intervention d cxj ok lkekftd igy ugh fudyxk tk mudh ykddFkkvk e feyrk gA pukp ok pht ogk ektn g] vkj ok ml dVfyfLVd rjhd l i’k djr gA tl d ,d vkneh g tk d iyk&c<k tkuojk e] pukp bekunkj g vkj tkuojk dh rjg mldk cjrko gA vD[kM g exj bekunkj okyk] tk lkjh oQknkjh tkuojk d vnj gkrh g] ok Hkh mld vnj gA tk [k[kkjh tkuojk e gkrh g ok Hkh FkkMh lh mld vnj gA ml jktk cuk nr gA ‘kgj y vkr g] njckj e gkrk g] cgr vPN&vPN diM igukr g] vPN&vPN Hkktu nr gA ogk fcxM d] blku cud]

mle ykyp vkrk g] rek vkrh gA ; dgkuh] e mldk uke Hky jgk g& mldk tk lkekftd igy g ml ij T;knk jk'kuh Mkyu dh t:jr ugh g] vkid lkeu lkQ gh gA

[kjkx<&NÙkhlx< e ijku ukpk dk ydj dN dke fd;k FkkA ukpk dh tk 'kyh g mle ^ukp* y¶t dk eryc g [ky] udy lc/kA NÙkhlx< dh bl 'kyh e ukp] xkuk vkj dgkuh Hkh gkrh gA dFkkud Mke d vnj lkeu vkrk g mldh ijkuh tk 'kyh Fkh ml ^^[kM lkt dk ukpk** dgr FkA gkjekfu;e] rcyk] <kyd] ethjk lc [kM gkdj ctkr FkA [kM gkd xky ?ker&?ker ok vkerkj l dchj d Hktu xkr Fk] vHkh Hkh dN ykx xkr g yfdu ok ykdfi; ugh gA vc rk fMLdk vk x;k g] Vh-oh- dh otg l] nfu;k Hkj d reke vljkr n[ku dk feyr gA ; rjhdk Fkk ijku ukpk dk vkj mle dchj dk ykx viuk fojlk le>r gA vkj [kn dchj Hkh vxj gkr rk ; n[kdj o ludj cM [k'k gkrA dekj x/ko u dchj dk ,d 'kkL=h; Lrj ij ykdj j[kkA viuh cgr [kclJr xk;dh dh otg l mu xkuk dk 'kkL=h;rk cD'khA mul iNr g d ; Hktu dgk l vki dk feyk g rk ok dgr g ; in fdlh ldyu e ugh fojlk le>r gA vkj [kn dchj Hkh vxj gkr rk ; n[kdj o ludj cM [k'k gkrA dekj x/ko u dchj dk ,d 'kkL=h; Lrj ij ykdj j[kkA viuh cgr [kclJr xk;dh dh otg l mu xkuk dk 'kkL=h;rk cD'khA mul iNr g d ; Hktu dgk l vki dk feyk g rk ok dgr g ; in fdlh ldyu e ugh feyxk] ; rk turk l eu gkfly fd;k gA rk gekj jk;x< e] NÙkhlx< e Hkh dchj ifjofrr vnkt e feyxk] ftldh felky e vkidk vHkh nxkA ok dchj dk viuk fojlk ekur gA rk ; [kM lkt d ukpk dh dFkk jgh g] eu mldh od'kki ylhA mle fot;nku nFkk dh dgkuh gA mldk ukVd dk :i ,d uktoku u fn;k FkkA tykb e dN uktoku y[kdk dh od'kki dh FkhA mle dkQh gkugkj cPp vk, FkA mue l dN l eu fy[kok;k Hkh Fkk deh'ku djd vkj dN dh iLrfr Hkh eu dh FkhA ml ukVd dk uke Fkk *dy;xh vorkj*A cgr dke;kc ukVd FkkA rk *dy;xh vorkj* dk [kM ukpk 'kyh e djok;k FkkA dFkkvk dk ; g d tc rd mle dVfyte uk vk, tl *pjunkl pkj* g rc rd ckr ugh terhA ^^dFkk pkj dh** fot;nku nFkk dh dgkuh gA mUgku pkj dk lPpkb dh felky cuk;k vkj mle mUgku tk ifjoru fd;k gk ok viuh txg gA eu rk i<h ugh Fkh dgkuh] flQ luh Fkh vkj ludj ukVd fd;k FkkA ogh cjkMk mud xko e] tk/kij d ikl gA ogk i dkf'k'k dh Fkh d cu tk,] ij ogk ugh iuih ; dgkuh Mkek dh 'kDy eA D;kfd mudh tk] 'kyh Fkh [k;ky dh] vkijk dh 'kyh g] xhr xkuk T;knk gkrk FkkA ifrHkk dh deh Fkh] vfHku; dju okyk flQ ,d vkneh Fkk tk cMh vPNh dkeMh djrk FkkA vkjk dh Hkh t:jr FkhA dke tek ughA rhu pkj fnu e eu mldk ihNk NkM fn;kA ^^Bkdj fctiky flg**] ;

Hkh fot;nku nFkk dh dgkuh gA *Bkdj lkgc dk :B tkuk* rk mle] lkerokn dk fdLlk g d ,d Bkdj lkgc tk g ckj&ckj :B tkr FkA mudk nhoku cMk prj Fkk vkj mlu mudk euku dh D;k&D;k dkf'k'k dh vkj fdl rjg ok [kn Hkk tu iklr dj yrk Fkk viu fy,] gjd dk codQ cukrk Fkk okA mldk e foLrkj l ugh lukÅxk mldh dgkuh l[uku cB x;k rk cgr yck le; tk,xkA cgjgky mldk ; lkekftd igy Fkk] lkerokn d Åij] ,d u;k 0;X;A

pjunkl pkj d ckn l fot;nku nFkk uk[k'k FkA mudk iln ugh Fkk pjunkl pkj] ftldh Hkud db lky d ckn luh] ykxk u dgkA ok [kn cM [kkek'k rch;r vkneh gA cgr lTtu i#"k] lh/k&lh/k] viu dke l dke] xko d vkneh g] lknxh dk fyckl] bl rjg d gA ,d fnu fey rk eu dgk d D;k vki ukjkt g\ rk mudk ; dguk Fkk] tk viuh txg Bhd g d eu mldk :ekuh dj fn;k] irhd cuk fn;k] pjunkl dh itk gku yxh] tc ok ekj fn;k x;kA ogk ij vkidk fdLlk [kRe gk x;kA ejh dgkuh vkx tkrh g& pjunkl f'kokuh l 'kknh dju l bdkj dj nrk g vkj ok mldk ejok nrh gA fQj x: l dgrh g x# eku yrk g] x# l 'kknh gk tkrh gA rk e dguk ; pkgrk g d evil i perpetuted, cjkb [kRe ugh gb] cjkb tkjh g] py jgh gA mld f[kykQ vHkh yMkb ckdh g vkj vkiu lkjh yMkb [kRe dj nhA pjunkl pkj dk ifrf"Br dj fn;k] Hkxoku cuk fn;k] mldh itk gku yxhA He h defintely point. eu dgk d ;g vkiu lgh Qjek;k] yfdu e> vPNk ugh yxkA mld eju d ckn e> li.k =klnh feyxhA e> ml vkjr dk] tk jkuh g] mldk Hkh nk"k utj ugh vkrk ble&ok D;k dgrh g\ fdu&fdu phtk l bdkj djrk g\ ,d rk ,d vkjr dk vieku djrk g] mll 'kknh dju l bdkj djrk gA mldk lg yrh gA mldk Hkktu ugh [kkrkA viu i.k d flyfly eA vr e ok fxMfxMk dj dgrh g d vPNk ; lc Bhd g] rEgkj i.k ij gk x,A vc de l de ,d ckr ejh eku ykA ckgj tkdj ; er dguk tk dN ;gk gvkA mlu l>ko j[kk 'kknh dk] iLrko j[kk Fkk vkj pkj u bdkj dj fn;k FkkA ok ugh pkgrh Fkh d ml vieku dk ckgj tkd ok dgA ok dl jkt i dk;e jg ldrh Fkh] dl lÙkk i dk;e jg ldrh Fkh vxj ; pjunkl tkd ckgj dg nrk\ pjunkl uke ejk fn;k gvk gA db uke igy lkeu vk, Fk tl vejnkl] dN ; nkl] ok nklA eu db uke l>k,A exj tk iFkh Fk ogk i ok dgr Fk] ; Hkh gekj x#] ok Hkh gekj x#] lrukeh /ke d x# FkA x# ckfgu nkl l x: gkrk g flyflykA mle vejnkl Hkh ,d x# Fk] cgr lkj x# FkA pukp eu dgk pjunkl rk ugh gkxk pjunkl vPNk g] rk mldk uke j[k fn;kA =klnh ok tk vo';Hkkoh gk] ftld fy, dkb nljk jkLrk ckdh u jg tk, flok, ej tku ;k ekj nu dA pukp jkuh pjunkl dh ekr cnk'r dj ldrh g] ; cnk'r ugh dj ldrh d

pjunkl tkd lp cky n vkj ; dg d eu bdkj fd;k mUgkau dgk Fkk ^e> l ‘kknh dj y*A fQj rk cyok gk tkrk vkj mldk jkt l gVk fn;k tkrk gA pukp mldk eg cn djuk ykteh g vkj >B dg d mldk ekj nrh gA ekr Inevitbility trgedy dk ,d ykteh v’k g blfy, ejh dgkuh ;gk [kRe gk tkrh gA rk cgr vPN vkneh g nkLr g dgu yx ^^rEgkjk utfj;k Bhd g] e> ,rjkt g viuh txg] I right then go hed**

pjunkl pkj vkj *tkuh pkj gfj;k.kk* dk] ml pkj d Hkh cM fdLl g] rjg&rjg d] ok Hkh geu gfj;k.kk dh od’kki e fd;k gA *‘kkgh ydMgkjk* fd;k] */kuh pkj* fd;kA *tkuh pkj* d vnj pkj rjg&rjg d Hkl cnyrk gA dHkh ifylokyk [kn cu tkrk g vkj rjg&rjg d gLh etkd gA lLÑr dk ,d ukVd g *ic) jkfg.kA ic) jkfg.k* Hkh ,d pkj dh dFkk gA mld vnj Hkh reke rek’k gkr gA ok Hkh lc dN mMk dj y tkrk gA cMh&cMh pkfj;k djrk g vkj deky dk vkneh gA ok dFkk fy[kh gbi g ,d tu y[kd dhA vkf[kj e tc ok ,d pkjh dju fudyrk g m/kj reke lukifr vkj dkroky ryk’k e g ic) jkfg.k dhA jkr dk oDr g vkj ok pkjh d fy, fudyk gA ok ux ij cgr rth l Hkkxrk g vkj nfu;k Hkj dh rjdhc tkurk gA exj ml fn[kkb nrk g d ikl e ;K gk jgk gA dkb tu _f"k efu vk, g, gA ok dN Hkk"k.k n jg gA ok lkprk g ej cki u e>l dgk Fkk fd ^^fdlh efu dh ckr dku i u iM ouk r viuh lkjh dyk Hky tk,xk**A ok viu nkuk dku cn dj yrk gA mld ij e dkVk xM tkrk gA ok cBrk g vkj nkr l dkVk fudkyu dh dkf’k’k djrk g yfdu dkVk ugh fudyrkA rk ,d dku tYnh [kkyrk g] dkVk fudkyrk g vkj fQj cn dj yrk gA ,d&nk ‘kCn _f"k efu d ml d dku e iM tkr gA [kj ok fdlh rjg l idMk tkrk gA fQj >B dgrk g fd e Qyk txg dk fdlku g] uke irk yxkr gA ogk ml uke dk dkb fdlku Fkk ij ogk ektn ugh FkkA ckn’kkg dgrk g d ckdh lkj lcr rk gA lukifr dgrk g d egkjkt ; rk ukblkQh gk xbA lcr njvly dN ugh gA bld ;gk l lkeku dkb cjken gvk ugh g] uk gh mlu viu eg l dcy fd;k gA ; ekj nuk rk ukblkQh gkxhA bll dcyokb,] bld cxj ckr cuxh ugh] rk mldk dcyokuk pkgr gA ok D;k dcyu yxk] ok ugh dcyrkA lukifr cMk pkyd FkkA ok dgrk g d e bll lc mxyokrk gA vkj mldk ok [kc ‘kjkc&ojkc fiykr gA vPNk [kkuk f[kykr g] cgr gh [kcljr yMfd;k ukprh g—A mldk ;dhu fnykr g d re ej pd gk vkj re Lox e gk vkj ; vlljk, g tk rEgkj lkeu ukp jgh g vkj re norkvk d chp e vej gk pd gkA Lox d ftru yRQ g] vkun g] Hkkx jg gkA rk ok ;dhu djrk g D;kfd u’k e g] et l ukp n[krk g] xku lurk gA ;dk;d ml _f"k dh ckr ;kn vkrh g d vxj dkb nork g] uper nturl being diving

being g rk tc ok tehu ij pyxk rk Q'k ij dkb fu'kku ugh iMx pkg ok fdruk gh gjdr e utj vk,] mld cnu l ilhuk ugh NVxk oxjk&oxjkA ok n[krk g d mld ijk dh vkokt Hkh vk jgh gA ijk d fu'kku Hkh iM jg g] i lhu Hkh vk jg g] ; lkjh vlljk, ugh g] ; lc feydj e> /kk[kk n jg gA ok le> tkrk g vkj dcy yrk g] tkd crkrk g dgk j[krk Fkk lkjk lkekuA lkjk lkeku fudy vkrk gA cMh Åpkb ij ,d igkMh ij vkj ogk cMh ef'dy l ml [kkyrk g vkj ogk lkjk lkeku feyrk gA ogk rd dkb igp gh ugh ldrk Fkk tgk mlu j[kk Fkk lkjk lkekuA yfdu ok dgrk g ^^e ; nfu;k rt d tk jgk g** vkj jktk mldk ekQ dj nrk gA _f"k efu d ,d nk y¶t luu dh cnkyr mldh pkjh NV tkrh gA rk *pjunkl pkj* dk] *tkuh pkj* vkj ic) *jkfg.k* dk vkil e ,d lc/k g] ge ml ukVd dk mBkr&mBkr jg x,A vHkh tc eu ; ukVd puk ukjk;.k dk rk mll igy e ; gh mBku okyk Fkk D;kfd mle cgr dkeMh g vkj =klnh gA fQj e> ; l>k d fdruk djx ; pkj] *tkuh pkj* fd;k fQj ; *pjunkl pkj* gk x;k rk ykx dgx d gchc lkgc dk pkj cgr i ln gA ge'kk pkj d ihN iM jgr g rk ; ugh djuk pkfg,A bld vykok e> mle ok otu ugh feyk tk *pjunkl pkj* e gA Anti etblihment ulity mle ugh Fkh D;kfd tu y[kd Fkk blfy, tu /ke dk ipkj mldk ,d igy FkkA dykRed Fkk yfdu Fkk ogh igyA bu lcdk lc/k pkj 'kkL= l gA

gekj ;gk nfu;kHkj d 'kkL= g] rk pkj 'kkL= Hkh ektn gA vFk'kkL= e vkidk fo"kdU;k] ukirky] ifjpkfjdk, vkj lc fey tkrk g tk pk.kD; u fy[kk gA puk pkj 'kkL= e ok reke pht fey tkrh g ftldk bLreky gkrk gA 'kkohykd] tk pkj g vkj jktufrd urk Hkh g] urk Hkh g] vkj ieh Hkh g xf.kdk dkA rk rhuk phtk dk ey g 'kkohykd eA bu lc phtk dk ukrk&fj'rk tkd feyrk g pkj 'kkL= eA rk ykddFkk vkj 'kkL=] ykdijijk vkj 'kkL=h;rk dk dl vyx djx\ lc feyh&tyh pht g vkj mlhd rku&cku gA fdlh ijkuh pht dk ub pht l feyk nhft, rk ,d rhljh [kkfl;r ink gkrh g vkj mlhdk uke g vk/kfudrk ;k julkA ftl rjg l vkDlhtu vkj gkbMktu nk xl g] feyk nhft, rk ikuh ink gkrk g] rhljh [kkfl;r ikuh g] xl ugh gA ikuh dk fQj mckfy, rk fQj vkidk vkDlhtu vkj gkbMktu fey tk,xh] ok rRo mle ektn gA

When the modern painter looks at the caveman's paintings vkj mldh tk ykbu dh lknxh g] mldh ij.kk l fpUg fudkyrk g] fugk;r fdQk;r d lkFkA vkt dh ifVx dj jgk g] vkidk cave painting dh ;kn vk, ;k uk vk,A ok cve pinting ugh gA It's a third quantity and that is what has happened in catalism. This is what has happened in Brecht. c[r e ykd dFkk, gA

pklj e ckbcy dh dgkuh g vkj phuh dFkk dk feyk fn;k x;k gA bl rjg dh db ph t gA [kn e‘PNdfVd Hkh ;dhuu ykddFkk ij vk/kkfjr g D;kfd mldk vnj d tk ik= g ok ,d l ,d /kr gA ukb g] pkj g] tvkjh g] yQx] yPp t l ik=] ; lc ektn gA lkFk&lkFk ,d ie&jl dh dFkk g] ie dh dgkuh g pk:nÙk dh olr luk d lkFkA Hkkl dk cgr cMk egkdfo ekur g vkj nfjn pk:nÙk mldk ukVd g tk vk/kk gedk feyrk g] ijk ugh gA nfjn pk:nÙk e pkg dfork Hkkl dh fdruh gh egku gk] e> e‘PNdfVd fQj Hkh T;knk tkunkj yxrk g D;kfd mle dkb ykddFkk feyk nh xb gA ml dk pkj] ieh Hkh g vkj ,d jktuhfrd urk Hkh & rk cMh tku ink gk xb g mldh otg lA bldk ifMr dgr Fk d ; rk Hk”V gA bld vnj db jl fey g, g pukp l ilx xyr gk pdk gA ukV; ‘kkL= d vulkj ble ‘kCn feJ.k bl rjg dk g d ; ukVd bruk Åpk ugh g] e [kn bl ckr dk ugh ekurkA ifMrk u e> HkxkMk dg fn;kA tc eu *feÍh dh xkMh* 1998 e fd;k rc ykd/kek vkj ukV;/keh d pDdj e iMdj fj0;t e ; vk;k d ukV;/keh ukVd dk ykd/keh cuk fn;k] NÙkh lxf<;k dk Mky fn;k] mudh /ku bLreky dj yh oxjk&oxjkA ukVd ‘krku dh rjg e’kgj gvk vkj pyrk jgk] vHkh rc py jgk gA vc tk ifMr vk, g] ml teku e rk ckã.k vkr FkA vc vkid pkg ok jktk Hk;k dh ikVh gk pkg dE;fuLVk dh ikVh gk ;k ifMr fo|k fuok l ‘kkL=h gkA pd budk FkkMk cgr ep l rkYyd g vkj ukVd djr jg g] ,fDVx Hkh djr jg g] dE;fuLV rk vPN&[kkl ,DVj gA dN ckr le>u yx g d gk ;] viu vueku l dg jg g gchc ruohj exj FkkMk lk v/;;u] internl evidence l xtj d tk gkfly fd;k g ok lgh g] lLÑr rk ge tkur ugh gA rk vc HkxkMk dguk cn gk x;kA

okbl pklyj jfld Hkkb ikjh[k u ‘kkfoykd d fdLl dk ,d ukVd d :i e fy[kk FkkA ml teku e vgenkckn e ,d&M< eghu d fy, FkkA bIVk d ykx Hkh Fk ftle tlor BDdj gekj nkLr Hkh FkA mUgh d ;gk Bgjk Fkk eA nhuk dke dj jgh Fkh] bIVk NkMdj ok vkb Fkh] ogk jxeMy dk;e fd;k Fkk] ;fuofl Vh d rÙok/kku eA t;’kdj lnjh tk ikjlh fFk;Vj d ,DVj Fk] ok nhuk d lkFk feydj fun’ku djr FkA rk ml oDr nhuk ftØ djrh Fkh d mUgku *ePNdfVd* dk ydj ,d u;k *‘kkfoykd* uke dk ukVd cuk;k g tk deky dk gA e fIQ lurk Fkk exj e> ekye ugh Fkk] fdru deky dk gA fQj clh dky u *‘kkfoykd* uke dk ukVd tk d jfld Hkkb ikjh[k u fy[kk Fkk] i’k fd;k fgnh eA e> ok ukVd vPNk ugh yxkA D;k vPNk ugh yxk D;kfd ckdh dgkfu;k dk tk ifjoru mUgku fd;k g ok viuh txg ij g exj *‘kkfoykd* dk vk;d LFkkfir dj nrk g jktk dh gfl;r l] jktfIgklu ijA jktk ikyd dk o/k gk tkrk g vkj vk;d Xokyk] ok jktk cu tkrk gA ; ‘knd dh dgkuh g ;kuh ,d Xokyk

jktk cu tkrk gA *‘kkfoykd* e ; g fd vk;d tk Xokyk g] jktk cu tkrk gA fQj ekye gkrk g d ok Qyk d ppk d Hkrht dk ikrk] eryc jtokM dk i= gh FkkA ftldk gd ekjk x;k Fkk] mldk lÙkk l gVk;k x;k FkkA eryc vlyh uLy Fkk] blue blooded Fkk] dyhu jktk dk gh [ku Fkk tk jktk cukA eu jfld Hkkb ikjh[k l dgk ; rk fcYdy ihN gVu okyh fdLe dk ukVd fy[kk gA D;kfd ok jktk Fkk blfy, eukfLc g d ok jktk cu tk, vkj ;gk ‘knd Xokyk g tk jktk curk gA

‘kkgh ydMgkjk] ,d ydMgkj ij ,d jktdekjh vkf’kd gk tkrh gA blh Hkh eu gfj;k.kk e ,d od’kki fd;k gA ydMgkj ij ,d jktdekjh dk vkf’kd gk tkuk dkQh ixfr’khy yxrk gA vkf[kj e ydMgkjk jktk d gh [ku dk fudyrk gA mld rkoht dk n[kdj igpkur g d ok Hkh ,d jktdekj FkkA ; Hkh ,d vkÑfr g fojk/k l cpd tjk lk] nti protetA rk ykddFkk e] ykdxhrk e ; pht Hkh vkidh feyxhA gekj ;gk NÙkhlx< e] ikjifjd dgkfu;k g & *dkekyk pkj] Hkkb&cVokjk] Hkkb lkFk gkr uk] pijklh] lk/k] ek;k ijh{kk]* ,lh phtk e vkidk gYdk&gYdk dN lkekftd igy feyxk] glh T;knk] eukjtu T;knk feyxkA *Hkkb cVokjk* e Hkh dN 0;X; dh ljr l] ykyp&okyp d f[kykQ gA *e ,lk lkp jgk g* e Hkh ,lk gh gA *pijklh* d vnj pijklh vkj lkfgc] ekfyd vkj ukdj d chp dk tk ruko g] mle pijklh Nk tkrk g vkj ekfyd cgr viekfur gkrk g] ekfyd ekfyd gh jgrk g exj pijklh e[; ik= gA [kc deky l djr g vkj [kc glkr gA ok dN nti etblihment curk gA *lk/k udy* e lk/k g] ok vlyh lk/k g] mudk <dklyk *lk/k udy* e fn[kkr g d lk/k ugh g] ik[kMh gA ,l&,l 0;X; cgr g NÙkhlx<h eA NÙkhlx< oky glku e vkj 0;X; dju e ekfgj gA *ek;k ijh{kk* e ; g d ek] cki d eju d ckn ekye gkrk g d ifjokj d vnj vlyh ekgCcr ugh gA ok mldk ijh{kk e Mkyrk gA ek;k dh ijh{kk g rk ekye gkrk g ok lc ykyph gA rk bl rjg d ueu fudyr gA bldk ge vlyh fojk/k ugh dgxA *lk/k udy* e 0;X; Hkjij vkrk gA budh ikjifjd phtk e *teknkfju* deky dk ukVd gA *teknkfju* ukVd dk tc eu n[kk rk e nx jg x;k d bruk xBk gvk] 40&45 feuV d vnj ukVdA leek, tight, tempo oxjk lc dN pLrA *ekVjke dk lR;kxg* e dy d in’ku e ,d deh Fkh tempo dh] tightne dh] ftldk ydj eu glu beke l ckrphr dh Fkh dyA dN nk pkj ckr vkj crkÅxk vki dk ckn eA cMk vPNk dke fd;k cPpk uA cM vPN&vPN ,DVj Fk mleA exj mld ckotn ok xBko ugh Fkk] tk e> xko okyk dh phtk e utj vkbA *teknkfju* e eu tk n[kk rk gjku d fo"k;oLr bruh vkyk vkj ; rduhdh dekykr] rduhd vkj vfHku; vnHkr dj nu okykA dgkuh ; Fkh d ,d fdlku lR;ukjk;.k dh dFkk djkuk pkgrk gA mle glh&etkd cgr&dN gA vkf[kj e ifMr ilk ekxrk gA ilkn yk

vkj ilk p<kvkA teknkfju d ikI ugh g ilkA teknkfju tkrh g rk mldk cykrk g ilkn d fy,A ckn e iNrk g d dku tkr gk re ckb\

dgrh g ^^Åfru gekj tkr egkjkt] gekjk Åfru tkr g egkjkt**

*^^dk Åfru tkr***

*^^teknkfju!***

Rk tc Åfru lurk g rk cMh vkoHkxr e yxrk g] tc teknkfju lurk g rk ^Fk Fk Fk Fk Hkkxk Hkkxk* djrk g NvkNr djrk gA fQj ok xk xkd c[kkurh g d re fdru ikuh e gk] vkj efnj dh phtk dk eklfe;r l Nrh jgrh gA ^^; D;k g** 'k[k] Hkxoku d Hktu e cBr g rk ctkr gA ^^Nvk n** dgrk g ^^gk** blh rjg l ok phtk dk Nrh jgh g vkj fQj Hkxoku dk Hkh N yrh g] dgrh g ^^N y]** tokc feyrk g ^^gk** ^^rc ge rEgkjh t:jr ugh gA ge lR;ukjk;.k dh dFkk [kn gh viu ?kj e dj ycA** ; g ukVdA

It is quiet radicalA mle 'k: e dN gxkek gvk FkkA xko e ml igy dk dN nck d ukVd [kyk D;kfd xko e ckr gk jgh Fkh d ^^; D;k cdokl re fn[kk jg gk gekjh tkr d f[kykQ**A yfdu nokjh e ijk 0;X; g bld f[kykQA yfdu nck Hkh yr g dHkh ; ykxA yfdu bl ukVd d vnj bru vPN igy g d e mldk db ekdk ij i'k djrk gA blh ukVd dk v;k/;k ely d nkjku vkj fQj ckcjh efLtn d VVu d ckn geu bl lMdk ij fn[kk;kA ug: fo'ofo|ky; e fn[kk;k] fnYyh fo'ofo|ky; e fn[kk;k] Xokfy;j e fn[kk;kA iRFkj iM gekj ,DVjk d Åij vkj reke v[kckjk e fy[kk x;k pkjk rjQA bXyM rd d v[kckjk e vk;k d gchc ruohj dk fFk;Vj ugh gku nx D;kfd fgn fojk/kh gA ; lkj fdLl g, *teknkfju* dh otg lA bXyM d dk;drkvk u dgk Hkkb viuk c;ku Hkt nk gekjk yflLVj fFk;Vj tk g& oh-,p-ih- dk ogk ijk x< FkkA ogk dN dhuh;k d fgnLrkuh Fk] ok Hkh ij'kku Fk D;kfd vPN ykx Fk] gekjk uke lu pd FkA ok pkgr Fk d ukVd vk,] ok- oh-,p-ih- vkj l?k ifjokj d ugh FkA mUgku dgk d gekj ikl dkb gfFk;kj rk pkfg,A vki viuk c;ku Hkt nhft, ; tk vkid Åij gey oxjk g, gA eu fy[kdj Hkt fn;k d u ; ejk fy[kk gvk ukVd g] u ejk funf'kr gA ; rk [kclwjr phtk g ftldk e i'k djrk jgrk gA exj vlyh ckr ; g d ok ukVd ydj e ogk ugh vk jgkA e pkj nlj ukVd ydj vk jgk gA ; lc tc i< fy;k rk fQj mudh ,d ehfVx gb bXyM e] VkbEl vkQ bfM;k vkj ftru i=dkj Fk] lc ,dne pkdUu g, tc ; fookn 'k: gvkA lc d lkFk yflLVj vk, n[ku d D;k gxkek gku okyk gA nk fnu igy ogk ,d ehfVx gb mle mUgku dgk bud ukVd e xkyh xykp gkrh g] ; gkrk g] ok gkrk g] lc cdokl djr

gA vkj fQj mlI lekt dk dgk d ge vkidk le>k pd g] vc vkid Åij gA ge dgr g d vki u tk,] cfg"dkj dj bud Mke dk rk vPNk g] vki tkuk pkg rk tk,A [kc MV d vk, ykxA cgr gh de ykx Fk tk gekj lkFk ugh FkA

Fkh [kcj xe d xkfyc d mMx i tA
n[ku ge Hkh x, Fk i rek'kk u gvkAA

ok ugh gvk vkj il e bld ckj e VkbEl vkQ bfM;k vkj bfM;u ,Dlil oxjk e gekjh rjQ l c;ku igy gh vk x;k FkkA ,d ckj dk pi g,] exj mld ckn Hkh iRFkj cjlA dkf'k'k vkf[kj rd djr jgA cLrj rd ejk ihNk ugh NkMkA rk ; *teknkfju* ukVd gA

^^Nvkyk dkcj Mj** d NvkNr l Mjr D;k gk\ tcfd gj ph t Nb xb gA mlh ikuh e ugkr gk lc feyd] vkj nljk xkuk g d re fdl ?kjku d gk\ okYehdh gk] fu"kkn tk eNyh ekju okyh tkr gkrh g] mUg /khxj Hkh dgr gA rk mldk cVk Fkk ckYehdh] Mkd Hkh Fkk vkj mldk doV Hkh FkkA NÙkhlx<h e doV dgr gA

Rk ; xkuk dl cu tk,xk\ ckYehdh u jkek;.k fy[kh] ; etgc d mld vnj dh cxkor gA mudh viuh ijijk e ektn gA dgr g d ekl&eNyh xnh ph t g] mudk [kkr gk] ;g djr gk] ok djr gk] ,d teku e ckã.k Hkh [kkr Fk ; lc phtA [kn tc ckYehdh d ;gk jke vkj tud x, Fk rc mudh vkoHkxr gb Fkh rk] mld vnj chQ FkkA bfrgkl d vnj ; reke fdLl mBk, gA ch-t-ih- oky bfrgkl dk cny jg gA ; lc e> codQh yxrh g] tk rF; g ok g] ; ugh d vPNk g cjk gA ; ch-t-ih- dk ftEek g ok ljdkj pyk, ftl rjg pykr gA

gekj ;gk bl rjg d fojk/k vkr g tl d Mxfj;k ie dh ^^NNku** ckt dk dgr g vkj ^^fpjb** NkVh fpfM;k] xkj;k dk dgr gA

ok ?kjy fpfM;k vkj ; ckt mldk f'kdkj djrk g ;kuh ml l ie djrk gA fpjb ek'kd dk Hkh dgr gA e rEgkjk djyk] e rEgkjk djknk] ; b'd d vYQkt ,d [krhgj lekt eA

Ukky d ml ikj ejk Nyk g] ie dk xhr gA mle ejk lkoyk ejk djyk] ejk djknkA djknk dh rjg [kÍk ehBk ek'kd cgrj gkrk gA ehB&ehB ek'kd] tk gj ckr dk eku tk, ok D;k ek'kd\ ek'kd ok tk u[kj okyk gk] FkkMk lk [kÍk FkkMk lk ehBk gk] rk ; reke pk'uh bu xhrk e gkrh gA enkuk d b'd dk rjhdk gA

bu xhrk dk euk djr Fk xku dkA bldk vPNh nnhyh vkokt e xku okyk ;k xku okyh ekfgr dj yrh Fkh en dk ;k en vkjr dk vkj bikokbt'ku gkrk FkkA eux<r dfork] dfM;k tkM&tkM dj cukr FkA ,d nlj d tokc e] vkj fQj ekfgr

gk tkr FkA Hkkx tkr g] 'kknh'knk yMfd;k Hkkx tkrh Fkh] dvkjh Hkkx tkrh FkhA blhfy, euk djr Fk vkj ihVr Fk tk ykx ry;k xk;k djr FkA xko d ckgj txy e xkr Fk] unh fdukj tkdjA cofM;k d uhp ikuh Hkkju yMfd;k vkrh Fkh] mudk luku d fy, xkr Fk] ekfgr djr FkA

¼; Hkk"k.k xhr ij [kRe gvk ½

ij.kk]iVuk }kjk vk;kftr lQnj gk'keh lekjkg] 4 tuojh 2002

जिस हबीब नहीं देख्या वो जनम्या ही नईं

राजेंद्र शर्मा

बेशक, समय के चुनाव का अपना ही महत्व था। उसके अपने ही संकेत थे। स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री वाजपेयी के लाल किले पर झंडा फहराने के अगले ही दिन से हमलों की शृंखला शुरू हो गयी। वैसे यह भी शुद्ध संयोग ही नहीं है कि हमलों की शुरूआत ग्वालियर से हुई। उसी ग्वालियर से जिसका हमारे प्रधानमंत्री के राजनीतिक और शायद साहित्यिक कैरियर के साथ भी घनिष्ठ संबंध रहा है। ग्वालियर के फौरन बाद, 18 अगस्त को होशंगाबाद में हमला हुआ। 19 अगस्त को सिउनी में। 20 अगस्त को बालाघाट में। 21 को मांडला में। और यह तो सिर्फ एक सप्ताह के हमलों की सूची है। हर जगह हमले का निशाना वही था— प्रख्यात नाट्यकर्मी हबीब तनवीर की नाट्य प्रस्तुति। हर जगह हमले करने वाले वही थे— विहिप-बजरंग दल-आर एस एस-भाजपा यानी संक्षेप में संघ परिवार। और हर जगह हमले के तर्क वही थे— यह हमारे धर्म और संस्कृति पर हमला है और यह हम बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेंगे। बर्दाश्त नहीं करेंगे— यानी नाटक नहीं होने देंगे, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े। यह दिलचस्प बात है कि ये हमले अगस्त के आखिर तक भी जारी थे, जब भाजपा की अतिरिक्त रूप से भगवा नेता सुश्री उमा भारती ने वाजपेयी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर बहस में संसद में आरोप लगाया था कि केसरिया पलटन के हमलों के शिकार नाट्य प्रदर्शनों के जरिए, मध्य प्रदेश की सरकार राज्य में सांप्रदायिक तथा जातिवादी आग भड़का रही है! यहां तक कि छुट-पुट तौर पर ये हमले सितंबर के मध्य में तब तक भी चल ही रहे थे, जब कवि की अपनी टोपी पहनकर हमारे प्रधानमंत्री न्यूयार्क में, भारतीय साहित्य सम्मेलन में हिस्सा ले रहे थे, जिसका आयोजन साहित्य अकादमी के सहयोग से, भारतीय विद्या भवन ने किया था। लाख दुर्भाग्यपूर्ण होते हुए भी यह स्वाभाविक ही है कि देश के सबसे प्रतिष्ठित रंगकर्मियों में गिने

जाने वाले हबीब तनवीर के नाटकों पर इन सुनियोजित हमलों के विरोध की कोई कमजोर सी भी आवाज, अमरीका में भारतीय साहित्य के इस मेले में सुनाई नहीं दी। यह और भी स्वाभाविक है कि 'अपने' ग्वालियर से शुरू हुई हमलों की इस शृंखला में प्रधानमंत्री को ध्यान देने लायक कुछ भी नहीं लगा— न देश की कार्यपालिका के प्रमुख के नाते, न एक कवि के नाते और न ही नागरिक के नाते। फिर भी, यह उनकी कृपा रही कि उन्होंने अपनी ही पार्टी द्वारा मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री पद की दावेदार के रूप में पेश की जा रही सुश्री उमा भारती की तरह, हमले के शिकार को ही अपराधी साबित करने की कोशिश नहीं की। ऐसी उदारता वा कवि मन की!

जरा एक झलक इन हमलों की भी दिखा दें क्योंकि आम तौर पर मीडिया ने समुचित रूप से इनकी खबर देना जरूरी ही नहीं समझा है। 20 अगस्त की एक अंग्रेजी अखबार की रिपोर्ट का हिंदी रूपांतर कुछ इस प्रकार होगा: 'भाजपा विधायक (इटारसी) सीताराम शर्मा की अगुआई में संघ परिवार के उपद्रवी दस्तों ने, होशंगाबाद के एक प्रेक्षागृह में मंच पर कुर्सियां और सड़े अंडे फैंके। ''पोंगा पंडित-जमादारिन'' का प्रदर्शन शुरू होने के कुछ ही मिनट में यह हो गया...जब पुलिस ने उपद्रवियों को बाहर भगा दिया, उनमें से कुछ बिजली के खंभे पर चढ़ गए और उन्होंने प्रेक्षागृह की बिजली काट दी। नाटक बीच में छोड़ना पड़ा...(इससे पहले 16 अगस्त को ग्वालियर में) प्रेक्षागृह में जिला कलैक्टर तथा पुलिस सुपरिंटेंडेंट की मौजूदगी भी उपद्रवियों को नहीं रोक पायी। नारे लगा रहे गड़बड़ी फैलाने वालों पर जब कलैक्टर की चेतावनी का भी कोई असर नहीं हुआ, पुलिस बल ने जो वहां काफी संख्या में मौजूद था, उपद्रवियों पर लाठियां खड़कायीं और उन्हें खदेड़ कर बाहर कर दिया।' कमोबेश यही कहानी मध्य प्रदेश के उन दर्जनों केंद्रों में दोहरायी गयी, जहां स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हो रहे आयोजनों की शृंखला में, मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग के तत्वावधान में, हबीब तनवीर के छत्तीसगढ़ी नाट्य ग्रुप **नया थिएटर** को नाटक खेलने थे। इस कार्यक्रम में दो नाटक प्रस्तुत किए जा रहे थे—''जिस लाहौर नहीं देख्या वो जनम्या ही नईं'' और ''पोंगा पंडत-जमादारिन।'' पहला नाटक विख्यात हिंदी कथाकार असगर वजाहत का है, जिसकी सैकड़ों प्रस्तुतियां नया थिएटर ने पिछले दसेक वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों में की हैं। एक प्रकार से देश के विभाजन तथा उसके बुनियादी तर्क का ही नकारने वाली, एक वृद्धा की कहानी के माध्यम से सांप्रदायिकता की संस्कृति पर प्रहार करने वाला यह नाटक बेशक संघ परिवार को हजम नहीं हो रहा था। फिर भी, इस चक्र में हमले तथा कुप्रचार निशाना खासतौर पर ''पोंगा पंडित-जमादारिन'' को बनाया जा रहा था।

बेशक, इस नाटक का निशाना बनाया जाना संघ परिवार की संस्कृति के चरित्र की और भी अच्छी तरह से पहचान करा देता है। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू है इस संस्कृति का वास्तविक भारतीय परंपरा तथा जीवन से दूर-दूर तक कोई नाता न होना। प्राचीनता का

झंडा उठाने के अपने सारे स्वांग के बावजूद, वास्तव में यह एकपूरी तरह से बाहरी और वास्तव में एक आधुनिक प्रतिगामी गढ़ंत है, यह ''पोंगा पंडित'' पर संघ परिवार के हमले से जितनी अच्छी तरह से रेखांकित होता है, ऐसे ही दूसरे कई हमलों से शायद नहीं होता होगा। यह गौरतलब है कि उक्त नाटक परंपरागत अर्थ में न तो हबीब तनवीर की रचना है और न ही उनके **नया थिएटर** की। वास्तव में इस नाटक की पहली रचना तीस के दशक में, दो छत्तीसगढ़ी ग्रामीण अभिनेताओं, सुखराम और सीताराम ने की थी। उसी के बाद से पिछले सात दशकों में छत्तीसगढ़ी नाट्यकर्मियों की एक के बाद एक, विभिन्न पीढ़ियां यह नाटक खेलती आयी हैं और इस क्रम में इस नाटक को, जो मूलत: एक प्रहसन है, अपने समय के तकाजों के हिसाब से बदलती तथा विकसित करती आयी हैं। वास्तव में हबीब तनवीर के नया थिएटर में, जो (छत्तीसगढ़ी) लोक नाट्य परंपरा और आधुनिक नाट्य कला का अद्भुत तथा बहुत ही दुर्लभ संगम है, इस ग्रुप में शामिल हुए छत्तीसगढ़ी लोक अभिनेताओं की अपनी विरासत के रूप में यह नाटक आया है। यह ग्रुप भी साठ के दशक से तो इस नाटक को देश के विभिन्न हिस्सों में और तरह-तरह के दर्शक समूहों के बीच खेलता ही आया है। कहने की जरूरत नहीं है कि इस प्रहसन की सैकड़ों प्रस्तुतियों में किसी को भी न तो इसमें कुछ भी आपत्तिजनक लगा और न ही किसी को इसमें कुछ भी हिंदू धर्म तथा संस्कृति पर आघात करने वाला लगा।

लेकिन, संघ परिवार की हिम्मत और हौसले बढ़ने के साथ और उसके खुलकर हमलावर होने के साथ सब कुछ बदल गया। 1992 में बाबरी मस्जिद ढ़हाए जाने के बाद, हबीब तनवीर के ग्रुप की ''पोंगा पंडित-जमादारिन'' की नाट्य प्रस्तुति पर हमले के साथ ही, संघ परिवार ने जैसे संस्कृति के क्षेत्र में अपनी लाठी की ताकत का इस्तेमाल शुरू करने का सार्वजनिक एलान किया। संयोग से, इसकी शुरूआत भी ग्वालियर से ही हुई थी। संघ परिवार ने एक ओर अगर हबीब तनवीर के खिलाफ अपना हमलावर अभियान देश में ही नहीं विदेश तक में जारी रखा, वहीं दूसरी ओर इन दसेक वर्षों में भगवा गिरोहों ने नाटक, सिनेमा, कविता, कथा, पेंटिंग, मीडिया, पाठ्य पुस्तक, समाज वैज्ञानिक अध्ययन आदि, सभी सृजन रूपों व अभिव्यक्तियों पर अपनी भगवा लाठी चलायी है। एम एफ हुसैन की सरस्वती, दीपा मेहता की अधूरी रह गयी फिल्म वाटर, गुलाम अली के गायन कार्यक्रम, इस लाठी के कुछ सबसे चर्चित शिकारों में से हैं। इससे पहले मध्य प्रदेश में ही प्रसिद्ध हिंदी कथाकार उदय प्रकाश की कहानी ''और अंत में प्रार्थना'' की नाट्य प्रस्तुति को भी इसी तरह संघ परिवार के हमले का निशाना बनाया गया था। साफ है कि यह मामला किसी एक हमले का या किसी एक कृति पर हमले का न होकर, बढ़ती हुई फासीवादी सांस्कृतिक तानाशाही का है। ''पोंगा पंडित'' पर हमला बताता है कि यह हमला, हमारी परंपराओं तथा संस्कृतियों में जो कुछ स्वस्थ्य तथा जन-स्वीकृत है, उस सब के खिलाफ है। इस तरह जिस हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति को थोपने की मुहिम चलायी जा रही है, उसका

न तो अधिकांश हिंदुओं के धर्म से कुछ संबंध है और न अधिकांश भारतवासियों की वास्तविक संस्कृति से।

इस हमले के अपने अनेक दूसरे अर्थ भी हैं, जो सभी एक से बढ़कर एक भयावह हैं। आखिर, पोंगा पंडित–जमादारिन'' को हमले का निशाना बनाने के लिए अचानक, संयोग से ही नहीं चुन लिया गया है। इस चुनाव के दो पहलू हैं और दोनों ही इस हमले के चरित्र को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। पहला पक्ष, इस हमले के लिए एक ऐसे नाटक के चुने जाने से संबंध रखता है जो, जैसाकि नाम से ही स्पष्ट है, पोंगा पंडितों का मजाक बनाता है और वह भी ''जमादारिन'' की जगह पर खड़े होकर। अचरज की बात नहीं है कि संघ परिवार को इसमें 'हिंदू धर्म' और 'भारतीय संस्कृति' पर हमला दिखाई दिया है। संघ परिवार का संस्कृति के साथ संबंध मूलत: एक राजनीतिक तथा वास्तव में एक प्रतिगामी राजनीति का संबंध है, जो वास्तव में अधिकांश सांस्कृतिक सृजन के प्रति शत्रुता के ही रूप में सामने आता है। जैसे एक बार फिर उसी रिश्ते का सबूत पेश करते हुए, संघ परिवार के मंझले स्तर के ज्यादातर नेताओं ने उस नाटक को देखा ही नहीं था, जिसे बाकायदा एक संगठित अभियान चलाकर हमलों का निशाना बनाने का वे नेतृत्व कर रहे थे। फिर भी, उन्हें अच्छी तरह से पता था कि उनके निशाने पर क्या है! ***इंडियन एक्सप्रैस*** की (20 अगस्त की) एक रिपोर्ट बताती है: 'जब उनसे पूछा गया कि (नाटक में) आपत्ति किस बात पर है, उन्होंने (भाजपा के मध्य प्रदेश के संगठन महासचिव, कप्तानसिंह सोलंकी ने) जहां यह स्वीकार किया कि उन्होंने नाटक नहीं देखा है, वहीं कहा कि उन्हें बताया गया है कि ''एक व्यक्ति को जूते पहन कर मंदिर में घुसते हुए दिखाया गया है। एक जमादारिन को ब्राह्मण को पीटते दिखाया गया है। यह सीधे हमारी संस्कृति पर हमला है।'' विपक्ष के पूर्व–नेता गौरीशंकर शेजवार ने...पुन: जहां यह स्वीकार किया कि उन्होंने नाटक नहीं देखा है, वहीं कहा,''मुझे नाम पर ही आपत्ति है। यह स्पष्ट रूप से जाति के आधार पर विभाजन पैदा करने की इच्छा को दिखाता है। पंडितों को पोंगा नहीं कहना चाहिए।''

तीन–चौथाई सदी पहले प्रेमचंद ने अपनी कई कहानियों के जरिए एक अनोखा पात्र रचा था—मोटेराम शास्त्री। यह एक सार्थक संयोग है कि लगभग उसी समय छत्तीसगढ़ी लोक अभिनेता द्वय— सुखराम और सीताराम ने 'पोंगा पंडित' रचा था। इन छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों को इसके लिए किस तरह का विरोध झेलना पड़ा होगा हम नहीं जानते हैं, बहरहाल प्रेमचंद को काफी हमलों का सामना करना पड़ा था। उन पर ब्राह्मणों के खिलाफ घृणा फैलाने का आरोप लगाते हुए, उन्हें ''घृणा का प्रचारक'' तक बताया गया। मध्य प्रदेश के पूर्व–विपक्षी नेता, भाजपा के गौरीशंकर शेजवार आज करीब–करीब वैसी ही भाषा बोल रहे हैं। प्रेमचंद ने इन हमलों का जवाब, ''साहित्य में घृणा का स्थान'' लिखकर दिया था, जो इसका एलान था कि जो भी गलत, बुरा, अन्यायपूर्ण है, उसके खिलाफ आवाज उठाना किसी भी रचनाकार का मौलिक कर्तव्य है। हबीब तनवीर ने भी मध्य प्रदेश

में अपने नाटकों का प्रदर्शन तमाम हमलों के बावजूद जारी रख, प्रेमचंद के उसी एलान को दुहराया है। इसी क्रम में राजधानी में 9 अक्टूबर को आयोजित एक गंभीर तथा संकल्पपूर्ण कार्यक्रम में, हबीब तनवीर तथा उनके नया थिएटर ने ''पोंगा पंडित-जमादारिन'' के प्रदर्शन के साथ यह संपल्प दोहराया। इसी मौके पर जारी एक संयुक्त वक्तव्य के जरिए, राजधानी के पचासों प्रतिष्ठित कलाकारों, लेखकों, बुद्धिजीवियों तथा अन्य संस्कृतिकर्मियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने ऐसा ही एलान किया : ''कलाकारों, लेखकों तथा साथी नागरिकों के नाते हम हबीब तनवीर पर हमला करने वालों का मुकाबला करेंगे, अपने काम में— रंगमंच पर, मीडिया में, सड़कों पर। और हम यह वैसी ही स्पष्ट तथा जोरदार आवाज में करेंगे, जैसी आवाज हबीब तनवीर के नाटकों की है।'' यानी प्रेमचंद और सुखराम-सीताराम अपने सृजनकर्म से जो लड़ाई लड़ रहे थे, आज भी जारी है। बेशक, यह तसल्ली की बात है कि प्रेमचंद के पक्ष की आवाज आज भी न सिर्फ मौजूद है बल्कि ऐसी आवाज उठाने वाले हबीब तनवीर जैसे इक्का-दुक्का लोग ही नहीं हैं। सृजनकर्मियों की बहुत बड़ी फौज इसमें शामिल है। लेकिन, इस बीच पूरी तीन-चौथाई सदी गुजर भी तो चुकी है! संघ परिवार का यही सांस्कृतिक योगदान है। वह उन प्रतिगामी दावों को दोबारा उछाल रहा है, जिनका निपटारा स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में कमोबेश निर्णायक रूप से किया जा चुका था। अपने सारे राजनीतिक पैंतरों के बावजूद, संघ परिवार सवर्ण प्रभुत्व की संस्कृति का सबसे मुखर तथा सबसे बेशर्म पैरोकार है। और इस तीन-चौथाई सदी में यह पैरोकारी, खुले आम हिंसा के जरिए अपनी बात थोपे जाने तक पहुंच चुकी है।

बहरहाल, इस सवर्ण प्रभुत्व की खुली पैरवी करना अगर सात-आठ दशक पहले प्रेमचंद पर घृणा के प्रचार के आरोप लगाने वालों के लिए संभव नहीं था तो आज, जब अपनी सारी सीमाओं व उलझनों के बावजूद, दलित जागरण काफी आगे पहुंच चुका है, खुले तौर पर ऐसा करना तो और भी मुश्किल था। संघ परिवार ने अपना प्रिय सांप्रदायिक पैंतरा चलते हुए, इसके लिए हबीब तनवीर के नाम और धार्मिक पहचान की ओट ली है। नारों में और धमकियों में बार-बार यह बात दोहरायी गयी है कि हबीब तनवीर को, चूंकि वह मुसलमान हैं, 'पोंगा पंडित' की आलोचना करने का अधिकार नहीं है! चूंकि बुनियादी चिंता कहीं न कहीं सवर्ण प्रभुत्व की रक्षा की है, इसलिए संघ परिवारियों ने यह दलील देते हुए भी इस सचाई की रत्तीभर परवाह नहीं की है कि पोंगा पंडित की जिस आलोचना को उन्होंने हमले का निशाना बनाया है, हबीब तनवीर की नहीं बल्कि मूलत: दो छत्तीसगढ़ी ग्रामीण अभिनेताओं, सुखराम और सीताराम द्वारा पेश की गयी आलोचना है। फिर भी इस दलील के सांस्कृतिक निहितार्थ भयावह हैं कि किसी बुराई की आलोचना करने के लिए, संबंधित समुदाय या समूह से ही होना एक अनिवार्य शर्त है। बेशक, कट्टरपंथी ताकतों की यह मांग कोई नयी नहीं है। लेकिन, सभ्य समाज द्वारा इस मांग का ठुकराया जाना भी कोई नया नहीं है। और इसके कारण स्वत:स्पष्ट हैं।

हमारे जैसे भिन्नताओं के संग–साथ से बने समाज में, इस तरह की शर्त सबसे पहला काम तो उस सारी की सारी रचनाशीलता की ही हत्या का करेगी, जो इन भिन्न पहचानों के बीच आपसी लेन–देन और अंतर्क्रियाओं को अभिव्यक्त करती है। गंगा–जमुनी संस्कृति के हमारे देश के लिए यह परंपरा कितनी महत्वपूर्ण है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि यह वास्तव में कबीर से निकली उस पूरी की पूरी धारा को ही अवैध बना देना है, जो धार्मिक विभाजनों के ऊपर खड़े होकर बोलती है। वास्तव में हिंदू और मुस्लिम जैसी अखिल भारतीय सांप्रदायिक पहचानों के संदर्भ में तो, कथित आधुनिक युग से पहले की पूरी की पूरी भारतीय परंपरा ही इन धार्मिक विभाजनों में न अंट सकने वाली परंपरा है। इसी के दूसरे पक्ष के रूप में यह संतों–पीरों से लेकर उन तमाम महान रचनाकारों को खारिज कर देना है जिनकी बात, धर्म–आधारित विभाजनों के आर–पार लोगों तक जाती है। यही वह साझा है जिसकी हत्या कर, संघ परिवार अपने प्रस्तावित सांप्रदायिक विभाजन का, संस्कृति और इतिहास, सभी में अतीत में प्रक्षेपण करना चाहता है। स्वाभाविक ही है कि सृजनकर्मियों के संयुक्त वक्तव्य में इस खतरे की ओर अलग से ध्यान खींचा गया है कि ''इस तरह के हमलों के जरिए वे यह धारणा थोपने की कोशिश कर रहे हैं कि 'मुस्लिम कलाकारों' को हमारे जटिल सामाजिक ताने–बाने के सिर्फ 'मुस्लिम' रंगों को ही प्रस्तुत करने या उनकी आलोचना करने का अधिकार है।'' संघ परिवार का निशाना हमारे साझे जीवन का, हमारी सांस्कृतिक एकता का यही तत्व है, यह एक ओर अगर हबीब तनवीर तथा मकबूल फिदा हुसैन जैसे भारतीय सर्जनात्मकता की पहचान कराने वाले कलाकारों पर उनके हमलों से साबित होता है, तो दूसरी ओर गुजरात के सांप्रदायिक नरसंहार में उन्हीं ताकतों द्वारा वली दकनी का मजार ढहाए जाने से भी साबित होता है। इसी का सबूत बाबरी मस्जिद का ढहाया जाना भी है और संघ के प्रकाशनों में ताज महल, कुतुब मीनार, लाल किला आदि सब को हिंदू इमारतें बताया जाना भी।

इन हालात में रचनाकारों, कलाकारों तथा संस्कृतिकर्मियों के संयुक्त वक्तव्य में हबीब तनवीर के सांस्कृतिक महत्व का रेखांकन करना भी जरूरी समझा गया है। वक्तव्य यह याद दिलाता है कि, '' पिछले अनेक वर्षों में हबीब तनवीर के नाटकों ने एक स्वस्थ ग्रामीण आवाज और आधुनिक विश्व दृष्टि का योग स्थापित किया है। यह बहुत ही खुशकिस्मती की बात है कि हमारे बीच एक ऐसा कलाकार है जो हमारी पारंपरिक विरासत में से बेहतरीन का चयन करता है और उसका प्रयोग कर हमारी आज की सांस्कृतिक जरूरतों, समस्याओं तथा प्रश्नों को संबोधित करता है। बेशक, अपनी कला की वर्षों की साधना तथा जीवन की अविराम शिक्षा से, हबीब तनवीर ने यह मुकाम हासिल किया है। शुरूआती नाटक ***आगरा बाजार*** से लेकर बहु–चर्चित ***मिट्टी की गाड़ी*** तक, हबीब तनवीर और उनके नया थिएटर के नाटकों में भाषा, हास्य, गायन और छत्तीसगढ़ी किसानों तथा आदिवासियों की कहानियों का उत्सव हमें देखने को मिलता है। इससे

सृजित होने वाली सर्जनात्मक जीवंतता का योग, अनोखे आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य के साथ होता है। दूसरे शब्दों में हबीब तनवीर का भारत न तो रूमान का भारत है और न ही कट्टरता, संकीर्णता का भारत है। इसके साथ ही उनका भारत ऐसा आत्मतुष्ट, संतुष्ट भारत भी नहीं है, जिसका काम आसान जवाबों से तथा चीजों पर लेबल लगाने भर से चल सकता हो।

''स्वाभाविक तथा तार्किक यही है कि ऐसे सर्जक को हम कृतज्ञता के साथ सराहें तथा उससे सीखें। वास्तव में नया थियेटर के नाटकों का ठीक ऐसा ही स्वागत होता आया है और यह भारत के तथा दूसरे देशों के भी शहरों की ही बात नहीं है बल्कि यही सच उस ग्रामीण भारत का भी है, जिससे उनका नाट्यकर्म प्रेरणा तथा ऊर्जा ग्रहण करता है। लेकिन, जैसे इसी का सबूत देने के लिए कि हबीब तनवीर के नाटक जिस कट्टरता पर प्रहार करते हैं, वह भी हमारे समय की एक वास्तविकता है, हबीब तनवीर तथा उनके नाटकों को हमले का निशाना बनाया जा रहा है।''

और अंत में प्रार्थना की जगह एक सवाल। किस भारत और किस कविता का प्रतिनिधित्व करता है वह प्रधानमंत्री जो हबीब तनवीर जैसी जिंदा किंवदंती के सृजन के खिलाफ 'अपने' परिवारीजनों के हमलों को अनदेखा कर सकता है? क्या धृतराष्ट्र की कोई काव्य परंपरा भी है!

यह था पोंगा पंडित

हबीब तनवीर

भाजपा और संघ परिवार को मेरे साथ क्या बैर हो सकता है? मेरी सांस्कृतिक गतिविधियों में बाधा वो क्यों डालते रहे हैं? आप कहेंगे 'पोंगा पंडित उर्फ जमादारिन' के कारण! लेकिन 'पोंगा पंडित' तो छुआछूत की बुराइयों को उभारता है। यह काम तो गांधीजी ने भी किया था। फिर 'पोंगा पंडित' में कोई अधर्म की बात है ही नहीं, बल्कि असल मायने में यह नाटक धार्मिक भावनाओं को बहुत अच्छे स्थान पर रखता है। क्या संघ परिवार इसलिए इस नाटक का विरोध करता है, इसमें धर्म-ज्ञान की बातें एक शूद्र, यानि एक जमादारिन करती है? या फिर शायद इसलिए कि इसमें एक लोभी पंडित की खिल्ली उड़ाई गई है? फिर तो हमारे पुरोहितों की सारी परम्परा को ही गलत कहना पड़ेगा। आप कहेंगे कि बेचारे राजनीति करने वाले लोग हमारे प्राचीन भारतीय साहित्य और हमारी संस्कृति को क्या जानें? इसमें सच्चाई की कुछ झलक अवश्य है। फिर भला वो प्राचीन भारतीय संस्कृति का दम क्यों भरते हैं? आप कहेंगे आखिर सारे राजनीतिक नेता गांधी जी का नाम लेते हुए गांधी जी की विचारधारा के विरुद्ध काम क्यों करते हैं?

मैं बार-बार कहता रहा हूं कि नाटक 'पोंगा पंडित' न तो मेरा लिखा है, न मेरा निर्देशित। इस पर आप शायद यह कहें कि अर्धसत्य तो सारी राजनीतिक पार्टियों की पालिसी का आधार है, लेकिन सच बात तो यही है कि यह नाटक मेरे होश संभालने के पहले से चला आ रहा है और छत्तीसगढ़ के गांव-गांव में दिखाया जा चुका है। हजारों लाखों की संख्या में हिन्दू समाज इस नाटक को पिछले लगभग छह-सात दशक से देखता और स्वीकार करता रहा है। इसे देखकर आनंद लेता रहा है और उसमें से किसी एक व्यक्ति ने भी आज तक इसमें कोई आपत्तिजनक बात महसूस नहीं की है। शायद जवाब कुछ लोग यह दें कि गांव वाले क्या जानें? वो तो होते ही हैं गंवार यानि मूरख। लेकिन इस नाटक पर

संघ परिवार के हमलों के बाद भी, जब-जब उनकी मौजूदगी से जरा हटकर, यह नाटक बस्तियों, देहातों या शहरों में दिखाया जाता रहा है कहीं भी कोई ऐसी वैसी घटना देखने में नहीं आई।

फिर एक यह बात भी सच है कि 'पोंगा पंडित' पर हमलों से भी पहले, मेरे नाटक संघ परिवार के हमलों का शिकार रहे हैं। हो सकता है कि मेरा नाम ही गलत हो, लेकिन इस दलील में भी कोई खास दम नहीं है। इसलिए कि मेरे जैसे नाम वाले कुछ लोगों को तो भाजपा अपने दल में स्वीकार करती ही रहती है।

पर एक बात यह भी सोचता हूं कि मेरे नाटकों, कविताओं की रचना और प्रस्तुतियां जो एक बहुत लम्बे-चौड़े काल में फैली हुई हैं, इनमें ऐसी कौन सी आपत्तिजनक बात संघ परिवार को दिखाई दी है? आखिर संस्कृत के बहुतेरे नाटक, शेक्सपियर, मोलियर, ब्रेख्त के नाटकों के अनुवाद, लोक-शैली के प्रसिद्ध नाटक ही तो मैं प्रस्तुत करता रहा हूं। 'देख रहे हैं नैन' जैसे नाटक की तैयारियों में क्यों बाधा डाली गई? लेकिन हो सकता है कि मेरी विचारधारा जो मेरे नाटकों में नहीं, मेरे पब्लिक लेक्चरों में स्पष्ट रूप से प्रकट होती रही है इसमें कुछ उभरकर आ रहा है। इस पर आपत्ति हो तो इस प्रकार का मतभेद बहुत से सामाजिक और राजनीतिक काम करने वालों के भाषणों में मिलता है। इनका जवाब तो आमतौर पर शब्दों में दिया जाता है। ईंट पत्थरों से नहीं दिया जाता है।

बाबरी मस्जिद तोड़े जाने से भी पहले भाजपा ने मेरे थिएटर के काम में बाधा डालना शुरू कर दिया था। मैं आदिवासियों और नया थिएटर के ग्रामीण कलाकारों के साथ बस्तर में एक वर्कशाप कर रहा था। वहां भारी विरोध हुआ। ज्यादा गड़बड़ हुई, तो हम लोगों ने जगह छोड़ने का ही फैसला किया। वहां से डोंगरगढ़ चले गए, इस इरादे से कि 'देख रहे हैं नैन' की रिहर्सल अब वहीं करेंगे।

डोंगरगढ़ में शीतलामाई का मंदिर है। यह मंदिर धीरे-धीरे तरक्की करता रहा है। मैं वहां 1973 से जाता रहा हूं। जब मैं शीतला माई के मंदिर में अपनी मंडली लिए पहुंचा, तो धर्मशाला में बैगन बाई ने सबको खुशी-खुशी ठहराया। मंदिर की इसी फजा के कारण ज्वारा तार की धुन में 'देख रहे हैं नैन' के लिए मैंने उनके मुख्य गीत की रचना की।

अब रही 'पोंगा पंडित' की बात, तो इस नाटक पर संघ परिवार के हमले बहुत तेज हो गए और बहुत लम्बे समय तक खिंचे। उन्हें अपने ढंग की राजनीति करने का एक झूठ, एक बहाना हाथ आ गया। राजनांदगांव के ग्रामीणों ने 1935 में जब इस नाटक की कल्पना की थी, तो इसका नाम 'पोंगा पंडित' ही रखा था। मैंने इसे 1960 में पहली बार देखा। नाटक मुझे बहुत पसंद आया और जब दो एक साल बाद मैंने इसे लोगों को दिखाना शुरू किया तो इस नाटक का नाम 'जमादारिन' रख दिया, क्योंकि नाटक का धार्मिक विषय उसी पात्र के माध्यम से विकसित होता है। 6 दिसम्बर, 1992 में जब संघ परिवार ने बाबरी मस्जिद तोड़ दी और उसके नतीजे में हिन्दुस्तान में चारों तरफ बलवे शुरू हो गए, मैंने

दिसम्बर, 1992 के आखिरी हफ्ते में पहले जेएनयू के पार्क में और 30 दिसम्बर की दोपहर को लॉ फेकल्टी देहली यूनिवर्सिटी के मैदान में सैकड़ों छात्र-छात्राओं के सामने इस नाटक को पेश किया। दूसरे दिन इंडियन एक्सप्रेस के एडीटोरियल पन्ने पर विरोध छपा, जिसे आरगेनाइजर ने भी छापा और मुझे सलमान रुश्दी जैसा बता दिया गया। कोलकाता तक में विरोध की खबरें छपीं।

उसी साल 1993 की गर्मियों में हमें इंग्लैंड से बुलावा आया कि अपने चार नाटक लेकर आओ। आठ शो लीसेस्टर और आठ ग्लासगो में तय हुए थे। लीसेस्टर के हे मार्केट थिएटर के डायरेक्टर जॉन ब्लैक मूर ने मुझे फोन किया कि यहां हिन्दुस्तानी लोगों की एक संस्था आपके नाटक 'जमादारिन' के सिलसिले में आप पर आरोप लगा रही है कि आप हिन्दू विरोधी हैं। विरोध का सिलसिला चला, पर लंदन में नाटक बहुत सफल रहे। वहां मैं 'चरणदास चोर', 'गांव का नाव सुसरार मोर नाव दामाद', 'मिट्टी की गाड़ी' और 'देख रहे हैं नैन' लेकर गया था।

1993 में बाबरी मस्जिद की तोड़फोड़ की पहली सालगिरह पर अयोध्या में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें और दूसरे नाटकों में 'पोंगा पंडित' भी शामिल था। हजारों दर्शक जमा थे। सारी रात प्रोग्राम चलता रहा। लोग सारी रात आराम से देखते रहे। वहां से देहली आकर श्रीराम ऑडीटोरियम के बेसमेंट में 'पोंगा पंडित' प्रस्तुत किया।

देहली के तुरंत बाद नाटक ग्वालियर में मंचित हुआ। यहां पहली बार संघ परिवार ने अपने प्लान के अनुसार नाटक पर हमला आरंभ किया। नाटक के बीच में पीछे की सीटों से कुछ पत्थर मंच पर आए। नाटक बंद हो गया। बाद में पुलिस आ जाने पर उसका प्रदर्शन हुआ।

इस नाटक के 25 शो छत्तीसगढ़ के 25 देहातों में हम दिखा चुके थे। वहां के सयाने लोग नाटक से परिचित थे। उनमें से कुछ ऐसे लोग भी मिले, जो उन पुराने प्रसिद्ध लोक कलाकारों को जानते थे, जो इस नाटक को पहले प्रस्तुत करते रहे हैं। ऐसे लोग यह नाटक एक से ज्यादा बार देख चुके थे। फिर भी आए और देखकर खुश हुए। नौजवानों ने भी आनंद लिया। इसके बाद मध्यप्रदेश आए। ग्वालियर के आसपास पहले छह शहरों में सीहोर, देवास, राजगढ़, शिवपुरी, गुना, मुरैना में शांतिपूर्वक शो हो गए। सातवां शहर ग्वालियर था। यहां फिर विरोध हुआ। बस! अब हमलों का सिलसिला शुरू हो गया। पार्टी आदेश था कि इस नाटक को न होने दिया जाए। चुनांचे इस घटना के बाद जहां-जहां हमने नाटक प्रस्तुत किया, वहां या तो हमले अलग-अलग दिलचस्प रूप में होते रहे या तनाव बना रहा।

रायसेन में सुन रखा था कि गड़बड़ जरूर होगी, मगर नहीं हुई। लेकिन होशंगाबाद पहुंचने पर फिर विरोध हुआ। सिवनी में शो बीच में रुकवा दिया गया। बालाघाट में शो

कामयाबी से हुआ।

मेरे दिल में भी एक विचार था, जो मुझे सताने लगा। मैं सोच रहा था कि आर्ट और कल्चर का काम, वो भी पुलिस के पहरे में? मुझे इन दो चीजों में एक भयानक टकराव महसूस होने लगा। इन विचारों में घिरे हम मण्डला की तरफ बढ़े जा रहे थे। अगला शो मण्डला में आयोजित था। जैसे ही हमारी गाड़ी मण्डला जिले की सरहद में घुसी और हम मण्डला के पास वाले एक गांव में पहुंचे तो मुझे एक ख्याल आया। कलाकार संघ परिवार के आतंक से परेशान हैं। हम पुलिस के संरक्षण से भी परेशान हैं।

पोंगा पण्डित/जमादारिन का पाठ

कोरस–

विराजत हो ही भई

का होथे पढ़े ले ऐसे पोथी अऊ पुरान गा

जाने नहीं तेहा रथे कामा भगवान गा

नर में नारायण हावै भेवा करत हस

जान सुन के पथराव के तेंय सेवा करत हम कथा पोथी बाचे ले का

ऐती वो नाच ले का

का होथे स्थिर नइ तोर इमान

तही बीच डारे पंडित सबों में फरक है तही उर देखाए हस सरग अरु नरक के

तोर मन के भीतर काहे वा वा वा

सिरतोन चरित्तर काहे वा वा वा

जानत हावे लइका अऊ सियान

पंडित – जो है सो कलजुग के विषय में छोटे–छोटे बच्चे लोग खिल्ली उड़ाते हैं। जो है सो कलजुग के विषय में स्नान ध्यान के मारे पूरे शरीर घुल–घुल के पतरे होते जा रहे हैं बेटा।

भकला– हप्ता में एक रोज नहाना चाहिए महराज

पण्डित – अब देखो ना भला ना करे पूजा पाठ, ना करे कभू दान भूखन मरे पोंगवा पंडित, देखो आज काल का ज्ञान

भकला– देखे भगवान, जो देते हैं उसी को करें बदनाम, हे भगवान गरीब के साथी जिसको कभी जूता नहीं मिले उसको चढ़ाते हैं हाथी, क्या अमीर, क्या गरीब, एक पूत बिना तरस रहे हैं सबके नसीब और इधर देखों तो ये हाल है, जय हो महराज की, जय हो महराज जय हो।

पण्डित तू किसका बच्चा है रे?

भकला– उसको तो आप जानते हो महराज। मेरे घर आते जाते नहीं थे महाराज।

पण्डित मैं आता जाता था? लगाऊंगा एक झापड़। बाम्हन बैरागी को बदनाम करता है। मैं क्यों आऊंगा तेरे घर?

भकला– जब तुम आते थे, मेरे पापा घर में नहीं रहते थे, मैं दरवाजे में तुमको रोक लेता था, तब तुम मेरे को टॉफी देते थे।

पण्डित – अच्छा–अच्छा जब छोटे थे तब की बात कर रहे हो बेटा। अरे मैं भूल गया बेटा बहुत दिन हो गया ना, ले ना बता क्या नाम है? तेरे को अपने बाप का नाम नई मालूम रे?

भकला– मैं दानियां का बच्चा हूं महराज।

पण्डित – अच्छा दानियां का बेटा है रे। तेरा बाप जब जिंदा था न तो खूब दान–दक्षिणा दिया करता था, बिचारा मरके देवता हो गया।

भकला– हां महराज मरने से पहले मेरे बाप ने मुझे चेताया था कि जब मैं मर जाऊंगा तो मेरे संगवारी महराज को बुला लेना और कथ नारायण का सट्टा करा लेना।

पण्डित – मत कह, तेरे को कहना नई आता। अरे उसको सत्य नारायण की कथा कहते हैं बेटा। अरे बेटा सरहा नाम शरीर, जो मरता है वो सरता है, उसी को पांच नाम सुनाना है।

भकला– बस वही बात है महराज चलो (दोनों एक चक्कर गोल घूमते हैं)

पण्डित – तेरे पिताजी जब जिंदा थे ना बेटा तो खूब दान दक्षिणा दिया करते थे।

भकला– मैं उससे बढ़के हूं महराज। ले ना बातई बात में मैं अपने ठाकुर को लाना भूल गया।

भकला– ए ददा, महराज सयाने लोग कहते हैं कि अपने आंख में नींद आती है दूसरे के आँख में नई आती। जमाना खराब है, नौकर चाकर पे विश्वास नई करना चाहिये।

पण्डित – सही बात है बेटा।

भकला– सही बात है ना? जाव अपने ठाकुर को भेजना।

पण्डित – तू किस ठाकुर की बात कर रहा है बेटा?

भकला– अरे महाराज ठाकुर माने मालिक, मालिक माने ठाकुर।

पण्डित – मैं वो ठाकुर मालिक की बात नई कर रहा हूं बेटा, मैं मूर्ति की बात कर रहा हूं। मेरे घर में जाना और महराजिन से कहना, वो दे देगी।

भकला–महराजिन से कहूंगा, महराज कह रहे हैं दे दे। तो वे दे देंगी?

पण्डित – हव जा (भकला जाता है) ऊं नमो नमो, भगवते वासुदेवाय नमः जलेर विष्णु फलेर विष्णु शाखा रुद्र काय नमः।

भकला– महराज कहां रखूं इसको?

पण्डित – यहां पर रख दे बेटा आसन बिछा, ऊं नमो नमो भगवते वासुदेवाय नम॰ जलेर...

(भकला आसन बिछाकर बैठता है और गुनगुनाता है)

भकला–दिल मेरा, मिलने को बेकरार है, कहो ना प्यार है। कहो ना...

पण्डित – (गुस्से में भकला को लात मारता है) प्यार है! गद्हा कहीं के। आसन बिछाने को कहा तो अपना ही बिछा के बैठ गया, और हमको प्यार करना सिखा रहा है, अरे प्यार करना है तो भगवान से प्यार कर।

भकला–मैं समझा मेरे लिए बिछाने को कह रहे हैं।

पण्डित (अपनी कथा पोथी को देते हुए ये ले और कथा को तू ही पढ़ ले।)

पण्डित – तेरे को आता है, चल हट। बेटा रे इधर आव दिया लै के आ।

(भकला जाता है और चिमनी लेकर आता है)

पण्डित – ये तो चिमनी है रे, लेम्प लेम्प।

भकला– क्या बात करते हो महराज दिया माने चिमनी, चिमनी माने दिया, मैं आपसे पूछता हूं महराज, इसको ऑफिस में ले जा के रख दो लाइट करेगा, कीचन में ले जाव लाइट करेगा, इसको सामने रखकर पढ़ो लाइट करेगा, इतनी लाइट तुमको दिखाई नहीं देता अंधे कहीं के।

पण्डित – अरे इसको भगवान के जगा में नई रखा जाता बेटा।

भकला– मैं पूछता हूं कौन सी जगा भगवान की नहीं है।

पण्डित – रख रे कंजूस। कभी हम चिमनी में कथा नहीं पढ़े हैं, आज तेरे घर में पढ़ना पड़ रहा है। चल बैठ, नहा लिया बेटा?

भकला– हां महाराज मैं तो उसी दिन से नहा लिया हूं।

पण्डित – ओ हो हो तब से नहाय हो बेटा, हटा हमको क्या करना है, जा अच्छा साफ सुथरा कपड़ा पहन के आ।

भकला– मैं तो पहना हूं, महराज।

पण्डित – क्या पहना है रे दिखा?

भकला– ये देखो, ये पेंट है ये बनियाइन, ये बाप का कोट।

पण्डित – ये तेरे बाप का कोट है, इधर आ इसको अच्छा फैला के पहन, इधर कैसे टंग गया है बेटा?

भकला– ये नीचे नई आवा महराज छोटा होता है।

पण्डित – अरे छोटा नई होता है तेरे को पहनना नई आता है।

पण्डित – इधर आ मैं तेरे को बताता हूं, निकाल (निकाल के देखता है) ये तेरे बाप का-कोट है रे (हंसते हैं) अरे गद्हा ये तो पेंट है रे।

भकला– (और जोरे हंसता है) महराज का दिमाग सठिया गया है, कोट को फुल पेंट बोल रहा है।

पण्डित – आ बैठ और ध्यान से कथा सुनना।

ओम नमो भगवते वासुदेवाय, गोविंदाय नमो नमः

उठ तो (कान पकड़ के उठाता है) जूता पहन के बैठा है गद्हा कहीं के, उतार जूते को।

भकला– मैं पूछता हूं महाराज इतना सुंदर आनंद उत्सव का समय है चार भले लोग आकर बैठे हैं, ऐसे समय में जूता नई पहनूंगा तो क्या सोते समय पहनूंगा?

पण्डित – अरे बेटा भगवान की जगा जूता पहन के नई बैठते।

भकला– ये लो उतार देता हूं। (उतारकर बाजू में रख देता है।)

पण्डित – शाबास बेटा, अब ध्यान से कथा सुनो।

ओम नमो भगवते वासुदेवाय, गोविन्दाय नमो नम... तेरा ध्यान जूते ही में है रे

भकला– मैं किसी तरफ भी देखूं तुम को क्या करना है। तुम अपना ध्यान कथा में लगाओ ना।

पण्डित – अरे बेटा। तेरा ध्यान जूते में रहेगा तो मेरा ध्यान कथा में कैसे लगेगा। कथा होते तक ध्यानपूर्वक बैठो।

अमरनाथ में अमरकथा को कहीं सुनी थी पारवती ने उत्तराखण्ड में लगा के आसन बैठे हैं कैलाशपती अविनाशी। काशी उत्तराखण्ड में बसाई बैठ के गुफी में गौरा को अमरकथा सुनाई वह कथा को एक तोते के बच्चे ने सुनते ही दिया हुंकारा, शिवजी को, शिवजी कहे सब अर्थ समझाई– उठ तो, उठ तो जूता को बगल में दबाके बैठा है, गद्‌हा कहीं के, तभी तो कह रहा हूं मेरी आंख उस तरफ क्यों जाती है।

भकला– जो आदमी एक बार दूध में जल जाता है न महराज, वो छाछ को भी फूंक फूंक के पीता है।

अभी कल की बात है महराज, मैं जूता पहनकर बाजार गया था। मंदिर का घंटा बजा। ठनन। मैं तुरंत प्रसाद के लिए मंदिर के अंदर चला गया। पंडित जी मेरे को जूता पहने देखा तो कहे जूता बाहर निकाल के आव। मैं जूता बाहर निकाल दिया। अंदर गया। पंडित जी के पैर छूआ। प्रसाद दिये। उसको खाया। क्या गल्ती किया महराज?

पण्डित – ठीक किये बेटा।

भकला– मंदिर से जब बाहर आया तो क्या देखता हूं, पता नहीं किसको प्रसाद कम पड़ गया वो मेरा जूता खा गया।

पण्डित – ठीक कहता है बेटा, आजकल आदमी का ध्यान भगवान में नहीं रे। चाहे मंदिर जाव, मस्जिद जाव, गुरुद्वारा जाब, आदमी का ध्यान भगवान में नहीं रहता, खाली जूते में रहता है, ठीक है बेटा मैं देखता हूं तुम्हारे जूते को।

भकला– ठीक है महराज तुम जूता देखो मैं पढ़ता हूं

पण्डित – मैं पढ़ता हूं, गद्‌हा कहीं के।

भकला– मैं पूछता हूं महराज, हांसब , रोवब, फुलावब गालू, ये तीनों नहीं होते भुवालू। या तो हंस लो या फिर रो लो, या मुंह फुला लो, तीनों एक साथ हो सकता है?

पण्डित – नई बेटा, तीनों एक साथ नई हो सकता।

भकला– फिर जूता देखोगे या पढ़ोगे?

पण्डित – ठीक है बेटा मैं कथा पढ़ता हूं तू ध्यान से सुन, हाथ साफ कर ले बेटा (भकला थूक के हाथ पोंछता है साफ करता है) पानी ई है रे?

भकला– मेरा चीज है मैं किसी में भी साफ करूं? हाथ साफ हुआ की नई?

(जमादारिन का झाड़ू लगाते हुए प्रवेश)

जमादारिन– ये सब क्या हो रहा है महाराज?

भकला– तेरी आंख गई है, नई दिखता यहां कथनारायण का सट्टा चल रहा है।

पण्डित – चुप रे गद्हा कहीं के, इसको कहना नई आता, बेटी, यहां सत्यनारायण की कथा हो रही है।

जमादारिन– धन्य भाग हमारे, जहां सत्यनारायण की कथा हो रही है वहां हम पहुंचे हैं।

पण्डित – वाह क्या बात है बेटा सुदामा गरीब के दुख को हरने वाले भगवान कृष्ण मेरे जैसे गरीब की कैसे सुध रखते हैं।

भकला– हव महराज

पण्डित – कौन सी जातहो बेटी?

जमादारिन– हम तो सबसे उत्तम जात हैं महराज।

पण्डित – कौन से उत्तम जात हो बेटी?

जमादारिन– हम महराज, हम तो जमादारिन है महराज।

पण्डित – अरे द दा रेऽऽ अरे बेटा इधर आ रे इधर आ।

भकला– कौन सा कम्बला लाऊं महराज सफेद की काला।

पण्डित – अरे कोई कम्बल नहीं चलेगा रे

भकला क्यों महराज?

पण्डित – अरे वो जमादरिन है रे

भकला–मजादरिन है।

पण्डित – अरे जमादरिन है रे। चल आरती घुमा।

(भकला आरती लेकर स्टेज में घुमाता है)

पण्डित – अरे कहां घुमा रहा है रे।

अरे भगवान मैं आरती घुमाने को कह रहा हूं बेटा। (भकला भगवान के सामने छत्री की तरह आरती घुमाता है) कुछ निकलता है रे?

भकला– नहीं निकल रहा है, छेद छोटा है महराज।

पण्डित – गद्हा कहीं के, आरती घुमाना नहीं आता।

(आरती करके बताता है) ऐसे घुमाना चाहिए बेटा।

भकला फसी को पहले नई बताना था, लो मैं अभी घुमा देता हूं।

पण्डित – चल घुमा मैं आरती पढ़ता हूं।

पण्डित – ओम जय गनपती देवा। स्वामी जय गनपती देवा

भकला– बहुत तान पड़ता है महराज

पण्डित बहुत तान पड़ता है बेटा ये ले (टीका लगाता है) सुख्खा मइयां के पाय लागी। गद्हा कहीं के कोई काम ठीक से नई करता है, सब काम उल्टा– पुल्टा, एक बार तो छत्री जैसे घुमाया, जैसे आटा छान रहा हो, दूसरे बार में अपने ही गले को सेंक रहा है, चल आरती ले (भकला आरती लेकर जाने लगता है) अरे कहां ले जा रहा है रे आरती को।

भकला– तुम्हीं तो कहे महराज आरती लो करके।

पण्डित – अरे आरती लेना भी नई आता रे ऐसे लिया जाता है, आरती, चल पैसा चढ़ा।

पण्डित – नई बेटा पैसा तो चढ़ाना ही पड़ेगा, सुबर से चाय. नई पीया हूं रे

भकला–नई है महराज, बाप कसम नई है,

जमादारिन– हमको भी आरती दो न महराज।

पण्डित– हट तेरे नीच कहीं के बड़ी आयी आरती लेने वाली।

जमादारिन– मैं आरती मैं पैसा चढ़ाऊंगी न महराज।

पण्डित – देख बेटा, आरती पैसा चढ़ाऊंगी कह रही है।

पैसा में कुछ नई होता। चढ़ा दे बेटी, चढ़ा दे। चढ़ा दे। हट तेरे नीच कहां के। न तो इसमें चढ़ा रही न दे रही है। घेरी बेरी मेरे दिल को ललचा रही है।

जमादारिन– आरती बीच में है महराज नोट जल जाएगा।

पण्डित – अच्छा हम हटा देते हैं, छोड़ दे छोड़ दे...।

भकला–ये लो महराज।

पण्डित – जय हो, जय हो, गोपाल की जय हो।

भकला– हूंऽऽ देखो कैसे दिखा रहे थे गुस्सा और लात, चमका जब दस का नोट तो घुसड़ गया जात और पात।

पण्डित–वो तो ऊपर चला गया है ना?

भकला– उसका बांटा महराज

पण्डित – ये ले

भकला– मेरे मां का हिस्सा

पण्डित सब झन एक साथ नई आ जाते।

भकला– वो बाप के लिए रोटी बना रही है ना

पण्डित – अच्छा ऊपर पहुंचाने जायेगी।

भकला– हब और मेरी औरत का

पण्डित–ऐसे लगाऊंगा, गद्हा कहीं के, कौन तेरी औरत का है रे?

जमादारिन– हमको भी परसाद दो न महराजा।

पण्डित – भग तेरे नीच कहीं की बड़ी आई परसाद लेने वाली।

जमादारिन– वा महराज मैं आरती में पैसा चढ़ाई हूं के नई।

पण्डित – आरती में तो चढ़ाई है, परसाद के लिए कहां दिया है?

जमादारिन– दो ना महराज।

पण्डित – अरे ये अंदर घुस गई रे छू देगी, तू ही ले जाके दे दे।

भकला– चल उधर चल, मंदिर में घुसे तो घुसे, ऊपर से कड़वी जबान, इतना भी नई

समझते, यही आजकल का ज्ञान। भगवान के प्रसाद को ऐसे करके खाना चाहिए, बड़े प्रेम से खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए।

जमादारिन– प्रेम से।

भकला– बैठो बैठो सबको मिलेगा, भगवान का प्रसाद सबको मिलेगा, ले चल झोंक।

जमादारिन– दे।

भकला– दोनों हाथ को क्यों मिला दिए, उल्टा हाथ को हटा, पता नई क्या छुए हो न क्या।

जमादारिन– ये लो, कुछ नई छुए हैं भई।

भकला– भगवान के प्रसाद को ऐसे खाना चाहिए, श्रद्धा... से...। (प्रसाद खा लेता है)

पण्डित – गद्हा कहीं के श्रद्धा से खाना चाहिए श्रद्धा से, उसको श्रद्धा सिखा रहा है, खुद प्रसाद को खा रहा है।

जमादारिन– छुवाला काबर उरे भाइ गा छुवाला काबर डरे।

(गीत)– एक तरिया बाम्हन कनोजिया सबो इसनान करे

जबो जात हा पानी तऊरे (युके) तकामे

भेद परे/तब फेर छुवाला काबर डरे

भाइ गा छुवाला डरे।

(अंतरे के बाद आरती को उठाती है)

पण्डित – अरे गजब हो गया बेटा, गजब हो गया अरे, आरती को छू दी रे, अरे उसमें नोट है रे। उसमें नोट है रे... जा उसमें से नोट को निकाल के ले आ।

भकला– ले जाने दो महराज, उसी का तो नोट है।

जमादारिन– खातू में उपजे धान कोदइया, मैला में आलू फरे।

(गीत)– मल मूत्र खुशरे सब पेट भितर बाहिर बर साबून धरे।

त छुवा ला काबर डरे भाइ गा।

(अंतरे के आखिर में शंख उठा लेती है)

पण्डित – अरे महाअनर्थ हो गया रे महाअनर्थ, उसको भी छू दी रे...। उसको भी छू दी रे

नीच कहीं की।

जमादारिन– (शंख दिखाते हुए) ये क्या है महराज?

पण्डित – रामकांदा है रे... रामकांदा।

जमादारिन– ये क्या काम आता है महराज?

पण्डित – खाया जाता है। अपने बाप को खिला देना रे नीच। ये शंख है बजाया जाता है, उ... बोलता है (रोने लगता है)

(जमादारिन शंख को फूंकती है) अरे घोर अनर्थ हो गया रे, शंख को जूठा कर दी रे बेटा मुंह से लगा दी।

भकला– बजाने दो ना महराज, आपसे तो बजता भी नहीं है।

जमादारिन– मछरी कुकरी साग बनत है

जौन हरक नरक–चरे

अतेक तो घिन घिन जिनिस ला खाके मुरदा मा पेट भरे

त छुवाला काबर डरे...

पण्डित – अरे अति अनर्थ हो गया रे, भगवान को भी छू दी रे..., तेरे नीच कहीं की ठाकुर भगवान को भी छू दी।

जमादारिन– ये ठाकुर जी हैं महाराज?

पण्डित – हां रे नीच, ठाकुर जी हैं।

जमादारिन– भगवान हैं, ये क्या काम करते हैं महराज?

पण्डित – ये कोई काम नई करते, सबसे करवाते हैं रे नीच।

जमादारिन– ये खाते–पीते हैं नई महराज?

पण्डित – अरे कुछ नई खाते हैं रे, वो सबको खिलाते हैं रे नीच, सबको खिलाते हैं।

जमादारिन– ये भगवान भी छुआ गया महराज?

पण्डित – अरे हां रे नीच, वो भी छुआ गया।

जमादारिन– तो इसको भी अपने घर ले जाएं।

पण्डित – ले जा..., इसको भी ले जा, उसको भी ले जा और मौका पड़े तो मेरे को भी ले जा।

भकला– और मैं ये चिमनी पकड़ के तेरे चौखट पे चौकीदारी करूंगा।

जमादारिन– एके किसम के सबे चलो स्वर्ण बई बिसरे

(गीत)– एके धरती सधो बसइया सरग में कोंन किजरे/त छुवाला काबर डरे।

(चौथे अंतरे के आखिर में जमादारिन की झाड़ू भकला को लगती है, भकला झाड़ू से अपने कपड़े साफ करता है)

पण्डित – हट बच गया रे, बेटा तुमको जमादारनी की झाड़ू लगी है, बहुत बड़ा पाप लग गया बेटा, बहुत बड़ा पाप, तुमको गंगा सागर जाना होगा, वहां जा के कुण्ड में नहाना, भगवान के दर्शन करना, तब तेरा पाप कटेगा और वापस आते समय मांगते खाते आना, जितना पैसा मिलेगा, मेरे घर पहुंचा देना।

भकला– ऐसे नया धंधा खोले हो।

पण्डित – अरे मेरे को छू के देखे मजा खा जाऊंगा, मजा।

भकला– मजा खा जाऊंगा नई महराज मजा चखा दूंगा कहते हैं।

पण्डित – वो एकी बात है रे।

भकला–चलो मेरे को रास्ता बताव।

जमादारिन– छुआ ला काबर डरे भाई काबर डरे... (गाने के अंत में जमादारिन अपनी टोकरी को पंडित के सिर पर उलट देती है)।

पण्डित आंधी... आंधी...।

भकला–आंधी नई महराज, टू...कनी है टू...कनी।

पण्डित – इसको साफ कर रे बेटा, इसको साफ कर।

भकला– मैं साफ करने वाला नई हूं महराज, साफ करने वाली तो वो खड़ी है।

पण्डित – तेरे नीच कहीं की, चल मेरा चेहरा साफ कर।

जमादारिन– किसमें साफ करूं महराज?

पण्डित – जिसमें साफ करती है, उसी से साफ कर।

जमादारिन– हमको क्या है, हम अभी साफ कर देते हैं।

(जमादारिन झाड़ू से पंडित का चेहरा खरेर देती है)

भकला– सफाई हो गई महराज?

पण्डित – अरे क्या सफाई हो गई रे बेटा और डबल से खरेर दी रे... डबल से...।

भकला– महराज मेरे को झाड़ू की मार लगी थी, तो आप मेरे को गंगा सागर भेज रहे थे, आपको तो झाड़ू और टुकनी दोनों की मार पड़ी है, अब तो आपको मुझसे भी दूर जाना होगा।

पण्डित – मैं कहां जाऊंगा रे?

भकला– अण्डमान निकोबार द्वीप।

पण्डित – अरे वहां से तो मेरा कुछ भी वापस नई आयेगा रे, यहीं कहीं आसपास भोपाल में जमाना बेटा।

जमादारिन– ये आपके हाथ में क्या है महराज?

पण्डित – अरे ये शास्तर है शास्तर।

जमादारिन– इसमें क्या लिखा है?

पण्डित – तेरे को क्या पूछना है तो पूछ।

जमादारिन– अच्छा हम जो पूछेंगे, वो बता दोगो महराज?

पण्डित – अरे पूछे क्या पूछना है, आठों काण्ड मुखाग्र है।

जमादारिन– के सुन ले रे महाराज बता दे हू तुहर कौन घराना आय

(गीत)

पण्डित – हां... अब पकड़े लाइन, ज्ञान वशिष्ठ में कतको भरे है, वो ब्राह्मण हूं मैं।

जमादारिन– ज्ञान वशिष्ठ में कतको भरे हैं, अउ कावर पेट ले जनम धरे हैं

भकला– हां... वो ब्राह्मण है, आप किसके पेट से जनम लिए हो, कुछ पता है आपको?

जमादारिन– सुन ले रे महराज बता दे हू तुहर कौन घराना आय।

(गीत)– जात सिकारी का नीच बताथे देखत में महराज छुवाय।

जौने के लइका वालमिकी ये तेकर ज्ञान सुहाय।

के सुन ले रे महराज बता दे हू तुहर कौन घराना आय।

व्यास मुनि महाभारत गाइन ब्रम्ह ज्ञान के देव कहाइन आय

तौन ढिमरिन के लइका बाम्हण कस बन जाय। के सुन ले...

ज्ञान वशिष्ठ में कतको भरे हे कावर पेट ले जनम धरे हे

भरतद्वाज मुनि शुद्र पिता ये बाम्हण कस बन जाय। के सुन ले...

दासी बेटा आय मुनि नारद ऐसे होइस ज्ञान बि.........

स्वर्ण छुवा में झन हो गारद, भेद बिगड़ तै पाय। के सुन ले...

जमादारिन– सुने महराज, कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करहि तस फल चाखा। आपके जैसे महराज लोग, शिक्षा देते हैं कि आदमी जन्म से नीच नई होता, कर्म से होता है। इस भगवान को आप छुआ गया है कहते हो महराज। तो इसको मैं अपने घर ले जाऊंगी, और सुन्दर स्नान ध्यान करके इसकी पूजा करूंगी।

मूल्य 100 रुपये

ISBN: 978-81-86219-95-9

सितंबर 2009

संपादनः
राजेन्द्र शर्मा

सहमत
29 फिरोज़ शाह रोड
नई दिल्ली – 110 001
फोनः 23070787, 23381276
e-mail: sahmat@vsnl.com

कवर एंव सज्जाः
इश्तिहार (011) 23733100